जान-पहचान/भूमिका

जिस जिस शख्सीयत ने मुझे प्रभावित किया, लगा कि दूसरों के दिलों पर भी असर करेंगी बशर्ते मेरे लेखन में सादगी आ जाये। बचपन में मुझे डॉ. हरिभजन सिंघ, सुखबीर, संत सिंघ सेखों और तेरा सिंघ चन्न के अनुवाद अच्छे लगे। हरिभजन सिंघ ने सनातनी यूनानी क्लासिकस का बोध करवाया था। उस समय मैं स्कूल में था जब आरसी में क्रमशः प्रकाशित होने वाला *सिमर मनाई सृजना* का अध्ययन करता था। सुखबीर और चन्न ने रूसी रचनाओं के अनुवाद किए। सेखों ने रूसो के *कनफैशनज़* का अनुवाद *आपबीती* शीर्षक से किया। गुरबख्श सिंघ फ्रैंक का रूसी में से अनुवाद अच्छा है।

गुरदयाल बल ने माईकलऐंजलो और वान गाग पर लिखने के लिए कहा तो मुझे स्वयं पर विश्वास नहीं था क्योंकि मैं आर्ट का विद्यार्थी नहीं हूँ। देर तक सोचने के पश्चात् इस फैसले पर पहुँचा कि मैं आर्ट आलोचक के रूप में उनका मूल्यांकन करूँगा ही नहीं, केवल जीवनी लिखूंगा। अंग्रेज़ी में इनकी जीवनियाँ प्राप्त हैं।

इरविंग स्टोन ने माईकलऐंजलो की जीवनी, *द ऐगोनी एंड एकस्टैसी* लिखने के लिए परिवार सहित फलोरैंस, रोम तथा अन्य सभी स्थानों पर जहाँ जहाँ कलाकार ठहरा, अपना निवास स्थान बनाया। जहाँ माईकल ने पत्थर काटे थे उन पहाड़ों में पत्थर काटने का काम सीखा, पेंट करने का काम सीखा। इरविंग को ऐसी गलतफहमी नहीं थी कि वह मारबल तराशने में निपुण हो जायेगा। जानना चाहता था यह रास्ता कितना कठिन है। उसने अनुभव किया कि माईकल ब्राह्मण्डी चेतना का स्वामी कलाकार था जिसका कार्य अनन्त है। पत्थर तराश लिया तो संसार पर विजय प्राप्त हो गई। जैसे माईकल ने प्रकृति को समझने में सफलता प्राप्त की, उसी तरह इरविंग स्टोन उसकी रूह तक पहुँचा। उससे पूछा गया- आपको माईकल की किस चीज़ ने प्रभावित किया? स्टोन ने कहा प्रत्येक चीज़ ने। वह अन्तर्राष्ट्रीय आत्मा वाला व्यक्ति था। प्रत्येक समय, प्रत्येक देश के लोग जानेंगे, उसकी कुशलता अनन्त है। उसने जितना संघर्ष किया, वह व्यर्थ नहीं गया।

स्टोन के इस कथन पर बर्नाड बेरैनसन की टिप्पणी है केवल स्टोन उसकी रूह तक पहुँच सका।

वानगाग पर लिखने के लिए इरविंग स्टोन की पुस्तक *लसट फॉर लाईफ* में से नोटस लिए, उसका प्रथम संस्करण ऐरो बुक्स ने 1935 में प्रकाशित किया और सताहरवां संस्करण 2001 में। स्टोन ने अपनी सामग्री हज़ार से अधिक पत्रों द्वारा प्राप्त की। अकेले थीओ को लिखे गए 700 पत्र तीन जिल्दों में उपलब्ध हैं। हालैंड, बैलजियम तथा फ्रांस में वान के परिवार, गूपल कम्पनी, उसके जीवित मित्रो आदि

से मुलाकातें कीं। हरजीत गिल्ल ने स्थानों और नामों का फ्रैंच उच्चारण लिख कर दे दिया, इन सबका धन्यवाद।

काफ़का की पत्नी दोरा के जीवन सम्बन्धी रचनाएँ प्राप्त हैं परन्तु कैथी दायमंत की रचना सर्वाधिक विश्वसनीय है। पुस्तक का नाम है, *काफका ज़ लासट लव।* इस पुस्तक की रचना मूल स्रोत के आधार पर की गई और उन लोगों से मुलाकातें की जो दोरा के समीप रहे, इनमें उसके परिवार के सदस्य भी थे। यहूदियों के प्राचीन धर्म ग्रन्थ हिब्रू भाषा में हैं परन्तु जो भाषा अब यहूदी बस्तियों में बोली जाती है वह यिद्दिश है जो हिब्रू के समीप की भाषा है। हिब्रू और अरबी भी एक दूसरे के नज़दीक हैं, हिब्रू के प्रथम अक्षर अलिफ, बे, वे, दाल, हे आदि ही हैं। दोरा की यिद्दिश रचनाओं में से विवरण दिए गए हैं। उसने जर्मन भाषा में रचनाएँ प्रकाशित करवाई, उनका अध्ययन है। कैथी ने रूस, इज़राईल, पोलेंड, जर्मन तथा अमेरिका के शोध-केन्द्रों का गहनता से निरीक्षण किया है। कैथी बताती है कि जब वह 1971 में काफका की कहानी *मैटामारफोसिस* का अनुवाद कर रही थी तो उसके अध्यापक ने पूछा, तुम भी दायमंत हो कैथी, तुम दोरा दायमंत की रिश्तेदार हो? कैथी ने कहा मैंने तो पहली बार यह नाम सुना है, कौन थी दोरा? अध्यापक ने कहा काफका के जीवन की अंतिम स्त्री, उसकी बांहों में काफका ने अंतिम सांस ली, दोरा ने उसकी रचनाओं को जला दिया था। अध्यापक की बात सुनकर कैथी ने मैक्सब्रोद की रचना काफ़का की जीवनी को पढ़ा तो पता चला कि दोरा जब काफ़का से मिली, उन्नीस वर्ष की थी। कैथी की भी यही आयु।

कैथी लिखती है इस पुस्तक को लिखने में अनेक भले लोगों ने सहायता की परन्तु सत्य यह है, दोरा मेरी सखी बन गई। वह प्रत्येक क्षण मेरे साथ चलती, मैंने उससे सीखा, किसी के काम कैसे आना चाहिए, स्वयं को कैसे बदला जा सकता है। वर्ष 1948 में काफका के बारे में उसका पहला इंटरव्यू छपा था जिसमें उसने कहा था मैं निष्पक्ष नहीं हूँ, हो ही नहीं सकती, इस कारण जो तथ्य बताऊँगी उनका कोई महत्त्व नहीं, एक पवित्र वातावरण का निर्माण करूँगी मैं। जो कहानी मैं आपको सुनाऊँगी उसके अन्तः में एक पृथक् प्रकार का सत्य है और मैं उस सत्य का छोटा सा भाग हूँ, अतः निष्पक्ष नहीं हूँ। ये पंक्तियाँ लिखते समय कैथी कहती है, "मैं दोरा के दायमंत परिवार से मिली, उनसे बहुत हौसला मिला। मुझे प्रमाण तो नहीं मिले परन्तु लगा कि मैं दोरा दायमंत की रिश्तेदार हूँ, इसलिए मैं भी निष्पक्ष नहीं हूँ।"

आर्ट से बंदगी तक पुस्तक में आर्टस्टि हरदेव सिंघ का परिचय दे चुका हूँ, पाठकों को अच्छी लगी। बिन्दु (Point) यदि स्वतन्त्र हस्ती है तो अनेक बिन्दु मिलकर एक रेखा कैसे बन जाती है? शायद बिन्दु आपस में जुड़ते नहीं। एक बिन्दु

जब चलता है तब उसकी गति का निशान दिखाई देने लगता है जिसे रेखा कहते हैं। जीवन गतिशील है, कुछ शख्स मृत्यु उपरान्त अपनी गति की रेखायें छोड़ गए हैं। यही निशान पाठकों को दिखाने का प्रयास किया। सफलता मिली या नहीं, कितनी मिली, इसका निर्णय पाठक करेगा। रह गई कमियों के बारे में पता चला तो अग्रिम संस्करण में संशोधित करूँगा।

ईदी के बारे में जानकारी तहिमीना दुरानी द्वारा रचित पुस्तक, *एक आईना नाबीनो के लिए* में से प्राप्त हुई। दुरानी ने ईदी के साथ चालीस घंटे तक इंटरव्यू द्वारा सामग्री एकत्रित की। ईदी की वैबसाईट भी उपलब्ध है। विश्व में फैली अपनी स्वास्थ्य संस्थाओं की निगरानी स्वयं करता है। भारत में उसकी शाखा बैंगलोर में है।

प्रो. भूपेन्द्र सिंघ की सलाह के कारण पुस्तक में हमेशा परिवर्तन होता है। अमृता शेरगिल पर उन्होंने लिखने के लिए कहा। अच्छी बात है, अमृता सम्बन्धी स्रोत सामग्री की कमी नहीं है। उसके समकाली व्यक्तियों ने उसके जीवित रहते ही नोटस लेने शुरू कर दिए थे। इकबाल सिंघ और बलदून ढींगरा उनमें से हैं। खुशवंत सिंघ लिखने में समर्थ थे परन्तु बहुत कम लिखा। अमृता पर लिखने के लिए यदि पुस्तकों का अध्ययन न करता तो मुझे उसके पति विक्टर एगन की फकीरी का पता न चलता। अंतिम सांस तक विक्टर को अच्छी लगती रही तो मैं अमृता के व्यवहार में नुक्स छांटने का हकदार कैसे हुआ?

हरपाल सिंह पन्नू

माईकलएंजलो
(6 मार्च 1475 - 18 फरवरी 1564)

फलोरैस शहर के समीप अंगीलारा गाँव अपने मकान के चौबारे में तेरह वर्ष की आयु में शीशे के सामने बैठकर कैनवस पर माईकलएंजलो पेंसिल से अपना चेहरा बनाने लगा। चौड़ा, आयाताकार माथा, गहरी गालों पर बड़ी हड्डियां, काले घुंघराले केश, भूरी आँखों पर बड़ी बड़ी पलकें। हँसने लगा मेरी पतली ठोडी और छोटे मुँह के ऊपर का ढेर कुछ अधिक बड़ा है। जिसने मुझे बनाया, उसे न तो जमैटरी आती है न साहल, न गुणन का प्रयोग करना आता है। मैं अपने चेहरे की पेंटिंग क्यों बनाऊँ, बिकेगी नहीं।

एक गीत की धुन को सुनकर वह समझ गया कि उसका मित्र ग्रांसी आ गया है। शीघ्रता से सीढ़िया उतर कर गली में आया। ग्रांसी 19 वर्ष का था। सीनियर होने के कारण वह माईकल को पेंटिंग करने की साम्रगी देता और पेंटिंग के प्रारम्भिक नियम बताता। उस्ताद गिलांडिओ से काम सीख रहा था, आते ही कहा चलोगे आज फिर मेरे साथ? माईकल ने खुश होते हुए कहा आज मेरा जन्म दिन है, मुझे गिलांडिओ नाम की बर्थ-डे गिफ्ट दे दे।

- ठीक है, केवल एक बात का ध्यान रखना, उस्ताद को गुस्ताखी पसंद नही, विनम्र रहना, अनुशासन से काम सीखना। दोनों चल पड़े। चौंक पार करते समय गिरजा दिखाई दिया, संत मार्क की प्रतिमा देखी तो कहा मूर्ति बनाना कैसी अद्‌भुत कला है ग्रांसी।

- अब चलो भी, काम पर जा रहे है, सैर नहीं है यह। दोनों स्टूडियों के दरवाज़े में प्रवेश कर गये। रंगों की सुगन्ध से भरा विशाल हॉल था, आधा दर्जन लड़के बैंचों पर बैठे अपना अपना काम कर रहे थे। कोने में बैठा एक व्यक्ति खरल में रंग पीस रहा था। इधर-उधर स्कैच लटक रहे थे। सामने ऊँचे दीवान पर बैठा चालीस वर्षीय व्यक्ति यह सब देख रहा था, उसके आस-पास नक्शे, ब्रुश, पैंसिलें आदि सारा सामान ढंग से रखा हुआ था।

उस्ताद को सलाम करने के बाद ग्रांसी ने कहा श्रीमान् गिरलांडीओ, यह है वो लड़का माईकलएंजलो, जिसके बारे में मैंने बात की थी। उस्ताद ने उसकी तरफ देखा तो माईकल को अनुभव हुआ जैसे देखने की बजाय घूर रहा है। ध्यानपूर्वक कुछ देर तक देखता रहा। माईकल ने नज़रे झुका लीं।

- किसका बेटा है तू?

- जी लीओनारदो बोनार्टी सिमोनी का।

- यह नाम सुना हुआ लगता है। कितनी उम्र है तेरी?

- जी तेरह वर्ष।

- हम अपने बच्चों को दस वर्ष की आयु में काम सीखाने लगते हैं। तू तीन वर्ष तक क्या करता रहा?

- स्कूल में लातीनी और यूनानी भाषाएँ सीखने में समय नष्ट किया।

- उस्ताद धीमे से मुस्काया, पूछा- थोड़ी बहुत रेखा खींचनी आती है।

- जी मुझमें सीखने की पूरी ताकत है।

- इसका हाथ टिका हुआ है उस्ताद जी, घर में मैंने इसके बनाए स्कैच देखे हैं, ग्रांसी ने कहा।

- उस्ताद ने कहा मेरा चित्र बना सकता है?

- आपका क्या? सारी वर्कशाप का बना सकता हूँ, माईकल ने उत्तर दिया।

- इसे कैनवस और पैंसिल दो ग्रांसी।

उस्ताद और शार्गिद के इस वार्तालाप को पढ़कर मुझे बीस वर्ष पुरानी घटना याद आ गयी। बड़ा बेटा हुसनबीर पाँचवी कक्षा में पढ़ता था, उसके सहपाठी आकर बतातेअंकल यह बहुत अच्छा गाता है। मैं कहतासभी बच्चे गायक होते हैं। एक दिन उसकी अध्यापिका ने घर आकर गम्भीरता से कहा इस लड़के को किसी उस्ताद के पास ले जाओ। इसमें प्रतिभा है। उस्ताद जवाहर लाल के घर ले गया। उसने कहा मैं एक अलाप लूंगा बेटे, क्या तुम बता दोगे हरमोनियम पर मेरी आंस/सांस कहा है? हुसनबीर ने कहा मुझे तो कारों, ट्रकों की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं, मुझे उनकी आंस/सांस का भी पता है। आप अलाप लो। उस्ताद ने अलाप लिया। बेटे ने हू-ब-हू अलाप लिया और हारमोनियम की सही धुन पर अंगुलि रखी। बड़ा दसवीं में था, छोटा सुखनबीर आठवीं में, विद्यालयों के आपसी मुकाबले हुए, बड़े ने क्लासिकल वोकल में, छोटे ने क्लासिकल इंसट्रोमैंटस में पंजाब स्तर पर गोलड मैडल जीते। उस्ताद बाकर हुसैन ने उनके सिर पर हाथ रखते हुए कहा अभ्यास करते रहो, अभ्यास करते करते जवान हो जाओगे तो देखोगे कि तुम्हारा गाना तुमसे पहले जवान हो चुका होगा।

माईकल की दृष्टि इधर-उधर घूमने लगी जैसे चोरी अंगूर तोड़ने हों। हाथों और आँखों में अच्छी मित्रता थी। अर्द्ध पहर के पश्चात् उसे लगा कि जैसे कोई पीछे खड़ा होकर देख रहा है। लड़के ने उधर देखकर उस्ताद से कहाअभी पूरी नहीं हुई। उस्ताद ने कहा आवश्यकता नहीं है पूरी करने की। सही हो तुम। ग्रांसी ने सही कहा, तुम्हारा हाथ टिका हुआ है। सुनकर माईकल ने बायें हाथ से दायीं कलाई पकड़

कर गर्व से कहा वास्तव में ये हाथ इतना मज़बूत है कि मूर्ति बनाने के लिए बना है उस्ताद जी।

- हम यहाँ पत्थर का काम नहीं करते। रंगों का काम सिखायेंगे। पहले वर्ष के लिए तुम्हे छह मोहरे देनी होंगी।

- मैं आपको कुछ नहीं दे सकता श्रीमान्।
- बोनार्टी गरीब नहीं, मैं जानता हूँ। काम सीखना है तो पिता से पैसे मांग।
- जब मैं पेंटिग की बात करता हूँ, पिता मारने लगता है।
- जब उसे पता चलेगा कि मैंने तुम्हें दाखिल कर लिया है, फिर मार नहीं पड़ेगी।
- पहले वर्ष छह मोहरे, दूसरे वर्ष आठ और तीसरे वर्ष आप पिता को दस मोहरे दे दोगे तो बचाव हो जाएगा।
- आज तक यहाँ ऐसा कभी नहीं हुआ, उस्ताद ने कहा।
- फिर तो मैं काम सीख ही नहीं सकता।
- ठीक है, पिता को लेकर आ जाना। मेरी तरफ से तुम दाखिल हो।

ग्रांसी उसे एक ओर ले गया, कंधे पर हाथ रख कर धीरे से कहा आज कमाल हो गया। तुमने आर्ट स्कूल के प्रत्येक नियम को तोड़ा, परन्तु दाखिला मिल गया। घर वापिस पहुँच कर दांते के पत्थर से बना घर और चर्च देखा, सोचने लगा इन कलाकारों की अंगुलियों ने पत्थरों का स्पर्श ऐसे किया है, जैसे कोई प्रेमिका पहली बार स्पर्श करती है। कलाकार साथ के पहाड़ से पत्थर काट कर गड्डे पर लाद लेते, फिर ले जाकर टुकड़े करते, तराशते, घर, चर्च, महल और आंगन की दीवारें बनाते। दिखाई दे रही इमारतों में से कई बहुत प्राचीन थीं।

हज़ारों वर्ष पहले, देख कर, छू कर, सूंघ कर, वह बता दिया करते थे कि पत्थर कितना सख्त है, इसका रंग कितना पक्का है। गिरजे के गुबंद की ओर देखते हुए, हजारों वर्षो से फलोरैंस निवासी संकल्प किया करते थे मैं इस गुबंद की दृष्टि से ओझल नहीं होऊँगा।

घर पहुँचा, स्वादिष्ट भोजन की सुगन्ध आई। सौतेली माँ ने कहा तुम्हारे लिए आज ऐसा सलाद बनाया है कि खाते ही तेरे मुँह में गीत गाने लगेगा। माईकल जल्दी उठकर तैयार होता, माँ भी बाज़ार से ताज़ी चीज़े खरीदने के लिए हमेशा तैयार हो रही होती। पैसे देते समय पिता बड़बड़ करता तुम्हें तो प्रतिदिन एक मन मछली तथा हज़ार संतरे चाहिएं। माँ कहतीतुम्हारा स्वभाव है कि जेब में पैसे और पेट में भूख हमेशा रहनी चाहिए।

- हमारे खानदान में तीन सौ वर्ष से किसी ने एक समय की भूख नहीं देखी, पेट भर खाना खाया, इच्छानुसार पहना।

- फिर बड़बड़ करने की क्या आवश्यकता?

पिता अपने कमरे में बैठकर हिसाब किताब कर रहा था कि माईकल को आते देखा। जब कहीं जाता, इस कमरे में तीन ताले लगाकर जाता। सोचता मैंने देर से जन्म लिया, सौ वर्ष पूर्व सैंकड़ों एकड़ ज़मीन तथा कितना धन होता था, अब बंटते रहने के कारण दस एकड़ रह गई है। लड़के ने आकर पिता को सलाम किया, बताया पिता जी मैं गिरलांडीओ की वर्कशाप से आया हूँ, उन्होंने मुझे दाखिल कर लिया है। पिता को लगा जैसे बेटे ने खानदान के मुँह पर थप्पड़ मार दिया हो, अर्थात् एक मिस्त्री का, मज़दूर का काम करेगा।

- मैंने तुम्हें मँहगे स्कूल में दाखिल करवाया है माईकल ताकि तुम बड़े होकर ऊन का कारोबार करो, धन कमाओ, ऐश करो। तुम्हें लगता है मैं तुम्हें उस मिस्त्री के पास जाने दूंगा? हमारे खानदान के लोग मज़दूरी नहीं करते।

लड़के ने कहा ब्याज खाकर जीने में कौन सा बड़प्पन है?

- क्यों इसमें क्या बुराई है? हम फलौरेंस के सेठ हैं, कर्ज देना हमारी शान है, दुनिया सलाम करती है।

- मेरे कारण खानदान की प्रतिष्ठा बढ़ेगी पिता ही। जैसे पुरातन शिल्पकारों को याद किया जाता है, ऐसे ही याद करेंगे लोग। जैसे डोनेटैलो और गिरलांडीओ की शान है। पिता ने कहा ये दोनों मज़दूर थे मज़दूर रहेंगे। आर्ट पर समय नष्ट करना ऐसे है जैसे सोचना कि गधे को साबुन से स्नान कराने से वह सुन्दर हो जायेगा। समय और साबुन दोनों ही नष्ट।

- मैं मर जाऊँगा, आर्ट नहीं छोड़ूंगा।

- बड़ों के आगे बच्चों की गुस्ताखी को कबूल नहीं किया जाता इस घर में, इतना कहकर पिता थप्पड़ मारने लगे। खामोश, नज़रे नीचे किए माईकल ऐसे खड़ा रहा जैसे तेज़ आँधी के सामने जानवर सिर झुकाकर खड़ा हो जाता है। दादी तेज़ी से आई, पोते का हाथ पकड़ कर कहा पागल हो गए हो तुम सब? जिससे जो काम लेना है ईश्वर जन्म लेने से पूर्व ही निश्चित कर देता है। तुम कौन होते हो बच्चे को पीटने वाले? अब हाथ लगाकर दिखाए कोई। दादी ने अपने बेटे से कहा क्यों रोज़ शोर मचाता रहता है? तेरे पास पाँच बतखों को पालने के लिए पैसे तो हैं नहीं, पाँच लड़कों को कौन सा व्यापार दिला दोगे? दस एकड़ बांटने के पश्चात् दो दो एकड़ ही रह जायेंगे। इस लड़के की इच्छा आर्ट सीखने की है, तू क्यों इस बात की जिद्द कर रहा है कि ये गधे पर ऊन लाद कर बेचे। मुझे बताओ क्या फर्क

हुआ? दोनों ही मज़दूरी है, जिसकी मर्ज़ी जो चाहे करे। माईकल को हौसला मिला, कहा पिता जी मुझे दाखिल करवा दो। उस्ताद फीस नहीं लेगा, बल्कि आपको कुछ देगा। उसने मेरे हाथों की ताकत देख ली है।

पिता शांत हो गया तेरी मर्ज़ी माईकल। बदमाश को हरा सकते हो साधु को नहीं। पिता दाखिल करवा आया। गिलांडिओ ने कहा पेंटिंग का उद्देश्य सुन्दरता है, दर्शक की आँख को जीतना है, यही सफलता है। प्रकृति से सीखो, प्रतिदिन काम करो।

एक दिन माईकल वर्कशाप गया, प्रणाम किया, उस्ताद की खामोश बेचैनी देखी। यसू का चित्र बनाना था, नैन-नक्श जैसे चाहता था वैसे नहीं बन रहे थे।

अप्रैल 16, 1488 को पहला वेतन मिलने पर माईकल को बहुत खुशी हुई। अन्य शिक्षार्थियों को आपस में खुसर-फुसर करते देखा। नानबाई के बेटे जकोपो ने कहा ठीक है, हो जाये मुकाबला। जो जीतेगा, वह सभी को डिनर देगा। वह देखो दीवार के साथ खड़ा वृक्ष। समय होगा दस मिनट। छह शिक्षार्थी तैयार होकर बैठ गये। माईकल ने पूछा मुझे शामिल क्यों नहीं किया? जकोपो ने कहा क्या फायदा? जीतोगे नहीं तो मुकाबला करने का क्या मतलब? माईकल ने कहा जीत हो या न हो, मुकाबला करने की आज्ञा तो मिले? ठीक है, लड़कों ने कहा आओ, तुम भी बैठ जाओ। काम शुरू करो। फिर जकोपो ने कहा समय खत्म। पैंसिलें रख दो। रख दी। जकोपो ने सभी चित्रों को एक एक करके देखा, जब माईकल द्वारा बनाई पेंटिग देखी, हैरान होकर कहा गज़ब! देखो तो। ये प्रथम आया है। कमाल है। सभी ने बधाई दी तो वह खुश हो गया। अब ख्याल आया दो लिटर वाईन और सात लोगों को बढ़िया भोजन। होटल के दरवाज़े के आगे खड़े लड़के हँस रहे थे। माईकल समझ गया उसे ठगा गया है। वेतन को जेब में देखकर लड़कों ने योजना बनाई थी। गुस्से से उसने ग्रांसी से कहा मुझे तुम सबने मिलकर बुद्धु बनाया है? ग्रांसी ने हँसते हुए कहा नए विद्यार्थियों के साथ ऐसे ही होता है, यह भी प्रशिक्षण ही है। अच्छा ये बताओ यदि तुम्हें पता होता, क्या तुम घटिया स्कैच बना देते?

- बिल्कुल नहीं, बेशक हानि ही हो, मैं कभी घटिया काम नहीं करूँगा।

- तो बस, परवाह नहीं। खुश हो जाओ। तुम्हारे पास खर्च करने के लिए कुछ तो है, हमारे पास कुछ नहीं, फिर हमारे साथ ठगी कैसे हो सकती है?

उस्ताद ने बताया सिर के तीन भाग हैं माईकल। पहला केश दूसरा माथा, नाक, तीसरा होंठ और ठोडी। हाथ, जंघाओं के आधे हिस्से तक जाते हों। दोनों बाँहे फैलाओ, व्यक्ति का कद इतना ही होता है और आठ सिर जोड़कर मापो, यह भी व्यक्ति की लम्बाई जितने ही होंगे। मोम का सिर बनाना हो तो पहले बांस की

तीलियों से या तारों का फ्रेम बनाओ, फिर उसके ऊपर मोम का लेप लगाओ। मोम या टैराकोटा की मूर्तियों में लेप के ऊपर कुछ चिपकाते रहना है जबकि पत्थर पर से लगातार कुछ खुरचना होता है। स्त्रियाँ इस हिसाब पर खरी नहीं उतरतीं, सभी का शरीर अलग अलग ढंग से बना है।

माईकल ने ये जमैटरी सीखते हुए कहा जमैटरी कफन है, एक लाश इस जमैटरी के डिब्बे में फिक्स हो सकती है। वर्कशाप में सेन्नी की पंक्तियों को दीवार पर लटका रखा था कलाकार काम को पूजा समझे, खाने-पीने में संयम रखे, स्त्रियों से दूर रहे, एक गलती तुम्हारे ब्रुश को ऐसी कंपकंपी देगी जैसे आँधी पत्तों को झिंझोड़ देती है। माईकल ने जकोपो को यह पंक्ति सुनाकर कहा तू प्रत्येक बदमाशी करता है। कोठे तक तेरे कदम पहुँच जाते हैं। जकोपो बहुत हँसा तभी तो कई दिनों से मैंने कोई पेंटिग नहीं बनाई, मैं उस्ताद की पेंटिंगों को कंपाना नहीं चाहता।

एक शाम ग्रांसी के साथ आ रहा था, महल के समीप भीड़ देखी। तुर्की का सुल्तान एक ज़ीराफ भेंट करने के लिए आया हुआ था। माईकल ने कहा मेरी इच्छा हो रही है कि मैं इस दृश्य की पेंटिग बना दूं, महल की पृष्ठभूमि, फलोरैंस का हाकिम, सुल्तान, और ज़ीराफ जैसे शतरंज की पट्टी बिछी हुई हो, सफेद काले वर्ग, ऐसा प्रतीत होता है जैसे ज्ञान और अज्ञान बिखर गए हो परन्तु हैं दोनों एक दूसरे के पास ही।

एक सुबह काम पर गया, देखा उस्ताद के मेज़ पर कागज़ों का एक बण्डल रखा है। खोला, बहुत सुन्दर स्कैच थे। उसने उसकी नकल उतारनी शुरू कर दी। छह बनाये थे कि उस्ताद आ गया। गरजा किसने आज्ञा दी है तुम्हें इन्हें उतारने की? माईकल शांत रहा, दृढ़ आवाज़ में कहा जल्दी सीखूंगा, आपको कोई लाभ होगा, आपके लाभ के लिए कर रहा हूँ। उस्ताद शांत हो गया। भिन्न भिन्न प्रकार के डंक हाथ में पकड़ाते हुए कहा कि बारीक निब्ब किस लिए और मोटी किस लिए होती है।

- मेरा कभी कभी मन करता है कि नग्न पेंटिग बनाऊँ, माईकल ने कहा।

- क्यों? उस्ताद ने कहा वस्त्रों में बना। पागल यूनानी नग्न चित्र बनाते हैं, हमारे यहाँ ऐसी परम्परा नहीं। तुम्हें पता ही है मानवीय शरीर कुरूप है। यह वस्त्रों में ढका हुआ ही सुन्दर प्रतीत होता है, हम ईसाइयों के लिए पेंटिग करते हैं, कंजरों के लिए नहीं। देखों, मैं लिबास को कैसा सूक्ष्म स्पर्श देता हूँ, यही सही लगता है।

- उस्ताद जी मेरा मन करता है मैं उसी प्रकार बनाऊँ जैसे परमात्मा ने आदम और ईव बनाये थे।

उसने सीखा ब्रुश कैसे बनाने हैं, किन किन जानवरों के बाल काम आते हैं। डंक और रंग स्वयं ही बनाने होते हें। प्लास्टर को समतल कैसे करना है, आज

जो भाग अधूरा रह गया, अगले दिन शेष भाग कठिनाइयाँ उत्पन्न करेगा। आज के रंग कल चित्रित करने वाले रंगों से पृथक् दिखाई देंगे, इन कमियों को पूरा करना सीखा। दोपहर तक ब्रुश तेज़ चलना चाहए क्योंकि इस समय गर्मी के कारण प्लास्टर अधिक रंग सोख सकता है, सुबह शाम गति धीमी कर दो।

गिर्लांडिओ अपने शहर फलोरेंस के लगातार चित्र बना रहा था हाकिम शहज़ादे, शहज़ादियाँ, महल, पुजारी, सामान्य जन। कहता मेरा येरोशलम तो मेरा फलोरैस ही है, मेरा पूज्य स्थान।

एक दिन अर्थी के पीछे जाता हुआ कांरवाँ देखा, सभी स्त्रियों-पुरुषों के सफेद लिबास देखकर माईकल ने कहा संगमरमर की चलती फिरती प्रतिमाएँ कितनी सुन्दर प्रतीत होती हैं। सबसे पहला मूर्तिकार तो परमात्मा है, उसने मनुष्य की प्रतिमा बनाकर दस कमांडमैंटस दे दीं। मनुष्य ने वह कहाँ लिखीं? पत्थर पर। रोमन राज्य में एक भी कुशल मूर्तिकार नहीं है। कमज़ोर हाथों में कमज़ोर ब्रुश उठाये फिरते हैं आर्ट के भगौड़े। प्रतिमा बनाने के लिए ताकत और साधना चाहिए।

जकोपो हँसा। ग्रांसी ने कहा यदि ताकत से कला का माप करना है, फिर वो व्यक्ति ताकतवर है जिसने बड़े हथौड़े, बड़ी छैनी से पहाड़ में से स्लैब काटी। मूर्तिकार तो लघु हथौड़ों एवं छैनियों का प्रयोग करता है, फिर सुनार की अपेक्षा लुहार ताकतवर कैसे न हुआ।

- परन्तु आर्ट उत्तम होता है। कैनवस की ऊपरी कला फ्लैट है। पत्थर कला को चारों ओर घूम कर देख सकते हैं। हर तरफ से कुशलता दिखाई देगी।

जकोपो ने कहा पत्थर में से आप क्या निकाल लोगे? पुरुष, स्त्री, घोड़ा, शिकारी, बस? पेंटर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का चित्र बना सकता है। चाँद, तारे, पर्वत, वृक्ष, नदियाँ, पूरा शहर, सम्पूर्ण सभ्यता, सभी मूर्तिकार उदास ही मरे।

माईकल ने कहा पेंटिग नष्ट हो सकती है, आग, पानी, दीमक, धूप, गर्मी, सर्दी, रंग उड़ा देते हैं। तथा पत्थर? पत्थर अमर और अनन्त है। दिखाई नहीं देता, हज़ारों वर्ष पूर्व बनाई रोमन प्रतिमाएँ ऐसी हैं जैसे अभी बनाई गईं हों।

- माईकल तुम्हें पता है मूर्ति बनाने से कलाकार क्यों हट गए हैं? ग्रांसी ने कहा संगमरमर और कांसी मँहगे हैं, किसके पास हैं इतने पैसे? रंग तथा कागज़ सस्ते हैं। पेट तो सभी ने भरना है न?

एक सुबह वह पहाड़ी की तरफ चला गया जहाँ इमारतों के लिए बड़े टुकड़े काटे जा रहे थे। श्रमिकों का यह संयुक्त बड़ा परिवार किसी बेगाने को अपने में शामिल नहीं करता था, यहाँ तक कि विवाह भी रिश्तेदारी में हो जाते। माईकल उन्हें काम करते हुए देखता रहा, पत्थर काटते समय बातें नहीं करते, हथौड़े और छैनियाँ,

केवल टक टक की आवाज़। आवाज़ें उसे मोहित करने लगीं। इन श्रमिकों का नेता माईकल के पिता को जानता था। उसने उसे प्यार से अपने पास बुलाया, पूछा, कैसे आये हो? माईकल ने कहा मेरा पत्थर काटने का मन कर रहा है। बुजुर्ग ने कहा अधिक आमदन प्राप्ति का तो काम है नहीं यह, परन्तु मन करता है तो आ जाओ करो। हिसाब अनुसार पैसे दे दिया करेंगे।

- आज ही शुरू कर दूं?

- कुछ सहायता ही मिलेगी, मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? कर दो। उसने काम शुरू कर दिया तो सख्त चट्टान जैसे स्वयं ही नरम होती जा रही हो... उसे खुद पर गर्व हुआ। उसे काम करते हुए देखने के लिए बुजुर्ग समीप आया कहा काम करते समय जोश में नहीं आना, तेरा विनम्र स्वभाव पत्थर को नरम करेगा। प्रत्येक पत्थर का अपना स्वभाव होता है बेटा, तुम्हें सब कुछ समझ में आ जायेगा। ऐसे समझना जैसे पत्थर तेरा उस्ताद है और तुम विद्यार्थी। किसान पशुओं को पीटते हैं तो मूर्ख सिद्ध होते हैं न? पत्थर में अद्भुत जादू होता है जिस कारण इससे मित्रता हो जाती है।

दोपहर में एक स्त्री भोजन ले आई। माईकल सहित सभी ने भोजन किया। उस स्त्री ने कहा तुम्हारी माँ मेरी सखी थी माईकल तुम मेरे बच्चों जैसे हो यहाँ। यदि आवश्यकता हो तो मांग लेना। जब तेरी माँ की मृत्यु हुई, तब तुम छोटे थे तुम्हारा पालन-पोषण मैंने किया था। सभी उठे, बुजुर्ग आगे-आगे श्रमिक पीछे चल पड़े। बुजुर्ग पत्थर को देखकर कहने लगा इस में गमोड़ियां हैं, यानि कि इसमें लोहा है, दूसरे यह भीतर से खोखला है। यह देखो, ये सही पत्थर है, यह कहकर उसने गैंती से चौरस रेखा बनाकर काटने का इशारा किया। शाम तक पत्थर का बड़ा चौरस टुकड़ा काट लिया गया।

अगले दिन माईकल गिरलांडीओ की वर्कशाप में गया। अभी तक यसू का पसंदीदा शरीर नहीं बना सका था, कितने ही स्कैच इधर उधर बिखरे देखे, ठीक नहीं लगे। माईकल ने कैनवस और पैंसिल उठाई और यसू का स्कैच बनाकर उस्ताद को दिखाया। उस्ताद ने कहा यह क्या बना दिया? भारी चेहरा, चौड़े कंधे, बड़े पैर, यह तो कोई मज़दूर दिखाई देता है, मज़दूर यसू को फलोरैंस पसंद नहीं करेगा।

- परन्तु यसू तो था ही मिस्त्री उस्ताद जी? माईकल ने कहा। कुछ देर तक उस्ताद सोचता रहा फिर काम करने लगा। अंततः जो बड़ी पेंटिग मुकम्मल कर गिरजे की दीवार के साथ रखी और शिक्षार्थियों को दिखाई, माईकल ने देखा यह तो वही यसू है जिसे उसने बनाया था..... मज़बूत यसू। न उस्ताद ने इस बारे में कुछ कहा न माईकल ने। जब माईकल को यसू, मरिअम या किसी संत का चित्र बनाने के

लिए कहा जाता, मर्यादा के विपरीत पहले नग्न चित्र बनाता फिर वस्त्र पहनाता। उसके लिए यही सही ढंग था। उस्ताद ने उसे एक दिन कहा यहाँ लड़के बकवास कर रहे हैं कि मैं तुझसे ईर्ष्या करता हूँ। मूर्ख, अभी तुझे आता क्या है? यह मैं ही जानता हूँ, एक दिन तुम मुझसे आगे निकलोगे।

ग्रांसी एक दिन माईकल की बांह पकड़कर किसी तरफ चल पड़ा। दोनों बाग में पहुँच गये। एक बहुत ही सुन्दर प्रतिमा देखी, लड़का अपने पैर में से कांटा निकाल रहा है। कुछ लोगों को पत्थर तराशते हुए देखा। माईकल ने पूछा यह सब क्या है? ग्रांसी ने बताया, फलोरैंस के बादशाह लोरैंज़ो का आदेश है कि प्राचीन रोमन सभ्यता पर आधारित मूर्ति कला का स्कूल स्थापित करना है। बूढ़े मूर्तिकार बर्टोलडो को अस्पताल से पालकी में बिठाकर यहाँ ले आये हैं। उसने कुछ शिक्षार्थी रखे हैं जो काम कर रहे हैं। उसने देखा कमज़ोर बर्टोलडो चारपाई पर बैठा निर्देश दे रहा था।

- ग्रांसी, एक वर्ष मैंने गिर्लांडिओ के पास लगा लिया, अभी दो शेष है। जब चित्रकारी के लिए मैं बना ही नहीं तो दो वर्ष नष्ट क्यों करूँ? मुझे तो लगता है मैंने एक वर्ष भी व्यर्थ ही गंवाया, परन्तु अब उससे आज्ञा कैसे लूं?

- मुझे तो खुद समझ में नहीं आ रहा क्या करें?

माईकल की आँखें भर आईं मैं पत्थर के लिए हूँ ग्रांसी, केवल पत्थर के लिए। प्राचीन प्रतिमाएँ उसे ऐसे अपनी तरफ खींच रही थीं, जैसे चुम्बक लोहे को .... बेसुध हो लगन से वह एक एक प्रतिमा को देखता रहा। लोरैंज़ों ने बहुत प्रतिमाएँ यहाँ लाकर रखी हुई थीं।

आधी रात तक नींद नहीं आई।.....गिर्लांडिओ से कैसे मुक्ति मिले? कोई समाधान नहीं। तैयार होकर वर्कशाप में गया। उस्ताद को अपने काम में मग्न देखा, नमस्कार का भी उत्तर नहीं दिया। कुछ देर पश्चात् उसने सिर उठाया और कहा कल बादशाह ने बुलाया था मुझे। कहा दो अच्छे लड़के चाहिएं पत्थर तराशने के स्कूल हेतु। मैंने भी अपना कारोबार चलाना है, परन्तु बादशाह को कौन मना कर सकता है? तू जाएगा माईकल?

- कल मैंने वह स्कूल देखा श्रीमान्, किसी जानवर की भूखी आँखों की तरह मेरी आँखें तृप्त नहीं हुईं।

- और तुम ग्रांसी?

- हाँ जी, यदि आज्ञा हो तो...।

- ठीक है। तुम दोनों को मेरी तरफ से छुट्टी। चलो जाओ काम शुरू करो।

इन दोनों का मन किया कि धन्यवाद करें परन्तु इसका गलत अर्थ निकलना था ... बेचैनी, उलझन में खड़े रहे। आखिर उस्ताद ने ही कहा मैं तुम्हें

देख रहा हूँ माईकल तुम पत्थर के लिए बने हो। टैराकोटा और मोम को भी तुम पत्थर की तरह तराशोगे। तुम्हारे बनाये चित्र ऐसा प्रभाव देते हैं जैसे ब्रुश नहीं छैनी चली हो। तुम्हारे लिए लोहा और पत्थर ही ठीक हैं। परन्तु याद रखना तेरा पहला उस्ताद गिरलांडीओ है।

दोनों ने सम्मानपूर्वक सिर झुकाया और बाहर आ गये। दोनों माईकल के पिता के पास गये और पेंटिग की बजाय मूर्तिकला सीखने की खबर दी। पिता ने पूछा परन्तु यह तो अशिक्षित मज़दूर का काम है। लकड़ी तराश ली या पत्थर, इसमें क्या अन्तर है? अच्छा वेतन क्या मिलेगा?

- वेतन पता नहीं, हमने पूछा नहीं।

- मैंने पूछा था, ग्रांसी ने बताया- कोई वेतन नहीं।

- सारी उम्र मैं ही तेरा भार उठाता रहूँ, मैं आज्ञा नहीं दूंगा। हरगिज़ नहीं। यह कहकर पिता उठकर चला गया।

बिना आज्ञा लिए दोनों ने बाग में जाना और काम सीखना शुरू कर दिया। उस्ताद बर्टोलडो निपुण कलाकार तो था ही, हँसमुख भी था, अधिकांश उस्ताद कठोर स्वभाव के होते हैं। बताया, बच्चो आर्ट सीखा नहीं जाता। डोनेलो मेरा उस्ताद था। मैं उसका वारिस भी हूँ, तो भी मैं उस जैसा नहीं हूँ, उसने यह उम्मीद भी नहीं रखी कि कोई उस जैसा हो। प्रत्येक अपने जैसा हो। तुमने कितना पचाना है, यह तुम्हारे सामर्थ्य के अनुरूप होगा उस्ताद के सामर्थ्य अनुसार नहीं।

सभी काम कर रहे थे कि बादशाह लोरैंज़ो अपनी शहज़ादी के साथ बाग में आया। उसने इटली और लातीनी यूनान की दस हज़ार पुस्तकें संग्रहित कर यूरोप की पहली लाइब्रेरी की स्थापना की थी। केवल धन सम्पदा में ही नहीं, वह फलोरैंस को विद्या, कला और संगीत के क्षेत्र में भी धनी करने का इच्छुक था। अभिमानी नहीं, पहले उस्ताद से फिर शिक्षार्थियों के साथ छोटी-छोटी बातें करने लगा। उसकी बेटी उसके पीछे पीछे आई, कोमल, पतली कटैसिना। पिता और शाहज़ादी ने सभी से कोई न कोई बात की, माईकल के पास से खामोश गुज़र गये। कभी दो दिन तो कभी तीन दिन के पश्चात् आते। हर बार पिता नहीं, कभी कभी कोई अफसर उसके साथ होता। एक दिन माईकल को किसी द्वारा व्यर्थ समझकर फेंका हुआ पत्थर मिला, बहुत खुश हुआ। हथौड़ा, छैनी, रेती के साथ काम करते हुए इतना मग्न हो गया कि समय बीतने का पता ही नहीं चला। सभी साथी जा चुके थे। राजकुमारी टहलती हुई पास आ गई।

- मेरा नाम माईकलएंजलो है शाहज़ादी, काम करते हुए बातें भी करता रहा।

- और मेरा नाम कटैसिना।

शहज़ादी ने एक पत्थर उठाकर सूंघते हुए कहा बिल्कुल अंजीर जैसी सुगन्ध, फिर एक पत्थर को पास लाकर कहा इसमें कोई सुगन्ध नहीं। उसकी इस हरकत पर माईकल बहुत हँसा, लड़की भी हँसी।

- इतना कठिन काम करते हुए तुम थकते नहीं माईक?

- नहीं .... अपितु पत्थर तो मुझे ताकत देता है। यह मुझे अपने जैसा बना देगा। मेरे हाथों में आकर यह सजीव हो उठता है।

- मेरे लिए कुछ बनाओगे माईक?

- यकीनन। जल्दी।

सख्त पत्थर पर पानी डालना था, इधर उधर देखा, पानी नहीं था, ज़रूरी स्थान पर थूककर रगड़ने लगा।

- यदि तेरा मुँह सूख जाय माईकल, और पानी भी न हो, फिर?

- मूर्तिकार का मुँह कभी सूख नहीं करता शहज़ादी। दोनों हँसने लगे। माईकल को पता चला कि इस लड़की की माँ और नानी की मृत्यु तपेदिक से हुई थी। इसका अंत भी यही होगा, इसी कारण पिता अधिक ख्याल रखता है। ग्रांसी पेंटिंग में तो ठीक था परन्तु पत्थर का काम करने की क्षमता उसमें नहीं थी। बादशाह दौरे पर आया तो उसने बात की। बादशाह ने उसे बाग का मैनेजर नियुक्त कर दिया तो वह बहुत खुश हुआ। माईकल को यह बात अच्छी नहीं लगी।

पिता माईकल पर गुस्सा करते हुए कहा तेरे साथ के लड़के कमाने लगे हैं। तू पन्द्रह वर्ष का होकर खाली घूमता रहता है। कब काम सीखोगे?

- पता नहीं पिता जी।

- पता नहीं क्यों इन बेटों को जन्म दिया। पाँचों ही निकम्मे।

- पिता जी, भूल जाओ कि मैं गधे पर ऊन बेचता रहूँ।

माईकल सारा दिन कठिन परिश्रम करता परन्तु अभी तक उसे पत्थर तराशने की आज्ञा नहीं मिली थी। मूर्तिकारों को महल में ले जाकर प्राचीन प्रतिमाएँ दिखाई जातीं, किसी ने भी उसे साथ चलने के लिए नहीं कहा। उसने ग्रांसी से बात करते हुए कहा तुम उस्ताद से कहो कि मुझे महल देखने की आज्ञा दे दे। ग्रांसी ने कहा जब तुझे योग्य समझेगा, स्वयं ही भेज देगा। उस्ताद ने देखा, माईकल ने तुर्ज्ञानी शैली में एक ड्राईंग बनाई हुई है, उठाई, टुकडे करके फेंकते हुए कहा लंगड़े के साथ एक वर्ष तक चलते रहोगे तो तुम भी लंगड़े हो जाओगे।

निरन्तर काम में मग्न, धैर्यशील, आज्ञाकारी, माईकल के कंधे पर हाथ रखकर अंततः उस्ताद ने कहा अब पत्थर तराशने का समय आ गया है। कर दे पुत्र काम शुरू। परमात्मा ने इस कारण पीठ को सख्त बनाया है ताकि भार ढो सके।

एक दिन महल में जाने की आज्ञा मिल गई, लौरैंज़ो किसानों के देवता फान का चित्र ढूंढ कर लाया जो 500 वर्ष पूर्व ईसा के समय का था। वह देखना था। वे बड़े दरवाज़े में से निकल कर आगे गये। दो बड़ी प्रतिमाएँ आमने सामने खड़ी थीं। दोनों ही दाऊद, बादशाह, एक डोनेटैल का, दूसरा वेरोकीओ (Verrocchio) का बनाया हुआ था। आर्ट गैलरियाँ देखकर माईकल हैरान रह गया। अंत में फान का सिर (Bust) देखा। उस्ताद ने कहा अच्छी तरह देखो इसे माईकल। माईकल ने उसके इर्द-गिर्द कई चक्कर लगाये। कागज़ पैंसिल निकाली। कई स्कैच बनाये। स्वयं से कहा यह दो हजार वर्ष पुराना फान है, मैं आज का फान बनाऊँगा। काम में मग्न था तो पतली मधुर आवाज़ सुनाई दी माईकल? पीछे शहज़ादी खड़ी थी। उसके मुख से अपना नाम सुनकर महक उठा। पूछा कितने दिन हो गये, तुम बाग में नहीं आई शाहज़ादी?

- मुझसे कहा गया था अभी मौसम मेरे स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं।

- तुम बिल्कुल ठीक हो कटैसिना। कई बेटों की माँ बनोगी देख लेना। हँसने लगी- तेरे साथ रहने वाले लड़के बताते हैं तुम उल्लू हो, तुम बहुत समझदार हो माईकल। मेरा मन करता है बाग में आने के लिए।

- बाग भी तुम्हारे बिना उदास हो जाता है शाहज़ादी।

- काम कैसे चल रहा है?

- कर रहा हूँ थोड़ा बहुत।

- बाग में घूमते हुए मैं तुझे देखती थी, तू खामोश रहता। यदि तू इतना ही खामोश है तो आँखों पर भी पट्टी बांध, ये बातें करने से नहीं हटतीं। दोनों हँसने लगे, शाहज़ादी ने कोमल हाथ उसके कंधे पर रखा, कहा अच्छा माईकल। मेहनत कर।

वापिस आकर काम करने लगा, शाम हो गई, भोजन करके सभी सो गए। माईकल को नींद नहीं आ रही थी। टहलने लगा। संगमरमर का एक टुकड़ा देखा। इतना बड़ा था कि फान का सिर बन सके। उसे उठाकर अपने कमरे के पिछले भाग में चला गया। उस्ताद की आज्ञा के बिना पत्थर को छू नहीं सकता था, परन्तु देखा जायेगा। छैनी, हथौड़ी से रात भर काम करता रहा, न कहीं नींद, न थकान, दिन के समय कपड़े से ढक देता, रातों को काम करता, मोमबत्ती की धीमी रोशनी में। जब पूरा हो गया, अपने काम करने वाले मेज़ पर रखकर अंतिम स्पर्श देने लगा, पॉलिश

करने लगा। मुकम्मल करके उस्ताद को दिखाएगा, उस्ताद अभी तक आया नहीं, देखा, बादशाह लोरेंज़ो आ रहा है, माईकल ने आदाब कहा। बादशाह ने पूछा यह क्या है?

- जी फान, और क्या, मेरा फान।

- परन्तु बेटा महल में तुमने जो फान देखा था उसकी दाढ़ी थी। तुमने दाढ़ी नहीं बनाई। दाढ़ी के बिना बूढ़ा दिखाई नहीं देगा।

- क्यों नहीं दिखाई देगा हजूर? महले वाले फान में कमी है। दाढ़ी होने से बूढ़ा दिखाई देता है परन्तु दांत उसके पूरे हैं। मेरा फान देखो। बिना दाढ़ी के बुजुर्गी झलकती है, एक दांत ऊपर का, दो नीचे के टूटे हुए हैं।

- तेरे पास ऐसे ख्याल कहाँ से आते हैं?

- जहाँ से प्रत्येक कलाकार के पास आते हैं, दिल की गहराईयों से।

- कमाल की मूर्ति बनाई है तुमने, खूब, शाबाश।

अगले दिन उस्ताद ने अपने पास बुलाकर एक कागज़ दिया, आदेश पत्र था माईकलएंजलों महल में तुम्हारी आवश्यकता है। लोरेंज़ो।

एक बार तो भयभीत भी हुआ कहीं उस्ताद ने पत्थर चुराने की शिकायत तो नहीं कर दी? देखा जायेगा। जाना तो पड़ेगा ही।

- कितनी उम्र है तेरी माईकल?

- जी पन्द्रह वर्ष।

- उस्ताद ने तेरी कभी अधिक प्रशंसा तो नहीं की, कह देता था सीख रहा है। सीख जायेगा। मैंने तेरी ताकत को पहचान लिया है। ये लो ड्राईंगज़। गज़ब, एक से एक बढ़कर।

- जी ये मेरी हैं?

- और किसकी हैं? हमने तुम्हें महल में रख लिया है। तेरे जैसा अन्य एक भी नहीं है आज। परन्तु यह बताओ, यश प्राप्ति या अर्थ प्राप्ति के मोह में आकर तू हमें छोड़कर चला तो नहीं जायेंगा?

माईकल ने कोई उत्तर नहीं दिया, बात ही कुछ ऐसी हो गई थी। बादशाह ने प्यार से कहा तू मेरे परिवार का सदस्य होगा। तेरी समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने की जिम्मेवारी मेरी। तुम केवल पत्थर तराशोगे, केवल संगमरमर। मुझे पुरातन रोम का वारिस मिल गया। मैं खुश हूँ। तुम खुश नहीं हो माईकल?

छाती पर हाथ रखकर झुकते हुए माईकल ने कहा बहुत खुश। बादशाह ने कहा कल अपने पिता को लेकर आना।

पिता सहित लोरेंज़ो के सामने माईकल खड़ा था, गर्वित, खुश। पिता अत्यधिक विनम्र, झुका हुआ। पुत्र को पिता की यह स्थिति ठीक नहीं लगी। लोरेंज़ो ने कहा आपका बेटा अब मेरा पुत्र है, महल में रहेगा। मैं तुम्हें भी कुछ देना चाहता हूँ। बताओ क्या इच्छा है। झिझकते झिझकते पिता ने कहा जी कस्टम दफ्तर में एक असामी खाली पड़ी है, यदि मिल जाये? लोरेंज़ो ने हँसते हुए कहा धन्यवाद भाई, यह तो कुछ भी नहीं, तुम यदि इससे अधिक कुछ मांगते वह भी दे देता। जाओ। कस्टम अफसर की नौकरी करो। दोनों ने माईकलएंजलो के मुख पर मासूम आभा देखी।

विशाल प्रतिमा की ओर अंगुलि करते हुए लोरेंज़ो ने कहा साठ वर्ष पूर्व मेरा बाबा कोसीमो, महान् मूर्तिकार डोनेटैलो को इस महल में लेकर आया था, यही उसने ये सृजना की थी।

पिता चला गया, एक सेवक ने माईकल को अपने साथ चलने का इशारा किया। सुन्दर सुसज्जित कमरे में पहुँचे जहाँ उस्ताद उसके स्वागत के लिए खड़ा था लोरेंजो के महल में आपका स्वागत है माईकलएंजलो। अद्‌भुत पलंग और फर्नीचर, विशाल शीशा ड्रैसिंग टेबल पर सजा हुआ। दर्जी माप लेने आया। तीन दिन पश्चात् नये कपड़े दे गया। गर्म सूट पर ज़री की कढ़ाई, आकर्षक बटन, हैट पहनकर शीशा देखा तो लगा जैसे कद और भार दोनों ही बढ़ गए हों। उसे बताया गया जो सूट तुमने पहना है, ये लिबास विशेष अवसर पर ही पहनना, ये लिबास काम करते समय पहनने हैं, यह रात को सोते समय। उस्ताद ने अपनी समस्त पुरानी ड्रांइगें उसे सौंप दीं। अपनी शाही वेशभूषा उतारते हुए माईकल ने कहा हल चलाते घोड़े को कौन कीमती वस्त्र पहनायेगा?

शाम को डाईनिंग टेबल पर लाया गया, यू आकार की मेज़ के आस-पास साठ कुर्सियां। शाहज़ादी के साथ रखी खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए उसे कहा यहाँ, इस तरफ। चांदी के थाल, सोने की किनारियां, बीच में सोने का फूल, गायक और नौकर अपने अपने काम में मस्त। परिवार की वधूओं, पुत्रों, पुत्रियों के अतिरिक्त विदेशी व्यापारी, विद्वान्, राजदूत, प्रत्येक बड़े व्यक्ति को बड़ी अण्डाकार थाली में खाना परोसा जा रहा था। एक जवान ने छोटी मछली उठाई, कोई बात की और रोने लगा। क्या हुआ? लोरेंज़ो ने पूछा जी मेरा पिता अनेक वर्ष पहले गुम हो गया था। मैंने इस मछली से पूछा तुमने उसे कहीं देखा है? इसने कहा मेरी उम्र बहुत छोटी है, किसी अधिक आयु की मछली से पूछो। सभी हँसे। लोरेंज़ो ने कहा

ठीक है, भाई इसे अब बड़ी मछली लाकर दो। इसके पिता का मिलना ज़रूरी है। माईकल उत्सुक होकर देखता रहा। शाहज़ादी ने बताया यह महल का मसखरा है। तुझे हँसी नहीं आई? तुम घर कभी हँसते नहीं? माईकल ने कहा बहुत कम। हँसने के कारण अन्य हो सकते हैं इस प्रकार के नहीं। अभी मुझे सीखना भी तो है कि महल में कैसे हँसते हैं।

माईकल की बांह में बांह डाल कर कटैसिना ने पूछा तुम्हें पता है प्यार क्या होता है? माईकल ने कहा अधिक नहीं, दादी ने थोड़ा बहुत सिखाया, बाकी सभी तो डांटते ही रहे।

- यहाँ महल में सभी एक दूसरे के मित्र हैं माईकल फिर भी किसी का मित्र नहीं। शाहज़ादी की इस बात का क्या अर्थ है पता नहीं चला।

अगले दिन उस्ताद महल में आकर माईकल से मिला, कहा मैं महान् कलाकार तो नहीं परन्तु शिक्षक अच्छा हूँ। मुझे अच्छा कलाकार मिल गया, तुम्हे अच्छा शिक्षक। मैं तेरी सभी कमियाँ दूर कर दूंगा। कारीगरी तो सीखनी ही पड़ेगी। हमारे कलाकार तो अपने औजार भी स्वयं ही बनाते थे, कहा करते जो औजार बनाना नहीं जानता वह मूर्ति कैसे तराशेगा। तुझ पर ये शर्त लागू नहीं होती। बाग में तेरी वर्कशाप के एक तरफ लुहार होंगे, दूसरी तरफ बढ़ई। तेरी आवश्यकता अनुरूप औज़ार बनायेंगे। ग्रांसी से कह दिया है, जो यहाँ न बन सके, उसका प्रबन्ध किसी अन्य स्थान से करे। मेरी निगरानी में तराशने का काम करना होगा। मेरी निगरानी कुछ समय के लिए ही है। आयु बीत गई है। जो हो सका करेंगे।

अगली सुबह उठकर बाग में पत्थरों के समीप गया तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी पारदर्शी दृष्टि पत्थर के आर-पार हो गई है, पत्थर के भीतर की प्रत्येक वस्तु का दृश्य। पत्थर के रेशे किस दिशा की ओर बढ़ रहे हैं, देखो। हथौड़ी का हल्का सा प्रहार पत्थर के बारे में सब कुछ बता देता है।

एक शाम महल में विद्वानों की मजलिस बुलाई गई। इसे पलैटो अकादमी कहा जाता था। उस्ताद के साथ बैठकर दो घंटे तक ध्यानपूर्वक उनकी बातों को सुना। फिर धीरे से कहा श्रीमान्, मुझे इनमें से किसी की बात समझ में नहीं आई। उस्ताद हँसने लगा इन्हें कौन सा मारबल तराशना आता है?

वह शहर से बाहर गरीबों की बस्तियों में चला जाता। औरतों को चक्की पीसते, ताना बुनते, झाड़ू लगाते, कुर्सियां बुनते, सिलाई कढ़ाई करते हुए देखता, साथ ही वह अपने बच्चे को दूध पिला रही होतीं। ध्यान पूर्वक उसका और बच्चे का चेहरा देखता, कागज़ पर उतार लेता। ये निर्धन औरतें उससे पर्दा न करतीं, बुरा नहीं मानती थीं। उसने मेरी गोद की में यसू को दूध पीते तराशना था न। शरीर इन औरतों

और दूध पीते बच्चों के होंगे, चेहरे अपनी कल्पना से तराशेगा। जबराईल फरिश्ते ने जब मेरी को परमात्मा का संदेश दिया कि तुझ से, अविवाहित लड़की से बच्चा जन्म लेगा, उसने कोई आपत्ति व्यक्त नहीं की? ऐसा न हो उसने यह प्रार्थना नहीं की? और यसू का क्या अंजाम होगा? मेरी के मंगेतर ने संदेह क्यों नहीं किया? यदि संदेह हो जाता? यदि बच्चे सहित माँ को अपनाने से इंकार कर देता फिर? ये सब पत्थर के माध्यम से प्रकट करना होगा। मेरी को बलवान दिखाना पड़ेगा, यसू का जन्म अद्‌भुत, उसकी शहादत अद्‌भुत। ये दो दुःख माँ के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देंने चाहिए तथा दुःखों के पश्चात् शांत दिखाई दे, संसार को आशीर्वाद देती हुई। इसके लिए संगमरमर का चुनाव करना भी सरल नहीं, गज़ब का मारबल ढूंढेंगे, कहीं से भी, जितनी चाहे कीमत देनी पड़े।

काम में मस्त था, लोरैंज़ो का बेटा आया, कहा शिकार करने चले माईकल? सत्कार पूर्वक सलाम करते हुए प्रार्थना की काम में मशगूल हूँ। क्षमा करना।

- काम? सारा दिन काम? कभी आराम करने को मन नहीं करता?
- काम करते हुए मुझे आराम मिलता है श्रीमान्।
- परन्तु कभी कभी शिकार का भी आनन्द लेना चाहिए।
- मैं मारबल का शिकारी हूँ श्रीमान्।
- क्या तुम्हें पत्थर तराशना और शिकार करना एक ही जैसे लगते हैं?
- यदि बुरा न मानो तो हाँ, अपितु पत्थर तराशना शिकार से भी अधिक मनोरंजन दायक है।

शाहज़ादी आई, कहा पिछले महीने तुमने मेरे बड़े भाई और भाभी को नाराज़ कर दिया, भाभी की मूर्ति नहीं बनाई। आज छोटे को नाराज़ कर दिया। मुझे डर लग रहा है माईकल कहीं ये तुम्हें महल से दूर न कर दें। अन्दर क्या क्या होता रहता है तुझे पता नहीं। माईकल को समझ में नहीं आया क्या कहे, इसलिए छैनी और हथौड़ी की ठक ठक के अतिरिक्त कटैसिना को कुछ सुनाई नहीं दिया।

एक दिन लोरैंज़ो ने माईकल को बुलाकर पचास मोहरे देते हुए कहा जिस देश में मूर्तियाँ देखने जाना हो चले जाना। तीन मोहरे प्रत्येक सप्ताह के तेरे वेतन से अतिरिक्त हैं। धन्यवाद किया, घर की तरफ भागा, पिता के मेज़ पर ढेर लगा दिया। सारा परिवार अवाक् देखता रहा। पिता ने कहा इनसे प्लाट खरीदेंगे। बड़ा प्लाट। छोटा मकान भी मिल सकता है। शीघ्रता से और मूर्तियाँ बनाओ माईकल। ऐसे ही पैसे मिलते रहेंगे।

- परन्तु ये प्लाट खरीदने के लिए नहीं दिए पिता जी। ये तो मेरी विदेश यात्रा के लिए हैं।

- विदेश यात्रा? वह क्यों?

- ताकि घूम कर मूर्तियाँ देख सकूं।

- घूमो, मूर्तियाँ देखो और मूर्तियाँ देखकर वापिस आ जाओ? ये कैसा काम हुआ? यह तो व्यर्थ का खर्च है। प्लाट की कीमत तो बढ़नी ही है। किन्तु मेरी बात तो माननी नहीं तुमने।

पिता ने न तो शाबाश दी, न खुश हुआ, अंत में माईकल ने कहा यह आपके लिए हैं पिता जी। मैंने सैर सपाटा करने नहीं जाना। यदि जाना हुआ, तो ओर मिल जायेंगी। मोहरें संदूक में डालकर पिता ने झट से ताला लगा दिया।

पहाड़ों में पत्थर काटते श्रमिकों को देखने गया, वृक्ष के नीचे बैठकर उनके स्कैच बनाने लगा पसीने से भीग गया, जैसे पत्थर की मूर्तियाँ, पत्थर काटती हों। दोपहर हुई, उन्होंने छाया में बैठकर भोजन किया, आराम करने के लिए लेट गये, सो गये, उनके स्कैच बनाये।

एक दिन कटैसिना बाग में आकर माईकल से बातें करने लगी कहा हमारा शहर कितना सुन्दर है। माईकल ने कहा पूर्णिमा की रात को ऊँचे स्थान से कितना सुन्दर दिखाई देता है। तुमने कभी देखा है? नहीं कभी नहीं। आज शाम को महल के पीछे के दरवाज़े की तरफ आऊँगा, वहाँ से ऊँची पहाड़ी पर पहुँच कर देखेंगे। निश्चित समय पर दोनों चढ़ाई चढ़ने लगे। ऊँचे स्थान पर बैठकर शहर की सुन्दरता को देखते हुए कटैसिना ने उसके हाथ को अपने हाथ में पकड़ लिया। वापिस आ गये।

अगली सुबह जब माईकल को महल में आने के लिए कहा गया, कारण समझ गया। लोरैंज़ों को गम्भीर देखा, सलाम कर माईकल नज़रें झुका कर खड़ा हो गया।

- रात ठीक नहीं किया।
- मैं सौगन्ध उठाता हूँ मालिक, मैंने कुछ भी नहीं किया।
- तुम्हें लोगों का पता नहीं, आँधी की तरह खबर स्थान स्थान पर पहुँचती है।
- परन्तु मालिक मासूम लड़की और लड़के के विरुद्ध शहर क्यों होगा?
- तुम्हें पता नहीं, तुम अभी छोटे हो। तुम मुझे अच्छे लगते हो इसलिए कह रहा हूँ। सावधान रहना होगा। कटैसिना जवान हो रही है।

परिवार के कुछ लोगों ने लोरैंज़ो से कहा माईकल जैसा लड़का शाही परिवार में रहे, ठीक नहीं। लोरैंज़ो ने बेटी को दूर किसी रिश्तेदार के महल में भेज दिया। माईकल को समाचार मिला कि उसका पादरी भाई बीमार है। उसने मिलने की इच्छा ज़ाहिर की तो उत्तर मिला मोनास्टरी (आश्रम) में सामान्य व्यक्तियों को प्रवेश की आज्ञा नहीं है।

पादरी भाई ने स्वयं एक दिन निमंत्रण भेजा तो आश्रम में गया।

- माईकल तू महल में रहकर भी महल की अनैतिकता से सुरिक्षत है, शुक्र है।

- तुझे मेरे बारे में क्या पता है?

- महल के भीतर हो रही प्रत्येक घटना, प्रत्येक बात का पता है। साधुओं की दिव्य दृष्टि ब्रह्माण्ड देखती है। अच्छा है आगे भी बचकर रहना। कला के नाम पर शैतान अपने काम कर रहा है। आश्रम का निर्णय है कि चर्चों में मूर्तियाँ और तस्वीरें नहीं होनी चाहिएं, फादर स्वोनरोला लोरैंज़ो से खफा हैं, वही प्रत्येक बुरे काम के लिए उत्तरदायी है। विस्फोट होगा भाई, यदि स्वयं को बचा सकते हो तो बचा लो। शहर आग की लपेट में आएगा।

- परन्तु मैंने मूर्तियाँ न बनाई तो मैं मर जाऊँगा।

भाई ने कोई उत्तर नहीं दिया। चला गया।

माईकल, उस्ताद के पास गया, स्वास्थ्य ठीक नहीं था, कंबल ओढ़ कर लेटा हुआ था। माईकल ने सहारा देकर बिठाया, वाईन का गिलास दिया। उस्ताद ने कहा बुरे दिन आ रहे हैं। पादरियों ने हड़बड़ी मचा रखी है। उनकी कृपा से यदि लोरैंज़ो हार गया, आर्ट राख हो जायेगा। केवल आर्ट नहीं, पुजारियों को प्रत्येक वस्तु बुरी लग रही है। काम करते रहो, तू मेरा वारिस है माईकल। उस्ताद के अंतिम वाक्य।

महल में काम करते माईकल के पास कटैसिना आ गई।

- कब आई शाहज़ादी?

- कल, मेरी मंगनी हो गई है। अभी विवाह करना चाहते थे, मुश्किल से रोका, मैंने मिन्नतें कीं, अभी मेरी आयु कम है, एक वर्ष के लिए मान गये। उसकी आँखे भर आईं, माईकल ने दोनों हाथों से आँखों को साफ किया, शाहज़ादी ने उसके हाथों पर अपने हाथ रख दिए।

- तुम सन्तुष्ट हो कटैसिना।

- विवश हूँ। सियासत का हिसाब किताब, जोड़ घटा कर रिश्ते जोड़ते हैं यहाँ। इन्सान के वश में कुछ नहीं।

पता चला कि खतरनाक युद्ध होगा। लोरैंज़ो के पास धन, ताकत और हथियारबंद सेना थी परन्तु पुजारियों के साथ लोगों की सहानुभूति थी। लोरैंज़ो बीमार हो गया, आराम करने के लिए पाँच मील दूर गाँव में चला गया। साथ ही हकीम और पादरी चले गये। आर्ट गार्डन में रौनक न रही, कुछ कलाकार, जिन्हें सही ढंग से पत्थर तराशना नहीं आता था, काम छोड़कर पुजारियों के साथ मिल गए। कुछ सप्ताह बाद माईकल घोड़े पर बैठकर लोरैंज़ो का स्वास्थ्य पूछने गया। पादरी पाठ कर रहा था। हकीम बांह पकड़े बैठा था। समीप पहुँच सलाम किया, पूछा कैसे हो मालिक?

उत्तर मिला जैसे मरने के समय लोग होते हैं, उसी प्रकार। वसीयत लिखवाई।

- पीरो मेरा वारिस होगा। पीरो झुक गया। न्याय करना पीरो। सभी लोग खुश नहीं हुआ करते। सही मार्ग पर चलना। फलोरैंस की परम्पराओं को कायम रखना।

माईकल हैरान रह गया जब शत्रु पादरी स्वोनरोला भीतर आया।

- आपने मुझे याद किया मैडीसी के लोरैंज़ो?

- हाँ फादर। मैंने आपको फलोरैंस का चार्ज दिया था, अब अंतिम प्रार्थना आपको ही करनी होगी।

पादरी झुका, वाणी पढ़ी, अरदास करने चला गया। कुछ समय पश्चात् लोरैंज़ो भी विदा हो गया। माईकल रूक नहीं सका, उसे कौन सा किसी ने बुलाया था? स्वयं ही आया, किसी को बिना बताये, वापिस बाग में चला गया। बाग में निर्जनता का वातावरण था।

नया बादशाह पीरो, माईकल को पसंद नहीं करता था। माईकल अपने पालन कर्ता लोरैंज़ो की विशाल मूर्ति बनाना चाहता था, परन्तु अब पैसे कहाँ से आयेंगे? साथ ही पादरियों ने इंतहा ही कर रखी है, इस खानदान को समाप्त करने में लगे हुए हैं, ऐसा हो गया तो शायद फलोरैंस शहर ही छोड़ना पड़ेगा। उदास बैठे ने देखा, कटैसिना आ रही है। चेहरे पर उदासी।

- कितने दिन हो गए तू महल में नहीं आया? यहाँ बाग में प्रतिदिन आती थी।

- तुमने बुलाया होता, अवश्य आता कटैसिना। अब महल में मेरा कौन है?

- मैं कोई प्रबन्ध करूँगी।

चली गई। पाँचवें दिन आई। आँखें लाल थीं मैं कह कह कर थक गई, पीरो कोई उत्तर नहीं देता। चुप रहता है। उसकी इंकार का यही ढंग है।

- मुझे पता था कटैसिना, मुझे यह पहले से ही पता था।

एक वर्ष तक इधर उधर भटकता रहा। उसे बड़ी आयु का अपना एक पादरी मित्र याद आया। उसके पास गया, अपनी स्थिति बताई। पादरी ने कहा मैं अधिक तो कुछ कर नहीं सकता, हमें यहाँ क्रॉस चाहिए, कुछ दिनों में क्रॉस बना दो। अच्छे पैसे दे दूंगा। लकड़ी मंगवाई, औज़ार आ गये। काम शुरू किया। पुनः बाईबल पढ़ी। जब पहली कील, फिर दूसरी, फिर तीसरी, फिर चौथी कील गाढ़ी तो दर्द तो हुआ। मान लिया रूह बलवान थी, परन्तु शरीर तो शरीर ही है। अंत में ख्याल आया, अब तक के क्रॉसों में यसू को सीधा लटकते दिखाया गया है। मेरे यसू का मुख दायीं तरफ और घुटने नीचे बांयीं तरफ। दर्द के कारण ऐसा होता है। चेहरे पर दुःख और शांति, दुःख और क्षमा दोनों बनाये, दयालु आँखें बनाईं। पादरी ने अच्छे पैसे दिए, परन्तु उसे उस क्रॉस की नयी शैली से कोई मतलब नहीं था, क्या नया है, पता नहीं।

यहाँ चर्च में रहकर दिन व्यतीत कर रहा था। एक दिन महल में आने का निमंत्रण मिला, क्या कारण हो सकता है? पीरो मुझे कभी स्वीकार नहीं करेगा, यकीन है। चला गया। देखा किसी का जन्मदिन मनाया जा रहा था। सर्दी के कारण कोनो में बर्फ रखी थी। पीरो और कटैसिना मुस्करा कर उससे मिले। पीरो ने कहा तुम मेरे पिता के प्रिय कलाकार हो, आज इस खुशी के अवसर पर हरकुलीस की बर्फ की मूर्ति बना दो। माईकल के मन को आघात पहुँचा क्या इन्होंने अपमानित करने के लिए बुलाया है? अभी सोच ही रहा था कि कटैसिना सामने आकर खड़ी हो गई हम सब तेरी सहायता करेंगे, माईकल, मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो। तुम्हारे लिए तो यह साधारण सी वस्तु है। सभी खुश हो जायेंगे।

मारबल के बाद लकड़ी, लकड़ी के पश्चात् बर्फ, तत्पश्चात् केवल हवा ही रह गई। हवा की मूर्तियाँ बनायेगा? परन्तु कटैसिना कह रही है। बच्चे बर्फ लेकर आने लगे, माईकल मूर्ति बनाने लगा। दो घंटे के बाद हरकुलीस सामने खड़ा था तथा बच्चे उसके आस-पास नाचते हुए चक्कर काट रहे थे।

पीरो ने इस मूर्ति के पुरस्कार के रूप में दो सौ मोहरें देते हुए कहा यहीं आ जा माईकल, तू मेरे पिता का कलाकार हैं। सोचने लगा अन्य कोई उपाय क्या है? पीरो को कला का कुछ पता नहीं, परन्तु मेरा अन्य कोई सहारा भी तो नहीं है। देने के लिए पिता के पास गालियाँ, तानों के अतिरिक्त कुछ नहीं। हाँ कर दी। कटैसिना का विवाह समीप आ रहा था, मेहमान आ रहे थे, गीत संगीत चलता रहा, साथ ही खाना-पीना भी। शहज़ादी का विवाह इतिहास में एक यादगार बनेगा। शराब के फव्वारे चलते देखे। ग्रांसी तथा माईकल एक साथ खड़े होकर हज़ारों मेहमानों को देखते रहे।

एक दिन पिता ने घर पर बुलाया। हाल-चाल पूछा। पिता उसे उसके पादरी भाई के कमरे में ले गया और संदूक खोलकर सोने के आभूषण हाथों में उठाकर दिखाते हुए माईकल से पूछा क्या तुम्हें पता है, वह डाका मारने लगा है?पता नहीं पिता जी, वह सवोनारोला की पवित्र सेना का कप्तान है। फादर ने दिखावे पर प्रतिबन्ध लगा रखा है। जिस स्त्री ने आभूषण पहने देख लें, उसे पीटते हैं और आभूषण उतार लेते हैं। फादर इन्हें श्वेत फरिश्ते बताता हैं। इनका दल विवाह वाले घरों में जा पहुँचता है।

- परन्तु यह आभूषण यहाँ क्यों हैं? पिता ने पूछा।

- मेरे अनुमान से यह चर्च की प्रापटी है, वहाँ दे देने चाहिएं पिता जी।

फ्रांस के आठवें चालर्स ने इटली पर अधिकार करने के लिए प्रस्थान किया। पीरो से रास्ता मांगा। उसने इंकार कर दिया। सवोनरोला ने चर्च में एकत्रित असंख्य लोगों को गर्जते हुए कहा मैंने बताया था कि प्रलय आएगी और यह प्रलय पीरो वंश के पापों के कारण आएगी। चालर्स की तीस हज़ार संख्या की सेना आ रही है। पीरो के पास केवल एक हज़ार! पीरो की मूर्खता के कारण युद्ध होगा और मारे जायेंगे शहर के असंख्य लोग। तबाही होगी। लोगों ने देखा, पीरो शिकार से वापिस आ रहा था। लोग चिल्लाने लगे पकड़ लो इस पापी को! पीरो ने अपने बचाव हेतु म्यान में से तलवार निकाली और घोड़े को तेज़ दौड़ाकर महल में पहुँच गया। दरवाजा बंद हो गया। भीड़ दरवाज़े पर पहुँच गई।

- जो कोई पीरो का सिर लाएगा, उसे चार हज़ार मोहरे पुरस्कार में देंगे। पीरो का सिर ... पीरो का सिर।

पीरो ने लगातार शराब पी। लोग दरवाजा तोड़ने लगे तो परिवार के सदस्यों सहित वह पिछले दरवाजे से बाहर की तरफ भागा। भीड़ दरवाज़ा तोड़ कर भीतर आ गई। माईकल नहीं भागा। वह शांत चित्त वहीं खड़ा रहा। सभी को जानता था। अच्छे भले थे, अब जैसे कोई शैतान चिपट गया है इनसे। महान् मूर्तियों को तोड़ने लगे। वह भाग कर लोरैंज़ो की लाईब्रेरी में गया और दरवाज़ा बंद कर लिया। पागल लोग कहीं यहाँ आग ही न लगा दें। परन्तु उन्होंने खज़ाने का ताला तोड़ा और मोहरों को लूटने लगे तो एक दूसरे को मारने भी लगे। लूटमार करते हुए रात हो गई। लोग वापिस अपने घरों की ओर चले गये। अस्तबल में दो घोड़े खड़े थे, एक उनका रक्षक। माईकल ने कहा देख क्या रहे हो? यहाँ खतरा है। भाग जाते हैं। घोड़े खोलो। दोनों घोड़ों पर सवार होकर निकल गए। शहर की दीवार का पहरेदार भी भाग गया था।

बोलोना शहर में प्रवेश किया तो पुलिस ने रोक लिया, अजनबी हो? हाँ फलोरैंस से। कागज़ दिखाओ। कागज़ नहीं हैं। पचास पचास मोहरें निकालों। हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं 24

- तो फिर पचास दिनों तक जेल की हवा लो। वह अभी आगे बोलने ही वाले थे कि सीनियर अफसर आ गया। ध्यान से देखते हुए माईकल से पूछा क्या तुम बूनारोटी परिवार के सदस्य हो? सिपाहियों से कहा अरे यह फलौरैंस के कस्टम अफसर का बेटा है। सिपाही पीछे हट गये। अफसर ने कहा तुम्हें मैंने लोरैंज़ों के महल में डिनर के समय देखा था, हमने बातें भी की थीं।

- हाँ, आपने बताया था कि बोलोना में भी मूर्तिकार हैं। यही कहा था। यही देखने के लिए आपके शहर में आया हूँ। आप नहीं होते तो मूर्तियाँ देखने की अपेक्षा जेल देखते।

- आज शाम का खाना मेरे घर माईकल। शहर घूम आओ और समय पर कस्टम अफसर के घर पहुँच जाना।

शहर देखते देखते महल तक पहुँच गये। ऊँचे स्थान पर तीन मंजिल की सुन्दर इमारत ऐसी कि व्यक्ति देखता ही रहे। शाम को कस्टम आफिसर अलदोरां की कोठी में पहुँचे। अलदोरां ने बताया कल पीरो और उसका परिवार भी यहाँ से गुजरा था। स्वादिष्ट भोजन करने के पश्चात् सोने के लिए चले गये। अगले दिन खाने का निमंत्रण उसके भतीजे मारको ने दिया। शहर के विशाल चर्च में मूर्ति बनाते समय मूर्तिकार की मौत हो गई, उसके जैसा अन्य कोई नहीं मिला, काम अधूरा था। इस परिवार ने मोटी राशि तय कर काम दिलवा दिया।

फलोरैंस के समाचार मिलते रहते। चालर्स ने शहर में से शांत निकलने के लिए बारह हज़ार मोहरें ली थीं और महल में अपनी सेना की एक टुकड़ी छोड़ गया था।

एक दिन उसने निर्णय कि कटैसिना से मिला जाए। उसके महल का रास्ता एक दिन में तय होता था। घोड़े पर बैठा सोचता गया अब वह शहज़ादी से नहीं युवरानी से मिलेगा। दरबान को आने का कारण बताया। दो नौकरानियाँ भीतर ले गईं, कहा युवरानी आज कल किसी से नहीं मिलतीं, गर्भवती है। आपको आज्ञा दे दी है। खुशी से मिली, हँसते हुए कहा तुम्हारी बात सत्य हुई माईकल, मैं कई पुत्रों की माँ बनूंगी।

- परन्तु तुम खुश दिखाई नहीं दे रही युवरानी।

- ठीक है सब। आज कैसे ख्याल आया कटैसिना से मिलने का?

- आपको फलोरैंस की स्थिति का तो पता ही है। आपके चचेरे भाई पादरियों से मिल गए हैं, उनकी संस्था बनेगी, वही राज्य करेंगे। मेरे पास उनका संदेश

आया है, वह मुझे पहले वाला काम देना चाहते हैं। मैंने लौरैंज़ो का नमक खाया है। उनके प्रस्ताव को स्वीकार करना उस वंश के साथ गद्दारी करना होगा।

- वापिस जाओ माईक। मैं आज्ञा देती हूँ। मैडीसी वंश की ओर से मैंने तुम्हें आज्ञा दे दी है। पिता के साथ तुम्हारा राजनैतिक समझौता नहीं था। तू फलोरैंस के लिए और फलोरैंस तेरे लिए है। मेरे लिए नहीं रहा तो क्या? तेरी सुन्दर आँखों से मैं फलोरैंस देखूंगी। अगले दिन भेंट, सम्मान देकर विदा किया।

शहर वापिस आ गया, महल पहुँचा, उन्होंने स्वागत किया तो माईकल ने कहा यदि आज्ञा दें तो वहाँ बाग में रहना चाहता हूँ। वहाँ अधिक काम होगा, मैंने यहाँ भीतर क्या करना है? ठीक है जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। मूर्तियाँ बनाता गया, कुछ मूर्तियाँ रोमन देश खरीद कर ले गया। रोम में उसका यश फैला तो उसे महल में आने का निमंत्रण मिला। उन्होंने प्रेम के देवता क्यूपड की मूर्ति बनवानी थी। यहाँ महल से आज्ञा लेकर वहाँ चला गया। कार्डीनल रीआरीओ के महल में उसका स्वागत किया गया। रीआरीओ ने अफसरों से कहा भोजन आदि करवाने के पश्चात् महल की मूर्तियाँ दिखाओ। देखकर वापिस आया तो पूछा कैसी लगीं?

- अद्भुत नशा देने वालीं।

- इनके जैसा कुछ और हो सकता है?

- इन जैसी तो नहीं, मेरे पास एक अलग कला है जो शायद आपको पसंद आ जाये। जो सीखा है वह आपको कुछ दिनों में दिखा दूंगा।

- मुझे तुम्हारा उत्तर अच्छा लगा, विनम्रता एवं आत्मविश्वास दोनों ही हैं।

यहाँ रहकर उसने बहुत काम किया। प्रेम देवता की विशाल प्रतिमा बनाई। फिर सोमदेव की। अच्छी आमदन होने लगी। समाचार मिला कि सरकार ने पुजारी सवोनरोला एवं उसके कुछ शिष्यों को बंदी बना फांसी दे दी। बगावत के दोषी होने के कारण पोप ने उन्हें मारने का आदेश दे दिया और सरकार हरकत में आ गई।

माईकल ने बाईबल पढ़कर जानना चाहा, जब मृतक यसू को क्रॉस से उतारकर माँ मेरी के सामने रख दिया तब उसने ईश्वर से क्या कहा? कुछ लिखित प्राप्त नहीं हुआ। लिखा जाता भी कैसे? जल्लाद अपना काम समाप्त करके चले गये। माँ लाश के समीप बैठी है। देखने सुनने वाला अन्य कोई है ही नहीं जब। कोई देवता नहीं उतरा, जबरील भी नहीं आया। जो ईश्वर का ये संदेश लेकर आया था अविवाहित होते हुए भी तुम पुत्र को जन्म दोगी, यह हुक्म है, उसे तो आना चाहिए था। छोटे यसू को गोद में बिठा लेती, उठाती, चल पड़ती, जवान बेटे की लाश को कैसे उठाए? वैसे, यदि वहाँ लोग होते भी तो इस बारे में क्या लिखा सकते? दो शरीर

थे एक जीवित एक मृतक। जो जीवित है वह वास्तव में लाश बन गई है तथा मृतक जीवित है, जीवित ही रहेगा।

मेरी की आयु यद्यपि पचास वर्ष से अधिक है, परन्तु यसू की माँ है न, कंवारी माँ, इस कारण अधेड़ आयु की स्त्री नहीं बन सकती। उसकी मासूमियत कभी कम नहीं होगी। लगातार मेरी के चेहरे के स्कैच बनाता, रद्द कर देता। रोमन स्त्री पुरुषों को ध्यानपूर्वक काम करते हुए देखता, शरीर और चेहरे निरन्तर कैनवस पर उतरते रहते।

तेरह चौदह वर्षीय एक लड़का अरजींटो फलोरैंश का सिफारिश पत्र लेकर आया, कहा काम सीखना चाहता है, बताया तीन वर्ष तक काम सीख चुका है बाकी आपसे सीखूंगा, मेरे रहने, खाने-पीने और जेब का खर्च आपको देना होगा। माईकल को अपना बचपन याद आ गया मेरे जैसा ही है ये। कहा कुछ दिन काम करो फिर बतायेंगे। दो दिनों में इस लड़के ने अव्यस्थित घर को जैसे पुनः सजीव कर दिया। बहुत मेहनत करता। एक दिन एक पत्थर का कण आँख में चला गया तो उसकी चीख निकल गई। उस्ताद ने तख्तपोश पर लिटाकर हल्के गर्म पानी के बहुत छींटे मारे, परन्तु सब व्यर्थ। सारी रात माईकल उसके पास बैठकर टकोर करता रहा। अगला दिन और रात बीत गई तो रोम से प्रसिद्ध सर्जन को बुलाया गया। वह अपने साथ कबूतर लेकर आया था। कबूतर के पंख के नीचे से एक नस को काटकर रक्त की कुछ बूंदे उसकी आँख में डाली गईं। शाम को भी कबूतर लाकर ऐसे ही किया गया। सुबह लड़के ने बताया कि पथरी सरक रही है। दोपहर को निकल गई। 72 घंटे तक दोनों जागते रहे। जब पूरी तरह से ठीक हो गया तो माईकल ने कहा कुछ दिनों की छुट्टी ले लो। थक गया होगा। लड़का बहुत खुश हुआ। - इस आबादी में कहीं कोई जानवर नहीं है। मैं घोड़ा देखना चाहता हूँ। घोड़े देखकर आ जाऊँगा।

माईकल ने बड़ा ब्लाक तराशना शुरू कर दिया। गोद में जवान मृतक बेटे का सिर तथा उसके ऊपर माँ का झुका हुआ सिर। दूध पिलाते समय भी थोड़ा झुका हुआ दिखाया था। परन्तु वह सरल था। अब जो काम कर रहा है वह कठिन है, उतना भारी जितना जवान शरीर का सिर, उतना भारी जितना मरिअम का मन। ये सभी भार यदि मूर्ति में न दिखाए तो कला को धिक्कार। बेशक लाखों स्कैच बनाने पड़ें, पूर्णतः तक पहुँचने का समय आ गया है, कोई उतावलापन नहीं।

एक दिन बिशप उसका काम देखने गया। देखकर पूछा कोई विशेष कठिनाई तो नहीं आ रही?

- अधिक तो नहीं, परन्तु माँ की आयु जवान यसू से अधिक दिखाई नहीं देनी चाहिए। उसके ऊपर समय का कोई प्रभाव नहीं होगा। मेरी समय को प्रभावित रहेगी। आशीर्वाद देकर बिशप चला गया।

काम ज़्यादा था, जितने पैसे मिलते घर भेज देता। फटे लिबास, मंदी, उस्ताद तथा शार्गिद काम में मस्त रहते। क्रॉस पर यसू को दर्द का अनुभव हुआ था। माँ की गोद में उसे शांत दिखाना है। माँ का दुःख और पुत्र की शांति, ईश्वर के व्यवहार जैसी कैसे हो, पता नहीं चलता। तो भी ब्रह्माण्ड में कोई समानता तो है। मूर्ति पूरी हो गई, सारा यसू माँ के घुटनों पर। माँ का दायां हाथ उसके सिर के नीचे, यसू की टांगे माँ के बायें घुटने पर से नीचे लटकती हुईं, मसीहा का सिर थोड़ा सा पीछे की ओर ढलका हुआ, माँ का सिर नीचे की तरफ।

पादरी को समाचार पहुँचा दिया गया। पत्थर काटने वाले आठ मज़दूर बुलाये गये। मकान में जितने वस्त्र, कम्बल थे वह आस-पास लपेट दिए। ठेल पर सावधानी से मूर्ति को रखकर, धीरे-धीरे चर्च की तरफ बढ़ने लगे। हांफते, रुकते, सांस लेकर फिर से चल पड़ते। यहाँ तक तो ठीक था, अब चर्च की पैंतीस सीढ़ियाँ चढ़ना शेष था, तो क्या? उस्ताद, शार्गिद, एक दो और लोग स्वयं ही सहायता के लिए आ गए। ठिकाने पर पहुँच कर सभी ने पसीना साफ किया। माईकल ने मज़दूरी के पैसे देने चाहे। किसी ने कोई पैसा नहीं लिया, प्रत्येक ने छाती पर हाथ रखा, झुका और चला गया। सभी चले गये, माईकल बैठा अपनी सृजना देखता रहा। शाम को एक धनी परिवार आया, मूर्ति देखी, प्रशंसा की, स्त्री ने कहा ओस्टीनो ने बनाई है ऐसा प्रतीत होता है। बहुत अच्छी। पुरुष ने कहा नहीं मिलान का उस्ताद क्रस्टिोफोरो, उसके जैसा कोई नहीं। उसके हाथों में से निकला है पत्थर। उनकी बातें सुनकर माईकल अपनी वर्कशाप में से सबसे छोटी छैनी और हथौड़ी लेकर आया। मेरी के दुपट्टे के एक कोने पर छोटे अक्षरों में लिखा फलोरैंस के माईकलएंजलो बूनारोटी कृत।

रोम का कर्तव्य निभा दोनों वापिस फलोरैंस आ गये। पाँच वर्ष में शहर की काया ही बदल गई थी। उजड़े कलाकार फिर से इधर आने लगे थे। पुजारियों ने जो नुकसान किया था, मूर्तियाँ तोड़ी थीं, पेटिंगज़ को जलाया था, वह नुकसान पूरा करना होगा।

समाचार मिला कि 17 फीट ऊँचा मारबल सरकार ने शानदार मूर्ति बनाने के लिए रखा हुआ है। विगत समय में लिओनारदो द विनसी से कहा गया था तराश, उसने कहा मैं पेटिंग बनाऊँगा। पत्थर तराशना मज़दूर का काम है, मैं कलाकार हूँ। ये बात सुनकर माईकल ने हँसते हुए कहा विनसी महान आर्टिस्ट है, उसके

मुकाबले मैं मज़दूर ही हूँ, इसलिए करूँगा ये काम। गवर्नर सोदरीनी के दफ्तर में गया, विशाल कमरे में ऊँची कुर्सी पर बैठा था।

- कैसे हो कलाकार माईकलएंजलो?

- ठीक हूँ। एक काम आया हूँ।

- बताओ, सुनने के लिए ही बैठा हूँ।

- आपके कंधे मज़बूत है सोदरीनी, भारी बोझ उठा सकते हैं। यदि मुझे मारबल का बड़ा पत्थर अलाट कर दो तो शानदार डेविड बनाऊँगा, बिल्कुल प्राचीन इंजील मुताबिक।

- प्रिय कलाकार, कैसर बोरगीआ ने फलोरैंस पर आक्रमण करने का संदेश भेजा है। छत्तीस हज़ार मोहरें देकर उसको न करने के लिए मनाया।

- ब्लैकमेल, साफ ब्लैकमेल, माईकल ने कहा।

- हाँ ब्लैकमेल है। क्या करें? जिस हाथ को कुल्हाड़ी से काट कर फेंकने का मन करता हो, वही हाथ चूमना पड़ता है। करना पड़ता है ये सब। कभी पुजारी, कभी हुकुमतें, फलोरैंस को लूटती एवं उजाड़ती रही हैं। तो भी। बचना बचाना तो होगा ही। मुझे अभी अभी ब्लैकमेल किया गया है। सोचने के लिए थोड़ा समय चाहिए। कुछ करूँगा। फलोरैंसे निवासी कैसे जीवित रह सकते हैं, योजना/सोच बना रहा हूँ।

परन्तु माईकल के सामने केवल 17 फीट ऊँचा मारबल था जिससे दाऊद तराशना था। उसने बाईबल पढ़ी। किंगज़ अध्याय में सौल (Saul), दाऊद से पूछता हैमुसीबत के समय क्या करना चाहिए? दाऊद कहता है मैं अपने पिता के पशु चराता था, कभी कोई शेर या रीछ आकर किसी पशु को उठा ले जाता तो मैं उसका पीछा करता, जंगल में दूर तक उसके पीछे जाता, जब तक उसके दाँतों में से अपना पशु वापिस नहीं खींच लेता था, तब तक लड़ता, शेर हो या रीछ, मैं मार लेता था।

- बाईबल में इतना साहसी है तो चित्रकारों एवं मूर्तिकारों ने इसे इतना कोमल क्यों दर्शाया है? माईकल का दाऊद बलवान एवं साहसी होगा।

पता चला कि कंटैसिना और उसका पति किसी के घर शरणार्थी हैं। बताये गए पते पर मिलने गया। बड़ा बच्चा खेल रहा था, छोटा छह मास का गोद में था। प्रेमपूर्वक मिले, बड़े की ओर संकेत करते हुए कहा

- छह वर्ष का तो हो गया होगा?

- हाँ माईकल, छह वर्ष का।

- मैं इसका शिक्षक बनूंगा, इसे मारबल तराशना सिखाऊँगा। कंटैसिना के पति ने कहा बहुत बुरे दिन चल रहे हैं, तुम कुशल पूछने आए धन्यवाद माईकल।

माईकल ने मारबल के छोटे छोटे खिलौने बच्चे को देते हुए कहा तुम्हारे नाना के बाग में जैसे उस्ताद बरटोलडो मुझे सिखाया करता था मैं तुम्हें पत्थर तराशने सिखाऊँगा।

लिओनारदो द विनसी शानदार लिबास में अभिमानी होकर चलता एवं बाते करता था। शायद उसके भीतर का कॉमप्लैक्स कि वह सराय के स्वामी की बेटी की नाजायज़ संतान है, ऐसा करवाता हो। परन्तु सभी मानते थे कि वह गणितशास्त्र, तकनीक एवं चित्रकारी का उस्ताद था। मूर्तिकारों के प्रति उसका दृष्टिकोण निन्दनीय था, माईकल के प्रति चुभनदायक। माईकलएंजलो ने कहा उसकी टिप्पणियों का प्रत्युत्तर क्या देना, मेरा काम ही उत्तर देगा। लीओनारद ने कहा था जो मारबल माईकल को मिला है, मुझे मिल सकता था। मैंने मज़दूरों की तरह काम करना ही नहीं। यह टिप्पणी केवल माईकल के लिए ही नहीं अपितु समस्त मूर्तिकारों के लिए अपमानजनक थी। हज़ार किलो की स्लैब को बाग में पहुँचाया गया। पहले उसने मिट्टी का 16 इंच दाऊद बनाया। इस छोटे मॉडल के आधार पर बड़े की सूरत बनेगी।

कटैसिना को शहर में रहने की आज्ञा नहीं थी, वह सीमा से बाहर रहने लगी जहाँ माईकल उसके बेटे को छोटे छोटे औज़ार देकर काम सिखाने लगा। सप्ताह में दस दिन के बाद एक बार ज़रूर जाता। कहा यह लड़का होशियार बनेगा कटैसिना। कटैसिना ने कहा ईश्वर तुम्हें ऐसा ही पुत्र दे। हँस कर कहा मेरे जैसे लोगों के पास घर बसाने की न अक्ल न फुर्सत, बिल्कुल संन्यास। दाऊद मेरी संतान होगा। लम्बी आयु वाली संतान।

काम करते समय उसके पास गिलीनो आया मेरे योग्य कोई सेवा माईकल? माईकल ने कहा हाँ मित्र, एक काम तुम्हारे करने योग्य है। दो हज़ार पौंड भारी मारबल के नीचे घूमने वाला स्टैंड बना दो। रोशनी के लिए मुझे इसे घुमना होगा। लकड़ी की हल्की घोड़ी चाहिए, पन्द्रह फीट ऊँची। माईकल तथा उसका शार्गिद अरजेंटो काम में लग गये।

गर्वनर सोदरनी आया, देखा अच्छा काम हो रहा है, चार सौ मोहरें दे गया। माईकल ने हँसते हुए कहा उस दिन मैं आपके साथ पैसों की भी बात करना चाहता था परन्तु जब से यह काम करने लगा हूँ, भूल गया कि पैसे भी चाहिएं। मुझे फिर याद नहीं रहना, आप ही याद रखना, पैसे दे जाना।

गवर्नर से समाचार मिला कि लिओनारदो कैसर बोरगीआ के पास जाकर उसे फलोरिना पर आक्रमण करने के लिए कह रहा है। यह सुनकर माईकल ने कहा हरामी निकला आखिर। तभी तो धनी है। गद्दार और दलाल ऐश करेंगे।

पुराना मित्र डोनी मिलने आया, बताया कि कारोबार ठीक चल रहा है। उसने *होली फैमिली* चित्र बनाने के लिए कहा। माईकल ने कहा तुम्हें पता नहीं, वर्षो से मैंने ब्रुश छुआ तक नहीं। - तुम जब हाथ लगाओगे तो ब्रुश और रंग तेरे गुलाम हो जायेंगे। तीस मोहरे दूंगा। माईकल ने कहा चलो ठीक है, मारबल की थकान दूर करने के लिए ब्रुश चला लेता हूँ। परन्तु सौ मोहरों से कम नहीं। 70 मोहरों पर बात तय हो गई।

पेंटिंग तैयार हो गई, जवान लड़की, गोद में बच्चा, सास-ससुर, समुद्र का किनारा, चार नंगे बच्चे। देखकर डोनी चिल्लाया।

- यह क्या बनाया है? ये लड़के नंगे क्यों बनाये हैं?

- समुद्र में से नहा कर निकले हैं।

- मुझे यह कंजरखाना नहीं खरीदना।

- तुम वायदा नहीं तोड़ सकते।

- ठीक है, पैंतीस मोहरे दूंगा। यह पेटिंग मुझे पसंद नहीं है।

- इसका मतलब है कि तुमने वायदा तोड़ दिया? ठीक है। मैंने भी अपना वायदा तोड़ दिया। अब इसकी 70 मोहरें नहीं 140 मोहरें हैं। यह विवाद चल रहा था कि कटैसिना का पत्र मिला, लिखा था मुझे पता चला है कि तुमने *होली फैमिली* का चित्र बनाया है। ये मुझे चाहिए। किसी दूसरे को मत देना।

- यह पत्र पढ़ डोनी, और दफा हो जा। डोनी ने पत्र पढ़ते ही 140 मोहरें फेंकी और पेंटिंग उठाकर भाग गया, कह रहा था- लोग कहते हैं कलाकार मूर्ख होते हैं। मुझे, सफल व्यापारी को ठग लिया इस बदमाश ने। माईकल ने कहा कटैसिना के लिए दूसरी बना देंगे।

आखिर दाऊद पूर्ण हो गया। लकड़ी के फ्रेम में रस्सियों से बांधा ताकि किसी तरफ से टूट न जाये। एक मील की दूरी पर ले जाने के लिए चार दिन लगे। सारा शहर जोश में देखता रहा। पाँचवी सुबह माईकल मूर्ति के पास गया, फ्रेम पर सैंकड़ों कागज़ लटक रहे थे, पढ़े तुमने हमें हमारा सम्मान दे दिया माईकलएंजलो। फलोरैंस को तुझ पर गर्व है माईकल। कैसा शानदार मानव तराशा है माईकल। आदि आदि।

एक लिखावट जानी पहचानी देखी, लिखा था फलोरैंस के लिए जो स्वप्न मेरे पिता ने देखा था, वह पूरा हो गया माईकलएंजलो- कटैसिना। हज़ारों आँखों के दो केन्द्र बिन्दु थे, दाऊद और माईकल। राज्य की तरफ से घोषणा की गई कि माईकल के रहने के लिए घर बनाया जायेगा। धड़ाधड़ काम के आर्डर मिलने लगे।

घर बन गया। पादरी सुखी जीवन व्यतीत करने का आशीर्वाद देने आया।

मरियम की तस्वीर के आगे माथा टेका, खड़ा हो गया, दोनों हाथ माईकल के कंधों पर रखकर कहा जिस व्यक्ति का मन मासूम नहीं, पवित्र नहीं, वह ऐसी मरियम बना ही नहीं सकता। दीवार पर ये तुम्हारा मन है माईकलएंजलो। आशीर्वाद देकर चला गया।

पहले समाचार सुना कि लिओनार्दो को फलोरैंस चर्च की आधी दीवार पर बाईबल में वर्णित एक पुरातन युद्ध को चित्रित करने के लिए दस हज़ार मोहरें दी गई हैं। फिर सुना कि पेटिंग दर्शकों के लिए खोल दी गई है, लोग देख कर पागल हो रहे हैं। माईकल देखने के लिए गया... निर्विवाद, संसार की सबसे सुन्दर पेटिंग, भयंकर युद्ध, घायल घोड़े...। उसके मन में दुःख और ईर्ष्या दोनों भाव आए ... क्या अब लिओनारदो हीरो होगा? गवर्नर के पास गया श्रीमान् उस दीवार के सामने वाली दीवार का आधा भाग मुझे दे दो। आधी दीवार और दस हजार मोहरों का प्रबन्ध करो।

- परन्तु माईकल तुम स्वयं कहते थे कि तुम्हारा हाथ पेटिंग के लिए नहीं मारबल के लिए बना है। अब तुझे क्या हुआ? बच्चों के समान हठ नहीं करते, तू मारबल का उस्ताद है, लिओनार्दो ब्रुश का।

- नहीं, मैं ब्रुश का भी उतना बड़ा उस्ताद हूँ जितना मारबल का। यह देखते हुए कि कठिन काम को प्रमुखता देनी चाहिए मैंने मारबल तराशना शुरू कर दिया। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं चित्रकार नहीं हूँ। यही सिद्ध करना है कि मैं सब कुछ हूँ। चलो मान लो कि मुकाबला हो गया।

- देखो माईकल तुम मारबल का पहले से ही बड़ा काम हाथ में ले चुके हो। तुम्हारा दिमाग क्यों खराब हो गया है।

- दिमाग सही हो गया मेरा। पहले शुरू किए गए काम को समाप्त करके मैं पेटिंग शुरू करूँगा। आज तो मैं केवल अपने लिए आधी दीवार का आरक्षण करवाने आया हूँ।

- ठीक है.. ठीक है... देखेंगे क्या हो सकता है। माईकल बाज़ार गया, बड़े से बड़े लम्बे चौड़े कागज़ की जो शीट मिली, खरीदी, रंग और ब्रश भी खरीदे। सारा सामान उठाकर गवर्नर के घर ले गया। दीवार के बाहरी तरफ कागज़ चिपका कर पेंट करने लगा। पुराने समय में पीसा की सेना ने फलोरैंस पर आक्रमण किया था। मारनो दरिया में सैनिक स्नान कर रहे थे, कुछ किनारे पर लेटकर विश्राम कर रहे थे कि भागदौड़ मच गई। शोर होने लगा कि पीसा की सेना ने चढ़ाई कर दी है। अधिकांश सैनिक तो कपड़े भी नहीं पहन सके। कपड़ों की तरफ जाने की बजाय हथियार उठाकर नंगे ही घोड़ो पर सवार होकर युद्ध किया, पीसा की हार हुई। फलोरैंस को इस विजय पर सदैव गर्व रहा है। माईकल ने पेटिंग पूरी कर दी। गवर्नर को कहने

लगा, मेरा कच्चा काम देखो श्रीमान्। गर्वनर आया देखा, हैरान रह गया यह है मेरे फलौरैंस की शान। अद्भुत। मैंने तुम्हारा दिल दुखाने वाली बातें की थीं माईकल, क्षमा करना। तुम्हारे जैसा अन्य कहीं कोई नहीं। केवल तीन दिनों में यह सब। किसी भी तरह दाऊद से कम कला नही। तुम्हें आधी दीवार मिल गई। खुश रहो।

तीन महीनों में चर्च की आधी दीवार चित्रित कर दी, कहा मुझे केवल तीन हज़ार दे दो, नाम रखा, *स्नान करते सिपाही- पहले पानी में नहाये फिर खून में।* ललकार, भय, आतंक, विवशता, पौरुषत्व, हैरानी, तबाही, विजय सभी जज़्बे मुकम्मल। देखने के लिए लोगों की भीड़ जमा हो गई। माईकल ने कहा यह कार्य तो गुस्से और ईर्ष्या की उपज है, लिओनार्दो द विनसी देखेगा मेरा ब्रश कैसे चलता है, अभी भी मैं जानता हूँ कि मूर्तिकला को नज़रअंदाज कर कलाकार ब्रश उठाते हैं, परन्तु समय यही मांग कर रहा है तो फिर क्या करें। लौरैंज़ो ने जिस स्कूल ऑफ आर्ट की नींव रखी थी, उसे पुनः सक्रिय कर माईकल को डायरैक्टर नियुक्त कर दिया गया।

पोप की तरफ से रोम आने का निमंत्रण मिला। पत्र लेकर गवर्नर के पास गया, कहा मैं वहाँ जाना नहीं चाहता। मेरे यहाँ के कार्य रुक जायेंगे। गवर्नर ने कहा पोप का कहा टाल नहीं सकते। राजनैतिक तौर पर फलौरैंस के लिए विपदा खड़ी हो जायेगी। जाना पड़ेगा। यहाँ के कार्य की अवधि बढ़ा देंगे। वापस आने तक तेरा घर पूरा बन जायेगा।

पत्र लेकर रोम पहुँचा, पोप के महल में गया। अनेक प्रधान बिशप, सचिव गर्वनर, राजदूत बात करने के लिए क्रमानुसार प्रतीक्षा कर रहे थे। ऊँचे सिंहासन पर विराजमान था। माईकल ने निमंत्रण पत्र भेजा तो तुरंत बुला लिया गया। सम्मान में झुका, पोप ने कहा-

- मैंने रोम में तेरी बनाई हुई मरियम की मूर्ति देखी। तू मेरा मकबरा बना।

- कैसा श्रीमान्? मुझे थोड़ा बता दीजिए।

- कांसी ठीक रहेगी। कांसी के ऊपर अधिक से अधिक कहानियाँ चित्रित की जा सकती हैं। जन्म से लेकर अब तक, मेरी और मेरे परिवार की कहानी कांसी की पट्टी पर चित्रित करो। माईकल खामोश रहा, सोचता रहा कहानियाँ सुनाना तो मसखरे का काम होता है यह मुझे मसखरा समझते हैं?

उसने पोप का जन्म स्थान देखा, परिवार से मिला। फिर कब्रिस्तान देखा जहाँ पहले से 92 पोप दफनाए जा चुके थे, ये 93 वां पोप होगा। 36 फीट लम्बा, 30 फीट ऊँचा फ्लैटफार्म, तीन मंजिलों पर गुबंद। मारबल पर कांसी की पट्टी। फर्श से इतनी ऊँची कि कहानियाँ देखी जा सकें। ठीक है। ऊपर गुबंद के अंदरूनी भाग

में पुरातन और नई बाईबल की पेंटिंगज़ करेंगे तथा पट्टी पर पोप। पोप का ऐजेंट जैकोपो साथ साथ घूमते हुए पूछ रहा था आदम और ईव कौन बनायेगा? और पंख युक्त फरिश्ते? फरिश्ते जो पोप का ताबूत उठाकर सूर्य की तरफ उड़ते दिखाई दें, कौन करेगा इतने काम? कितने कलाकारों की आवश्यकता होगी? कितना समय लगेगा?

कानून दाता मूसा मर्द की सम्पूर्णता का प्रतिनिधि प्रथम मंज़िल के एक कोने में दिखायेगा। सामने संत पाल, चर्च निर्माता। मारबल खरीद लिया गया। काम कर रहा है, नक्शे बनाता जा रहा है, पोप ने अभी तक एक पैसा नहीं दिया। पोप के पास गया और पैसों की बात की। पोप ने कहा खत्म, सभी योजनाएँ खत्म। मुझे बड़ों ने बताया है कि जीवित होते हुए अपना मकबरा नहीं बनाते, यह अपशकुन होता है। उदास माईकल वापिस आ गया, रोमन लोगों के बारे में प्रचलित मुहावरा याद आया रोम देखने गया व्यक्ति, रोम में रहने वाले व्यक्ति से मूर्खता में किस प्रकार आगे निकल सकता है?

आने से पूर्व पोप को पत्र लिखा अत्यन्त सम्माननीय पिता, आपके आदेशानुसार मुझे महल से बाहर निकाल दिया गया, आईंदा कभी मेरी आवश्यकता हुई तो मैं रोम के बाहर मिलूंगा।

घोड़े पर सवार होकर फलोरैंस की तरफ चल पड़ा। रात हो गई, तो सराय में सो गया। सुबह आगे के सफ़र के लिए तैयार हुआ तो घोड़ों की पदचाप सुनाई दी। पोगीबंसी पाँच घुड़सवारों सहित सामने खड़ा था।

- कैसे पोगीबंसी? कहाँ जा रहे हो?
- बस तुम्हारे तक ही। पोप को पता है हम मित्र हैं, मुझसे कहा गया तुम्हे पेश करूँ।
- क्यों? पोप के साथ मेरा कोई वास्ता नहीं। मैंने नहीं जाना।
- बंदी बना लें श्रीमान्? एक सिपाही ने पूछा।
- नहीं पोप का आदेश है कठोर व्यवहार नहीं करना। माईकल, पोप को तुम्हारा पत्र उचित नहीं लगा, बस क्षमा मांग लो, सब ठीक हो जायेगा। वह तुम्हें क्षमा करना चाहता है।
- दफा हो जाओ तुम सभी। मैं नहीं जाऊँगा।

वे वापिस चले गये, माईकल फलोरैंस पहुँच गया। कुछ दिनों के पश्चात् गवर्नर का संदेश मिला, गया। गवर्नर के पास पोप का पत्र आया था, आदेश था माईकल को पेश किया जाये। माईकल ने कहा वहाँ मेरा अपमान हुआ है, क्षमा पोप मुझसे मांगेगा। गर्वनर ने कहा जोश में मत आओ माईकल। फलोरैंस पर

मुसीबत आ सकती है तेरे क्रोध के कारण। नागरिकों को इस बात का पता है। माईकल गुस्से में बाहर आ गया। अपने घर की तरफ जा रहा था तो देखा लोग, सलाम करने की बजाय उसे देख मुँह मोड़ लेते थे। दो सप्ताह बीत गये। गवर्नर हाऊस में से फिर संदेश मिला। गवर्नर ने बताया मैंने पत्र में तेरी प्रशंसा के पश्चात् लिखा कि फलोरैंस पर वह जान देता है, वह महान् कलाकार है जिसका सम्मान होना अनिवार्य है, वह हमारी सभ्यता का प्रतिनिधि है। पोप ने उत्तर में ये पत्र भेजा है। माईकल पत्र पढ़ने लगा।

- मूर्तिकार माईकलऐंजलो वैसे ही ख़फा होकर चला गया। हमने उसे वापस आकर मिलने के संदेश भेजे, उसने नहीं माने, शायद उसे ऐसा लगता है कि हम उससे नाराज़ हैं। हमें उसकी प्रतिभा का पता है हम उसके प्रशंसक हैं। उसे हमारे पास भेजो, उसके मन को चोट पहुँचाना हमारा इरादा नहीं, हमारी इच्छा उसके ऊपर रूहानी बख्शिश करने की है। पोप।

गर्वनर ने कहा अभी भी तसल्ली नहीं हुई?

- नहीं। तुर्की के सुलतान ने निमंत्रण भेजा है। तुर्की जाऊँगा। मुझे इन पाखण्डियों की परवाह नहीं।

- तुम्हें जाना होगा माईकल।

- यदि मैं न जाऊँ?

- तुम्हें सवोनरोला के समान भून दिया जाएगा। तेरे सभी ठेके रद्द।

- फिर उसके समान लाश के टुकड़े करके आग में?

- हाँ ऐसा ही होता आया है। तू फलोरैंस को संकट में मत डालो। दुनिया पर पोप का राज्य है। अन्य राजाओं का तो नाम है केवल।

गवर्नर ने माईकल की स्तुति में पोप को लिखा पत्र दिखाया माईकल आपको मिलने आएगा पूजनीय पिता। प्रेम से इस व्यक्ति से कुछ भी करवा लो। महानता यदि प्रेम मांगे तो इसमें क्या गलत है?

दुःखी हृदय से रोम पहुँच गया। मिलने वाले लोगों के साथ हॉल में बैठ गया। जब उसका नम्बर आया तो परम्परा अनुसार घुटनों के बल बैठकर, झुककर पोप की अंगुठी को चूमना होता है। ऐसा करने की अपेक्षा माईकल ने खड़े खड़े ही कहा होली फादर रोम में आपके द्वारा मुझसे जो व्यवहार किया गया उसकी मुझे उम्मीद नहीं थी।

एक पादरी शीघ्रता से खड़ा होकर कहने लगाहोली फादर कलाकारों के प्रति मेहरबानी ही उचित होती है। इनके खानदानी सलीके के बारे में कुछ पता नहीं होता।

गुस्से से गरजते हुए पोप ने कहा सलीके और कायदे तो तुम्हें सीखने होंगे। जो इसने सीखा है वो तुम सौ जन्मों में भी सीख नहीं सकते। मैंने इसे यहाँ इसलिए नहीं बुलाया कि ये सलीका सीखे, इसलिए बुलाया है कि इसे मिलने में हमारी शान है। इतने दिन क्यों नहीं आए, माईकलऐंजलो? हम बेचैन होकर तुम्हारी प्रतीक्षा करते रहे। आपका स्वागत है। खजानची! ये हमारा मेहमान है, ख्याल रखना। कोई कमी न रहे।

वापस फलोरैंस आकर गवर्नर को बताया मेरे पास तुम्हारे आने से पहले पोप का पत्र पहुँच गया। खुश रहो। किसी ने बताया, पोप कहता था इतनी शक्ति तो पेरूगीआ और बोलोना को जीतने में नहीं लगी, जितनी इस मूर्तिकार ने लगवा दी।

- परन्तु मुझे ये सारा तमाशा निरर्थक लगा श्रीमान्। कुछ फर्क पड़ा?

- फर्क? एक व्यक्ति पोप का आदेश न माने! वाह, तुम्हें इन बातों के फर्क का नहीं पता? कहीं तूफान आ जाए तो तुझ अकेले के कारण पोप की गद्दी छिन सकती है। पोप का कत्ल हो सकता है, तुम्हें राजनीति के बारे में क्या पता? तुम भी बच गए, पोप भी। पोप के विरुद्ध नफ़रत बढ़ रही है। फलोरैंस का नागरिक पोप का अपमान कर दे, फलोरैंस पर आक्रमण सम्भव है। कितने सप्ताह मैं सो नहीं सका। अब अपने घर जाओ। पूरा करवा दिया है। आराम से काम करो। किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। माईकल ने देखा अफसर और सिपाही थे। पोप की टास्क फोर्स। अब कोई और दोष लगेगा? मतलब गिरफ्तारी? अफसर ने हँसते हुए कहा तू हर समय अपमान की ही उम्मीद क्यों करता है? पोप तुम्हें प्रेम करता है, कहता है मेरा होनहार बेटा, है तो बिगड़ा हुआ, परन्तु छोड़ो, परिवार में सभी प्रकार के सदस्य होते हैं। उसने मुझे कहकर भेजा है कि किसी बात के कारण माईकल के हृदय को चोट पहुँची तो मैं क्षमा याचक हूँ। माईकल ने कहा खुलेआम अपमान करने के पश्चात् ऐसे किसी के द्वारा छिपकर क्षमायाचना करने का क्या अर्थ? अफसर ने कहादुनिया बहुत छोटी है श्रीमान्। यहाँ कोई बात छिप नहीं सकती।

फ्रांस राज्य ने आदेश नहीं माने। पोप ने सबक सीखाने के लिए फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। घोर युद्ध हुआ। फ्रांस ने पोप की सेना को खदेड़ दिया, घोड़े, अस्त्र-शस्त्र सब कुछ लुटा कर पोप वापस आ गया। माईकल का इस बात से क्या मतलब? उसे दुःख इस बात का हुआ कि एक साल से अधिक समय की मेहनत

से उसने पोप की कांसी की मूर्ति बनाई थी, उसे ढाल कर तोप बना दी गई, तोप का नाम पोप के नाम के आधार पर जूलियस रखा गया।

पराजय के इस आघात के असहनीय होने के कारण जूलियस की मृत्यु हो गई। नए पोप लीओ दशम का राज्याभिषेक हुआ, समागम में पादरियों ने दर्शकों पर मोहरों की वर्षा की। राज्याभिषेक के पश्चात् वापस आते हुए उसने अपने रिश्तेदारों से कहा बचपन के प्रारम्भिक वर्षों में मैं और माईकल सहपाठी थे। उसने अपने परामर्शदाताओं और खजानचियों से कहा माईकल से मिलो। उसे कहो यदि वे पेटिंग करना चाहता है, जहाँ करना चाहता है कर सकता है, उसे पैसे और समय की तंगी नहीं होनी चाहिए। माईकल बधाई देने गया तो पोप ने ***मास्टर ऑफ द वर्ल्ड*** की उपाधि से सम्मानित करते हुए कहा मेरा पूर्वज जूलियस युद्धों में पैसे लुटाने का शौकीन था, मैं युद्ध के विरुद्ध हूँ। मैं कला पर खर्च करूँगा। समाचार मिला कि फलोरेंस में लिओनार्दो अजीब प्रयोग कर रहा है। बुझे पहाड़ों के सुराखों और गोलाइयों को तराश कर वह उत्कल और अवतल लैंजों का प्रभाव डालती पेटिंगें बनाएगा। उसने कीलों की अपेक्षा पेचों की खोज की है जो चमत्कार से कम नहीं। कटे वृक्ष के रेशे गिनकर वह बता सकता है कि उसकी आयु कितने वर्ष की है। ये सुनकर माईकल कहता वह कितना अच्छा चित्रकार है, पेंटिंग करे, व्यर्थ की वस्तुओं पर अपना समय और शक्ति नष्ट क्यों करता है।

कटैसिना को फलोरैंस में रहने की आज्ञा मिल गई परन्तु उसका स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता रहा। उसने माईकल को मिलने के लिए संदेश भेजा। सर्दी न होते हुए भी कम्बल में लिपटी थी, कमज़ोर बाहें पीला चेहरा, नज़दीक बैठने का इशारा किया, माईकल ने उसका कमज़ोर हाथ अपने हाथ में लिया, वह बोली पहली बार बाग में मिले थे, मैंने पूछा था इतना काम करने से थकान नहीं होती माईकल?

- मैंने कहा था नहीं, पत्थर मुझे शक्ति देता है।

- मैंने कहा था जब तुम नज़दीक होते हो, मैं शक्तिशाली हो जाती हूँ।

- मैंने कहा था तुम्हें नज़दीक देखकर मैं घबरा जाता हूँ।

- जब सभी का ये मानना था कि मेरी आयु कम है तो तुमने कहा था तेरी आयु बहुत लम्बी है और तेरे कई पुत्र होंगे।

उसकी गाल थपथपाते हुए माईकल ने कहा मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। कटैसिना।

- मैं भी तुमसे प्रेम करती रही माईकल। मेरे बच्चे तुम्हारे विद्यार्थी होंगे। इतना कहते ही ज़ोर से खांसने लगी, चेहरा दूसरी तरफ कर लिया। माईकल अलविदा कहकर वापस आ गया। कुछ दिनों पश्चात् उसकी मृत्यु का समाचार मिला।

नए पोप ने टकराव पैदा करने वाला राज्य नहीं किया। माईकल के परिवार की आर्थिक सहायता की। मारटिन लूथर, पोप को ललकार रहा था, यसू मसीह के अतिरिक्त हमारा कोई धर्मगुरू नहीं है। दूसरी तरफ मैकावली अपना ग्रन्थ ***द प्रिंस*** लिख रहा था। उसके द्वारा फलोरैंस के इतिहास पर लिखे पेपर को सुनने वाले श्रोताओं में माईकल भी था। इन दिनों में गुरु नानक देव जी एशिया की यात्रा पर गए हुए थे। ये ऐशिया और यूरोप का पुनर्जागरण काल था।

90 वर्ष की आयु व्यतीत कर संसार छोड़ने से पहले पिता ने माईकल से कहा मैंने परिवार को एकता के सूत्र में बांधा। अब तुम अपने भाइयों की सहायता करते रहना। चारों नालायक भाइयों की सहायता वह करता ही रहा, स्वयं के बारे में कभी कुछ नहीं सोचा। जब भाइयों ने कहा हम मज़दूरी नहीं कर सकते तो उसने ऊन का शो रूम खरीद कर दे दिया। इस कारोबार में भी वे सफल न हो सके। माईकल खुश था, पिता की इच्छा थी कि बोनार्टी कुल का नाम ऊँचा हो, इच्छा पूरी हुई।

जब सातवें पोप कलीमैंट का निधन हुआ तब फलोरैंस का बादशाह अलैसांदरो था जो ज़ालिम और अय्याश प्रवृत्ति का था। मित्र माईकल के पास गए और कहा पोप तुम्हारा बहुत सम्मान करता है, किसी प्रकार इस क्रूर बादशाह से मुक्ति दिला दो माईकल। तुम मददगार हो। माईकल ने कहा बादशाह चालर्स पांचवें की सहायता के बिना कुछ हो नहीं सकता। शानदार वर्दी में दो गार्ड आए, कहा होली फादर आपको मिलने और आपका काम देखने आएँगे माईकल, कल सुबह।

पोप ओर उसके सेवक आए, घुटनों के बल मूसा की पेटिंग के आगे झुकते हुए पोप ने कहा एक पेंटिग ही आपको अमर रखेगी माईकल, परन्तु हम आदमी होने के कारण लोभी हैं, ***डे ऑफ जजमैंट*** भी पूरी करो।

तोमासो नामक रोमन युवक तीन वर्ष पूर्व उसे मिला था, तब उसकी आयु 22 वर्ष थी। इतना सुन्दर, लम्बा नौजवान, जैसे मारबल में से तराशा हो। मूर्ति बनाने का शौकीन था, माईकल को उस्ताद मानकर सीखने आया था। माईकल ने कहा अभी दो वर्ष रुक जाओ। मेरे पास बहुत काम है मैं तुम्हारे प्रशिक्षण की तरफ ध्यान नहीं दे सकूंगा। तीन वर्ष पश्चात् 25 वर्ष का युवक पहले से भी अधिक सुन्दर दिखने लगा था। एक दूसरे के उस्ताद शिष्य बन गए। तोमासो ने अपने उस्ताद को अपनी वर्कशाप दिखाई। उसका काम बहुत अच्छा और साफ था, समकालीन राजनीति का भी उसे ज्ञान था।

एक दिन तोमासो ने बताया बादशाह चार्लस पांचवा पोप से मिलने आएगा। पहले बीबी विटोरिया की हवेली में रुकेंगे। हम वहाँ जाएँगे।

- आप इस बीबी को जानते हो?

- हाँ उस्ताद। बहुत समय से। इनका जरनैल पति विवाह के कुछ दिनों बाद ही युद्ध में मारा गया। तब से साध्वियों जैसा जीवन व्यतीत कर रही है। कविता लिखती है। आपका सम्मान करती है। मैंने ही उसे सुझाव दिया था कि बादशाह की विजिट के समय माईकलऐंजलो को आमंत्रण देना उचित होगा। उसने खुश होते हुए मेरे द्वारा आपको रविवार को आमंत्रित किया है। इस परिवार से बादशाह के पुराने अच्छे पारिवारिक सम्बन्ध हैं। इस मिलाप द्वारा हम फलोरैंस के लिए भी कुछ करवा सकते हैं।

माईकल हवेली में गया और आधा दर्जन लोगों के बीच बैठी विटोरिया ने उठकर उसका स्वागत किया। पचास वर्षीय महिला इतनी सुन्दर होगी... माईकल देखता रह गया। नीली आँखें, सुनहरी केश, तराशे हुए नैन-नक्श, दोपहर को आँखें चुंधियाने वाला चेहरा।

- आप हमारे पुराने मित्र हो माईकल, आपकी कला ने बहुत समय पहले ही आपको इस परिवार का सदस्य बना दिया था।

- मेरे आर्ट की किस्मत मेरी किस्मत से अच्छी है।

- आपका चयन शानदार काम के लिए हुआ है माईकल।

इस मुलाकात ने माईकल को झिंझोड़ कर रख दिया, वह विटोरिया से अकेले बात करने का इच्छुक था, परन्तु वह कभी अकेली नहीं होती। कभी कभी अपनी कविताएँ भेज देती। उन कविताओं में ऐसी भावना थी जैसे पिंजरे में कोई बंद रूह इस कैद से मुक्त न होना चाहे। बाद में पता चला कि 19 वर्ष की आयु में उसका विवाह हुआ था। उसके सेनापति पति की मृत्यु किसी युद्ध में नहीं हुई, युद्ध का बहाना बनाकर वह सीमा पर चला गया। सीमा पार शत्रु से सम्पर्क रखने लगा, डबल जासूसी करने लगा तो भोजन में ज़हर देकर मार दिया, समाचार दिया गया कि युद्ध में मारा गया। विटोरिया की शायरी वास्तव में प्रेम विरुद्ध नफ़रत थी। अब माईकल की इच्छा, जो चाहे सोचे, पर वह दूसरी बार किसी पुरुष पर विश्वास नहीं करेगी। यही कारण था कि चर्च में साध्वी का जीवन व्यतीत कर रही थी। इस समय माईकल की आयु 60 वर्ष थी।

पोप ने माईकल की सुरक्षा हेतु दस्तावेज़ जारी किया माईकलऐंजलो वैटीकन का मूर्तिकार, चित्रकार और इमारतसाज़ है। उसे सारी उम्र पोप की तरफ से पैंशन मिलती रहेगी। पिछले 15 वर्ष से ये उपाधि अनटोनीओ के पास थी जो अब छीन ली गई थी। यह समय षड्यन्त्रों का था। माईकल को धमकियाँ मिलने लगीं।

बादशाह पोप से मिलने आया, पोप ने उसका भव्य स्वागत किया। बादशाह ने विटोरिया को पोप महल में आने का संदेश भेजा। विटोरिया माईकल के साथ पोप महल में पहुँची। विटोरिया आई तो माईकल के साथ परिचय करवाया, बादशाह ने खड़े होकर स्वागत करते हुए कहा आपकी कला के बारे में मुझे पता है माईकल, संसार के महान् कलाकार से आज मिला हूँ। यदि मैं कुछ कर पाऊँ तो अवश्य बताना। माईकल ने कहा हाँ श्रीमान्, आपके करने योग्य काम है, मेरे फलोरैंस को दुष्ट राजा से मुक्त करवायें।

- मैं आपकी वर्कशाप में आऊँगा, वहाँ फलोरैंस में, जिसके बारे में सुना था, उस काम को देखूंगा। जिस चर्च को चित्रकारी से सजाया था, आपने और लिओनार्दो द विंनसी ने, उसमें अपनी शहज़ादी का विवाह करूँगा। फलोरैंस का राजा पोप से डरता था। उसके लिए शहर में बादशाह का हस्तक्षेप खतरनाक था। शहज़ादी का विवाह हुआ, परन्तु उसके पति का कत्ल करवा दिया गया। माईकल को कुछ अन्य करने की क्या आवश्यकता? फलोरैंस को उस अत्याचारी से मुक्ति मिल गई। हाकिम कहीं भाग गया।

एक दिन विटोरिया ने माईकल से कहा चर्च के सुधारवादी, पोप और तुम्हारे विरुद्ध हैं। न तो उन्हें पोप की शान-शौकत पसंद है, न राजनीति में उनकी रुचि। वे तुम्हें काफिर समझते हैं माईकल, तुम्हारे चित्र उन्हें कंजरखाना प्रतीत होते हैं। यदि कहीं वे खड़े हो गए तो तुम्हें छिपकर अपनी जान बचानी होगी और तुम्हारी सभी कृतियों को नष्ट कर देंगे।

विटोरिया की कविताओं के बदले में माईकल अपनी पेंटिंगें भेज देता। *लास्ट जजमैंट* सम्पूर्ण होने वाली थी, बिना सूचना दिए पोप चर्च में आ गया, पेंटिंग को देखा, देखता ही रह गया। माईकल को आशीर्वाद दिया, घुटनों के बल बैठकर आर्ट को सजदा करते हुए कहा तेरे कारण मुझे याद करेंगे लोग, मैं तेरा अहसानमंद हूँ माईकलऐंजलो।

परन्तु आलोचक कह रहे थे चर्च में आर्ट को आधार बनाकर कुकर्म किए जा रहे हैं। पुण्य और पाप में अन्तर दिखाई नहीं देता। नग्न चित्र क्यों बनाए हैं? बीगो ने पोप से कहा वे नग्न चित्र क्या हैं होली फादर? पोप ने कहा हमने नग्न जन्म लिया। जब परमात्मा के दरबार में जाएँगे नग्न ही जाएँगे।

बीगो ने गुस्से में कहा एक दिन इन पेंटिंगों का भोग पड़ जाना है।

- मैं उसे मार दूंगा जिसने इधर-उधर अंगुलि उठाई, पोप ने कहा।

बीगो ने कहा देखो फादर इस पेटिंग में माईकल ने मेरा मज़ाक उड़ाया है, इस सांप के नैन-नक्श मेरे जैसे बना दिए, देखो इसने क्या किया है।

माईकल ने कहा तुम्हें याद तो करना ही था। यदि तुम्हें पेटिंग में नग्न दिखाता, अधिक अपमान होता। मैंने तो तुम्हारा सम्मान ही किया है।

बीगो चिल्लाया होली फादर, इसे कहो मुझे यहाँ से हटा दे।

पोप ने कहा नरक में से? नरक में से तुम्हें कौन बाहर निकालेगा? तुम्हें इसने पिंजरे में बंद किया होता, मैं मुक्त करवा देता, नरक से कौन किसे बाहर निकाल सका है?

विटोरिया का संदेश आयाआकर मिलो। माईकल गया। बताया मैं चर्च सुधार के पक्ष में हूँ माईकल। कार्डीनल ने मुझे वैटीकन से बाहर निकलने का हुक्म दिया है।

- कहाँ जाओगे आप?

- विटरबो, संत कैथरीन के आश्रम में। तेरी *लास्ट जजमैंट* देखने की इच्छा थी। पता नहीं कब देख पाऊँगी। माईकल अलविदा कहकर वापस आ गया।

25 दिसम्बर 1541, क्रिसमिस वाले दिन पोप ने *लास्ट जजमैंट* को लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया तो रोम कांप उठा। पादरियों, चित्रकारों, अफसरों और आम जनता से हॉल भरा हुआ था। माईकल ने ध्यान से देखा उसके दुश्मनों में से कोई नहीं आया था।

विरोधी जागरूक होने लगे, संत बर्नारदिनो ने पोप को लिखा जहाँ चर्च में बाईबल के भजनों का कीर्तन होता हो, वहाँ ये अश्लील तस्वीरें शर्मिंदा करती हैं।

विटोरिया ने पत्र लिखने बंद कर दिए। माईकल ने कारण पूछा, पत्र आया, यदि हमने पत्र व्यवहार बंद नहीं किया तो मुझे कैथरीन आश्रम में से और तुम्हें रोम से बाहर निकाल देंगे।

- तुम पत्थर दिल हो विटोरिया। माईकल ने लिखा।

- मैं हमदर्द हूँ माईकल। तुम्हारे सुरक्षित भविष्य के लिए चिन्तित।

- जीवन क्रूर है विटोरिया, प्रेम ही एक सहारा है व्यक्ति का।

-नहीं, माईकल प्रेम और जुल्म एक ही वस्तु के दो नाम हैं। मैंने तुम्हें इस जुल्म से बचाया है। देख रहे हो कितनी जल्दी बूढ़ी हो गई। तुम्हारा भी यही हाल होना था। तुम बचोगे, तुमने अभी और बहुत से काम करने हैं। मैंने क्या करना है? वैटीकन से क्षमा याचना करने आई हूँ कि सुधारवादियों के साथ काम करना मेरी गलती थी।

- ये तुम्हें क्या हो गया विटोरिया?

- मैं मरने से पहले और मृत्यु के बाद शांत रहना चाहती हूँ, धर्म से बगावत करके ऐसा सम्भव नहीं है। तुम्हारे मन पर कभी कोई बोझ हो, तुम भी क्षमा मांगना। मनुष्य का जन्म क्षमा याचना के लिए ही हुआ है।

- मैं कोई मूर्ख नहीं हूँ विटोरिया, जिसे किसी बात की समझ ही न हो, मैं तुमसे आयु और अनुभव में बड़ा हूँ। तुम मुझे अच्छी लगी, इसका कोई कारण नहीं। मिलने से हम दोनों के रेगिस्तान में हरियाली आ सकती थी।

- कुछ बहुत पुराने घाव को तेरे कथन ने ठीक कर दिया माईकल। अच्छा, खुदा हाफिज़। इतना कहकर आश्रम की तरफ चली गई।

माईकल अपने युवा साथी तोमासो के साथ निरन्तर काम करता रहता। कदम डगमगाने लगे, हाथ में हथौड़ी और छैनी उठा लेता तो ऐसा लगता जैसे अभी जवान हो। एक दिन पोप ने कहा संत पीटर का चर्च भी तैयार करना है माईकल। माईकल ने हँसते हुए कहा अब्राहम की तरह मेरी आयु 175 वर्ष होती तो ये भी कर देता। मेरी आयु तो देखो।

पोप ने कहा मेरी आयु 78 वर्ष है, मैं अभी ठीक हूँ, इसलिए 78 वर्ष तक तो आयु के बारे में बात मत करना।

एक दिन विटोरिया से मिलने गया, कमज़ोर दिखाई दी। बताया अब केवल साधारण काम रह गया है, संत पीटर का मकबरा।

- हाँ, ये तो साधारण सी खपरैली छत्त ही होगी माईकल, ताकि संत की कब्र पर वर्षा की बूंदे न गिर सकें।

दोनों हँसने लगे तुम्हें हँसते देख मैं बहुत खुश हूँ विटोरिया।

- हाँ माईकल, मैं खुश हूँ क्योंकि ईश्वर के साथ संयोग अब समीप आ गया है।

- तुम्हें मरना अच्छा लगता है? यानि कि जो तुम्हें प्रेम करते हैं उनको दुःख देना अच्छा काम है? आप स्वार्थी हो विटोरिया। विटोरिया ने माईकल का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा मुझे कोई भ्रम नहीं है। जब तू मुझे मिला था, उस समय भी शानदार था। मैं न भी रही तो भी तू शानदार रहेगा। मेरी उपस्थिति अनुपस्थिति तेरे लिए निरर्थक है। क्या मुझे नहीं पता मारबल के अतिरिक्त तुझे किसी से इश्क नहीं, हो ही नहीं सकता, होता, तब तुम माईकलऐंजलो कैसे होते?

सप्ताह पश्चात् समाचार मिला कि विटोरिया का स्वास्थ्य ठीक नहीं। मिलने गया। हकीम ने बताया बेहोश है। कल का सूर्य देख नहीं पाएगी। अगले दिन दफन करने के लिए गया। उसकी लाश उससे भी अधिक जवान प्रतीत हुई। वैसी ही प्रतीत हुई जैसी पहले दिन देखी थी। प्रमाण मिल गया उसे जीवन की अपेक्षा मुत्यु अधिक पसंद थी। वो बात जो माईकल को अच्छी नहीं लगी, वह ये कि

परम्परानुसार उसे अपने पति की कब्र के समीप दफनाया जाएगा... अगले संसार में ... सारे संसारों में एक साथ रहना। माईकल की इच्छा हुईइसे मेरी कब्र अर्थात् इसे मेरे समीप दफन किया जाना चाहिए था ... परन्तु यह कैसे सम्भव है?

दूर दूर से उसे ठेके मिलने लगे। नक्शे बनाकर अपने विद्यार्थियों को भेज देता, घोड़े पर सवार होकर दौरे पर जाता। निर्देश देता। पेटिंग करते करते थक जाता तो पत्थर तराशता। अपनी कब्र पर लगाने वाला क्रॉस बनाने लगा। इस पर आदम का स्वर्ग से निकाले जाना बनाना था *द फॉल।*

तबीयत ठीक न होने के कारण चिड़चिड़ाहट स्वाभाविक ही थी। एक दिन तोमासो से कहा मैं इतना झगड़ालू इस कारण हो गया हूँ क्योंकि 70-72 वर्ष की आयु हो गई है। तोमासो ने कहा नहीं, आपके बचपन के साथी ग्रांसी ने बताया, आप बचपन में भी ऐसे ही थे। सभी बहुत हँसे। माईकल ने ग्रांसी को दो तीन गालियाँ प्रसाद में दीं।

वह इन लोगों का प्रतिनिधि था जो आर्ट के दुश्मन थे। अनेक लोगों ने माईकल से कहा भाग जाओ, विरोधियों को जीवित ही आग में जला रहे हें। माईकल नहीं माना, तो क्या हुआ? जो करना है करें। माईकल को पोप ने बुलाया, कहा अफसोस माईकल, संस्था तेरे काम को कूफर मानकर मिटाना चाहती है। तेरा सारा काम खत्म।

- और लास्ट जजमैंट भी होली फादर?

- हाँ, वह भी कुफर है। ये देखो तेरे आर्ट के विरोध में पत्रों का बण्डल। साध ु, संतों और शहीदों के समीप नग्न चित्र नहीं बनाते माईकल, तुम्हें ये भी नहीं पता? ये शैतानीयत है।

- तो फिर सब कुछ खत्म?

- नहीं माईकल। दीवार रहने देंगे। पहली पेटिंगों पर सफेद रंग कर देंगे। उसके ऊपर कुछ अच्छा चित्रित कर देना। गलती किसी से भी हो सकती है। जो हो गया, वह हो गया। तुम्हें सज़ा भी हो सकती है। परन्तु हमें तेरी प्रतिभा के बारे में पता है। इसलिए रहम करते हैं।

माईकल के पक्ष के लोगों ने रोम निवासियों को समझाने की लहर प्रारम्भ की। अधिक संख्या माईकल के आर्ट को प्रेम करने वाले लोगों की थी। कुछ दिनों पश्चात् माईकल का चित्रकार मित्र डेनी आया, उत्साहित, खुश। कहने लगा बचाव हो गया माईकल। जनता तेरे पक्ष में है। नया पोप मान गया है बाकी सब तो ठीक है बस नग्न चित्रों को वस्त्र पहना दो। *लास्ट जजमैंट* सुरक्षित है माईकल।

माईकल अपनी कुर्सी पर गिर गया, कहा अब मैं सीढ़ी पर चढ़कर वस्त्र पहनाऊँ?

- नहीं माईकल। हम तुम्हें कष्ट नहीं देंगे। वस्त्र पहनाने का काम मैं कर दूंगा। मेरे पास ऐसे रंग हैं जो देखने में पक्के हैं परन्तु वास्तव में कच्चे रंग हैं। मैं कच्चे रंगों से काम कर दूंगा। ये पोप तो चार दिन के मेहमान होते हैं। तेरा आर्ट हज़ारों वर्ष तक रहेगा। तेरा महान् आर्ट तो बचाना ही है। इनकी कमर पर धोती पहना दूंगा।

- मैं सारी उम्र आदमी की सुन्दरता की तलाश करता रहा, पेंटिंग द्वारा उसे चित्रित किया, फिर मारबल में तराशा। अब ये कुरूपता बन गई है, शर्मनाक, अश्लील। अंधकार में से प्रकाश की तरफ लेकर गया था मैं मानवता को, परन्तु मानवता फिर से अंधकार में जाने की इच्छुक है, जैसी इसकी इच्छा।

- चिंता मत करो माईकल, इस पोप के मरते ही मेरे द्वारा पहनाए वस्त्र उड़ जाएँगे, एक झोंके के आते ही।

82 वर्ष की आयु में गुर्दे की पथरियों का दर्द होने लगा। एक एक घंटे तक डंक मारने वाला दर्द होता। संत पीटर के मकबरे का निर्माण वह उस सीमा तक करना चाहता था जहाँ उसके बाद कोई इमारतसाज़ उसका बुनियादी ढांचा बदल न सके। उसके ऊपर गुबंद होगा। आकाश का गुबंद धरती की सीमा को छूता प्रतीत होता है, किन्तु जैसे जैसे आप दूर होते जाओगे, सीमा पीछे हटती जाती है। ऐसा संत पीटर का गुबंद होगा, दर्शक को अनुभव होगा कि वह अनन्त है, उसकी सीमाओं तक पहुँचना असम्भव है। ये 335 फीट ऊँचा होगा।

आर्ट के दुश्मन चौथे पोप पाल की अचानक मृत्य हो गई। लोगों ने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए जुलूस निकाले। उसकी मूर्ति को तोड़कर सिर के बल गलियों में घसीटा गया और बाद में दरिया में फेंक दिया गया। अनेक कैदी, जिन्हें काफिर घोषित कर जीवित आग में जलाना था, रिहा कर दिए गए। चतुर्थ पोप पाईस को चुना गया, 62 वर्षीय ये सन्तुलित व्यक्ति कानून-शास्त्री था। विनम्रता, शांति के वातावरण की सृजना हुई, समस्त यूरोप में शांति। माईकलऐंजलो की टीम अधिक उत्साहित और कार्यशील हो गई। नए वातावरण में सृजना शक्ति वापस लौट आई।

एक दिन खड़ा होकर काम करने में मग्न था कि आँखों के आगे अंधेरा आ गया। पहले बैठा फिर लेट गया। कारीगरों ने पलंग पर लिटा दिया। आँखें खोलीं, बायीं बाजू और दायीं टांग सुन्न थीं। जब तोमासो को बुलाया तो जीभ लड़खड़ाई। तोमासो वैद्य को लेकर आ गया। बेस्वाद दवा पिलाई और कहा आराम करो, आराम सब ठीक कर देता है।

- आराम करने से बुढ़ापे का ईलाज नहीं होता डॉक्टर।

- मैं यही रहूंगा उस्ताद जब तक आप सो नहीं जाते, तोमासो ने कहा। आध ी रात उसकी आँख खुली। आसपास देखा सभी सो रहे थे। उठा, सिरदर्द खत्म, मोमबत्ती जलाई, पत्थर तराशने लगा, सुबह होते ही तोमासो अन्दर आया तो हँसते हुए कहा हे ईश्वर, मैं रात को किस हालत में छोड़कर गया था, फिर से वही ठक-ठक? आराम नहीं कर सकते उस्ताद?

- मेरी नाक के लिए मारबल की सुगन्ध, मेरे माथे के लिए मारबल की ध ूल और मेरे पैरों पर मारबल के छोटे छोटे टुकड़े दिन रात गिरते रहें तभी मुझे चैन मिलता है तोमासो। मारबल का स्पर्श न हो तो मेरी सांस घुटने लगती है।

- परन्तु हकीम ने कहा है आराम ज़रुरी है।

- अगले संसार में आराम ही आराम है तोमासो।

सारा दिन काम करते रहे। रात को भोजन के बाद सोने चले गए। उसे नींद नहीं आ रही थी। अपना क्रॉस पूरा कर लिया था, अब अपनी मूर्ति सम्पूर्ण करनी थी। टुकड़ियाँ उड़ती रहीं। अंततः पलंग पर गिर गया। जब आँखें खुलीं, कमरे में सभी कारीगर मित्र उपस्थित थे। दर्शक माईकल की मूर्ति देख रहे थे, माईकल सोच रहा था व्यक्ति चला जाता है उसका काम उसे जीवित रखता है।

उसकी इच्छा हो रही थी कि घोड़े पर सवार होकर अंतिम बार अपनी कृतियों को देखे। प्रयास किया, घोड़े पर चढ़ नहीं सका। एक एक करके लोग मिलने आने लगे, जिनको मिलने की आज्ञा नहीं मिली वे अपने उपहार, फूल, गुलदस्ते रख जाते। माईकल ने सोचा मेरे पिता 90 वर्ष की आयु में विदा हुए, उस हिसाब से मेरे अभी दो सप्ताह शेष हैं जल्दी किस बात की?

तोमासो ने पूछा घोड़े पर नहीं चढ़ पाए तो क्या हुआ? रथ में बिठाकर आपको एक चक्कर लगवा दूंगा।

माईकल ने कहा मेरा जीवन भाग्यशाली ही रहा, परमात्मा ने कभी कोई काम रुकने नहीं दिया। मैंने मारबल से प्रेम किया, रंगों को प्रेम किया। भवन निर्माण एवं शायरी में रंगा रहा। परिवार, मित्रों और ईश्वर को प्रेम किया। स्वर्ग और नरक से इतना स्नेह रहा कि पत्थरों में, रंगों में, दोनों को धरती पर उतार दिया। मैंने जीवन से इतना प्रेम किया फिर मौत को कैसे न प्यार करूँ। मेरा पहला प्रतिपालक फलोरैंस का लोरैंज़ो सन्तुष्ट है कि उसे मुझसे जो उम्मीद थी उसे मैं पूरा कर पाया, घातक शक्तियाँ ध्वंस हो गईं, सृजन शक्तियों की विजय हुई। तोमासो मुझे मेरे परिवार के साथ सांता क्रोचे में दफन करना।

- परन्तु पोप की इच्छा है आपके प्रिय संत पीटर में?

- नहीं तोमासो, आराम तो व्यक्ति को अपने परिवार में ही मिलता है। मुझे फलोरैंस में दफन करना। ठीक है तोमासो?

- ठीक है। अंतिम इच्छा उस्ताद? वसीयत?

- वसीयत? रूह ईश्वर के नाम, शरीर धरती के नाम और मेरी कृतियाँ संसार के नाम। अच्छा तोमासो। धन्यवाद। थक चुका हूँ। अब आराम करने दो।

तोमासो ने माथा चूमा। स्वयं को काबू में रखा। आँखें खाली थीं मगर खुली हुईं। बचपन से लेकर अब तक समस्त दृश्य आँखों के आगे आ गए ... पिता की, उस्तादों की डांट, कलाकारों की ईर्ष्या के साथ साथ दयालु लोरैंज़ो, कटैसिना, अच्छे बुरे बादशाह, नेक, दुष्ट पोप, विटोरिया ....अंततः संत पीटर। संत पीटर का ध्यान आते ही उसने अंतिम सांस ली, आराम से विदा हुआ।

ए. स्टोकस की पुस्तक *माईकलएंजलो, ए स्टडी इन दी नेचर ऑफ आर्ट* रुटलिज ने लंदन से 1955 में प्रकाशित की, हमने इसके 2002 के संस्करण को पढ़ा। ये पुस्तक बहुमूल्य है क्योंकि स्टोकस ने न केवल माईकल की मूर्तिकला और पेंटिंग का मूल्यांकन कला के दृष्टिकोण से किया अपितु माईकल की काव्यकला का वर्णन भी किया है। मेहनत पर कोई किन्तु परन्तु नहीं परन्तु पश्चिम दिमाग सही दिशा की तरफ जाने की अपेक्षा कामवासना की तरफ भागता है, इस पुस्तक में प्रत्यक्ष है। माईकल अपनी कविता के एक छंद में कहता है *पंख होते तो फैला कर उड़ता, तुम तक पहुँच जाता, अफसोस ऐसा नहीं है।* इसका अर्थ करते हुए स्टोकस कहता है कि ये बूढ़े माईकल की कामुक निर्बलता का प्रमाण है। पंखों के फैलाव से भाव लिंग क्षमता की तरफ संकेत है। आम पाठक शताब्दियों से लोक गीतों में पंखों का वर्णन सुनता आया है, गुरबाणी में कहा गया है

खंभ विकांदड़े जे लहां घिंना सावीं तोल।
तंनि जड़ाई आपणै लहां सु सजणु टोल। (म. 5)

(यदि पंख मोल मिल सकते तो पहन कर अपने प्रियतम को ढूंढ लेती)

इसी प्रकार स्टोकस एक कविता की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत करता है

मैं सूखी लकड़ी हूँ।
तुमसे मिलकर हरा भरा हो गया।

इसमें भी उसे कामवासना दिखाई देती है। सूखी लकड़ी, उसमें प्राण, अर्थात् कामवासना। पंजाबी श्रोते पूर्ण भक्त सिंह के किस्से निरन्तर सुनते रहे हैं। पूर्ण भक्त सिंह के स्यालकोट में आने का समाचार सुना तो माँ इच्छरां के सूखे बाग हरे हो गए। यहाँ अवचेतन में कहीं भी काम भावना उत्पन्न नहीं हुई। लूणा, काम का चिह्न होने

के कारण पंजाबी मन को पसंद नहीं। पश्चिम इसी दिशा की तरफ बढ़ रहा है जिसमें स्टोकस लगातार उलझ रहा है।

माईकल 6 वर्ष का था जब 1481 में उसकी माँ का देहान्त हो गया। शिष्य कंडिवी ने माईकल के जीवित रहते ही उसकी जीवनी को 1553 में प्रकाशित करवाया जिसमें लिखा है माईकल बताता था कि सेतिआनो आबादी में जिस स्त्री ने मेरी माँ की मृत्यु के पश्चात् मेरी परवरिश की, वह मूर्तिकार की बेटी और मूर्तिकार की पत्नी थी। उसका पिलाया दूध पिया, उसके द्वारा बनाया भोजन किया, इस कारण मेरी नसों में छैनी हथौड़े की आवाज़ों का आना जाना कोई अद्भुत बात नहीं।

माईकल ने 73 वर्ष की आयु में अपने भतीजे को पत्र लिखा अपने गाँव के पादरी से कहना कि पते पर मेरा नाम माईकलएंजलो मूर्तिकार न लिखा करे। मेरा नाम माईकलएंजलो बूनारोटी है। (बूनारोटी उसका खानदान था, जैसे कोई कहे मैं संधावालिया हूँ, मैं सय्यद हूँ, आदि... ।) साथ ही उसे कहना मैं भाड़े पर काम नहीं करता, तीन पोपो के साथ इस कारण काम किया क्योंकि उनका सम्मान करता था। मैं इस पादरी के लिए कोई काम नहीं करूँगा। मैं अपने वंश की गुम हो गई प्रतिष्ठा को पुनः सजीव करूँगा।

उसने अपने भाई को लिखा, "पता चला है कि रोम में तुमने फिजूल खर्च किया है। तेरी आमदन तो इतनी नहीं, फिर दिखावा किस लिए? मेरे सिर पर? तुम्हें इस बात का नहीं पता मैं किन हालात में तुम्हें पैसे भेजता हूँ। उसके भतीजे ने एक बार लिखा कि जितने पैसे तुम भेजते हो उसमें हमारा निर्वाह नहीं होता। माईकल ने उत्तर दिया तुम्हें यहाँ भागकर पैसे मांगने के लिए रोम आने की क्या आवश्यकता थी? आकर देख मेरी हालत। मेरे पास पैसे हों भी, और मैं तुम्हें देने चाहूँ, यदि स्वाभिमानी हो, तुम्हें नहीं लेने चाहिए। परन्तु तू तो है ही दीमक। मेरे हालात देखकर तुम्हे कहना चाहिए था चाचा तुम खुद अच्छा खाओ, पहनो, हम अपना निर्वाह स्वयं करेंगे, बहुत ले लिया आपसे। गाँव में मेरे हिस्से की ज़मीन पर तुम लोगों का कब्जा है, मैंने कभी दावा नहीं किया। स्टेट ने मुझे फलोरैंस में नया घर दे दिया, तुम लोगों ने उस पर कब्जा कर लिया। अब रोम में मेरा पीछा नहीं छोड़ते। और मुझे देने के लिए तुम लोगों के पास एक शब्द भी नहीं है।

महल की आन्तरिक गतिविधियों के बारे पता चलते ही अपने घर संदेश भेज देता जल्दी यहाँ से निकल जाओ। जान बचनी चाहिए। धन दौलत के लोभ में यहाँ बैठे मत रहना। धन मैं भेज दूंगा। व्यक्ति की कीमत होती है, पैसे की नहीं। मेरे लिए एक तरफ सारे संसार को सोना हो और दूसरी तरफ तुम सब, मेरे लिए ये अधिक कीमती है।

दो भाईयों और पिता की मृत्यु के पश्चात् अपने भाई को लिखा भाई के साथ प्रेम, पिता के लिए कर्त्तव्य निभाए। भाई ऐसा था जैसे कैनवस पर पेंटिंग। पिता मेरी यादों में तराशी गई मूर्ति के समान है, हृदय के बिल्कुल मध्य में पुरातन पत्थर जैसा, पहले किसी ने इसे तराशा अब ये मुझे तराशने लगा है, अर्थात् सज़ा भोगी और सज़ा दी। अगले संसार में हम दोनों एक दूसरे से प्रेम करेंगे। जैसा भी था, अच्छा था, उसके कारण गाँव आता था। अब मैं कभी गाँव नहीं आऊँगा।

बचपन के प्रतिपालक लोरैंज़ो के बेटे ने पोप की उपाधि संभाली, उसने माईकल की अपेक्षा रेफिल को प्रमुख इमारतसाज नियुक्त किया। जब पूछा गया कि माईकल में क्या कमी है? रेफिल की आँखें भर आईं। कहा वह मेरा भाई है। हम दोनों की परवरिश महल में एक साथ हुई। परन्तु वह डरा देता है, पोप को भी।

अपने मित्र फट्टुकी को काव्यसंग्रह भेजते हुए लिखा पढ़कर तुम्हें ऐसा लगेगा जैसे माईकल बूढ़ा हो गया है, पागल हो गया है। एक दिन मेरी बात मानोगे कि होश में आने के लिए, सन्तुलन बनाये रखने के लिए, पागलपन से अच्छा दूसरा कोई मार्ग नहीं।

एक प्रशंसक ने कुछ ज़्यादा ही प्रशंसा की तो उत्तर दिया गरीब और लाचार व्यक्ति चाहता है कि ईश्वर ने जो गुण दिया, उस में समस्त जीवन समर्पित कर अधिक से अधिक समय तक आर्ट को लम्बा कर सकूं।

स्टोकस की ये टिप्पणी सार्थक है आर्ट पदार्थक धन नहीं है, ये उम्मीद का नाम है। समस्त सुखों के होते हुए भी यदि मन निराश हो गया तो जीवन खत्म। आर्टिस्ट का विश्वास है कि उसका घर स्तम्भों, दीवारों के सहारे पर नहीं अपितु कोयल की कूक के कारण स्थिर है।

माईकल ने लिखा

मैंने मृत्यु की पहाड़ी पर जीवन व्यतीत किया। जिसे पता नहीं बेचैनी और मृत्यु के बीच कैसे जीवित रहते हैं, उस आग में छलांग लगाकर देखें जिसने मुझे राख कर दिया।

उसकी कविता की पंक्तियाँ हैं

तेरी तस्वीर मेरे मन पर हमेशा छाई रही
अब, जब मौत करीब है, अपने नैन नक्श मेरी आत्मा पर बना दे।
क्रॉस जैसे दैत्यों से बचाता है, तेरी तस्वीर मेरी रूह का बचाव है।
स्वर्ग में पहुँच कर तेरी तस्वीर मैं देवताओं को सौंप दूंगा
और कहूंगा इसे फिर से धरती पर भेजकर उदास मानवता का भला करो।

सात वर्षीय बच्चे शलीमान (Schliemann) ने घोषणा की कि वह ट्राय

(Troy) ढूंढेगा, चालीस वर्ष तक खोजता रहा, ट्राय मिल गया, यदि वह फैसला करता कि पत्थर तराशेगा तो माईकलएंजलो बन जाता।

उसकी कविता में वर्णित इश्क आग है, किसी को राख बना रहा, किसी को शुद्ध कर रहा। कवि को रोशनी की अपेक्षा ताप अधिक प्रिय है-

तेरी आग में जलकर यदि मैं भस्म नहीं हुआ तो इसमें आग का क्या दोष? मैं पूर्ण नहीं, फिर तेरे लघु अंश को प्रेम किया। यदि छोटा भाग ही बनना है तो फिर मैं बाज़ बनूंगा, जो सूर्य की आँख में आँख डालकर देखता है, जो सूर्य को पंजों में पकड़ने के लिए उसकी तरफ उड़ान भरता है। आग, पत्थर को चूना बना देती है, इसी तरह मेरे पत्थर दिल को मोम बना दो। मैं आँख की पुतली हूँ और तुम रोशनी हो। रोशनी दुश्मन है, शांत रात इतनी शांत कि जुगनू उसे घायल करता रहे तो भी गुस्सा नहीं करती। रात शांति देती है, नींद देती है, मनमोहक स्वप्न देती है, फिर स्वयं को जुगनूओं से क्यों नहीं बचाती?

पेंटिंग और मारबल में उसका कला सम्बन्धी दृष्टिकोण स्पष्ट है, कविता में अनेक स्थानों पर स्पष्ट नहीं

कविता की बंदिश अद्भुत है परन्तु कविता में वर्णित ख्याल स्पष्ट नहीं, यही कविता की प्राप्ति है क्योंकि कविता ख्याल नहीं प्रभाव का सृजन करती है।

स्टोकस का कहना है कि सुन्दर इतालवी बंदिश का उसने साधारण वाक्य में अनुवाद पढ़ा है। उत्तम कविता का उत्तम अनुवाद नहीं हो सकता। फिर भी रूपक, कवि का संदेश पहुँचाने में समर्थ हो जाता है। कवि को पता नहीं चलता कि प्रेम ने उसे बर्फ के समान स्थिर कर दिया है या आग में जला दिया है।

कोई उच्चकोटि का आशिक है या शायर, इसका पता उसकी बेखबरी बताएगी। कवि कहता है

यदि मैं समझदार होता, चेतन होता, फिर मैं जीवित नहीं रह पाता, ये बात भी पता नहीं कि मैं जीवित हूँ या मृत, चेतन हूँ या जड़। मैं नहीं, कोई अन्य ये निर्णय करे।

प्रश्न करता है *कुदरत सुन्दरता और अत्याचार को एक ही पंजाली में क्यों जोतती है जबकि दोनों का कोई सम्बन्ध नहीं। दुःख और मधुरता मेरे हृदय में एक साथ प्रवेश क्यों करते हैं? यदि कोई मुझसे कहे दोनों में से किसका त्याग करना है? बिना सोचे मैं कहूंगा मधुरता का। वियोग चिरकालिक है, जिसकी आयु लम्बी हो, उसके साथ मित्रता उचित होगी।*

कहता है *दुःख का कारण ये है कि मैं धरती से भी प्रेम करता हूँ, आकाश से भी। जो केवल एक से प्रेम करते हैं वे सुखी रहते हैं। धरती से प्रेम करने वाले*

सफल सांसारिक लोग हैं। ईश्वर को प्रेम करके फकीर सन्तुष्ट हैं। मैं कहीं का नहीं। एक तरफ हो जाता, ये मुझे बहुत पहले निर्णय लेना चाहिए था। परन्तु ये निर्णय करवाता कौन है, उसके बारे तो पता चले?

इसी उलझन में जब उसके बाज़ की आकृति उभरती है जो धरती पर बैठा सूर्य के साथ आँख मिलाता है, फिर पंजों में जकड़ने के लिए सूर्य की तरफ उड़ जाता है। पाठक समझ रहा है, इस बाज़ का नाम माईकलएंजलो है।

उसकी पंक्ति है *तुम्हें धोखा नहीं मिला, पराजय नहीं देखी, मतलब कि तुमने खेल नहीं खेला मित्र। पराजित लोगों के कदम छू, तुमसे अधिक बड़े हैं। जो ये समझ रहा है कि सब कुछ मिल गया, वह बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार है। समझदार वह जो ये जान गया कि कुछ नहीं मिला। मुझसे सहानुभूति करके मुझे घायल मत करो, आपके द्वारा भेजी सहायता मुझे शर्मिंदा करती है। सांत्वना देकर मुझे लूटो मत, मेरे पास शेष बचा ही क्या है?*

विटोरिया को याद करते हुए लिखता है *सुन्दरता वह पत्थर है जो मेरे सिर पर लगा। इस पत्थर का निर्माण मेरे कत्ल के लिए ही हुआ था। आग ने पत्थर को चूना बना दिया। मेरे आसूंओं से ये चूना गीला हो जाएगा। अब ये अन्य पत्थरों को जोड़ने के काम आएगा। इश्क के भार ने मुझे दबा लिया। इस दुःख से बचने के लिए मैं कभी रंगों की तरफ भागता हूँ कभी छैनी और हथौड़ी ढूंढता हूँ। रोम की महान् दीवारों पर मैं अपने दुःख के निशान छोड़ जाऊँगा।*

एक अन्य कविता में *जब से तुम्हें जाना तब से मैं स्वयं से प्रेम करने लगा हूँ, मुझे लगा, मैं भी कुछ हूँ, जैसे तराशा हुआ पत्थर अतराशे पत्थर से अलग हो जाए। जैसे चित्रित पृष्ठ अचित्रित से अलग दिखाई दे। तेरी छैनी और हथौड़ी ने मुझे नैन नक्श दे दिए। अब मेरी कीमत पड़ सकती है। तेरे घाव दुःखदायी प्रतीत होते हैं, अब पता चला तेरी छैनी के घावों के कारण लोग मेरी तरफ सिर झुका कर निकल जाते हैं। मैं जादुई शक्तियों से ऐसा हथियारबंद बना हुआ हूँ कि पानी, आग मुझे मिटा नहीं सकेंगे, तेरा नाम लेकर मैं अंधों को दृष्टि दे सकूंगा, तेरा नाम लेकर अपने होंठो से संसार का विष पी लूंगा।*

विटोरिया की याद में लिखा *मैं मिट्टी का खाली सांचा हूँ जिसमें सोने को ढाल कर डाला गया। सांचा तोड़ने पर शानदार मूर्ति निकलेगी। मुझे इस बात का शिकवा नहीं कि सांचा क्यों तोड़ा? ढले सोने को रूप दे गया, और सांचे का क्या करना था? मेरे इश्क की आग ने सोने को ढाला, मिट्टी के सांचे को सोना मिला, सोने को रूप मिला, तुम और मैं सम्पूर्ण हुए। आँखों द्वारा तुम मेरे भीतर उतरी। आहों और आसूओं द्वारा बचकर थोड़ा बाहर गई, तू मेरे भीतर है और रहेंगी।*

मैंने पत्थरों को अपने पीछे चलना सीखाया, मैंने लाश को बोलना सीखाया। फरिश्तों को मैं आकाश से धरती पर उतार लेता हूँ, परन्तु तू खून और मांस हैं, हममें से है एक, तुझमें कितनी सम्भावनाएँ हैं, तुम्हें क्या पता।

- मेरी दृष्टि तेरे वजूद में से पार हो जाती है परन्तु मेरे पैर एक इंच आगे नहीं बढ़ते। जहाँ आत्मा पहुँच सकती है, शरीर नहीं जा सकता। जो चल न पाए वह मृत है। मेरा शरीर केवल आँख होता, मैं सम्पूर्ण हो जाता।

कोई मित्र मिलने आता, माईकल की आँखों में आंसू आ जाते परन्तु शीघ्र ही व्याकुल हो जाता, खड़ा होकर कहता मेरा बहुत काम बाकी है, अधिक बातें नहीं कर सकता। मित्र भोजन पर आमंत्रित करते, विनम्रता से इंकार करता, कहता केवल काम नहीं, ये देखो, दर्जनों शिक्षार्थी मेरे चेहरे की तरफ, हाथों की तरफ देखते रहते हैं, इनका समय भी मूल्यवान है, मेरे अधूरे काम ये लोग ही पूरे करेंगे। क्षमा याचना करता।

क्रोचे का कथन है माईकलएंजलो बड़ा कवि नहीं परन्तु उसकी कविता में हमें महान् माईकलएंजलो दिखाई देता है।

वान गाग
(30.03.1853 - 27.7.1890)

"उठो वान, सुबह हो गई," उरसुल ने कहा। चाय दे गई, माँ का पत्र दे गई। उरसुल की विधवा माँ ने छोटा नर्सरी स्कूल खोल रखा था। लड़की 19 वर्षीय, सुन्दर और पतली थी, चुलबुली। वान इस घर में किरायेदार था। सैकंडरी पास करके तस्वीरें बेचने वाली कम्पनी गूपलज़ में नौकरी करने लगा। ये लड़की उसे बहुत अच्छी लगती। वान 22 वर्ष का हो गया था और पाँच पौंड सप्ताह की नौकरी। उसने निर्णय किया कि उरसुल से बात करेगा। फैसला तो अनेक बार करता, परन्तु बात करने का साहस नहीं होता था। अनेक तस्वीरें बहुत सुन्दर लगतीं, परन्तु खरीददार मूर्ख होते हैं। एक दिन एक दम्पत्ति पेटिंग खरीदने आया। पुरुष को एक दृश्य बहुत सुन्दर लगा, स्त्री ने कहा परन्तु इसमें यह कुत्ता बिल्कुल वैसा है जिसने मुझे काटा था। दफा करो इसे।

उरसुल के लिए वान एक सुन्दर पेंटिंग खरीद कर लाया। दोनों ने मिलकर उसे दीवार पर लगाया, लड़की ने चहकते हुए कहा इतनी सुन्दर पेंटिंग बनाने वाला व्यक्ति कितना सुन्दर होगा वान! आधा घंटा पेंटिंग लटकाने में लग गया परन्तु वान से कोई बात नहीं हुई। उरसुल माँ के पास जाने के लिए निकली तो वान ने पीछे से आवाज़ दी उरसुल! उरसुल रुक गई। वान के हाथ कांपने लगे। उरसुल ने कहा ठण्ड है वान, भीतर चलें। वान ने तो कोई बात करनी थी, वह भीतर क्यों जाता? नहीं उरसुल, भीतर नहीं जाना, तुमसे बात करनी है। - क्या बात करनी है वान? वान ने कहा वैसे तो तुम्हें पता ही है कि क्या बात करनी है मुझे। उरसुल तुम मुझे पसंद हो, मैं तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में देखना चाहता हूँ।

- तुम्हारी पत्नी वान? यह कैसे हो सकता है? असम्भव। एक वर्ष पूर्व मेरी सगाई हो चुकी है।

- किसके साथ?

- वही, क्या तुम मेरे मंगेतर से कभी मिले नहीं? क्या मैंने तेरे साथ कभी बात नहीं की? जिस कमरे में तुम रह रहे हो, इसी में रहता था वह। मैंने सोचा तुम्हें पता है।

- परन्तु उरसुल मैं तुमसे प्यार करने लगा हूँ।

- इसमें मेरा क्या दोष? मैंने तुम्हें केवल अपना मित्र माना है।

- जब से मैं इस कमरे में आया हूँ, वह कभी आया?

- नहीं, एक वर्ष हो गया उसे वेलज़ गये। इन गर्मियों की छुट्टियों में मिलने आयेगा।

- परन्तु वर्ष में तो तुम उसे भूल गयी होगी? वान ने अचानक उरसुल को आलिंगन में लिया और चूमा। स्वयं को छुड़ाकर उरसुल तेज़ कदमों से गई, फिर रुक कर कहा लाल मुँह वाला मूर्ख।

फिर कभी उरसुल ने उसे चाय नहीं दी, न ही नाशते के समय दिखाई देती। वह चुपचाप कम्पनी की दुकान में चला जाता परन्तु ग्राहकों के प्रति उसका व्यवहार कठोर हो गया था। शाम को घर आया तो, देखा माँ बेटी धीरे-धीरे बातें कर रहीं थीं, उसके आने पर खामोश हो गईं। उसके साथ पहले जैसा व्यवहार नहीं रहा।

एक शाम उसने उरसुल को अकेले बगीचे में खड़े देखा, पास गया, कहा मुझे अफसोस है उरसुल, मैंने उस दिन तुम्हारे साथ बदतमीज़ी की। उरसुल ने कहा छोड़ो इस बात को। भूल जाओ।

- परन्तु मैंने जो कहा था उरसुल, वह दिल से कहा था, सच कहा था।

- परन्तु अब, दोहराने का क्या लाभ?

- मैं जानता हूँ उरसुल, उस लड़के से तुम प्रेम कर ही नहीं सकती।

- वान तुमने छुट्टियों में घर कब जाना है?

- जुलाई में।

- ठीक हुआ। जुलाई में ही उसने आना है। तुम्हारे कमरे में ही रहेगा।

- परन्तु मैंने कौन सा कमरा खाली किया है?

- करना पड़ेगा। ये कमरा मुझे चाहिए। तुम अपना सामान बेशक साथ ले जाओ, बेशक कहीं और रखो। अब तुझे जाना होगा। यदि नहीं जाओगे तो माँ तुम्हें जाने के लिए कहेगी।

घर जाने के लिए गाड़ी में सवार हो गया। पिता थिओडर स्टेशर पर पुत्र को लेने आया हुआ था। वह पादरी था, शानदार सफेद लिबास पहनता। गिरजे के साथ सुन्दर बाग में माता-पिता के रहने के लिए कोठी बनी हुई थी। माँ ऐना करनोलिया और छोटा भाई थीओ। शांत वातावरण। माँ ने बेटे को छाती से लगाया-मेरा विनसैंट। माँ नेक औरत थी, उसे लगता दुनिया में कोई इंसान बुरा नहीं। पिता इसके विपरीत, उसे सारा संसार चोरों ठगों से भरा दिखाई देता।

दो दिनों में ही माँ को लगने लगा कि वान ठीक नहीं है। कमज़ोर भी दिखाई देता है, बातें करते करते कहीं ओर ही चला जाता है।

- तू ठीक है वान? माँ ने पूछा। पिता ने कहा यदि लंदन में तुम्हारा मन नहीं लगता तो मैं तुम्हारी बदली पैरिस में करवा देता हूँ।

- नहीं, कोई बात नहीं, वान ने कहा। ठीक है लंदन।

पिता ने कहा वान, मेरे पिता भी पादरी थे। मेरा मन करता है तुम पादरी बनो, बहुत सम्मान मिलता है। परन्तु इतनी सख्त मेहनत कौन करे? तुम पढ़ने से कतराते हो। ऐमसटर्डम में तुम्हारा चाचा रहता है। मैंने उससे बात की थी। यदि तुम पढ़ना चाहो, तो वह तुम्हारी सहायता करेगा।

- नहीं, अभी मैंने नौकरी नहीं छोड़नी।

छुट्टिया खत्म होने पर वान जाने के लिए तैयार हो गया। माँ ने पूछा उसी पते पर पत्र लिखूं वान?

वान ने कहा नहीं। मैं अब घर बदलूंगा।

- ठीक है वान। मैं उस परिवार को जानती हूँ तेरे मकान मालिकों को। वे लोग ठीक नहीं। उनके रहस्यों को कोई नहीं जानता। वान वह लड़की भी ठीक नहीं। तुम्हारा बहुत अच्छी डच्च लड़की से विवाह करेंगे।

वान हैरान होता हुआ गाड़ी में चढ़ गया माँ कैसे पता चला इन बातों का?

लंदन पहुँच कर उसने कोई दूसरा कमरा किराये पर लिया जो उरसुल के घर से अधिक दूर नहीं था। उस तरफ जाने के लिए बेचैन रहता। दुकान पर मन न लगता। ग्राहकों के प्रति उसका व्यवहार ठीक नहीं था। मैनेजर ने एक दो बार डांटा भी। वान ने कहा मेरा मन नहीं करता कि मूर्ख लोगों की कमाई को लूटता रहूं। देखो तो कितने बेकार चित्रों की मुँहमांगी कीमत देने को तैयार हो जाते हैं।

- मैनेजर ने कहा मैं मालिक से कहूंगा तुम्हारी बदली कर दें। जिसे जो चीज़ अच्छी लगेगी वही खरीदेगा क्या अब तेरी मर्ज़ी चलेगी? हद हो गई।

सर्दियों का मौसम था। वान उरसुल की गली में से जा रहा था, देखा परिवार क्रिसमिस मनाने की तैयारी कर रहा था। नज़दीक जाने से पता चला कि पार्टी हो रही है। बहुत ही शोर, हँसी-मज़ाक। शीघ्रता से घर गया, शेव की, सूट पहना ओर उरसुल के घर की तरफ गया। घंटी बजाई। उरसुल ने दरवाज़ा खोला, हरा गाऊन पहना हुआ, बहुत ही सुन्दर लग रही थी।

वान ने कहा उरसुल।

- चले जाओ यहाँ से तुरंत। कहकर फटाक से दरवाज़ा बंद कर दिया।

लंदन और नौकरी छोड़ने का फैसला करके वान घर वापिस आ गया। आकर पिता से कहा आपकी इच्छानुसार धार्मिक विद्या ग्रहण करूँगा। पिता ने खुश होकर ऐमसटर्डम भेज दिया जहाँ उसे दाखिला मिल गया। कठिन पाठों के रट्टे लगाता, चर्च के रस्मों-रिवाज़ सीखता। एक रविवार सभी काम खत्म कर लंदन जाने

के लिए गाड़ी में बैठ गया। उरसुल की गली में जाकर देखा ....रौनक ही रौनक। उसने पड़ोसी से पूछा उधर क्यों शोर शराबा हो रहा है? बताया

- उरसुल का विवाह है। ये बातें हो रही थीं कि उरसुल अपने पति का हाथ पकड़े बग्घी में सवार होने के लिए दरवाज़े से बाहर आई। वान खामोश एक तरफ हो गया।

वान का चाचा नेवी में अफसर पद से रिटायर्ड हुआ था। बच्चे अपने अपने व्यवसाय में लगे बाहर रहते थे। बड़े घर में आराम से दिन व्यतीत कर रहा था। किसी दिन वर्दी पहन लेता तो बहुत रोब होता, एक दिन मौसा स्टरिकर आया कहने लगा, तुम्हें लातीनी और यूनानी सिखाने के लिए मैंने कुशल शिक्षक को ढूंढ लिया है वान, सोमवार को वहाँ लेकर जाऊँगा। कल रविवार दोपहर का खाना हमारे घर। तेरी मौसी और हमारी गुड़िया तुम्हें याद करती रहती हैं। ठीक?

- मासी और कज़िन को मेरा सलाम कहना अंकल, वान ने कहा।

मौसा का घर बड़ा और शानदार था। घर के साथ नदी बहती थी, पटड़ी पर मीलों तक वृक्षों की पंक्ति। बातें करते हुए एक पतली लड़की बाहर आई और कहा तुम मुझे नहीं जानते वान, मैं तुम्हारी कज़िन हूँ के। देख 26 वर्ष की होकर तुम्हें मिली, और तुम ..... तुम.....? मैं 24 वर्ष का हूँ। मौसी ने मुझे अनेक बार पत्र द्वारा कहा था वान कि तुमसे मिलने आऊँ। बस, आज कल करते करते ये समय आ गया। वान को उसकी बातें अच्छी लगीं।

- राबां तुम्हे देख लेता तो बहुत अच्छी तस्वीर बनाता।

- कहाँ, वह तो कुरूप स्त्रियों के चेहरे बनाता बनाता मर गया।

- नहीं के, तुम्हें उसकी कला का ज्ञान नहीं, उसकी सभी पेंटिगें सुन्दर स्त्रियों की थीं जिनके चेहरों पर दुःख और शोक होता था। वह आन्तरिक पीड़ा कर बाह्य अभिव्यक्ति में समर्थ था।

तभी एक युवक आया, के ने बताया ये मेरा पिता है वास, और वास ये मेरा कज़िन वान है। सभी भोजन करने के लिए अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठ गये।

शाम को वापिस पहुँच कर पढ़ना शुरू किया। पढ़ाई कठिन थी परन्तु वान साहस छोड़ने वाला नहीं था। आधी रात तक दीया जलता रहता।

कुछ सप्ताह के लिए चाचा को कहीं जाना था। एक शाम मौसी के घर गया। सभी खुशी से मिले, कहा जब तक तुम्हारा चाचा वापिस नहीं आता, शाम का भोजन हमारे साथ किया करो और रविवार को सभी इक्ट्ठे रहेंगे। भोजन के पश्चात् सभी ताश खेलने लगे। वान को ताश खेलना नहीं आता था, वह किताब लेकर बैठ गया।

एक दिन चाचा उसे गरीब बस्तियों की तरफ ले गया देखो वान, ये इतने गरीब हैं कि बीमार हो जाने पर दवाई के लिए पैसे नहीं होते, छोटी सी झोंपड़ी में सभी एक साथ, कोई प्राईवेसी नहीं। आज कठिन मेहनत करेंगे तो कल रोटी मिलेगी। ईश्वर की आवश्यकता इन्हें अधिक है। हमारी तरफ के उच्च लोगों के लिए ईश्वर धनी बूढ़ा है जो आराम से पाईप पीता रहता है दुनिया की चिन्ता करने के लिए उसके पास समय नहीं।

- यानि कि धनी लोग बकवासी होते हैं? वान ने कहा।

- मैंने यह बात नहीं कही वान, चाचा ने कहा।

- मैंने कही है अंकल, यह बात तो मैंने कही है।

वान को लंदन में देखी गरीब बस्तियाँ याद आ गईं। कितनी सख्त ज़िन्दगी। यहाँ अमीर चर्चों में पादरी धनियों को यसू की, ईश्वर की बातें सुनाता है। यह बातें हौसला देती हैं। परन्तु धनिकों को हौसले की आवश्यकता नहीं। ये बाते तो महान् लोगों ने निर्धनों के लिए लिखी हैं। धनिकों के लिए बाईबल मनोरंजन का साधन है।

एक सुबह चाचा ने कहा नौकर ने बताया वान, तुम सारी रात नहीं सोते। सुबह चार बजे तक तेरी लालटैन जलती रहती है।

- हाँ अंकल, पास होना होगा।

- कितने घंटे पढ़ते हो?

- बीस घंटे औसतन। - परन्तु तेरे माता-पिता ने मुझे ये भी कहा कि तेरा ख्याल रखूं।

- परन्तु अंकल पास तो होना है न। नींद, आराम, हमदर्दी, खुशी के बिना काम चल सकता है। ईश्वर की इच्छा को व्यवहार में लाने के लिए सख्ती तो करनी होगी अंकल।

चाचा ये सोचता हुआ चला गया कि वान गाग का परिवार कभी असफल नहीं होता। वान के दिमाग में एक विचार निरन्तर क्रियाशील रहताअल्जबरा के सवाल, जमैटरी के त्रिकोण, लातीनी, यूनानी की ग्रामर व्यक्ति के दुःख कैसे दूर करेंगे? गंवार, बीमार, उदास, दिशाहीन, दीन मानवता को शायद मेरी आवश्यकता हो। उसने अपने शिक्षकों से कहा मेरा मन फील्ड कार्य करने का है। तीन मास के पश्चात् पीटरसन ने कहा तुझे बैलजियम भेजकर देखते हैं कि क्या करोगे।

बाकी बच्चे रट्टा लगाते। अध्यापक जब कहता यह चर्च है, बच्चो, प्रभु के वचन सुनाओ, प्रवचन सुनाओ। बच्चे बिना रुके पाठ सुना देते। वान के पास शब्द न होते, रुक रुक कर बोलता, मन से कहता, परन्तु यहाँ भावना की आवश्यकता

नहीं है, शीघ्र वाक्य उच्चारण करना आना चाहिए। अध्यापक गुस्से में कहता वान इतनी ही है तैयारी तुम्हारी? तुम्हारा क्या होगा? बाकी बच्चों को पास करके भिन्न भिन्न स्थानों पर चर्च में भेज दिया गया। वान अभी इस योग्य नहीं हुआ था। उसके मन में तूफान उठने लगा तो उसने यह कहकर रोका यसू तूफानों में शांत रहता है। मैं अकेला नहीं हूँ। मेरे साथ ईश्वर है।

एक दिन अध्यापक पादरी पीटरसन ने कहा आज मेरे घर भोजन करने आना वान। वान ने धन्यवाद करते हुए हाँ कर दी। भोजन करते समय पादरी ने कहा बैंलजियम के दक्षिण तरफ खान मज़दूरों की बस्ती है वान। बहुत गरीब हैं। कठिन परिश्रम के पश्चात् भी पूरी रोटी के लिए पैसे नहीं मिलते। ईश्वर की उन्हें अधिक आवश्यकता है। इस स्थान का नाम बोरनेज है। यदि तुम वहाँ चले जाओ?

वान ने कहा चयन कमेटी ने तो मुझे अयोग्य कहा है। पादरी ने कहा मैं प्रबन्ध करूँगा। तुम जाकर काम शुरू करो। कमेटी को सहमत कर मैं नियुक्ति पत्र भिजवा दूंगा। मुझे विश्वास है वान, तुम्हारा स्वभाव मुझे पता है, तुम सफल होगे, चयन कमेटी को तुम्हें अयोग्य मानने के अपने फैसले पर एक दिन पश्चात्ताप होगा। जहाँ मैं तुम्हें भेज रहा हूँ, वहाँ के लोगों को तुम्हारी आवश्यकता है। ईश्वर सहायक होगा।

बताए हुए स्थान पर वान पहुँच गया। रेलगाड़ी में से ऊँचे ऊँचे काले पहाड़ देखे। साथ बैठे व्यक्ति से पूछा ये काले क्यों हैं? उसने बताया इस आबादी में कोयले की खाने हैं। बेकार कोयला, बची हुई राख इनके ऊपर फेंकते रहते हैं, वह देखो, एक ट्राली काली केरी गिरा कर नीचे की ओर आ रही है। राख को ढेर पर फेंका है, गर्दगुबार का काला बादल छा रहा है। मैं पचास वर्षो से इन पहाड़ों को ऊँचे होते देखता रहा हूँ।

वान बस्ती में पहुँचा। झोंपड़ियों के रूप में टूटे फूटे घर थे, परन्तु इतना सन्नाटा क्यों है? कोई व्यक्ति यहाँ दिखाई नहीं दे रहा। कोई कोई स्त्री देखी जिसके होंठ सूखे हुए थे, उदास चेहरा, खाली आँखों वाली। एक मकान की हालत कुछ ठीक थी। यह घर बेकरी के मालिक डैनिस का था। वान इस घर में गया। डैनिस ने बताया कि तुम्हारे अध्यापक का पत्र आ गया था। भोजन करवाया। रहने के लिए एक छोटा सा कमरा दे दिया।

दिन बीतने पर बिलों में से निकलने वालें कीड़ों की तरह मज़दूर बाहर निकलते, घरों की तरफ जाते देखे। धीरे धीरे वान को पता चला कि ये खाने बहुत खतरनाक हैं। काम करने के लिए उतरते-चढ़ते समय, गैस द्वारा, विस्फोट से, पानी में डूबकर, दीवारें गिरने से अनेकों मज़दूर मरते हैं। आठों पहर ऊँची चिमनियों से

काला धुँआ निकलता है। धुएँ के कारण वृक्ष सूख गये थे। चारों तरफ उजाड़ वातावरण। इस आबादी को काला गाँव कहा जाता था। सारा दिन नीचे अंधेरे में काम करके मज़दूर बाहर निकलते तो आँखें रोशनी से चौंधिया जाती, पानी निकलता रहता। सात सौ मीटर गहरे पाताल में सारा दिन छिपकर काम करना होता। पैंतीस वर्ष तक व्यक्तियों के फेफड़े ठीक रहते बाद में बुरा हाल।

शाम को डैनिस ने घर पर फोरमैन जैक को भोजन पर आमंत्रित किया। उसने बताया माँ ने थोड़ा बहुत पढ़ना लिखना सीखा दिया था जिस कारण कंपनी में मुझे हाजरी लगाने का सरल काम दे दिया। बस रोटी मिल जाती है। यह कहते कहते खांसी शुरू हो गई जो बहुत देर तक न रुकी।

अगले दिन जैक आया और कहा आओ वान आबादी देंखे। एक झोंपड़ी के दरवाज़े पर दस्तक दी, कमज़ोर स्त्री ने दरवाज़ा खोला। तीन बच्चे कम्बल में लिपटे बैठे थे। चारपाई के नीचे बकरी बैठी थी। एक कोने में खरगोशों ने सुराख बना रखा था। कच्चा फर्श, छत्त पर काई। एक छोटा सा स्टैंड पाँच सात बर्तन। 26 वर्ष की आयु में ही वह बूढ़ी हो गई थी। कहा कितने दिनों बाद आए हो जैक। तुम्हारा और तुम्हारे मित्र का स्वागत। स्त्री का पति देकरू शेखी मारता था मुझे कुछ नहीं होगा। मैं बूढ़ा होकर आराम से चारपाई पर मरूँगा। देख लेना। खान गिरने से उसके साथ के 29 मज़दूर दबकर मर गये, पाँच दिन बाद अकेला जीवित निकला। टाँग टूट गई थी। तो भी सारा काम करता। उसने कहा देख वान गाग, हम गुलाम नहीं, हम तो जानवर हैं। आठ नौ वर्ष के बच्चे काम करने लगते। चौदह चौदह घंटे काम करते। दोपहर के समय रोटी खाने के लिए केवल 15 मिनट का समय। वेतन में से यदि अठन्नी काट लें, हम भूखें मर जायेंगे। यदि मर गये तो फिर काम कैसे चलेंगे? इसलिए मरने तो नहीं देंगे, परन्तु हमारा जीना भी देख। बीमार होने पर दवाई नहीं मिलेगी, इंसान कुत्ते की मौत मरते हैं, उनके बच्चे भिखारी बन जाते हैं। आठ वर्ष की आयु में काम शुरू, 32 वर्ष लगातार मेहनत करने के बाद औसतन चालीस वर्ष की आयु में मौत। केवल रविवार के दिन सूर्य देखते हैं।

बेकरी के पीछे का भाग साफ कर वान ने फट्टे रख लिए और रविवार के प्रवचन सुनने के लिए झोंपड़ियों में संदेश भेजा। तीस चालीस बड़े छोटे आ गये। सभी ने ठण्ड से बचने के लिए अपने हाथ बगल में दबा रखे थे। वान ने बाईबल खोली पढ़ी रात को पाल ने एक दृश्य देखा, ***मकदूनीयां*** का एक व्यक्ति खड़ा होकर उससे कहने लगा हमारी बाँह पकड़ने के लिए मकदूनीयां आ पाल। इस बस्ती के मज़दूरों जैसे ही हैं मकदूनीयां के बाशिंदे। ईश्वर निर्धनों पर रहम करता है।

अय्याश व्यक्तियों को दण्ड मिलेगा। अंतिम दिनों में तुम सभी बख्श दिये जाओगे। स्वर्ग की हुकुमत मिलेगी।

दिन में बीमारों का हाल-चाल पूछता, प्रार्थना करता। उसने देखा कि ठण्ड से कांप रहे हैं, कपड़े नहीं है, मैंने इतने कपड़े क्या करने हैं? ज़रूरतमंद लोगों में बांटता जाता। उसने घूमते हुए एक दिन एक बड़ा-सा अस्तबल खाली देखा। कोई उसका प्रयोग नहीं करता था। उसने इसे गिरजाघर बना लिया। सौ व्यक्ति आराम से बैठ सकते थे।

एक दिन उसे फादर पीटरसन का पत्र मिला। लिखा था प्रिय वान, पता चला तुम अच्छा काम कर रहे हो। हमने तुझे छह मास यानि जून तक काम पर रख लिया है। प्रति मास तुझे 50 फ्रांक मिलते रहेंगे।

वान बहुत खुश हुआ। चलो अपना खर्च तो अब आराम से निकलेगा ही इसमें से अच्छी अच्छी दवाईयाँ भी खरीद सकता हूँ मरीज़ों के लिए। पिता को पत्र द्वारा ये शुभ समाचार दिया। शाम को चार से आठ वर्षीय बच्चों को पढ़ाने लगा। गिरजाघर में ही कक्षा लगाता।

स्त्रियों का एक समूह जा रहा था। रास्ते में वान आ गया, सभी ने सलाम किया। वान ने पूछा कहाँ जा रही हो? बताया कोयला चुनने। बेकार कहकर जो कोयला फेंक दिया जाता है उसमें से हम अपने लिए कुछ चुन लेती हैं। हमारे साथ आओ, तुम्हें बतायेंगी कि कौन या कोयला जलाने के योग्य होता है। तुम्हें भी तो आग की आवश्यकता होगी। वान उनके साथ चल पड़ा। स्त्रियों ने भिन्न भिन्न रंगों के कोयले दिखाकर कहा इस रंग का कोयला ठीक है, अन्य बेकार। अब शीघ्रता से अपनी अपनी टोकरियाँ भरो। कुछ दिनों पश्चात् वान के चेहरे पर काली रेखायें दिखाई देने लगीं। आबादी में किसी घर में साबुन नहीं था, न दुकान में था। वान को इसकी चिन्ता नहीं। वह इन लोगों में इनके जैसा बनकर ही रहना चाहता था। जैक ने कहा तुम्हें लगता है तुम हमें जान गये हो? तुमने धरती के ऊपर का जीवन देखा है। किसी दिन ज़मीन के नीचे लेकर जाऊँगा, फिर देखना।

रविवार को गिरजा पूरा भर गया। वान ने उपदेश दिया हम अजनबी हैं परन्तु अकेले नहीं हैं। हमारा पिता हमारे पास है। धरती सराय है। धीरे धीरे हम सभी ने इस सराय को छोड़कर अपने घर स्वर्ग चले जाना है। खुशियों की महफिल से दूर रहो। जिन्होंने यसू पर विश्वास किया उन्हें पता है कि प्रत्येक दुःख में उम्मीद का निवास होता है। अंधेरे में से प्रकाश तक का मार्ग मिलेगा। हम अरदास करते हैं पिता, न दुःख मिले न ही अय्याशी। जितनी भूख है उतना भोजन दे केवल। आमीन। काले मुख वाली संगत ने दोहराया आमीन।

एक सुबह जैक ने वान से कहा नीचे चलेंगे। प्रत्येक श्रमिक के पास अपनी अपनी सुरक्षा लालटेन होती है जिस पर एक नम्बर लगा होता है। जब कोई दुर्घटना घटित होती है, तब गुम हुई लालटेन के नम्बर से पता चलता है कि किस मज़दूर की मृत्यु हुई है। चार लोग एक पिंजरे में बैठ गये। पिंजरे ने आधा मील से अधिक का सफ़र तय करके नीचे जाना था। पिंजरा अंधकार में से नीचे उतरने लगा तो वान डर गया। उसने पूछा तुम्हें तो आदत पड़ गई है जैक, तुम्हें डर नहीं लगता? जैक ने कहा 33 वर्ष से उतरता आ रहा हूँ तो भी रीढ़ की हड्डी डर से कांप जाती है। कोई आदत नहीं पड़ी। नीचे पहुँच कर पिंजरे से बाहर निकले। ऊपर देखा आकाश एक छोटे सुराख में से तारे के समान दिखाई दे रहा था। आस-पास पानी टपक रहा था। घुटनों के बल बैठकर मज़दूर कोयला खोद रहे थे, छोटी छोटी रेहड़ियों को भरा जा रहा था।

वान ने पूछा इतनी सख्त मेहनत, खतरनाक काम, कंपनी इतनी कम तनख्वाह क्यों देती है? जैक ने कहा मालिक मज़बूर हैं। मुकाबला कठिन और अधिक है। अन्य कंपनियों के पास बढ़िया मशीनरी है। हम मालिकों को तनख्वाह बढ़ाने के लिए कहते ही नहीं क्योंकि फैक्टरी बंद होने का भय है। अधिक काम करके ही मरना ठीक है नहीं हो भूखे मर जायेंगे। यहाँ हड़ताल नहीं हो सकती। मालिक भी अधिक धनी नहीं हैं। छोटी छोटी लालटेनें इधर उधर झूल रही थीं। कभी कभी गैस आग पकड़ लेती है, धमाका होता है, सभी दुःख समाप्त।

वान छह घंटे तक कुम्भ नरक देखता रहा, बिना काम किए ही उसे पसीना आता रहा। मज़दूर खांसते, थूकते, काला थूक, काला धुँआ। वान को दुःखी देखकर जैक ने कहा यही हमारा जीवन है। प्रत्येक सुबह मौत के जबड़े में फंसना। मल्लाह जानते हैं एक दिन तूफान घेर कर रहेगा। फिर कौन सा नावें चलाना छोड़ते हैं।

सप्ताह मास बीतते गये। एक दिन जैक के घर गया। मैडम और बच्चे ठण्ड से कांप रहे थे। मैडम ने कहा एक कम्बल देकर बिठा देती हूँ। बैठे रहते हैं। यदि चलेंगे घूमेंगे नहीं तो बढ़ेंगे कैसे? वान अपने कमरे में गया। अपना बचा हुआ एक कम्बल उन्हें दे गया। वापिस आकर सोचने लगा साथ की झोपड़ी में एक मरीज़ ज़मीन पर लेटा हुआ तड़प रहा है। मुझे चारपाई क्या करनी है? चारपाई उसे चाहिए। यदि मैं मक्कार नहीं, यदि मैं यकीनन ईश्वर का बंदा हूँ, तो इन वस्तुओं के हकदार अन्य लोग हैं। उसने डैनिस का कमरा छोड़कर एक छोटा सा सस्ता कमरा किराये पर ले लिया। एक दिन मिसेज डैनिस आई, देखा, गद्दे की बजाय वान ने ज़मीन पर घास-फूस बिछा रखा है। गर्म कपड़े गायब हैं, कहा, वान होश संभालो होश। ये यसू मसीह का ज़माना नहीं है। मर जाओगे ऐसे तो। सभी को पता है तुम

नेक, हमदर्द हो, तुम्हारे जैसा व्यक्ति नहीं मरना चाहिए। तुम हमारे लिए उम्मीद बनकर आये हो।

एक दिन कंपनी का मालिक आया, वान, उससे मिला, श्रमिकों की स्थिति में सुधार करने के लिए कहा। मालिक ने कहा पैसा ब्याज पर मिलता है। मुकाबले का ज़माना है। हमारा कोयला अधिक अच्छा नहीं हैं। परन्तु बेचना तो फिर भी है। यदि काम करने के घंटे कम कर दिये जाएं तो मतलब तनख्वाह बढ़ाना ही होगा। ऐक्सीडेंट कम करने के लिए खर्च की आवश्यकता है। पैसा नहीं। कभी कभी तो कंपनी बंद करने के बारे में सोचता हूँ। परन्तु यह सोच कर कांपने लगता हूँ कि सैंकड़ों घर भूखे मर जायेंगे। मेरी बात का बुरा मत मानना वान। मैं कैथोलिक हूँ। अब मैं दिन प्रतिदिन नास्तिक होता जा रहा हूँ। हमारी यह स्थिति है तो ईश्वर क्या करता है फिर? ईश्वर का हमने क्या करना है?

एक दिन सोचने लगा बच्चों को पढ़ाने में समय नष्ट करता हूँ। क्या काम आयेगी पढ़ाई? बच्चों के साथ मिलकर झोपड़ियों में जलाने के लिए कोयला इक्ट्ठा किया जाये? काले लोगों के साथ काम करते करते दिन प्रतिदिन उसकी त्वचा काली होती गई। ठण्ड के कारण कोई अंग नीला हो जाता कोई काला। जो तनखाह मिलती उसमें से कुछ रखकर बाकी पैसों का अनिवार्य सामान जैसे दवाईयाँ, मलहम, पेन किलर आदि लाकर बांट देता। मरीज़ों को गर्म पानी से स्नान करवा देता। स्वयं का खाना-पीना, पहनना भूल जाता, परिणाम कमज़ोरी, बुखार, आँखें अन्दर धंस गई थीं। डैकरू के तीन बच्चों में से एक को टायफाईड हो गया। वान अपना आखिरी कम्बल उसके लिए ले आया तो डैकरू ने कहा तीन में से एक मर गया, दो तो रह जायेंगे। हमारी सारी बस्ती में केवल एक पादरी है, संसार में केवल एक नेक व्यक्ति, वह है वान, वान नहीं मरना चाहिए।

मैडम डैनिस को पता लगा, तेज़ कदमों से आई, कहा हमारे घर आ जाओ वान। बेकरी में वही छोटा कमरा खाली है। कोई किराया नहीं। हम जो खायेंगे तुम भी खा लेना। तुम बताते तो हो प्रभु के सभी बच्चे भाई हैं। वान ने इंकार कर दिया। मैडम जबरदस्ती एक कम्बल दे गई।

अप्रैल शुरू हो गया, सर्दी कम हो गई। बुखार उतर गया। स्त्रियाँ कोयला चुनने के लिए पहाड़ियों पर चढ़ने लगीं, बच्चे खेलने के लिए गलियों में आ गये। वान ने गिरजा की संगत से कहा ईश्वर ने परीक्षा ली, पास हो गये। दुःख कम होंगे। सूर्य निकलेगा, फसलें पक जायेगीं। बच्चे पक्षियों के पीछे भागेंगे। ईश्वर दयालु है, न्याय प्रिय है। तुम विश्वास रखो, उसका फल मिलेगा, अच्छे दिन आयेंगे।

अगले दिन शाम को वान ने देखा, छोटे बड़े सभी खान की तरफ भाग रहे हैं? क्या हुआ? एक लड़के ने बताया एक्सीडैंट। खान में कोई एक्सीडैंट होता है तो ऐसे ही भागदौड़ मचती है। पता चला, साठ लोग दब कर मर गये जिसमें दस वर्ष के लड़के-लड़कियाँ भी हैं। अनगिनत मौतें। चारों तरफ विलाप, हाहाकार। ईश्वर ने ये क्या कर दिया?

बारह दिन लाशें प्राप्त करने में लग गये, व्यर्थ। कोई नहीं मिली। थककर फोरमैन कहने लगे, क्यों व्यर्थ में प्रयास करें? बाहर निकाल कर भी तो दफन करने थे। हो गये स्वयं ही दफन। धैर्य रखो। बारह दिन काम नहीं हुआ, बारह दिनों की तनखाह नहीं मिलेगी। वान साठ लोगों के संस्कार हेतु प्रार्थना कर अपनी झोंपड़ी में आया, पूरी तरह से टूटा हुआ, दुःखी। दरवाज़े पर दस्तक हुई। दो पादरी रैवरंड यां और रैवरंड बरिंक भीतर आए, वान के रिज़कदाता, जिन्होंने वान को छह महीनों की नौकरी दी थी। वान को देखकर कहा अफसोस! दुःखदायक। वान ने सोचा ये मृत मज़दूरों के लिए शोक प्रकट कर रहे हैं, इसलिए कहा आप भी बिछुड़ी रूहों के लिए प्रार्थना करो फादर।

"क्या हमने तुझे जंगली अफ्रीका में छोड़ा था वान? यहाँ क्या कर रहे हो इन गंवार लोगों में? इन्हें क्या पता ईसाईयत क्या होती है? सारी उम्र नहीं जान सकेंगे। तू इस घास-फूस पर कैसे लेटा हुआ है? तेरे कपड़े, हे ईश्वर, ये पादरी है? हमारा नियुक्त किया हुआ? तभी तो तुझे छह मास के लिए नियुक्त किया था। अब तेरी छुट्टी, बस बहुत हो गया। पागल व्यक्ति चर्च की जिम्मेवारी कैसे निभा सकता है? चर्च का अपमान हुआ है। इन कुत्तों में रह रहा था तू? एक पादरी ने अपने साथी से कहा क्यों समय नष्ट करना फादर, यहाँ तो अपने ठहरने के लिए अच्छा होटल भी नहीं है। शीघ्र ही वापिस चला जाये ताकि अपने ठिकाने पर जल्दी पहुँच सकें।

अगले दिन सुबह मज़दूर वान के पास आये, कहा जैक वरनी, हमारा सलाहकार हमेशा के लिए दब कर मज़दूरों के साथ ईश्वर के पास चला गया है। उसके बाद अब तू है जिसका कहा माना करेंगे। बताओं काम पर जायें या भूख से मर जायें? वान ने कहा काम। वापिस काम पर जाओ।

वान सोचने लगा, फैक्टरी के मालिक दोषी नहीं है, ईश्वर दोषी है। अब बाईबल के उपदेश इन्हें क्या देंगे। ईश्वर अंधा, बहरा हो गया है। यदि वह मेरी, एक पादरी की प्रार्थना नहीं सुनता, फिर इन मज़दूरों की बात कैसे सुनेगा? ईश्वर की बात करनी बकवास है। अच्छा हुआ मुझे पादरी की जिम्मेवारी से मुक्त कर गये और मैं धोखा करने से बच गया। मान लो वह आकर मुझे मार दें, मैं ये डयूटी नहीं करूँगा।

कहाँ है ईश्वर? डरे हुए, हारे हुए, अंधेरे में टक्करें मारते, रोते, भूखे लोग... दुःख, रुदन, विलाप, बीमारी, अत्याचार के शिकार। बड़ा दुःख, व्यापक शोक।

उसे समाचार मिला कि के के पति का अचानक देहांत हो गया। वान को किसी बात का इतना दुःख नहीं था जितना ईश्वर के गुम जाने का। भाई थीओ ने पत्र लिखना छोड़ दिया था। संसार में वह अकेला रह गया। मज़दूरों के घरों में जाना छोड़ दिया, कोई आता जाता सलाम कर देता, कोई नहीं करता। इस आबादी से कोई स्नेह हो गया हो, ऐसी कोई बात नहीं परन्तु अब जाए तो कहाँ?

पुनः सर्दी ऋतु आ गई। पुस्तकें पढ़ता रहता। महान् शख्सीयतों की विजय पराजय पढ़नें में रुचि थी। पिता पत्रों के माध्यम से पूछता जीवन में क्या करना है, क्या बनने के बारे में सोचा? वह क्या उत्तर देता? उसे क्या पता था क्या बनना है? कभी पिता कभी थीओ, पैसे भेजते रहते।

एक दिन उसने देखा, ज़मीन पर लोहे के बड़े पहिए पर एक बूढ़ा बैठा था। वान की जेब में पैंसिल थी और पिता के पत्र की एक तरफ खाली। उसने खाली कागज़ पर उस बूढ़े का चित्र बना दिया। दूर एक मज़दूर खड़ा दिखाई दिया। काले मज़दूर के पीछे काले पर्वत। दूसरा स्कैच बना दिया। देखा, ठीक बने थे। डैनिस के घर में बहुत से नए खाली कागज़ रखे थे। सभी उठा लाया। पैंसिल और रबड़ दोनों काम लगी रहतीं। उसके चेहरे की चमक वापिस आने लगी, शायद उसे काम मिल गया। कभी समय था जब वह तस्वीरें बेचा करता था। उस समय वह रांबरां, सिल्ले, जूल और मारी आदि चित्रकारों से मिला करता। उसे लंदन और ऐमसटडर्म की पेटिंग याद आईं। कैनवस, ब्रश, रंग याद आए और इन्हें याद करता हुआ वह सो गया।

सुबह जल्दी आँख खुल गई। स्नान किया, कागज़ पैंसिल उठाई और कल देखे लोहे के पहिए पर बैठकर खान में उतरते मज़दूरों को देखता हुआ स्कैच बनाने लगा। पैदल चलता हुआ 12 मील दूर एक कस्बे में रंग, पैंसिल, ब्रश लेने के लिए गया। एक दुकान जिसमें पेंटिंग ही पेंटिंग रखी थीं, उसके भीतर गया। एक एक तस्वीर को देर तक देखता रहा। अंत में जाते समय दुकानदार से कहा पैसे, मेरे पास यदि पैसे होते, मैं कोई पेंटिंग खरीदता। दुकानदान ने कहा पैसे न हो तो भी आया करो श्रीमान्। खरीदने वाले भी आ जायेंगे। पहले देखने वाले तो आयें।

अगले दिन कोयला चुन रही स्त्रियों के स्कैच बनाये। शाम को भोजन करने के बाद मैडम डैनिस से कहा थोड़ी देर बैठ जाओ। कुछ समय। वह बैठ गई। चित्र देखकर मैडम ने खुश होते हुए कहा मुझे पता नहीं था वान तू चित्रकार भी हैं। कमाल है। वान ने कहा कहाँ, बस खुश हो लेता हूँ बिना मतलब। दिल को सांत्वना। - परन्तु ये ठीक है, ये तो मैं ही बैठी हूँ कागज़ पर। सभी हँसने लगे। हाथ

में बाईबल पकड़ कर घूमने की अपेक्षा गरीबों की बस्ती में कागज़ कलम लेकर घूमना अच्छा है। खेलते बच्चों के स्कैच, भोजन बनाती स्त्रियों के चित्र। मज़दूर खुश हो जाते, आखिर वान उनका ही है, उनके पास फिर से आने लगा है।

थीओ का पत्र आए एक वर्ष हो चुका था। वान ने लिखा प्रिय भाई, तेरे पास मिल्ले के स्कैचों का संग्रह होता था। कुछ समय के लिए उधार दे दो। मैं पेंटिंग सीखने लगा हूँ। देखोगे तो तुम्हें मेरा काम बुरा नहीं लगेगा। तुम्हारा भाई वान।

स्कैच को दीवार पर चिपका कर दूर से देखकर कहता कोई निर्दयी, बेदर्द आँख चाहिए इनको परखने के लिए, बेगानी आँख, कर्त्ता की नहीं, शत्रु की, जो न्याय करे। ऐसी आँख का प्रबन्ध करना होगा। कई कई दिनों तक पेट की भूख सहन कर चुका था, अब मुर्शद की भूख है, तलाश करनी पड़ेगी। कोई मारी या मोव जैसा उस्ताद चाहिए। पीटरसन का ख्याल आया, उसे मिलने के लिए बरसेलज़ की ओर चल पड़ा। जेब में केवल तीन क्राऊन, 80 मील का रास्ता, पैदल चलने लगा। रात को भी चलता रहता। जूते फट गये। कोट पर मिट्टी की परत, केश उलझे हुए। भूखा, प्यासा, थका हुआ परन्तु खुश, एक महान् चित्रकार से मिलूंगा।

दरवाज़े पर पहुँच कर घण्टी बजाई। पीटरसन की युवा बेटी ने दरवाज़ा खोला तो वान की सूरत, वेशभूषा देख भाग कर अन्दर गई। पिता दरवाज़े पर आया। पहले तो पहचाना नहीं। फिर होठों पर मुस्कान आई कहा वान गाग? तुम? आओ बेटा, भीतर आओ। दोनों बैठ गये। पीटरसन ने कहा पड़ोस में मेरे मित्र के पास एक खाली कमरा है। वहाँ चलते हैं। तुम नहा धोकर कपड़े बदलकर आराम कर लो।

- हाँ अब मुझे प्रतीत हो रहा है कि मैं थक गया हूँ, वान ने कहा।

- आज आराम करो। कल डिनर हमारे साथ करना। बहुत बातें करेंगे। कमरे में पहुँच कर भूखा सो गया। अगली सुबह मकान मालिक उस्तरा, कंघा, ब्रश दे गया। शाम को पीटरसन के घर पर पूरी बेशर्मी से बहुत खाना खाया। फिर वान ने अपने स्कैच दिखाये। पीटरसन ने कहा अभी कमियाँ हैं। तुम्हें ड्राईंग के प्रारम्भिक नियम सीखने होंगे। तुम्हें जमैटरी का पता नहीं। देखों, मैं तुम्हें बताता हूँ क्या गड़बड़ है। देख इस औरत के सिर को देख! रबड़ दो। सिर की एक साईड को मिटाकर दोबारा पैंसिल चलाई तो औरत सुन्दर दिखाई देने लगी। वान सोचने लगा सुन्दर तो हो गई, परन्तु ये खान मज़दूर औरत नहीं रही। यह सामान्य सुन्दर स्त्री है। ये तो मैंने बनाई ही नहीं थी।

वान को बेचैन देखकर पीटरसन समझ गया अरे वान! अब मैं समझ गया मैं परफैकशनज़ के पीछे भागता हूँ, तू जो है, उसे दिखाने का इच्छुक है। हैं न वान! वान ने हाँ कर दी।

चुल्हे की तरफ झुकी औरत का स्कैच देखकर पीटरसन ने कहा यह बनी बात। रेखायें सब कुछ स्पष्ट रूप से बयान कर रही हैं। चेहरा ठीक नहीं, चेहरा तो है ही नहीं, परन्तु तू जो बताना चाहता था ठीक बताया। बहुत अच्छी है। अपनी इच्छा से मैंने जो तेरा स्कैच ठीक किया, वह खराब हो गया। बेसिक नियमों को जाने बिना भी तू अद्भुत है।

कुछ दिन पश्चात् वान ने वापिस खान जाने का निर्णय किया। फादर पीटरसन ने अपने पुराने बूट, पुराने कपड़े और रेल का किराया देकर भेजा। सफ़र करते समय वान सोचता रहा इसने मुझे प्रचारक के रूप में असफल होने का दोषी नहीं माना, मेरी एक ड्राईंग को दीवार पर लटका लिया। इस आर्टिस्ट को मेरी प्रारम्भिक कृति अच्छी लगी, कभी बाकी दुनिया को भी अच्छी लग सकती है। इसलिए स्टार्ट किक लग चुकी है।

वापिस आया, थीओ ने जो स्कैच भेजे थे, मिल गए। साथ ही खाली शीटें भी थीं। वान ने नकल करते हुए दस स्कैच बनाये। ठीक बने। हाथ चलने लगा, जो स्कैच अधिक अच्छा लगता, उसे थीओ को भेज देता।

घास फूस के फर्श पर अर्द्ध लेटा था, दरवाज़ा खुला, थीओ भीतर आया। 23 वर्ष का हो गया था और आर्ट की परख होने के कारण वेतन अच्छा मिलता था। वान की स्थिति देखकर डर गया। - तुमने अपने साथ क्या कर लिया है वान? वान ने कहा कुछ नहीं। बीमार हो गया था। अब ठीक हूँ। मज़दूरों द्वारा दिया गया भोजन कर लेता हूँ।

- मुझे क्षमा करो वान। मुझे तुम्हारी इस स्थिति का पता नहीं था। यहाँ कोई दुकान है? मैं कुछ खरीदकर ले आता हूँ।

- हाँ नीचे थोड़ी दूरी पर है। परन्तु बैठो। जल्दी क्या है दो वर्ष बाद मिले हो। पैरिस कैसा है?

किसी बात का उत्तर दिए बिना थीओ नीचे दुकान पर गया। खाने-पीने का सामान खरीदा। दवाई और कपड़े खरीदे। आकर उसे गर्म पानी से स्नान करवाया। नए कपड़े पहनाए। फिर भोजन किया। थीओ ने कहा मैं तुझे अपने साथ माता-पिता के पास लेकर जाऊँगा। आराम से रहने के लिए स्थान तो है। - नहीं थीओ, पिता मुझे आवारागर्द, निकम्मा, मूर्ख समझता है। मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। - अच्छा ऐसा करते हैं वान, मेरा वेतन हज़ार क्राऊन हो गया है। मैंने इतने पैसे क्या करने हैं? पैरिस, बरस्सल, हेग, जहाँ इच्छा हो वहाँ रहो। मैं तुम्हें पैसे भेजता रहूँगा, तुम मुझे स्कैच, पेंटिंग भेजते रहना। ये जब बिकने लगेंगी तो मैं अपने पैसे वसूल कर लूंगा।

- हाँ थीओ, ये सौदा ठीक है। मैंने पाँच वर्ष व्यर्थ नष्ट कर दिये। अब जेल का दरवाज़ा खुलेगा, मैं खेतों, बागों, आबादियों में जाकर चित्र बनाऊँगा।

- हालैंड चलेंगे वान। शाम को नौ बजे गाड़ी लेंगे। तैयार हो जा। तैयार होने का क्या मतलब? वान उठा और थीओ के साथ स्टेशन की तरफ चल पड़ा। कुछ दिन थीओ के पास रहा, फिर सोचा, माता-पिता से मिल आऊँ। घर गया, पिता और बूढ़ा हो चुका था, परन्तु माँ अभी स्वस्थ थी। अनेक दिनों तक स्वादिष्ट भोजन बना बना कर खिलाती रही। थोडे दिन बाद बिल्कुल ठीक हो गया। उसने निर्णय किया जो चाहे हो, सारी उम्र पेंटिंग करूँगा, और कुछ नहीं। सुबह जल्दी उठता, पेटिंग का सामान उठाता, जहाँ कोई रमणीय दृश्य दिखाई देता वहीं रुक कर काम करने लगता। एक दिन माँ ने कहा वान, मोव अपना रिश्तेदार है। वह तस्वीरें बना बना की ही अमीर हो गया। कितना समय लगता है एक तस्वीर बनाने में? - कुछ घंटों में भी बन सकती है माँ, और वर्ष भी लग जाते हैं। - क्या कहा? वर्ष? एक तस्वीर को एक वर्ष? - हाँ माँ ये पता नहीं चलता। पिता ने पूछा क्या इस काम से तुझे रोटी मिल जायेगी वान? वान ने कहा अभी समय लगेगा। तब तक थीओ पैसे भेजता रहेगा। - ठीक है वान, कोई फैसला तो किया तुमने आखिर। अब तक लम्बी भटकन में था। अब एक स्थान पर टिककर काम करते रहना। - हाँ पिता, अब सारी उम्र यही काम करूँगा, और कुछ नहीं।

लोगों के लिए वह निकम्मा, आवारागर्द लड़का था। सारा दिन रंग भरते रहना ये भी कोई काम हुआ? कोई कोई किसान, मज़दूर रुक कर हैरान होकर देखता क्या बन रहा है? एक दिन वान ने किसान को पूछा तुम्हें मैं कैसा लगता हूँ? किसान ने निस्संकोच कहा मूर्ख। और क्या? लाल मूर्ख। सारा गाँव यही कहता है तुझे।

एक दिन पिता ने देखा, वान ने एक दृश्य को दस बार बनाया, पसंद नहीं आया। दस बार ही फाड़ दिया, फिर नया बनाने लगा। पिता ने कहा वान, तुमसे क्या गलती हो जाती है? - एक नहीं पिता जी, अनेक गलतियाँ हो जाती हैं। - फिर भी तुम्हें लगता है कि तू कलाकार हैं? कलाकार तो वही होता है जो गलती न करे। यदि तुझमे पेंटिंग का जन्मजात गुण होता फिर गलती होनी ही नहीं थी।

- पिता जी कुदरत जब देखती है व्यक्ति सफल हो रहा है, परीक्षा हेतु वह बाधायें उत्पन्न करती है। सभी बाधायें तोड़कर मैं विजयी होऊँगा।

- मुझे ये बात उचित नहीं लगती। बुराई में से नेकी नहीं निकलती।

- आपके धर्मशास्त्र अनुसार आप सही हो, कला शास्त्र अनुसार मैं सही हूँ।

परन्तु गलत चित्र बना बना कर जीवन नष्ट करना क्या सही है?

गलत चित्र बनाते समय यदि आनन्द मिले तो बिल्कुल उचित है।

- परन्तु आखिर यदि कलाकार सफल न हो? फिर वान? इस जूए में से पैसा प्राप्त होने की कोई सम्भावना नहीं।

- हमें आर्ट के दर्शन पर चर्चा करनी चाहिए पिता जी, लाभ-हानि पर नहीं।

थीओ पैसे भेजता, डेढ सौ क्राऊन प्रति मास, कागज़ भेजता, जानवरों और मानवीय कंकालों के स्कैच भेजता, जब तक आन्तरिक बनावट का पता नहीं, स्कैच ठीक बन ही नहीं सकता, अनेक प्रकार के रंग और ब्रश भेजता।

वान ने लिखा सफल होऊँगा कि नहीं, परवाह नहीं, वायदा है कि प्रतिदिन ब्रश चलेगा बिना रुके, निर्विघ्न, निरन्तर। कभी कभी समाचारपत्रों, पत्रिकाओं को चित्र भेजता। तब तक काम करता रहता जब तक ये विश्वास नहीं हो जाता कि चित्र सजीव हो उठा है।

एक दिन पिता ने कहा वान, यदि चित्रकार बनना है तो साहित्यिक पुस्तकें पढ़ने में अधिक समय क्यों नष्ट करते हो? साहित्य और चित्रकारी दोनों अलग अलग हैं। वान ने कहा मैंने ड्राईंग मास्टर नहीं बनना पिता जी। जीवन चित्रित करना है। पुस्तकों में जीवन दिखाई देता है।

- परन्तु वान, यदि मैंने चर्च में अच्छा प्रवचन देना हो तो मैं बाईबल पढूंगा, तेरी माँ रसोई में क्या काम कर रही है, ये देखने से क्या लाभ होगा?

- पिता जी अनाटमी मुझे मानवीय संरचना सिखायेगी, इसलिए अनाटमी की पुस्तकों का अध्ययन करूँगा। मस्तिष्क में कैसे विचार उठ रहे हैं ये साहित्य बतायेगा। साहित्य की रूहानी भावनाओं का चित्रण एक चित्रकार रंगों के संयोग से करेगा।

कपड़े सिलाई करती स्त्री, आलू छीलती स्त्री, झाड़ू लगाती स्त्री, लाठी के ऊपर झुका हुआ चरवाहा, बूढ़ा कमज़ोर किसान चूल्हे के समीप बैठा, कुहनी घुटनों पर और माथा हाथों पर झुका हुआ। हल चलाते, बीज बीजते किसान, स्त्री-पुरुष, गाँव की प्रत्येक वस्तु। कुदरत के सामने अब लाचार होकर नहीं, विजेता के रूप में खड़ा होने लगा वान। परिवार के सदस्य कुछ नहीं कहते थे परन्तु गाँव के लोग उसे निकम्मा कहते। बीज बोते किसान की तस्वीर देखते हुए माँ ने पूछा ज़मीन कहाँ खत्म होती है, किसान कहाँ से शुरू होता है पता नहीं चलता वान। वान ने कहा मिट्टी और मांस एक ही वस्तु के दो नाम हैं। इनमें से कौन सा कहाँ से प्रारम्भ होकर कहाँ समाप्त होगा, इसका निर्णय नहीं हो सकता माँ। मेरे चित्र, चित्र हैं, निर्णय नहीं, जजमैंट नहीं।

एक दिन माँ ने सोचा यदि ये विवाहित होता तो इसकी पत्नी इसे संभाल लेती। मैं ऐसा करके देखती हूँ। उसने वान से कहा आज दो बजे घर आ जाना।

वान ने कारण पूछा। माँ ने कहा मेरी किसी सहेली के घर शाम को चाय पार्टी रखी है।

- माँ मैं पार्टियों में व्यर्थ समय नहीं गंवा सकता, वहाँ कुछ प्राप्त नहीं होना।

- परन्तु वान वहाँ सभी अच्छी औरतें होंगी।

- माँ किसी औरत में कोई विशेषता नहीं होगी। सभी एक समान होंगी। एक ही वेशभूषा, समान शिष्टाचार। उनमें किसानों, मज़दूरों जैसी भिन्नता नहीं है।

- किसानों मज़दूरों की भिन्नता का तुम क्या करोगे वान, उनके पास तुम्हारे चित्र खरीदने के लिए पैसे ही नहीं। इन स्त्रियों की सुन्दर तस्वीरें बनाओ, अधिक मूल्य में भी खुशी से खरीदेंगीं।

हँसकर माँ का कहना टाल वान अपने काम पर चला गया।

एक दिन माली से कहा चलो तुम्हारी तस्वीर बनाऊँ। माली ने कहा दोपहर के बाद आऊँगा। दोपहर के बाद नहाकर पैंट कोट पहनकर वान के आगे कुर्सी पर बैठ गया। फिर कहा एक मिनट, एक मिनट, अपने आगे मेज़ रख लूं।

वान ने कहा मैं इन कपड़ों में तुम्हारी तस्वीर नहीं बनाऊँगा। जो कपड़े तुमने सुबह पहने थे वही पहनकर आओ और खुरपा हाथ में पकड़कर काम करो।

माली ने कहा क्यों? मैंने अपना अपमान करवाना है उन कपड़ों में तस्वीर बनवाकर?

चला गया।

थीओ ने पैरिस आने के लिए कहा तो वान ने कहा मैं पैरिस के योग्य नहीं हुआ। अभी तो मैं हेग जाऊँगा। वहाँ बड़े कलाकारों से मिलूंगा। मोव अपना रिश्तेदार है, उससे मिलूंगा। थीओ ने रेलगाड़ी किराये के पैसे भेज दिए। पहले लंदन गया। वही गैलरियाँ देखीं जहाँ वह क्लर्क होता था। आठ वर्ष में क्या कुछ बदल गया। उसी गूपल कंपनियों की गैलरियों में गया, कंपनी उसके चाचा की थी। यदि टिक कर काम करता तो आज मालिक होता क्योंकि चाचा की अपनी कोई संतान नहीं थी, वह कहता था, वान मेरा वारिस होगा। यहाँ क्लर्कों के कपड़े शानदार हैं, जबकि वान के मैले, आवारा लोगों जैसे। किसी क्लर्क ने ये पूछना भी उचित न समझा कि किस काम से आए हो। ये तो चित्रकार तर्सतीग ने पहचान लिया और खुशी से हाथ मिलाते हुए कहा देख रहे हो गैलरियाँ? एक से एक उत्तम तस्वीर। तर्सतीग को अपने द्वारा बनाई कैनवसें दिखाईं, उसने कहा अभी रास्ते में हो। और मेहनत करो। मार्ग तुमने सही चुना है, अभ्यास चाहिए।

फिर हेग पहुँचकर मोव से मिला। सुन्दर स्टूडियो था। अनेक पेटिंगें कुछ पूर्ण, कुछ अधूरी लटक रही थीं। रंगों से सुगन्धित था। इधर-उधर किताबें बिखरी हुई थीं। पारिवारिक रिश्तों, कुशलता आदि पूछने जैसी बातें जल्दी ही खत्म हो गईं। वान ने अपना काम मोव को दिखाया, मोव ने भी वही कहा अभी और मेहनत करनी होगी। वान ने कहा मुझे तुम अपना शिष्य बना लो। मैं हेग आ जाऊँगा। मोव ने कहा देखो वान, प्रत्येक कलाकार स्वार्थी होता है। होना भी चाहिए। मैं तुम्हें समय नहीं दे सकता। वान ने कहा मैं कब समय मांग रहा हूँ। बस यही तुम्हारे समीप बैठकर काम करता रहूंगा, तुम्हें काम करते हुए देखूंगा। कभी कभी मेरी तरफ देखकर कमियाँ बता देना। मोव हँसने लगा तुम्हें ये काम सरल प्रतीत होता है। किसी के काम की निगरानी बहुत बड़ी जिम्मेवारी है वान, और मेरी आदत काम करने की है, काम के बारे में बातें सुनने की नहीं। वान ने कहा वायदा, मैं बोझ नहीं बनूंगा। कुछ देर सोचने के बाद मोव ने कहा चलो ठीक है। देखते हैं। हेग आ जाओ। घर वापस जाते समय सफ़र में वान जितना खुश था उतना पहले कभी नहीं हुआ, आखिर मुझे उस्ताद मिल गया। संसार का प्रसिद्ध कलाकार। उसने हाँ कर दी। अब देखना मैं क्या क्या करता हूँ। घर के भीतर दाखिल हुआ तो देखा के बैठी है।

के के चेहरे पर विधवा की उदासी साफ चित्रित दिखाई दे रही थी। पहले वाली के जो सुन्दर और चंचल थी कहीं गुम हो गई थी। साध्वियों जैसा प्रभावहीन चेहरा, शोकग्रस्त आवाज़।

- के, अच्छा लगा तुम आई, वान ने कहा।

- धन्यवाद वान।

- तेरा बेटा जान भी आया है?

- हाँ बाग में खेल रहा है।

वान ने सोचा, क्या इसके पति के बारे में बात करके हौसला देना ठीक रहेगा? फिर स्वयं ही निर्णय लिया कोई फायदा नहीं। इस बात का जिक्र करना ठीक नहीं। दोनों बाग की ओर चल पड़े। वान ने कहा मैं यहाँ चित्रकारी करता हूँ के। तुम यहाँ आ जाया करो। बच्चा भी खेलता रहेगा। के ने कहा परन्तु ऐसे तो तुम्हारे काम में विघ्न उत्पन्न होगा। - नहीं के नहीं, बल्कि मेरा काम तो तुम्हारी उपस्थिति में अच्छा होगा। के ने वान का हाथ पकड़कर कहा हम मित्र हैं। वान ने कहा निस्संदेह।

उसने अपनी कैनवस स्टैंड पर लगा लिया। के को बैठने के लिए बैंच दिया। जान से कहा रेत का घर बनाए। के को मिलकर वान इतना खुश था कि

उसे बताना भूल गया कि मोव जैसा बड़ा कलाकार उसे उस्ताद रूप में मिल गया है। जब शाम को भोजन के पश्चात् सभी को बताया तो माँ ने कहा शाबाश। वह आज लाखों में खेलता है उस जैसे बन जाओगे तो समझो जन्म सफल।

वान पेंटिंग करने के लिए बाहर जाता तो के और जान भी साथ जाते। वान उसकी उपस्थिति में और भी सुन्दर पेंटिंग करता। दोपहर का भोजन नहीं करता था, परन्तु माँ जाते समय कुछ न कुछ पैक कर देती। दोपहर को तीनों चादर बिछाकर भोजन करते। के दिन प्रतिदिन और भी अच्छी लगने लगी। आत्मविश्वास से अपनी योजनाएँ बताता गया, के को उसकी बातों में रुचि नहीं थी परन्तु ऐसे बैठी रही जैसे सब समझ रही हो। वह अपने पति के साथ भूतकाल में रह रही थी। कुछ रेखाचित्र 'के' के चेहरे उपर बनाए। उसे के और जान दोनों अच्छे लगते परन्तू के अकसर अपने मृतक पति की बातें करती तो वान को बहुत बुरी लगती। भूतकाल को वह प्रेम की वर्षा से धो सकता था। उरसुल इसके मुकाबले में क्या थी? नादान लड़की। वान उस समय कितना मूर्ख था। उरसुल के साथ बिताया समय के के साथ बिताये एक पल के बराबर भी नहीं। दफा हुई अच्छा हुआ। सर्दियाँ शुरू होने वाली थीं, हेग जाने से पहले ज़रूरी था के साथ आखिरी बात करनी। जान सो रहा था। अपनी एक पेंटिंग दिखाने के लिए वह के की तरफ झुका, पेंटिंग गिर गई, कुछ शब्द कहे जो अस्पष्ट थे, के को चूमते हुए कहा हम हमेशा साथ रहेंगे। मैं तुम्हें मुद्दतों से प्रेम करता हूँ। हेग इक्ट्ठे चलेंगे। मैं तुम्हारे साथ विवाह करवाना चाहता हूँ के...।

के गुस्से से उठी कहा नहीं। कभी नहीं। समझे? सो रहे जान को उठाकर घर की तरफ भाग गई। - के ....के .... क्या हुआ? वान की कोई बात न सुनी। वान पीछे पीछे भागा तो रुक गई.... कुछ समय पहले उसकी आँखों में जो भय था वहाँ अब नफरत थी। बच्चा जागकर रोने लगा और के के गले से लिपट गया।

वान ने लंच का थोड़ा बहुत सामान उठाया, कागज़ उठाए, धीरे धीरे घर की तरफ चल पड़ा। घर पहुँच कर माता-पिता को तनावग्रस्त देखा। पिता ने कहा ये तुमने क्या किया। वान ये क्या किया? वान ने कहा क्या किया? क्या बताया है उसने? - तुमने उसके साथ जबरदस्ती की। उसे अपनी बांहों में ले लिया।

- हाँ, इसमें क्या गलत है? मैंने उससे कहा मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ तुम्हारे साथ विवाह करवाना चाहता हूँ। इसमें गलत क्या है? परन्तु ये कैसे हो सकता है वान? पिता ने कहा ये नहीं हो सकता। के तुम्हारी फस्ट कज़न है। हमारे खानदान में ऐसा पाप नहीं हो सकता।

माँ ने कहा वान इतनी जल्दबाज़ी की क्या आवश्यकता थी। तुम्हें पता है उसके पति की मृत्यु को अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ। तुम्हारी कोई आमदन भी नहीं है।

देर तक वान के कानों में, नहीं .... कभी नहीं..... की आवाज़े गूंजती रहीं। सुबह हुई, देखा माँ रसोई में भोजन बना रही है। पूछा, के कहाँ है? - तेरे पिता उसे गाड़ी में चढ़ाने गए हैं। वह अपने घर जा रही है। गाड़ी चलने का समय हो गया है। उसका मन किया कि वह अगली गाड़ी में उसके घर जाकर उसे मनाए, परन्तु उसके पास किराए के पैसे नहीं थे। अब माँ से किराया मांगे? अपनी लाचारी पर उसे गुस्सा आ रहा था। 28 वर्ष को हो गया और जेब में एक पैसा भी नहीं। चार वर्षीय छोटा भाई हज़ार क्राऊन कमा रहा है। धिक्कार है। अब तो यदि के कह भी दे तो पेटिंग छोड़कर नौकरी करो, फिर मैं तुमसे विवाह करवा लूंगी, मैं तब भी हाँ नहीं करूँगा। मूर्ख लड़की। मेरी ड्राईंग उससे अधिक शानदार है। ये समझ लो मैं दूसरी बार फिर से झंझट में फंसने से बच गया। ठीक हुआ। जो भी होता है ठीक होता है।

पिता का विचार था यदि वान पारिवारिक ढांचे में ढलने के लिए तैयार नहीं है तो ये उसका दोष है ढांचे का नहीं। एक दिन पिता ने कहा तेरा नहीं वान, ये उन पुस्तकों का दोष है जिन्हें तू पढ़ता है। फ्रेंच पुस्तकें। वान ने पूछा आपका अभिप्राय विकटर हिऊगे और मिछले से है? - हाँ वान वे चोरों डाकूओं के बारे में लिखते हैं। उनकी पुस्तकें इंसान पर गलत प्रभाव डालती हैं। - बकवास। उनकी रचनाएँ उतनी ही पवित्र है पिता जी जितनी बाईबल। - बकवास तू कर रहा है वान, तू झूठ बोल रहा है। उनकी रचनाएँ दुराचारी हैं। इनके कारण ही तू भटक गया हैं। वान ने कहा यदि मुझे परामर्श की आवश्यकता हुई तो मैं मिछले के पास जाऊँगा। मुझे आपके निर्देश की ज़रूरत नहीं। - फिर तू इस घर में क्यों रहता है यदि तेरे मन मन में परिवार के लिए कोई आदर ही नहीं?

उसने के के पिता को रजिस्टर्ड पत्र लिखकर उसका हाथ मांगा था। पादरी पिता ने उत्तर भेजा के किसी दूसरे लड़के से प्रेम करती है। वह लड़का कमाऊ है, धनवान् है। आगे से ऐसा पत्र मत लिखना। वान के मन में आया सभी पादरी नास्तिक और पत्थर दिल होते हैं, मेरे पिता सहित सभी। दूसरा पत्र थीओ का था, लिखा तेरे स्कैच धीरे-धीरे बिकेंगे। ऐमस्टर्डम के लिए बीस क्राऊन भेज रहा हूँ।

गाड़ी पकड़कर शहर पहुँचा, के के दरवाज़े पर दस्तक दी। नौकरानी ने दरवाज़ा खोला, वान को पहचान कर कहा फादर घर नहीं हैं। वान ने उसे पीछे धकेल

दिया और भीतर प्रवेश किया जहाँ परिवार भोजन कर रहा था। उसे देखकर, के भीतर चली गई। मेज़ पर दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं। - मैं 'के' के साथ बातें करना चाहता हूँ अंकल। पादरी ने कहा वह तेरे जैसे आवारा लड़के से बात नहीं करना चाहती। - आप झूठ बोल रहे हो अंकल। पादरी को गुस्सा आ गया तुम्हें पता नहीं तुम क्या कह रहे हो? मैं फादर स्टरिकर हूँ, सुना? - एक बार बात करने दो अंकल, यह कहकर हाथ का पिछला भाग मोमबत्ती की लौ पर करते हुए कहा बस इतने समय तक बात करने दो जितने समय तक हाथ मोमबत्ती पर है। मांस पहले काला हुआ, फिर खून की बूंदे नीचे गिरने लगीं। मांस के जलने की दुर्गन्ध चारों तरफ फैल गई। पादरी ने शीघ्रता से मोमबत्ती उठाकर दूर फेंक दी और कहा पागल। कमरे में अंध ेरा हो गया। - दफा हो जाओ। फिर कभी इस घर में कदम मत रखना। समझे?

वान बाहर सड़क पर आ गया। स्तम्भ पर जल रहे दीये की रोशनी में देखा, हाथ के पिछली तरफ गहरा घाव हो गया था। जितने समय तक मोमबत्ती की लौ पर हाथ रखा, उतनी देर तक भी बात करने के लिए तैयार नहीं थी! कमाल! सारे संसार के लिए मैं ही आवारा और निकम्मा हूँ बेशक 12 वर्ष से निरन्तर मेहनत कर रहा हूँ। क्या किस्मत है। थूका, परन्तु मुँह की कड़वाहट खत्म नहीं हुई।

मोव के घर के समीप ही 14 फ्रांक प्रति महीने की दर से कमरा किराए पर मिल गया। थोड़ा बहुत, छोटा-मोटा सामान ले आया, पैसे खत्म हो गए। तिथि समीप है, थीओ पचास फ्रांक भेजेगा तो चारपाई खरीदूंगा, अभी नीचे सोना ही ठीक है। मोव से मिला तो उसने कहा फिर से आ गया चित्रकार बनने? ठीक है, जो सीख सकेंगा वो सिखाऊँगा। रहने का प्रबन्ध हो गया? वान ने कहा हाँ। अब तेरे पास कितने पैसे हैं? - वान ने कहा, खत्म हो गए। मोव ने सौ का नोट पकड़ाते हुए कहा इसे उधार समझो। जब होंगे दे देना।

- मेरा मन पैसे लेने को नहीं करता भाई, आप मुझे सिखाने के लिए मान गए मेरे लिए यही बहुत है।

- नहीं वान। इंसान के जीवन में उतार चढ़ाव आते रहते हैं। एक दिन ऐसा आएगा जब तू सब कुछ सरलता से खरीद सकेगा। अब पैंसिल स्कैच का काम छोड़ दे। स्कैच नहीं बिकते। वाटर कलर से शुरू करके ऑयल कलर तक पहुँच। ये मेरे रंग, ब्रश, कैनवस रखी है। दिखा तो कैसे काम करता है तू। यहाँ कलाकारों की एक यूनियन है, तुम्हें उसकी मैंबरशिप ले दूंगा। मिलकर करने से काम जल्दी होता है।

दबौक उसका मित्र बना। वह एक अच्छा कलाकार था परन्तु वान के समान भावुक नहीं। दिलचस्प व्यक्ति। तर्सतीग के माध्यम से उसकी तस्वीरें बिक जाती थीं। दबौक ने अपनी पेटिंगें दिखाईं, वान ने वाह वाह तो कहना ही था परन्तु

उसे ये काम ठीक-ठाक ही लगा। आखिर वान ने हौसला करते हुए कहा आपके चित्रों में शारीरिक अनुपात ठीक नहीं। दबौक ने कहा हाँ तुमने ठीक कहा, इसी कारण मैं प्राकृतिक दृश्यों का अधिक चित्रण करता हूँ। वान ने कहा तू मित्र है, मेरी बात का बुरा मत मानना, तेरी प्रसिद्धि मुझसे अधिक है क्योंकि लोग तेरे चित्र खरीद रहे हैं। तेरे दृश्यों में जान नहीं, भावनाएँ नहीं।

- किस प्रकार की भावना वान? जिस प्रकार की भावना दृश्य देखते समय दर्शक की होती है, वही इसमें होनी चाहिए। - परन्तु दृश्य बनाते समय मेरे मन में जब कोई भावना होती ही नहीं उसे कैनवस पर कैसे चित्रित करूँ?

एक दिन वान को कमरे में मिलने मोव आया, वान बहुत खुश हुआ। वाटर कलर के बारे में इतना कुछ बताया जिनके बारे में वान को पता नहीं था। मोव ने कहा कम से कम दस कैनवसें खराब करने के बाद तुम्हारा ब्रश सही चलेगा। दिखा तो क्या बनाता रहा, वान ने पेंटिंगें दिखाईं। मोव ने ये नहीं कहा कि गलत हैं, बल्कि बताया इसे ऐसे बनाकर देख, ये साईड ऐसे बना। जो समय तूने पैंसिल से स्कैच बनाने में लगाया है, वह व्यर्थ नहीं गया, अब तेरे रंगों में सहायक होगा। तुम्हारे भीतर के गुणों को मैंने देख लिया है, तुम्हारे बनाए चित्र अवश्य बिकेंगे।

पैसे मिलने की तिथि से तीन दिन ऊपर हो गए थे, थीओ के पैसे नहीं आए। तीन दिनों तक भूखा रहा। ये भूख कभी मेरा पीछा छोड़ेगी भी या नहीं? तर्सतीग आया, 25 क्राऊन दे गया और कहा चिन्ता न करना वान - मैं तेरी तस्वीरें खरीदूंगा। ये दानी पुरुष शिक्षार्थियों को हौसला देने के लिए उनकी बनाई खराब तस्वीरें भी खरीद लेता था, आप ही ठीक करके नुकसान पूरा कर लेता। तुरंत रोटी खाने के लिए वान बाहर गया। पेट भर भोजन करने के बाद थकान और बुखार दोनों उतर गए परन्तु नया पंगा छिड़ गया। अब के की याद आने लगी।

- इससे तो अच्छा भूखा मरना है। भूख सहन हो जाती है परन्तु याद बुरी बला है। कमरे में आया। बाहर बर्फ पड़ रही थी परन्तु उसके माथे पर पसीने की बूंदें थीं। उसने खिड़की खोलकर सिर बाहर निकाला तब शांति मिली।

एक दिन तस्वीरों का बड़ा व्यापारी उसका धनी चाचा कार्नीलियस उसके कमरे में आया, कुशलता पूछी। चाचा ने कहा थीओ कमाऊ लड़का है। तुम्हें भी अब रोटी योग्य होना चाहिए। वान ने कहा रोटी योग्य? इसके योग्य तो मैं हूँ। परन्तु इसमें मेरा क्या दोष जब मुझे रोटी मिलती नहीं? मैं इतनी सख्त मेहनत करता हूँ कि रोटी का हकदार हूँ। मेरा हक मुझे अभी नहीं मिला तो क्या हुआ, मिल जाएगा। चाचा ने कहा क्या बनाता है मुझे दिखाओ। वान ने शहरी इमारतों की लघु आकार की पेटिंगें दिखाईं। चाचा बहुत खुश हुआ। एक तस्वीर की तरफ संकेत करते हुए

कहा इसकी बारह नकलें बना दे। कितने पैसे? वान ने हिसाब लगाकर कहा ढाई क्राऊन से कम तो नहीं। चाचा ने हँसते हुए कहा पाँच क्राऊन दूंगा बेटे। अच्छा काम कर। पहली बार उसे ऐसा आर्डर मिला, बहुत खुशी हुई।

एक सप्ताह के बाद मोव के घर गया। वह कोई चित्र बना रहा था, वान को देखते ही चित्र को कपड़े से ढक दिया और कहा तीन रातों से सोया नहीं मैं वान। उसकी लाल आँखें देखकर वान समझ गया कि वह थका हुआ है। वान ने कहा अच्छा चलता हूँ, फिर आऊँगा। मोव ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं। एक दिन फिर गया- इस दिन मोव उससे अच्छी तरह मिला और कहा दिखाओ क्या बनाया है। वान ने पेटिंगें दिखाईं, मोव ने आह भरते हुए कहा- तु कुछ नहीं सीख पाया वान। तुम्हें ये काम छोड़ देना चाहिए। अपनी सूरत देखी है कैसी बना रखी है? वान ने कहा यदि लंदन की बारिशें झेली होतीं, मज़दूर बस्तियों की भूख देखी होती, तेरी सूरत भी ऐसी ही हो जाती । मोव ने कहा वो रखी है कैनवस, नए सिरे से शुरू कर। यह कहकर वह सो गया। वान ने सारी रात जागकर सात चित्र बनाए। मोव ने सुबह उठकर देखे तो टुकड़े टुकड़े करके कहा तुम्हें ए,बी, सी नहीं आती।

वीनबरुक ने पूछा तू मैले कपड़े पहनता हैं, मैले लोगों के चित्र बनाता है, तुम्हें अच्छा दिखाई नहीं देता?

मैले कपड़े पहनूंगा क्योंकि पैसे नहीं। इसका लाभ है, सामान्य लोगों को मॉडल बनाता हूँ वह शर्माते नहीं। मैं भी उनके जैसा ही हूँ। रही बात मेरी शैली की। मुझे बहुत दुःख होता है। मोव ने जब मेरे बनाए चित्रों के टुकड़े किए तो मुझे कोई दुःख नहीं हुआ क्योंकि उससे पहले मैं कैनवस पर बनाई उसकी पेंटिंग देखकर विस्मित रह गया था। रेहड़ी मछलियों से भर गई, मछुआरा घोड़े जोत रहा था। सारी उम्र घोड़े भार ढोने से थके हुए, उदास, मुँह नीचे किए हुए रेहड़ी में जोते जाने के लिए तैयार खड़े थे। पता नहीं कौन सा घोड़ा कहाँ गिर कर मर जाए और मोची खाल उतारने लगे। तो क्या? घोड़े तैयार हैं। भार ढोने के लिए। खाल उतरवाने के लिए, तैयार बस तैयार। इसे मैं उसका शाहकार मानता हूँ। बड़ा व्यक्ति है वह। एक सप्ताह लग गया इस पेटिंग को बनाने में। वह आधा पागल हो गया था।

वीन ने कहा निर्धनता विध्वंसक होती है। कमज़ोर के लिए ये भयानक है। ताकतवर इंसान बचेगा और बचाएगा। जिनको निर्धनता ने मिटा दिया, मिटने चाहिए। दुःख, भूख जिसे मार दे वह कैसा पुरुष। जब तक व्यक्ति मन की इच्छा पूरी नहीं करता न ईश्वर मार सकता है न शैतान। परन्तु कोई बात तो हो करने वाली।

वान ने कहा मुद्दत से मैं भूख का शिकार हूँ। बारिश या बर्फ सिर पर छत नहीं। दुःख ने मुझे अभी कोई सबक नहीं सीखाया वीन।

वीन तुम्हें नहीं पता कि दुःख क्या है। तुमने दुःख को छुआ तक नहीं। दुःख अनन्त है वान, केवल दुःख अनन्त है और कुछ नहीं। ब्रश उठा, चित्र बना, रद्द कर, बनाता जा। एक दिन आएगा जब संसार केवल वान गाग को देखेगा, बाकी सब लोप हो जाएगा।

परन्तु तुम तो सुख से रहते हो। तुमने गरीबी और दुःख को नहीं देखा? फिर भी दुःखों में से गुज़रे बिना इनके स्वभाव का पता है।

यदि पता है तभी ये मेरी तस्वीरों में उतरता देता है। यदि दबौक के चित्रों जैसे चित्र बनाता तो करोड़पति होता, मैंने चित्रों और पैसों दोनों को आग लगाकर तुम्हारे जैसी ज़िन्दगी में आ जाना था। रोटी से तृप्त होते हुए भी मुझे भूख का बोध ा है इस कारण मुझे भूखा मरने की आवश्यकता नहीं। तुम्हें अभी और दुःख देखना होगा। काम कर।

उसे भय सताता कि असफलता के कारण यदि भाई थीओ ने सौ क्राऊन भेजने बंद कर दिए तो क्या करेगा? थीओ का पत्र आया, लिखा मेरी प्रमोशन हो गई है, तनखाह भी बढ़ गई इसलिए 150 क्राऊन भेजूंगा। हेग में उससे मिलने आया, चित्र देखकर कहा अब ऑयल पेंटिंग शुरू कर। - परन्तु रंग बहुत मंहगे हैं, वान ने कहा सोने के मूल्य समान है। थीओ अनेक रंगों की टयूबें और ब्रश खरीद कर दे गया। पिता का पत्र आया कुछ दिनों के लिए गाँव आ जाओ।

पिता का स्थानान्तरण नूनी गाँव के चर्च में हो गया था, घर के आस-पास एक छोटी बगीची थी। अधिक आबादी जुलाहों और किसानों की। ईश्वर से डरने वाले लोगो की बस्ती। प्राचीन पारिवारिक परम्पराओं को निभा रहे थे। गिरजे की तरफ सुनहरी किरणों के रंग फेंक कर सूर्यास्त होने लगा तो वान ने गहराई से विभिन्न सायों का निरीक्षण किया। कुछ दिन केवल खाया-पीया, आराम किया। आपस में बात किए बिना सभी का एक समझौता सा हो गया था कि अब झगड़ना नहीं, जिसकी जो इच्छा वही करे। एक दिन पादरी पिता ने कहा मैंने गेटे का फाऊस्ट पढ़ना शुरू किया है। क्योंकि इसका अनुवाद पूजनीय फादर केट ने किया है इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुस्तक अश्लील नहीं होगी। वान को बहुत गुस्सा आया परन्तु शांत रहा। उसने ग्रामीण जीवन पर काम करने का निर्णय किया।

एक दिन बैठे बैठे पिता से पूछा आपके पास ही रह जाऊँ पिता जी? कोई एतराज तो नहीं।

- मुझे क्या एतराज? बल्कि देख रहा हूँ तुम्हारी कला में निखार आ रहा है।

- कितने समय तक रहूं?

- जब तक तेरी इच्छा।

- यदि आपस में झगड़ा हो गया तो?

- हम एक दूसरे को समझने का प्रयास करेंगे।

- घर में काम नहीं कर सकता। मुझे स्टूडियो चाहिए।

- उस तरफ चौरस कमरा है। कच्चे फर्श में नमी है। हम आग जलाकर उसे सुखा देंगे, अपना सामान रख लेना। वह खिड़की छोटी है, तुम्हें अधिक रोशनी की ज़रूरत होगी। मेरे पास इतने पैसे हैं कि मैं बड़ी खिड़की लगवा दूंगा।

प्रत्येक जुलाहे के घर खड्डी थी, सप्ताह में साठ गज़ कपड़ा बुना जाता था, सप्ताह की आमदन चार या पांच फ्रांक हो जाती। खान मज़दूरों की अपेक्षा इनकी ज़िन्दगी शांत थी, वान शीघ्र ही इनमें घुल मिल गया। इनकी तस्वीरें बनाने जाता तो बच्चों के लिए मिठाई ले जाता और बूढ़ों के लिए थोड़ा तम्बाकू। खेत देखता, पक्की फसलें सुनहरी रंग की हो जातीं। किसान स्त्री-पुरुषों के शरीर सख्त होते हैं, नैन-नक्श साधारण।

खेतों में खड़े होकर पेटिंग करते समय उसे अनुभव हुआ जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो, कोई छिप कर उसे देख रहा हो। एक दिन कैनवस रख रहा था तो उसका संदेह सत्य निकला, एक लड़की उसे काम करते देख रही थी, जब वान की दृष्टि उस पर गई, तो वह शीघ्रता से अपने घर चली गई, घर वान के घर के समीप ही था। माँ को दरवाज़े की तरफ इशारा करके पूछा वह किसका घर है? ये बैंजामिन परिवार है। - कौन हैं ये? - अधिक तो मुझे पता नहीं, पाँच बहनें और माँ रह रही है। पिता की बहुत समय पहले मृत्यु हो गई थी। किसी से मिलते जुलते नहीं। पैसों की कोई कमी नहीं।

अगले दिन दोपहर तक पेटिंग करता रहा। उसने देखा, वह लड़की धीरे-धीरे उसकी तरफ आ रही है, जैसे सम्मोहित हो, जैसे नींद में चल रही हो, जैसे कोई शक्ति उसे खींच कर ला रही हो। समीप आई तो चेहरे पर डर झलकने लगा। वान ने सोचा कोई बात करेगी। खामोश उसके इतने समीप आकर खड़ी हो गई कि उसका गाऊन वान के कोट को छू गया। वान ने देखा, लड़की ने सूखें होंठो पर जीभ फेरी। बोलना तो क्या, ऐसा लग रहा था जैसे उसे सांस लेने में भी तकलीफ हो रही हो।

- मैं वान गाग हूँ। तुम्हारा क्या नाम है?

- मारगो बैंजामिन। इतना कहकर वान की बांहें पकड़ ली और बेहोश होकर गिर गई। वान पानी की बोतल लेकर आया, रूई से माथा, चेहरा धोआ, लड़की ने आँखें खोलीं। तीस वर्षीय सुन्दर लड़की थी, होश आने पर उठी, वान को बांहों में

लेकर होंठो पर होंठ रख दिए। शरीर कांपने लगा। अगले दिन मिलने का समय और स्थान निश्चित करके चली गई। दूसरे दिन मिले तो लड़की ने पूछा मेरी कल की हरकत बुरी तो नहीं लगी वान? सौगन्ध है, पहली बार किसी पुरुष को छुआ था मैंने। तुम मुझे अच्छे लगे। बता, तू मुझे बुरी लड़की तो नहीं समझ रहा?

- बिल्कुल नहीं।
- बुरा मत मानना वान, मुझे तुमसे प्रेम हो गया है।
- प्रेम होना बहुत सरल है लड़की, बदले में प्रेम ही मिले यह ज़रूरी नहीं है।

- हम पाँच बहने हैं, पैसे की कमी नहीं, पाँचो अभागी अविवाहित हैं। वान ने उसे अपने बीते जीवन के बारे में बताया, बताया उसने कितने गलत काम किए हैं, पराजित हुआ। लड़की ने हँसते हुए कहा राजा कोई गलती नहीं करता, राजा पराजित नहीं होता। जो हुआ वह होना था। मेरी माँ ने एक दिन मुझे कहा वान बुरा लड़का है। इसकी आदतें ठीक नहीं है, मैंने उसे कह दिया वान बिल्कुल सही है। लोग चुगली करते हैं। दो वर्ष तक तुम किसी बुरी लड़की के साथ रहे, ये सुनकर तू मुझे यसू मसीह जैसा प्रतीत हुआ वान। मेरे मन में एक ही बात आई थी केवल, वही दो वर्ष तुमने मेरे साथ व्यतीत किए होते तो कितना अच्छा होता।

वान ने कहा मैंने देखा है, बहुत मेहनत के पश्चात्, बहुत समय बाद कोई सफलता प्राप्त होती है।

मारगो ने कहा हाँ, इतने वर्ष प्रतीक्षा करने के बाद तुम मुझे मिले हो। अब सारी उम्र साथ रहेंगे।

दोनों घरों में इस समाचार का बुरा प्रभाव पड़ा। वान के माता-पिता इस बात से चिंतित थे कि रोटी खाने के पैसे तो थीओ भेजता है, फिर ये विवाह का पंगा क्यों ले रहा है? लड़की की माँ का तर्क था कि पाँचों में से एक का विवाह, मतलब बाकी चारों का अपमान। तीन दिन बाद जब लड़की आई, रो रो कर उसकी आँखे सूजी हुई थीं। कहा वे सभी तुम्हें गुण्डा, बदमाश, आवारा लड़का समझती हैं, तुम्हें और मुझे दोनों को गालियाँ दीं। वान ने कहा यही होना था। शाम को मैं स्वयं आकर बात करूँगा।

वान के घर के भीतर कदम रखा, पता नहीं कितने वर्षों पश्चात् कोई पुरुष इस घर में आया। सभी ने उसे घेर लिया। माँ ने कहा तेरी एक पत्नी हेग में थी? वान ने उसे सारी बात समझाई। फिर पूछा तेरी उम्र? - 31 वर्ष। तुम्हें मारगो की आयु पता है? - हाँ अब चालीस की हो गई है। - तेरी आमदन? -डेढ सौ क्राऊन। परन्तु ये तो तेरा भाई सहायता करता है। - नहीं, ये तनखाह है, इसके बदले में मैं उसे तस्वीरें बनाकर भेजता हूँ। - परन्तु इतने कम पैसों में दो लोगों का निर्वाह कठिन

है। मारगो ने कहा कर लेंगे। कुछ पैसे मेरे पास भी तो हैं। माँ चिल्लाई खबरदार यदि तुमने बोलने की गुस्ताखी की -। जिस पैसे पर तेरी नज़र है मैं उसमें से तुझे बेदखल कर दूंगी। इस आवारा छोकरे से विवाह करने का कोई मतलब नहीं।

वान उठकर स्टूडियों में आ गया। कई दिनों तक मारगो नहीं आई। उस पर सख्त पहरा लगा दिया गया। एक शाम वह छिपते छिपाते आई, पहले दिन की मुलाकात वाला सफेद गाऊन पहना हुआ था। कहा मैंने तुमसे प्यार किया है वान। एक बार फिर वैसे ही चूमो जैसे पहले दिन चूमा था। वान ने बांहों में ले लिया। फिर पूछा कितना काम रहता है अभी? - बस पाँच दस मिनट। वह पीछे हट गई। वान ब्रश चलाने लगा। उसे शीशी का ढक्कन टूटने की आवाज़ सुनाई दी। पीछे देखा, मारगो ने ज़हर पी ली थी। चीख मारकर ज़मीन पर गिर गई। वान ने शोर मचा दिया, लड़की की माँ भागी आई, गालियाँ निकालती रही- तू कातिल है मेरी बेटी का, दुष्ट। गाड़ी मंगवाई, अस्पताल ले गए। एक और इश्क का भोग पड़ गया। सारी बस्ती वान से नफरत करने लगी।

थीओ गाँव मिलने आया, बताया कंपनी मुझे किसी ब्रांच का मैनेजर बनाकर भेजेगी। फिर जो होगा मेरी इच्छा से होगा, मैं इम्प्रैशनिस्टों की पेटिंगें बेचा करूँगा। वान ने पूछा इम्प्रैशनिस्ट? ये शब्द मैंने पहले भी कहीं सुना है। थीओ ने कहा नये कलाकार जैसे मानी, देगा, रनवार, कलाद, मोने, सिसले, कूवीए चोंगै, सेज़ान, सिऊरे। वान ने पूछा प्रभाववादी, इस नाम का क्या मतलब? थीओ ने बताया 1874 में इन नये कलाकारों ने प्रदर्शनी का आयोजन किया। मोने ने अपनी तस्वीर के नीचे लिखा था प्रभाव। कला निरीक्षक लूई लेरी ने जर्नलिस्टों से कहा यह प्रभाववादियों की प्रदर्शनी है। बस तभी से नाम चलने लगा।

- वह गहरे रंग प्रयोग करते हैं या हल्के?

- हल्के। वह कहते हैं गहरे रंग बीते समय की बात है।

- परन्तु मैं दिन प्रतिदिन हल्के से गहरा होता जाता हूँ।

- जब तू पैरिस आएगा, उन्हें देखकर तुझमें भी बदलाव आएगा।

- उनकी तस्वीरें बिकती हैं?

- बिकेंगी। मैं कला निरीक्षक हूँ, मुझे उनकी ताकत का ज्ञान है।

- अब गुज़ारा कैसे करते हैं वे?

- तेरी तरह। कोई कहीं से सहायता लेता है तो कोई कहीं से। साथ साथ और भी काम करते हैं, रूसों वायलन सीखाता है। मैं अपनी कंपनी को अभी इस बात के लिए सहमत नहीं कर सका कि एक गैलरी उनकी भी बना दी जाए। कंपनी तो दस फीट के बांस से भी उनको छूने के लिए तैयार नहीं। तू पैरिस चल।

- परन्तु मुझे और भी काम करना है। कुछ पेटिंग बना लूं, फिर आऊँगा।

- यहीं गाँव में बैठा रहेगा तो वो सब तुझसे आगे निकल जाएँगे और तुम उनसे मिल नहीं सकोगे।

गरूट परिवार से वान की समीपता बढ़ गई। माँ-बाप, बेटा, और दो बेटियों का किसान परिवार। उनका रंग तो भूरा था परन्तु नैन-नक्श मोटे मोटे नीगरो लोगो जैसे। खुराक आलू होते। आलू बीजते, निकाल कर भूनते और खाते। यही जीवन था। लड़की स्टीन 17 वर्ष की थी। वान अकसर उनके घर जाता सबसे अधिक स्टीन हँसती। जब स्टीन की तस्वीर बनाने लगा तो कहा देखा? कोई बात है न मुझमे, तभी तो तस्वीर बना रहे हो। वान ने कहा मैं तेरे सारे परिवार की तस्वीर बनाऊँगा। उसने इस परिवार की आलू खाते समय की तस्वीर बनाई जिसका नाम **पटैटो ईटरज़** रखा। ये पेटिंग सारे संसार में प्रसिद्ध हुई, परन्तु वान के जीवन में नहीं।

एक दिन खेत जाते समय स्टीन ने पूछा उस लड़की ने ज़हर क्यों पिया था। वान ने कहा वो मुझसे प्रेम करती थी, घर के सदस्यों को ये मंजूर नहीं था, इस कारण। वह बहुत हँसी, इस कारण केवल? तेरे साथ भाग जाती? मैं तो कभी ज़हर नहीं पीऊँगी। मूर्ख थी बिल्कुल।

एक दिन वान को फादर पावेल ने बुलाया। - आदेश दें फादर? पादरी ने कहा काम है तो कठिन, परन्तु मैं कर सकता हूँ। स्टीन कैथोलिक है, तू प्रोटैस्टैंट, तो भी कोई न कोई रास्ता निकालूंगा। विवाह के लिए तैयार हो जा।

- क्या कहा? विवाह के लिए? क्यों? क्या मतलब फादर?
- बहानेबाज़ी की क्या आवश्यकता। स्टीन गर्भवती है तेरी करतूत के कारण। इसलिए विवाह तो करना ही होगा।
- ये काम मेरा नहीं फादर। आपके पास कोई प्रमाण है? क्या स्टीन ने आपको बताया है?
- नहीं, स्टीन का कहना है, वह इसके पिता का नाम नहीं बताएगी।
- फिर ये मान-सम्मान मुझे क्यों दिया जा रहा है?
- क्या वह तुम्हें मिलती नहीं थी? तुम्हारे स्टूडियों में नहीं आती थी?
- हाँ आती थी, परन्तु इसका वो मतलब नहीं जो आपने निकाला है।
- क्या तेरी बात को सच मान लूं।
- हाँ फादर बिल्कुल सच।

शाम को जब खेत से वापिस आए तो वान ने कहा स्टीन इधर आ। तेरी तस्वीर बनानी है। हँस कर कहा कुछ समय पश्चात् एक नया मेहमान आने वाला है उसकी भी तस्वीर बनाना।

- क्या ये सच है स्टीन?

स्टीन ने वान का हाथ अपने पेट पर रखकर कहा स्वयं देख लो। घबराते हुए वान ने कहा फादर पावेल ने मुझसे कहा ये मेरा है? हँसकर कहा मेरा मन करता था ये तेरा हो परन्तु तुमने मेरी तरफ ध्यान ही नहीं दिया कभी। अच्छा फादर को लगता है ये तेरा है? कमाल है।

- फिर ये किसका है स्टीन?

- ये चर्च के प्रबन्धक का है।

- तेरे माता-पिता को पता है?

- हाँ पता है। परन्तु उन्हें तुम पर संदेह नहीं है।

वान हैरान रह गया। इस परिवार की बेटी गर्भवती हो गई, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। जैसे गाय, भैंस नए दूध हो जाती है। सारा गाँव वान के विरुद्ध हो गया। वान के विरुद्ध इतनी नफरत थी कि प्रत्येक पाप का दोषी उसे ही माना जाता, किसी और को नहीं। वान ग्रूट परिवार के पास गया। हँस कर स्वागत किया सभी ने, कोई शिकवा नहीं। गाँव के 26 सौ लोग लहू के प्यासे। माँ ने वान से कहा फादर ने कहा- गाँव छोड़ दो वान। - ठीक है, वान ने कहा। फादर ने ग्रूट परिवार से कहा यदि वह आपको तस्वीर बनाने के लिए पैसे देता है तो लेने बंद करो। मुझसे पैसे ले लो। ग्रूट परिवार ने कहा वान सम्माननीय है। न उससे पैसे लेंगे न आपसे।

पीटरसन ने बताया था कुदरत को कागज़ पर उतारने के लिए संघर्ष करते रहो। प्रकृति नहीं मानती। एक समय ऐसा आता है, सहज स्वभाव कलाकार के साथ सुर मिलाकर प्रकृति कागज़ पर बैठ जाती है और कहती है देख मैं आ गई। पटैटो ईटरज़ इसी प्रकार का शाहकार है। वह प्रकृति के सांचे में ढलने के लिए लम्बे समय से संघर्ष कर रहा था, प्रकृति ने कहा मैं तेरे सांचे में ढल जाऊँगी वान। सुबह वान ने अपनी बनाई तस्वीर पुनः देखी मैले वस्त्र, धुएँ से भरी दीवार, खुरदरी शतीर पर लटक रही लालटेन, स्टीन सभी को उबले आलू दे रही है। माँ गिलासों में कॉफी डाल रही है, भाई गिलास को होंठो से लगा रहा है, सभी के चेहरे शांत, प्रकृति के दैवी विधान को स्वीकार करके धन्यवाद करते लोग। वान से वो हो गया जो नहीं हो सकता था। ग्रूट परिवार अमर हो गया, उन्हें इस बात का पता भी नहीं।

अपनी तस्वीरें लेकर वान पैरिस पहुँच गया। थीओ ने पूछा मेरा आखिरी पत्र मिल गया था? - नहीं, क्या कुछ विशेष था? - मेरी प्रमोशन हो गई। गैलरी का मैनेजर बन गया हूँ। - परन्तु तू कल दूसरी बातें करता रहा, ये समाचार क्यों नहीं दिया? - तू पटैटो ईटरज़ तथा अन्य तस्वीरों से इतना खुश था कि दूसरी किसी खुशी की आवश्यकता ही नहीं रही। आज चलेंगे, तुझे प्रभाववादियों की गैलरी दिखाऊँगा,

मोने, देगा, पिसारे, माने। देखना। सभी तेरे जैसे। बहुत समय से इच्छा थी तू पैरिस आए। जून में आता तो अधिक अच्छा होता, तब कंपनी की तरफ से मुझे बड़ा घर मिलेगा। अब भी ठीक है। थीओ के पास कमरा, रसोई, कैबिन था। कहा वान मैं सामान को व्यवस्थित कर तुम्हारी पेंटिंग का प्रबन्ध कर दूंगा। चलो अब चाय खत्म करो। सुबह सुबह पैरिस की सुगन्धित हवा का आनंद ही कुछ और है। जिसने पैरिस नहीं देखा, क्या देखा? सूट बूट पहनकर थीओ तैयार हो गया। पुराना कोट कंधे पर रखकर वान चल पड़ा। - किसी अन्य शहर में तेरे जैसे व्यक्ति को पागल समझकर पुलिस पागलखाने भेज देती। परन्तु यहाँ पैरिस में तेरे जैसे अनेकों लोग घूमते हैं इस कारण कोई कुछ नहीं कहेगा। वान हँसने लगा।

वापस आकर थीओ की गैलरी की तरफ गए। गैलरी के बाहर ताक पर तीन स्त्रियों के प्लास्टर के सिर रखे हुए थे, एक के नीचे लिखा था डिज़ाईन, दूसरे के नीचे लिखा था मूर्तिकार और तीसरे के नीचे - पेंटिंग। वान ने पूछा पेटिंग वाली मूर्ति इतनी कुरूप क्यों है? थीओ ने कहा भीतर और भी देख। देखता जा क्या क्या हो रहा है यहाँ। मेरी गैलरी के माध्यम से पैरिस देखना।

ऐमील ज़ोला बताता वान शंहशाहों का खात्मा हो रहा। अगला इंकलाब पूंजीवाद को समाप्त करेगा। मैं इन कामरेडों का सहायक हूँ। इनके लिए गैलरी का स्थान मंजूर करवाने के लिए सरकार से मैंने कितना संघर्ष किया, ये मैं ही जानता हूँ, इनके विचारानुसार मुझे अधिक वेतन मिलता है, मैं भी पूंजीपति हूँ। इसलिए मेरा भी सफाया हुआ समझो। बहुत हँसे।

- तू ज़ोला को जानता है थीओ?

- प्रत्येक सप्ताह कॉफी हाऊस में हम सभी की मीटिंग होती है। तुम्हें लेकर जाऊँगा। देखना जगत् तमाशा। जब थीओ अपने शो रूम में गया तो सभी कर्मचारियों, क्लर्कों ने खड़े होकर उसका स्वागत किया। वान को याद आया जब वह सेलज़मैन होता था, वह भी मालिक के आने पर ऐसे ही करता था।

- इन सीढ़ियों से ऊपर जाकर वान नए कलाकारों की गैलरी देखो।

वान ऊपर गया- ये क्या है? मैं कहीं पागलखाने में तो नहीं आ गया? रो न सका, खाली कुर्सियों पर बैठकर आँखें साफ की। अब तक उसने सीखा था कि दो रंग आपस में मिलते दिखाई न दें, कि ब्रश का स्पर्श दिखाई नहीं देना चाहिए, रंगों और आकारों का एक निश्चित सम्बन्ध होता है, वह कायम रहे। ये क्या है? ये तस्वीरें तो मुझ पर हँस रही हैं। सनातनी कला का पूर्णतः उपहास। जज़्बा मासूमीयत, गंभीरता कहीं नहीं। जिस भूरे रंग से यूरोप रंगा हुआ ही नहीं, नहाया हुआ था, वह लुप्त। यहाँ तो सूर्य की नग्न धूप के नीचे झंझाल फैला हुआ था। भड़कीले

कपड़े पहन नाचती लड़कियाँ, नीचे नाम लिखा था देगा। अगला दृश्य दरिया किनारे का था, नाम लिखा था मोने। मोने ने जिस गहरे से गहरे रंग का प्रयोग किया वान के हल्के से हल्के रंग से हल्का था। बेशर्म होकर ब्रश बता रहा था कि मैं यहाँ यहाँ चला हूँ। प्रत्येक स्पर्श प्रत्यक्ष। अगली तस्वीर में नाव चलाता व्यक्ति खड़ा था, पूर्णतः तनावग्रस्त, उसकी पत्नी शांत बैठीथी। नाम फिर मोने! वान हैरान रह गया, मोने की पिछली पेटिंग की शैली बिल्कुल अलग। पुनः नाम पढ़े। ओह, वह मोने था, ये माने है। ये तो वही माने है जिसकी तस्वीरें फाड़ने के लिए लोगों ने चाकूओं से हमला कर दिया था, पुलिस ने संभालीं। पुलिस तस्वीरें ले गई तो लोग प्रदर्शनी के स्थान पर थूक कर घर चले गए। वान को याद आया जिस शैली में ज़ोला लिखता है ये कलाकार उस शैली में चित्र बनाते हैं। बगावत की निशानियाँ प्रत्यक्ष। कुछ भी निश्चित नहीं। उसे मोव का वाक्य याद आया तू एक रेखा की परिभाषा नहीं दे सकता वान। कोई भी नहीं। कुछ भी निश्चित नहीं, स्थिर नहीं। वैज्ञानिकों ने बताया कि हवा दिखाई नहीं देती। इन चित्रों में हवा दिखाई दे रही है। इन कलाकारों ने बता दिया है कि वे कैमरामैन नहीं हैं। प्रकृति वह नहीं है जिसे कैमरामैन पकड़ता है। प्रकृति वह है जिसे व्यक्ति अपने हिसाब से देखता है, शेर और खरगोश को प्रकृति एक समान नहीं होती।

लड़खड़ाता हुआ वान गैलरी से बाहर निकल कर कहीं चला गया, भूल गया कहाँ से आया था। उसे भाई की गैलरी का नाम याद था। पुलिस वाले ने वहाँ वापस पहुँचाया। वापस आकर अपनी तस्वीरों का बण्डल खोला ये तो हज़ारों वर्ष पुरानी हैं। थीओ समीप आकर बैठ गया। वान की शून्य दृष्टि देखकर कहा आर्ट की पवित्रता भंग हो गई है वान। वान की आँखें नम हो गईं, कहा मैंने इतने वर्ष व्यर्थ गंवा दिए थीओ? तू मुझे पहले पैरिस लेकर क्यों नहीं आया? मैं भी कुछ सीख जाता। थीओ ने हँसते हुए कहा तुम्हें पता नहीं तू विनसैंट वान गाग है। तेरे जैसा संसार में अन्य कोई नहीं। ये बच्चे क्या करेंगे? तूने प्रकृति को मुट्ठी में पकड़ लिया है, यदि मैं पहले तुझे पैरिस ले आता तो तुमने पैरिस को हाथ में पकड़ लेना था। देखो वान, थोड़ा बहुत प्रभाव स्वीकार करना तेरी इच्छा पर निर्भर है, परन्तु कहीं इनके जैसा मत बनना। इन पागलों में एक और पागल की आवश्यकता नहीं। जब खान मज़दूरों की बस्ती में धर्म प्रचार करना छोड़कर तुमने पैंसिल से स्कैच बनाए थे, तभी प्रभाववादियों से आगे निकल गया था। यथार्थ क्या है, इसका तुम्हें पता है क्योंकि तुम देख चुके हो। ये काल्पनिक पलाव पका रहे हैं। तू अपनी तस्वीरें देख। कोई तस्वीर सुनिश्चित संदेश नहीं देती। तेरे बनाए चेहरे, वृक्ष, खेत वैसे नहीं जैसे कुदरत ने बनाए हैं। तुमने

किसी के प्रभाव को स्वीकार नहीं किया। पुराने नियम, परम्परा से पार निकल गया, महल, परियाँ, राजा-रानियाँ तेरे पात्र नहीं, तूने सामान्य व्यक्ति, गरीब मज़दूर को कैनवस पर चित्रित किया है। तू इन सभी का बाप है। इन सभी ने तेरा काम देखा, तुझसे प्रभावित हैं।

- मेरे चित्र देखें है इन्होंने?

- इसके अतिरिक्त मैंने पैरिस में और क्या खाक छानी है? कौन अधिक बिक रहा है, ये बात छोड़ो, तुम एक नये युग के जन्मदाता हो। ये भी सही है कि तू भी इनसे सीखेंगा, उदाहरणतः, पहले गहरे रंग का प्रयोग छोड़ो। आज सबसे बड़े होटल में शैम्पेन पीयेंगे, खाना खायेंगे। पैरिस और वान गाग का मिलाप हुआ है, यह कोई सामान्य घटना नहीं है।

- वान एक दिन कोरमा स्टूडियों में गया, जो आर्टिस्ट उसे मिला उसे कहा मेरा नाम विनसेंट वानगाग है, आपका? मेरा नाम लोत्रक।

- थीओ वानगाग से आपका कोई सम्बन्ध है?

- वह मेरा छोटा भाई है।

- वह अद्‌भुत आर्ट आलोचक है, साथ ही योद्धा। हमारे हक के लिए जैसे वो लड़ता है, केवल वही लड़ सकता है। हम नए कलाकारों पर उसके बहुत अहसान हैं।

- मुझ पर भी उसके कई अहसान हैं।

- मैं आवारा स्त्रियों के चित्र बनाता हूँ लोत्रक ने कहा।

- मैंने आवारा स्त्री को दो वर्ष घर में रखा, चित्र बनाये। भूख से तंग आकर वापस चली गई मेरी इच्छा के विरुद्ध। मैं तो उसके नाजायज़ बच्चे को गोद लेने के लिए भी तैयार था। दिखाओ अपनी तस्वीरें।

लोत्रक ने कहा उस कोठे में 27 लड़कियाँ हैं। मैं हरेक के साथ सोया और 27 पेटिंगें बनाईं, आर्ट आलोचकों ने धिक्कारा और कहा संसार की कुरूपता। आ शराब पीएँ वान। जाम ऊपर उठे, लोत्रक ने कहा संसार की कुरूपता के नाम।

वान ने कहा मैंने भावनाओं रहित किसानों को चित्रित किया है, स्त्रियाँ भी खेती करती हैं, अपने शरीर जोतती हैं। मिट्टी और मांस में क्या अन्तर है? दोनों मिट्टी के ही रूप है। तुम्हारा काम ठीक है मित्र।

वान ने पैरिस के सभी नए पुराने कलाकारों के स्टूडियो देखे, थीओ से कहा मुझे तो इनके मुकाबले में कुछ नहीं आता।

- तो सीखना शुरू कर दे।

- कितने वर्ष तो व्यर्थ नष्ट कर चुका हूँ, अब फिर से स्कूल में दाखिल हो जाऊँ?

- वे समय व्यर्थ नहीं था, अब काम आएगा। जो जो निरर्थक लगता है उसे छोड़ते जाओ।

- सीखने की कोई सीमा नहीं है थीओ?

- न। सीखना अनन्त है। परन्तु अब ये ट्रेनिंग अंतिम है। तुझे शिखर पर पहुँचने में अब अधिक समय नहीं लगेगा। तू संसार का बाप होगा आर्ट में, यह मिनटों में कैसे हो सकता है? काम तो करना ही पड़ेगा। एक कहानीकार है मोपासां, गाई डी मोपासां, ज़ोला का मुरीद है। वह भी तुम सब जैसा ही है।

वान ने गोगें से पूछा तू इतना अधिक इन कोठों पर क्यों जाता है? वहाँ प्रेम नाम की कोई वस्तु तो नहीं होती।

- न मैं वहाँ सुन्दरता देखने जाता हूँ न प्रेम करने। यसू ने कहा था मांस मांस है रूह, रूह। अच्छी बात ये है कि कुछ पैसे देकर मेरा मांस सन्तुष्ट हो जाता है, रूह भी शांत हो जाती है। कोठे पर मैं भावुक नहीं होता। भावनाएँ केवल मेरी पेंटिंग के लिए हैं। तुम्हें मैं पागल तो नहीं प्रतीत होता वान?

वान ने कहा मैंने अपने लिए इस शब्द का प्रयोग अनेक बार सुना है। मुझे अब ये अच्छा लगने लगा है। यदि मैं समझदार होता, कितना बदकिस्मत होता।

वान की बनाई नई पेंटिंगों को देखकर थीओ ने कहा तेरा नाम क्या है ओल्ड ब्वाय?

- विनसैंट वान गाग।

- फिर तुमने ये क्या किया? तुम्हें अच्छी तरह पता है कि तू सिऊरो या गोगें नहीं। सिऊरो है और गोगें, गोगें। ये पेंटिंग देखो, ये लोत्रक है। यदि तू ऐसा प्रभाव कबूल करेगा तो मर जाएगा। नकल करनी बंद कर दे।

- मैंने प्रभाव कबूल किया है, नकल नहीं की।

- मैं एक एक पेटिंग देखकर बता सकता हूँ कि कौन सा दिन तूने किसके साथ व्यतीत किया। साफ दिखाई दे रहा है सब कुछ। तू कितना बड़ा है तुझे नहीं पता, दिन प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है, नहीं जानता। नई कला को देखकर उसे हजम कर, फिर वान गाग दिखाई दे, केवल वान, अपनी ये पेंटिंग देख, इसमें चित्रित लड़की लोत्रक की है, धूप की किरणें मिछेल कीं, रंग मोने के, पत्ते पिसारे के, हवा सिऊरो की और केन्द्रिय सूरत माने की।

एक दिन गोगैं वान की पेंटिंगें देखकर कहने लगा मैंने थीओ के पास तेरी समस्त रचनाएँ देखी हैं। एक बात सच सच बताना। बुरा मत मानना। तुम्हें अकसर दिमागी दौरे पड़ते हैं?

- क्यों? मुझे दिमागी दौरे क्यों पड़ें?

- तेरी तस्वीरों से ऐसा ही प्रतीत होता है। ऐसा लगता है जैसे ये फट जाएँगी एक धमाके से। यदि न फटीं तो मेरा दिमाग फट जाएगा। पहले दिमाग फिर मेरे पेट तक ये प्रभाव चला जाता है और गड़बड़ होने लगती है। कोई न कोई गड़बड़ तो है।

हँसते हुए वान ने कहा तो फिर ऐसा करते हैं, मेरी पेंटिंगें बिकती तो है नहीं, हम इन्हें शौचालय में लटका देते हैं और लिख देते है जिन्हें कब्ज़ है, पेंटिंग देख ले। तुरंत पेट साफ। काम आ सकती हैं।

- तुमने भोजन कर लिया?

- नहीं।

- मैंने भी नहीं किया, वान ने कहा।

- पैसें हैं?

दोनों के पास एक पैसा नहीं। थीओ आएगा तो रोटी खाने जाएँगे। तब तक सैर करते हैं। बाहर निकले तो बगीचे के बैंच पर सजान सो रहा था। गोगैं ने देखकर कहा ये जूतों को तकिया क्यों बनाता है? उठाया, उठकर बताने लगा मुझे तकिए की आवश्यकता नहीं होती। सिर के नीचे जूते चोरी होने के डर से रखता हूँ। सजान ने पूछा रोटी खा ली? उसने कहा नहीं, तुमने?

- हमने तो खा ली।

- सज़ान ने कहा चलो मेरे साथ कंपनी कर लो। गोगैं ने कहा चलो ठीक है। बुरकी बुरकी खा लेंगे। इसका कहना नहीं टालना।

रोटी खाते समय सज़ान ने पूछा ज़ोला ने मेरे बारे क्या क्या बकवास की है, पुस्तक में पढ़ा है? - हाँ। बिल्कुल बकवास लिख रहा है, तुम्हारा मज़ाक उड़ाया है सज़ान। सज़ान ने कहा और स्वयं वह क्या है? उसके लेखन में वर्णित धोबिनें वास्तविक धोबनों की तरह गंदी भाषा बोलती हैं। प्रसंग में से जब धोबिनें बाहर निकल जाती है, ज़ोला भूल जाता है कि अब वे वहाँ नहीं हैं, उसके अन्य पात्र धोबियों की भाषा का उच्चारण करते रहते हैं। ये है उसका इंकलाब।

अगले दिन वान कॉफी हाऊस गया। गोगैं ने देखा एक कोने में ज़ोला बैठा था। परिचय करवाया। ज़ोला ने पूछा तेरे साथ सज़ान आ रहा था, मेरे बारे में कुछ कह रहा था?

- हाँ तेरी पुस्तक के कारण उसके मन को चोट पहुँची है, वान ने कहा।

- वह है ही फ्रॉड। पाँच वर्षीय बच्चे जितनी अक्ल नहीं है उसमें। तुमने वह पुस्तक पढ़ी? वान ने कहा नहीं, पढ़ूंगा, ***जरमीनाल*** पढ़ ली है।- कैसी लगी?
- बालज़ाक के बाद बस यही एक पुस्तक है, पूरी शानदार। ज़ोला खुश हो गया साठ हज़ार पुस्तकें बिक चुकी हैं। मैं एक पुस्तक के कारण ही अमीर हो गया। फ्रांस की कोयला कंपनियों में इसके कारण चार बड़ी हड़तालें हो गईं हैं। इंकलाब आएगा, पूंजीवाद को कहेंगे अलविदा, हमेशा के लिए अलविदा। तू कौन सी पेटिंग करता है वान? मैंने तेरा नाम सुना है किसी से। वान ने कहा, मैं थीओ का भाई हूँ, इसलिए थीओ से सुना होगा। - नहीं किसी दूसरे से सुना ... जरमीनाल, तू कभी कोयलों की खान जरमीनाल में गया है?

- हाँ बोरीनाज, दो वर्ष वहाँ खान मज़दूरों के साथ रहा।

- हे ईश्वर। बोरीनाज ... वह तू था जिसे मज़दूर यसू मसीह कहते थे। दूसरा मसीहा।

वान ने शर्माते हुए पूछा ये शब्द दूसरा मसीहा तुमने कहाँ सुना?

- मैं पाँच सप्ताह वहाँ बोरीनाज में रहा जहाँ तुम रहे थे। *जरमीनाल* के लिए मसाला एकत्रित कर रहा था। वहाँ मज़दूरों से तेरा नाम सुना। उन्होंने बताया तुमने भोजन छोड़ दिया, पैसे और कपड़े सभी मज़दूरों को दे दिए, स्वयं मौत के दरवाज़ पर चला गया, तुम्हें मिला क्या? अपमान। अपमानित करके नौकरी से निकाला। तुम्हारे कारण उनके जीवन में कुछ सुधार हुआ?

- बिल्कुल नहीं। हालत बद से बदतर होती गई।

- मेरी रचना के कारण परिस्थितियों में सुधार होगा। यूरोप में मेरी पुस्तक ने तहलका मचा दिया है। बगावत यकीनी है। देख, मैं समझदार रहा न? तेरी तरह भूखा नहीं मर रहा, पुस्तक के कारण लखपति हो गया, तेरी तस्वीरों ने क्या सुधार किया? कुछ नहीं। मेरी पुस्तक इंकलाब लाएगी। आओ, शराब पीएँ। बढ़िया विस्की। तभी दो तीन चित्रकार ज़ोला के पास आकर बैठ गए। बोतल आ गई तो सज़ान ने कहा ज़ोला की शराब पीओगे तो घंटों भाषण सुनना पड़ेगा। बोर कर देगा इंकलाब ला ला कर।

गोगैं ने बताया ज़ोला, तेरे विरुद्ध समाचार पत्र में लम्बा लेख छपा है। लिखा है कि तेरा लेखन अनैतिक है, दुराचारी है।

वान ने हँसते हुए कहा मेरी तस्वीरों ने कभी सदाचार को नहीं छोड़ा। आलोचकों को वे भी अनैतिक, अश्लील प्रतीत होती हैं। पता है क्यों? मैं सामान्य जनता के दुःख को प्रकट कर देता हूँ। उच्च वर्ग बेचैन हो जाता है कि कहीं निर्धन

इक्ट्ठे न हो जाएँ। वैसे भी, खरीदने की क्षमता उच्च वर्ग के पास ही है। उसके लिए उनके पसंदीदा दृश्य, खुशी, आनन्द उनको नहीं मिलेंगे। इसलिए मैं दुराचारी हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है पादरी बनकर मैं उन्हें उनके अगले जीवन का स्वर्ग दिखाता रहता, फिर भी मैं दुराचारी होता। अगले जन्म में नहीं, इस जन्म में उनके दुःखों को दूर करना ज़रूरी है।

ज़ोला ने बताया कल मुझे काऊँटैस मिली, कहा तुझ में अत्यधिक शक्तिशाली सृजन शक्ति है ज़ोला, फिर पत्थर उल्टा कर उसके नीचे दबे कीड़े हमें क्यों दिखाते हो? पिछले वर्ष विकटर हिऊगो की मृत्यु हुई। उसके साथ ही एक सभ्यता भी खत्म हो गई, सभ्यता जिसमें सूक्ष्म सदाचार था, सुन्दर लड़कियाँ थीं, रोमांस, मासूम बहाने, प्यारे झूठ, ये सब अब महत्त्व नहीं रखते। बीसवीं शताब्दी दुराचार की शताब्दी है।

रूसो ने कहा आज की दुनिया में वान सबसे बड़ा कलाकार है। हँस कर ज़ोला ने कहा अर्थात् सबसे बड़ा दुराचारी। क्यों वान? मिल गया ईनाम? वान ने हँसते हुए कहा यदि मैं दुराचारी होता, बहुत सुखी होता।

ज़ोला ने घोषणा की सुना भाइयो, सत्य सुन्दर है। किसी रूप में हो बेशक। कोमल बेईमानी की बजाए कठोर सत्य अच्छा है। पैरिस के बाज़ारो की अपेक्षा गाँवों के खेत अधिक सुन्दर हैं। खुशी की आयु कम है, दुःख सत्य है, दुःख की आयु लम्बी है।

लोत्रक ने ऊँची आवाज़ में कहा दुराचारियो गिलास उठाओ। क्यों नहीं पीते? दुराचार के नाम पर जाम छलकाओ। गोगैं ने सिगरेट को होंठो पर रखा, जाम उठाकर कहने लगा दुनिया में मैं अकेला व्यक्ति हूँ, एक घूंट में विस्की और सिगरेट दोनों पी सकता हूँ, देखो। उसने ये करामात करके दिखाई।

- हमें कोई नहीं जानता। विज्ञापन के लिए पैसे नहीं। लोगों के सामने अपनी प्रतिभा कैसे प्रकट करें। सभी के समक्ष यही समस्या थी।

वान ने कहा कोई होटल ढूंढो। उसके डायनिंग हॉल में अपनी तस्वीरें लटकाओ। लोग आएँगे, जाएँगे, क्या पता कोई खरीददार ही आ जाए।

- बात तो यह सही है परन्तु होटल हमें मुफ्त जगह क्यों देगा?

- क्योंकि हम मुफ्त में होटल सजाएँगे, वान ने कहा।

- बात तो ठीक है, गोरीओ की डयूटी लगाई। नारविन होटल ने तस्वीरें इस शर्त पर लगाने दी कि कलाकार प्रदर्शनी वाले दिन डिनर इसी होटल में करेंगे। ठीक है। सभी ने कहा ठीक है। किसकी पेटिंग कहाँ लगाई जाए, दोपहर तक यही मसला उलझा रहा। अंत में काम हो गया। ग्राहक चाय पानी रोटी खाने आते रहे, किसी

का ध्यान भी तस्वीरों की तरफ नहीं गया। मँहगा भोजन खाकर अपनी वस्तुएँ उठाकर कलाकार अपने अपने घर चले गए।

अंततः थीओ ने कह दिया वान, पैरिस तेरे मार्ग में बाधा है। तुम उलझनों के अतिरिक्त यहाँ कुछ देख नहीं सकते। तेरे बिना मेरा मन नहीं लगेगा, ये मुझे पता है, जितनी जल्दी हो सके तू इस भीड़ से निकल जा। तू प्रकृति का, गाँवों का चित्रकार है, पैरिस तुझे निगल जाएगा। पैरिस स्कूल है जो सारी उम्र व्यक्ति को विद्यार्थी बनाए रखता है। गाँव में प्रत्येक व्यक्ति उस्ताद होता है। यही अन्तर है गाँव और शहर में। तू उस्ताद है, शिक्षार्थी नहीं।

- तू मेरी सहायता करता रहेगा न थीओ?

- मुझ पर विश्वास रख, ये कहते हुए थीओं की आँखें भर आईं।

- मैं ज़्यादा गर्म इलाके में काम करना चाहता हूँ। पैरिस की ठण्ड ने मेरे अंगों को काठ मार दिया है। अफ्रीका की धूप में मेरे रंगों में निखार आएगा।

- नहीं, अफ्रीका दूर है। आरले, यूनान की बस्ती है। रोम ने यहाँ लम्बे समय तक राज्य किया। यहाँ बहुत धूप है। लोग सुन्दर और सभ्यक हैं। प्राचीन सभ्यता भी दिखाई देती है। अधिक मँहगा भी नहीं। आरले ठीक है।

थीओ काम से वापिस आया तो एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था आरले जा रहा हूँ। कुछ तस्वीरें दीवारों पर लटका दी है, ताकि मुझे भूल न जाओ। मन ही मन तुझसे हाथ मिला लिया वान।

आरले का सूर्य पिघले हुए लावे की गेंद जैसा था। आँखें चुंधियाने वाली धूप। साधारण होटल में कमरा ले लिया जिसमें कैनवस स्टैंड फिट नहीं हो सकता था, तो क्या, वह तो आऊटडोर पेंटिंग करेगा। शहर ऐसे था जैसे रोमन अभी उसे छोड़कर गए हों। पत्थरों के ऊँचे घर, तंग गलियाँ, ताकि कम से कम धूप आ सके। इतना गहरा नीला आकाश जीवन में पहली बार देखा। इसी प्रकार धरती पर हरियाली जैसे पागल हो गई हो। यदि इन रंगों को कैनवस पर उतारने में सफल हो गया तो कोई मानेगा कहीं ऐसे रंग भी हैं? लाल धरती, चांदी की तरह चमकता बादल जैसे चिल्लाता जा रहा हो, बड़े लाल गुलाब आपकी तरफ देखते रहते हैं। प्रकृति को नृत्य करते देखा। बादाम के फूल खिलने शुरू हो गए। इतनी गहराई से देखता रहा कि आँखें दर्द करने लगीं। पैरिस की ठण्ड जड़ से खत्म हो गई, सारी सुस्ती, थकान और उदासी उड़ गई। रूह आनन्दविभोर हो गई।

गुलाबी किनारों के मध्य नीला दरिया बह रहा था। वृक्ष के नीचें महिलाएँ कपड़े धो रही थीं। शाम को घूम कर आया और होटल के बार रूम में बैठकर जाम

का आर्डर दिया। एक अजनबी पास आकर बैठ गया, अपना नाम बताकर कहा मैं पत्रकार हूँ। आप?

- मैं आर्टिस्ट।

- कब तक रहोगे?

- लम्बे समय तक, शायद एक वर्ष।

- न रहो इतने समय तक, सूर्य की धूप पागल कर देती है। आँधियाँ पैर उखाड़ देते हैं। यहाँ के निवासी नीम पागल हैं।

वान ने हँसकर कहा तुम्हें ऐसा लगता है मैं यहाँ देर तक ठहर सकता हूँ।

यहाँ उसका मन लग गया। प्रतिदिन एक पेंटिंग बनाता, किसी दिन तो दो तस्वीरें बना लेता। उसने कैनवसों पर आँधियों और धूप को चित्रित किया। एक तस्वीर देखकर उसने स्वयं से कहा ये पेंटिंग देखकर लोग कहेंगे शराब पी कर बनाई है।

लोग उसे सही लगे। भूरे केश और लाल सिर होने के कारण लोगों ने स्वयं ही उसका नाम फूरू रख दिया, फू का अर्थ फूल, रू का अर्थ रैड, अर्थात् लाल पागल। ... फूरू ... धूप में खड़ा सारा दिन पेटिंग करता रहता। अब उसे ये चिन्ता नहीं थी कि लोग इसे पसंद करेंगे या नहीं, तस्वीर बिकेगी या नहीं। उसका कोई निजी जीवन नहीं। न पत्नी, न बच्चे, न ईश्वर, न खाने-पीने में रुचि, केवल पेंटिंग, पेटिंग ही उसका जीवन थी, पेंटिंग करता, बाकी सब कुछ भूल जाता, बस उसे यही चाहिए था।

एक शाम उसे शोर सुनाई दिया, उस तरफ गया। यह लालबत्ती इलाका था, किसी कारण बदमाशों ने दो सिपाहियों को मार दिया। अब पुलिस अनगिनत दलों को पकड़ रही थी। चीख-चिल्लाहट से बचता हुआ वह एक हवेली में चला गया। मालिक ने हाथ मिलाया, पूछा कोई गज़ब की वस्तु दिखाऊँ? एक लड़की है। देखो तो। बुलाया तो लड़की नाचते हुई कमरे में आई और ग्राहक को सलाम किया।

- तुम? तुम तो अभी बहुत छोटी हो? वान ने कहा।

- नहीं ... मेरी आयु 16 वर्ष है।

- यहाँ कब आई?

- एक वर्ष पहले।

नीली आँखों वाली ये लड़की बहुत सुन्दर थी। छातियाँ ऐसे प्रतीत होती थीं जैसे लड़ते हुए कोई दोनों अंगुलियाँ विरोधी दल की तरफ सेंध ले।

वान ने कहा तुम सुन्दर हो। लड़की खुश हो गई और कहा तुम भी सुन्दर हो फूरू। तुम्हें मेरा नाम कैसे पता? तुम सारा दिन धूप में खड़े होकर पेंटिंग करते रहते हो, लोग तुम्हें फूरू कहते हैं। तुम टोपी भी नहीं पहनते। देख तुम्हारी आँखें और

सिर धूप के कारण बहुत लाल हैं। - मेरा नाम वान है, तू मुझे वान नहीं कह सकती? लड़की ने कहा नहीं नहीं। फूरू नाम अच्छा है। मेरा नाम रछैल है।

- विस्की मंगवाऊँ? लड़की ने पूछा।

- नहीं वाईन ठीक है। मेरे पास ज़्यादा पैसे नहीं हैं। बोतल आ गई तो रछैल ने कहा मेरे कमरे में बैठते हैं। वहाँ पीना। कमरे में आ गए। वान पलंग पर बैठ गया। कान का चुम्बन लेते हुए रछैल ने कहा तेरे छोटे छोटे कान कितने सुन्दर हैं फूरू। एक महीने बाद मेरे पास कोई ग्राहक आया है। तू हर रात आया कर फूरू। वान ने कहा कहाँ, मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं। लड़की ने दोनो कान हाथों में लेकर कहा मेरी कीमत पाँच फ्रांक है फूरू। जिस दिन तेरे पास पाँच फ्रांक न हों एक कान दे जाना। दोनों बहुत हँसे।

वान जाने लगा, लड़की ने कहा जब मन करे मेरे पास आ जाना फूरू। दूसरी किसी लड़की के पास मत जाना। ठीक?

निर्विघ्न उसका काम चलता रहा। तस्वीरों से उसका कमरा भर गया, उसने एक फालतू स्लैब पर रखनी शुरू कर दीं तो होटल के मालिक ने इसका अतिरिक्त किराया मांगा। वान ने स्वयं से कहा यदि मेरे पास पैसे होते तो मैं अपनी तस्वीरें अधिक मूल्य पर खरीद लेता। पैसे भी और तस्वीरें भी, दोनों मेरे पास रह जातीं। उसे मोपासां का कथन याद आया कलाकार का अधिकार है वह अपने नवीन संसार की सृजना करे जो इस दृश्य संसार की अपेक्षा अधिक सुन्दर, साधारण, सांत्वना देने वाला हो और दिखने में अधिक वास्तविक प्रतीत हो।

- क्या इतनी अधिक संख्या में तस्वीरें बनाना ठीक है? उसने स्वयं से पूछा, परन्तु इसमें मेरा क्या दोष, शीघ्रता से ख्याल मन में आ रहें हैं और उतनी ही तेज़ी से ब्रश चलता जाता है, अब भावनाएँ मज़बूत हैं, होने दो जो हो रहा है, एक दिन आएगा जब भावनाओं से मुक्त हो जाऊँगा, फिर बैठ जाऊँगा खामोश। अभी तो बहुत काम करना बाकी है।

डाकिया रूलैं अपने बेटे के साथ कहीं जा रहा था। रास्ते में वान को पेटिंग करते देखा। डाकिये ने कहा मुझे आर्ट का बिल्कुल ज्ञान नहीं है श्रीमान, यदि आज्ञा हो तो देख लूं आप क्या करते हो?

- हाँ खुशी से रूलैं।

- तुम्हारे चित्रित खेत बिल्कुल वास्तविक प्रतीत होतें हैं वान। मैं जिन खेतों में आया हूँ, ये वही हैं, मेरी छाती में कुछ कम्पन हो रहा है वान, बेशक हाथ लगाकर देख लो। खेत की फसल काट ली जाएगी, खेत खाली हो जाएँगे, तुम्हारी ये फसल

युग युगों तक स्थिर रहेगी। मैं अनपढ़ व्यक्ति आर्ट के बारे में कुछ नहीं जानता, इतना जान गया हूँ तुम कमाल हो। जब मैं छोटा था, मुझे ईश्वर का अनुभव होता था, समय बीतने से उसकी आकृति धुंधली हो गई, आज फिर से कागज़ पर दिखाई दे रहा है। मेरा वेतन कम है नहीं तो मैं कोई तस्वीर अवश्य खरीदता।

- मैं किसी दिन तेरी तस्वीर बनाकर तुझे भेंट में दे जाऊँगा।

- श्रीमान् ये बताओ, इस संसार के अतिरिक्त भी कोई संसार है?

- इसके बारे में मुझे अधिक तो पता नहीं किन्तु ऐसा प्रतीत होता है जैसे बसें, रेलगाड़ियाँ, हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हैं, इसी प्रकार टायफाईड, तपेदिक और प्लेग हमें एक संसार से उठाकर दूसरे संसार में ले जाती हैं।

- आप मेरी तस्वीर नहीं बनाओगे श्रीमान् क्योंकि जैसे कुरूप व्यक्ति आपको चाहिए मैं उतना कुरूप नहीं।

वान ने हँसते हुए कहा तुम परमात्मा जैसे हो। परमात्मा के भी ऐसी ही दाढ़ी मूछ है।

- आप मज़ाक मत करें श्रीमान्, कल शाम हमारे घर भोजन करने आना। अधिक तो कुछ नहीं होगा, परन्तु जो भी है, आना अवश्य।

- अगले दिन भोजन करते हुए डाकिये ने कहा जवानी में मैं रिपब्लिकन होता था। मुझे ऐसा प्रतीत होता था हमारी गरीबी का कारण राजा लोग हैं। लोकतन्त्र में सभी बराबर होंगे। परन्तु कुछ नहीं बदला, वही सब कुछ है। मैं अनपढ़ हूँ श्रीमान्, यदि मैं पढ़ता तो शायद इन बातों के बारे में पता होता। वान ने हँस कर कहा मैं भी अशिक्षित हूँ। मुझे भी इसके बारे में कुछ पता नहीं चलता।

सोचने लगा इतना काम कैसे कर लेता हूँ? मुझे विश्वास है मृत्यु के पश्चात् जब मेरा शरीर जड़ हो जाएगा तब भी मेरी अंगुलियाँ पेटिंग करने के लिए कांपती रहेंगी।

होटल का कमरा छोटा और मँहगा था। सर्दियों में वह आऊटडोर काम तो कर नहीं सकेगा, इसलिए यदि कोई सस्ता कमरा मिल जाए। इस काम के लिए उसने डाकिए की सहायता ली। एक घर मिल गया। डाकिये ने कहा आप बात मत करना, आपको सौदा करना नहीं आता। घर देखा तो वान ने कहा इतना बड़ा घर मैं नहीं ले सकता, पैसे नहीं। किराये की बात हुई तो मकान मालिक ने पूछा पहले ये बताओ कब तक रहोगे? वान ने कहा कम से कम छह महीने, अधिक भी हो सकते हैं। मालिक ने कहा अच्छा? छह महीने? 15 फ्रांक अधिक तो नहीं। सौदा हो गया, इतना सस्ता? होटल खर्च का तीसरा भाग।

पाल गोगैं का पत्र आया कर्ज अधिक होने के कारण जेल काट कर आया हूँ, साहूकार ने मेरी तस्वीरों को ताले में रखा हुआ हैपैसे दे जाना और ये कचरा ले जाना। मेरी स्थिति भिखारी जैसी हो गई है।

पढ़कर वान को रोना आ गया। इतना शानदार कलाकार, वह कलाकार जिसके कंधों पर भविष्य के स्वप्न रंगों में रंगे हुए हैं, उसका ये हाल। संसार को धिक्कार। उसने सोचा यदि गोगैं यहाँ आ जाए? डेढ सौ में दोनों का निर्वाह हो सकता है। उसके साथ रहना स्वर्ग में रहने के समान होगा, उससे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा, और डेढ सौ ही क्यों, गोगैं थीओ को पेंटिंगें भेजता रहेगा उसकी पेंटिंगों की तो बिक्री होने लगी है, थीओ दो सौ भी भेज सकता है। देखते हैं।

डाकिया आया। खाली कैनवस देखकर पूछा क्या बनाओगे श्रीमान्?

वान ने कहा पतझड़। यह देखो, एक तरफ सरू के वृक्षों की पंक्ति होगी, बोतलों जैसे सरू यहाँ, चैसनट के पीले पत्तों वाले वृक्ष, कुछ नींबू, झाड़ियाँ इधर से उस तरफ जाएँगी, यहाँ रेत, यहाँ घास होगा, ये पगडण्डी होगी। ऊपर शून्य नीला आकाश।

- वाह श्रीमान् वाह। आप कमाल हो। खाली कागज़ पर आपने पूरा बाग दिखा दिया, आप अंधे को आँखें दे सकते हो। अद्भुत।

थीओ ने गोगैं के किराये का प्रबन्ध कर दिया। कुछ पैसे वान को अतिरिक्त खर्च हेतु भेजे। रंग और कागज़ भेजे। वान खुशी से उसका कमरा सजाने लगा, स्वयं तो नीचे फर्श पर सो जाएगा, उस्ताद का कमरा सुन्दर होना चाहिए।

गर्मी का आगमन हुआ, सूर्यमुखी फूल कैनवसों पर उतरे साथ ही उतरा पाल गोगैं। मालिक मकान ने खुश होते हुए कहा मैंने आपको देखा है श्रीमान्, पहले से देखा है।

- कहाँ? आपने वान को अपनी पेटिंग भेजी थी, मैंने देखी थी। आप शानदार कलाकार हो श्रीमान्।

वान और गोगैं कला के सिद्धान्त पर एक दूसरे से विपरीत थे। जो कलाकार जो शैली वान को पसंद थी, गोगैं उसके विरुद्ध था। जिन मामलों पर वे सहमत होते, सहमति के वो कारण भी एक दूसरे के विपरीत ही होते।

- तुम्हें कभी पेटिंग नहीं आएगी वान। तुम प्रकृति की नकल क्यों करते हो? प्रकृति को देख। फिर वापिस घर आकर ठण्डे दिमाग से ठण्डे खून से चित्रित कर।

- ठण्डा दिमाग? क्यों? मैं यहाँ गर्म दिमाग और गर्म खून के लिए इतनी दूर आया हूँ। मुझे गर्मी की आवश्यकता है ठण्ड की नहीं। पैरिस नहीं चाहिए।

- और प्रचार करना छोड़ दे। यदि प्रचार करना है तो चर्च में चला जा। पेटिंग प्रवचन नहीं करती, कहानी नहीं सुनाती, दृश्य होते हुए भी अदृश्य है। इसका स्वयं का कोई दर्शन नहीं होता, केवल ढंग होता है। वैसे तेरी मर्ज़ी। आज कोठे पर चलेंगे।

- ठीक है। परन्तु रछैल मेरी है। उसकी तरफ देखना भी नहीं। ठीक?

शाम को दोनों हवेली में गए। रछैल दौड़कर आई और वान की गोद में बैठ गई। हवेली के मालिक लूई से गोगैं का परिचय करवाया। लूई ने कहा श्रीमान् मैं पिछले वर्ष पैरिस से दो तस्वीरें खरीद कर लाया था। देखोगे? गोगैं लूई के साथ चला गया और रछैल वान को अपने कमरे में ले गई। वान ने कहा मैं यहाँ छह महीने से आ रहा हूँ मुझे तो कभी लूई ने तस्वीरें देखने के लिए नहीं कहा। रछैल हँसी तुम्हें चित्रकार कौन समझता है फूरू? तुम महीनों बाद आए हो। मेरी याद नहीं आती?

उसने दोनों कानों को हाथों में लेकर चूमा। कितने सुन्दर! यदि सम्भव होता तो इन्हें काटकर अपने सिर पर लगा लेती।

कोई हँसा या रोया, पता नहीं। हॉल में से चीखने की आवाज़ सुनकर दोनों वहाँ पहुँचे। गोगैं फर्श पर बैठा रो रहा था। वान को देखकर कहने लगा ये देख ... दीवार पर लगी दो तस्वीरों को देख। लूई, गूपलज़ कम्पनी से खरीद कर लाया है। वेश्याओं के कोठे तक तो पहुँचे आखिर। दूसरे स्थानों पर भी पहुँच जाएँगे। वह बाहर जाने लगा तो वान ने पूछा कहाँ जा रहा है अब? डाकखाने। अपने भाई को टैलीग्राम देने।

अगले दिन वान की तस्वीरें देखते हुए गोगैं ने कहा सारी उम्र नहीं। सारी उम्र तुझे ब्रश चलाना नहीं आएगा। अपने दिमाग में से विचार निकाल दो वान, दुनिया कबूल कर लेगी।

- ये मेरा स्टूडिया है श्रीमान्, मेरी तस्वीरें। मैं कबूल या अकबूल को नहीं मानता। जैसा तेरा मन करे तू रेखाएँ खींच, मैंने कभी दखल दिया है?

- तुम्हें तो पोस्टआफिस की स्टैंप विस्मादित कर देती है मूर्ख वान, तुम्हें क्या पता देगा क्या क्या चित्रित कर देता है।

- देगा क्या चीज़? मिछले का काम देखा है?

- मिछले? भावुक ... पागल ... वह क्या कर सकता है?

- मिछले मेरा रूहानी उस्ताद है, मेरा पिता, समझा?

- उसे तो रंगों के मेल के बारे में कुछ पता नहीं। रंगों में स्वप्न भरने होते हैं, रंगों से परेड नहीं करवाते ब्रिगेडियर। एक बात तुम्हें और बताऊँ वान? जो व्यक्ति मुझसे बहस करते हैं उनका दिमाग हिल जाता है।

वान ने हँसते हुए पूछा धमकी दे रहे हो?

- नहीं सूचना दे रहा हूँ।

बेपरवाह धूप में खड़ा होकर वान पेंटिंगें करता रहता। कभी कभी एक दिन में तीन पेटिंगें, सोचता क्या पता जीवन कब तक उपजाऊ रहेगा, पकी फसल को संभालना ठीक। समय को कैलण्डरों से नहीं मेरी तस्वीरों से मापा जाएगा। दुनिया को कब पता लगेगा, ये वो ही जाने, वान को विश्वास हो गया कि वह मंज़िल तक पहुँच गया है, सम्पूर्णता तक। यही बहुत है।

गोगैं ने पेंटिंग कर रहे वान का चित्र बनाया, देखकर वान ने कहा हाँ, ये हूँ तो मैं ही परन्तु ऐसा क्यों प्रतीत होता है जैसे किसी पागल वान का चित्र हो। दोनों होटल में विस्की पीने गए। अचानक वान ने गिलास गोगैं के सिर पर मारा, गिलास टूटकर बिखर गया। उसने वान को बाँहों में उठाकर पलंग पर लिटा दिया। तुरंत सो गया। अगले दिन सुबह उठकर वान ने कहा गोगैं मुझे थोड़ा बहुत याद है जैसे मैंने कल तेरा अपमान किया हो।

- मैंने तुम्हें बेपरवाह मन से क्षमा कर दिया। तुम्हें पता है मैं तुमसे अधिक ताकतवर हूँ? यदि मुझे गुस्सा आ जाता तो तुम्हारा क्या होता? एक बात कहना चाहता हूँ। तेरे इस व्यवहार के बारे में थीओ को ज़रूर बताऊँगा और जल्दी ही पैरिस चला जाऊँगा।

- न गोगैं न ये घर, इस घर की प्रत्येक वस्तु को मैंने तुम्हारे लिए खरीदा था। मुझे छोड़ देगा? वान ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी, कड़वे शब्दों का प्रयोग किया, धमकियाँ दीं, फिर रोने लगा। पीले घर में भावनाओं का तूफान आ गया। गोगैं सारी रात न सोता, सुबह होते ही सो जाता। उसे लगा, जब वह सो रहा होता है तो वान उसके पास खड़ा रहता है, क्यों? एक दिन पूछा तुम्हें क्या हो गया वान? वान ने कोई उत्तर नहीं दिया, पलंग पर लेटा, सो गया।

अगली रात वान फिर से गोगैं के समीप आकर खड़ा हो गया, ऊँची आवाज़ में कहा, जाओ जाकर सो जाओ वान। जाकर सो गया।

अगली सुबह वान ने सूप बनाकर दिया। घूंट भरते ही गोगैं चिल्लाया तुमने मेरे सूप में रंग मिला दिया है। वान हँसने लगा। शाम को दोनों कोठे पर गए। रछैल आई, हँसकर कहा मेरे कमरे में चलें फूरू। वान ने कहा नहीं मेरे पास

पाँच फ्रांक नहीं हैं। तो क्या हुआ फूरू? एक कान दे जाना। पाँच पाँच फ्रांक के तो होंगे हीं। ठीक है, वान ने कहा।

घर वापिस आ गए। वान ने उस्तरा उठाया गुसलखाने के शीशे के सामने खड़े होकर कान को जड़ से काट दिया। सिर के इर्द-गिर्द कपड़ा लपेटा, कान को नल के पानी से धोया। फिर साफ कागज़ में लपेटा। उसकी ये हालत देखकर गोगैं भागकर होटल में चला गया। वान ने कोठे की घंटी बजाई। दरवाज़ा खुला, कहा रछैल को भेजो। रछैल आ गई।

- हाँ फूरू। बताओ क्या बात है?

- मैं तेरे लिए उपहार लाया हूँ।

कागज़ खोल कर देखा, चीख मारकर बेहोश हो गई।

वापिस घर आकर वान सो गया। अगली सुबह गोगैं आया, घर के पास लोगों की भीड़ देखी। डाकिया रूलैं घबराहट में हाथ मसल रहा था। उसने गोगैं को पूछा तुमने क्या कर दिया अपने मित्र को?

- क्या किया है मैंने? गोगैं ने पूछा।

वह मर गया। ये खून देख। फर्श और सीढ़ियों पर खून ही खून। गोगैं और रूलैं पुलिस आफिसर के साथ अन्दर गए। खून से लथपथ बिस्तर पर वान लेटा हुआ था। गोगैं ने छूकर देखा, शरीर गर्म था, धड़कन चल रही थी। पाल ने पुलिस से कहा मैं जा रहा हूँ, मेरे सामने इसकी हालत और अधिक खराब हो जाएगी। अस्पताल ले जाओ। मेरे बारे में पूछे तो कहना पैरिस चला गया। बग्घी में अस्पताल ले गए, डाकिया साथ साथ भागता रहा।

डॉक्टर ने घाव को साफ किया, दवाई लगाकर पट्टी की, कमरे में से प्रत्येक वस्तु बाहर रख दी गई। आराम करे, बाहर से ताला लगा दिया गया। शाम को जब डॉक्टर नब्ज़ देख रहा था, जागा, पूछा मैं कहाँ हूँ?

-अस्पताल में, डॉक्टर ने कहा। वह अपना हाथ दाएँ कान की तरफ उठाने लगा तो डॉक्टर ने हाथ पकड़ लिया।

- याद आया। कान था यहाँ।

- घाव गहरा नहीं। जल्दी ठीक हो जाएगा।

- मेरा मित्र कहाँ है?

- पैरिस चला गया।

- ये कमरा बिल्कुल खाली क्यों है डॉक्टर?

- ताकि तुम बच सको।

- बच सकूं? किससे खतरा है मुझे?

- तुमसे ही। खून अधिक बह गया है, थोड़ी कमज़ोरी रहेगी, बाकी सब ठीक है।

- अच्छा, ठीक है। समझ गया।

- अगले दिन जब उठा तो पास थीओ बैठा था। पीला चेहरा, लाल आँखें। वान ने थीओ को देखा, घुटनों के बल बैठकर थीओ ने वान का हाथ बार बार चूमा, ज़ोर ज़ोर से रोने लगा, ऊँची ऊँची बच्चों की तरह।

- यहीं रहना थीओ, जाना मत। जब मेरी आँख खुले तेरा चेहरा सामने होना चाहिए। ठीक? तुम्हें किसने बताया?

- गोगैं ने। तार मिली। उसी समय यहाँ पहुँच गया। डॉक्टर ने बताया ये सनसट्रोक है, नंगे सिर तू धूप में पेटिंग करता रहा। ये अनेक लोगों को हो जाता है। तुम ठीक हो जाओ, खुशखबरी सुनाऊँगा। डॉक्टर चला गया, तो वान ने कहा सुनाओ वह शुभसमाचार।

- मैंने एक डच्च लड़की ढूंढ ली है जोहंना बंगर। सूरत, बुद्धि में अपनी माँ जैसी है। पहले तो मुझे अकेला रहने की आदत बन चुकी थी किन्तु जब से तुम मेरे पास एक वर्ष ठहरकर यहाँ आ गए तब से मेरा अकेले मन नहीं लगता।

- थीओ, दुःख के अतिरिक्त मैंने तुम्हें दिया ही क्या है?

- तुम यहाँ आ गए तो मुझे हर पल याद आता यहाँ तेरे जूते रखे हैं, यहाँ कैनवस, यहाँ रंग और रंगों की सुगन्ध।

रूलैं डाकिया हर शाम गुलदस्ता लेकर आता।

पूरी तरह ठीक हो गया तो डॉक्टर ने थीओ से कहातुम जाओ। अब कोई खतरा नहीं है। तुम्हारी जगह अब मैं यहाँ हूँ, मैं भी इसका भाई हूँ। थीओ चला गया। कमरे में मेज़, कुर्सी, गिलास आदि रख दिए गए। डॉक्टर ने कहा उठो वान बाहर ताज़ी हवा में चलते हैं, संभल कर, देखना टांगें भार उठाने में समर्थ हैं? सब ठीक है। बाहर आ गए।

- सत्य बताओ वान, तुमने ऐसार क्यों किया? डॉक्टर ने पूछा।

- पता नहीं डॉक्टर।

- तुम उस समय क्या सोच रहे थे?

- मैं? मैंने कुछ नहीं सोचा डॉक्टर।

सप्ताह के बाद वान डॉक्टर के सामने बैठा बातें कर रहा था, देखा मेज़ पर उस्तरा रखा था, उठाया और खड़ा हो गया, कहा डॉक्टर तुम्हारी दाढ़ी बहुत बढ़ गई है, कहो तो मैं शेव कर दूं?

- नीचे रखो, इसे नीचे रखो, डॉक्टर ने कहा।

- मैं बहुत अच्छी शेव करता हूँ डॉक्टर, दिखाऊँ?

- तुरंत बंद करके मेज़ पर रख वान। डॉक्टर चिल्लाया। वान ने उस्तरा बंद करके मेज़ पर रख दिया।

- मैं पेटिंग कर सकता हूँ डॉक्टर? खाली बैठे समय व्यतीत नहीं होता। डॉक्टर ने आज्ञा दे दी, हौसला देते हुए डॉक्टर ने कहा मेरी तस्वीर बना दे वान।

वान ने सुन्दर पोट्रेट बनाकर डॉक्टर को देते हुए कहा इसे कबूल करो डॉक्टर। मेरे पास और कुछ देने के लिए नहीं है। डॉक्टर ने तस्वीर की प्रशंसा की, धन्यवाद करते हुए कहा संसार के सबसे बड़े चित्रकार ने मेरा चित्र बनाया है। इससे अधिक शान क्या हो सकती है? वान खुश हो गया। अपने घर जाकर उस स्थान पर चित्र लटका दिया जहाँ दीवार में दरार थी। डॉक्टर और उसकी पत्नी देर तक चित्र को देखकर हँसते रहे।

वान को भयानक आवाज़ें और भयंकर दृश्य दिखाई देने लगे। कव्वों के झुण्ड से आकाश काला हो जाता और वे वान का मांस नोचने लगते। डॉक्टर नशे की दवा दे देता। डाकिया कभी उसे घर तो कभी होटल में खाने के लिए ले जाता। वान ने कहा रूलैं ये तो मुझे पता था कि टूटी हुई टांग, बांह ठीक हो जाती है, टूटने के बाद दिमाग भी ठीक हो जाता है ये मुझे पता नहीं।

एक दिन रछैल से मिलने गया, कहाक्षमा करना। मैंने तुम्हारे दिल को चोट पहुँचाई। लड़की ने कहा तुम कोई पहले नहीं हो फूरू। तुम्हारे जैसे बहुत है दिल को चोट पहुँचाने वाले।

ठीक होकर फिर से पेंटिंग करने लगा। डॉक्टर के पास जाता रहता। डॉक्टर ने कहा वैसे तो सभी कलाकार असाधारण सीमा तक भावुक होते हैं, यदि वे हमारे जैसे हो तो कलाकार कैसे होंगे? परन्तु तुम्हें बच कर रहना होगा वान। अधिक उत्तेजना घातक होती है। ये व्यक्ति को ले डूबती है।

- मुझे पता है डॉक्टर। मैं उस रास्ते पर चल रहा हूँ जो शीघ्र ही मृत्यु तक पहुँचने वाला है। परन्तु अन्य कोई उपाय नहीं, पेटिंग नहीं करता तो भी मौत ही है। एक कलाकार पेटिंग न करे तो फिर कैसा जीवन। मैं पेटिंग करूँगा।

एक दिन भी बिना रूके उसने इस अवधि में 37 चित्र बनाये। थक गया। कुर्सी पर बैठ गया, सारा दिन बैठा रहा, शाम को होटल में चला गया। सूप का आर्डर दिया। उसे भयंकर आवाज़ें सुनाई देने लगीं। सूप को फर्श पर फेंकते हुए चिल्लाया इस सूप में ज़हर क्यों मिलाया? मेरे कत्ल की योजना। सुरक्षा कर्मचारी पकड़कर अस्पताल छोड़ आए। आठ पहर के पश्चात् होश आने लगा। बातें करने लगा। फिर चलने फिरने लगा। सारा शहर उसे जान चुका था। बच्चे फूरू फूरू कहकर भाग जाते, फूरू दूसरा कान हमें दे दे? कटे हुए कान के टप्पे जोड़ जोड़ कर गाते

फूरू ने काट लिया दायां कान।
बायां भी जाएगा बात मेरी मान।
शोर मचाओ घण्टी बजाओ
न बात सुनता न टन टन।
फूरू, फूरू हो गया कहर।
फूरू के सूप में पड़ गया ज़हर।

वान चिल्लाया भागते हो यहां से कि नहीं? शैतान कहीं के? बहुत बुरी तरह पीटूंगा यदि न रुके। भाग जाओ। यह कहकर उसने अपनी वस्तुएँ नीचे गली में फेंकनी शुरू कर दीं। बच्चे तो भाग गए परन्तु उसने कोई चीज़ ऊपर कमरे नहीं छोड़ी। पैसा पैसा जोड़कर खरीदी प्रत्येक वस्तु को नीचे फेंक दिया, कैनवसों, रंगों, ब्रशों सहित सभी कुछ।

90 व्यक्तियों ने शहर के मेअर को पत्र लिखा हम आरली के निवासी निवेदन करते हैं कि श्रीमान् विनसैंट वान गाग नामक व्यक्ति पागल हो गया है। यदि उसे बंद न किया तो कोई दुर्घटना हो सकती है। पुलिस आई, जेल में अकेले को बंद कर दिया, बाहर पहरेदार तैनात कर दिया। जब उसे होश आया तो कहा डॉक्टर रे से मिला दो? सिपाही ने कहा नहीं। फिर कहा कुछ कागज़ और एक पैंसिल दे दो। मैंने अपने भाई को पत्र लिखना है। सिपाही ने कहा आज्ञा नहीं।

डॉक्टर रे को पता चला, तो स्वयं ही आ गया, कहा तेरे लिए ऐसा व्यवहार उचित नहीं है वान। एक बार यदि जेल के डॉक्टर ने लिख दिया कि तुम पागल हो तो सारी उम्र के लिए बंद समझो। मैं तुम्हें शीघ्र ही अपने साथ ले जाऊँगा। वायदा।

- थीओ को मत बताना डॉक्टर। उसका विवाह नज़दीक है। सब खत्म हो जाएगा। मैं स्वयं ही लिख दूंगा कि काम में उलझा होने के कारण विवाह में नहीं आ

सकता, बाद में जश्न मनाएँगे। डॉक्टर, आप अपने अस्पताल में मुझे कब लेकर जाओगे।

- इस बार अपने अस्पताल में नहीं। दूसरे में लेकर जाएँगे।

- पागलों के अस्पताल में? किन्तु मैं तो ठीक हूँ? मैंने वहाँ नहीं जाना वहाँ तो मैं पागल हो जाऊँगा।

- नहीं वान, तुम बिल्कुल ठीक हो। बात ये है जैसे शारीरिक रोग होतें हैं, उसी प्रकार मानसिक रोग भी होते हैं। थोड़ा पेच ढीला हो गया है तेरा, वहाँ बहुत ही समझदार डॉक्टर है, उन्होंने केवल पेच को कसना है।

- मुझे पेटिंग करने देंगे?

- क्यों नहीं? जो इच्छा हो वो करना। केवल स्वयं को घायल मत करना बाकी सब ठीक है।

- परन्तु इस सैल में से मैं कैसे निकलूंगा, जेल में से?

- मैं निकालूंगा। मैंने जमानत भर दी है। मेरे साथ तुम्हें भेज देंगे। डॉक्टर वान को रिहा करवा लाया, बग्घी में बैठकर पागलखाने ले गया। ऊँची पहाड़ी पर एक इमारत थी। डॉक्टर ने बताया पहले यहाँ कभी बहुत आबादी थी वान। दरिया में बाढ़ आ गई, पानी यहाँ तक आ गया जहाँ हम खड़े हैं। सब खेल खत्म, वह अस्पताल ईसाई आश्रम होता था। वहाँ अच्छे डॉक्टर और नर्सें हैं। लोहे का बड़ा दरवाज़ा खुला, दोनों भीतर गए, डॉक्टर नज़दीक खड़ा था, दुआ सलाम हुई, रे ने कहा यह मरीज़ नहीं डॉक्टर पेरो, मेरा मित्र है, कुशल चित्रकार। इसका ख्याल उसी प्रकार रखना जैसे मैं रखता था। यह कहकर डॉक्टर चला गया और पागलखाने का बड़ा दरवाज़ा बंद हो गया।

जिस वार्ड में वान को रखा गया वह थर्ड क्लास रेलवे वेटिंग रूम जैसा था। पागल, सिर पर टोपी, हाथ में लाठी पकड़े इधर उधर घूमते रहते जैसे गाड़ी या बस आने वाली है और सवार होकर अपने अपने ठिकानों पर चले जाएँगे। वान ने देखा, ग्यारह व्यक्ति उस चूल्हे की तरफ हाथ फैलाकर आग सेक रहे हैं जिसमें आग नहीं है। कोई नया व्यक्ति आया है, किसी ने नहीं देखा। आपस में कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। वान वार्ड से बाहर निकल उस स्थान पर आंगन में चला गया जहाँ डॉक्टर पेरो कुर्सी पर बैठा था, वान समीप ही बैठ गया। डॉक्टर ने कहा पहले मैं शरीर का इलाज करता था, अब रूहों को ठीक करता हूँ। एक ही बात है।

- आप मानसिक रोगियों के डॉक्टर हो। मैंने अपना कान क्यों काट लिया था डॉक्टर पेरो?

- कोई विशेष घटना नहीं। कान के तन्तु अधिक कोमल होते हैं। पागल को अजीब आवाज़ें सुनाई देती हैं। उसे लगता है कि कान काटने से आवाज़ें आनी बंद हो जाएँगी।

- फिर इसका क्या इलाज है डॉक्टर?

- इलाज? सप्ताह में दो बार गर्म पानी से स्नान।

- इसके अतिरिक्त मैं क्या करूँ डॉक्टर?

- न पढ़ना, न सोचना, न तर्क-वितर्क कर। शांत रहो। यदि तेरा बाईबल पढ़ने को मन नहीं करता, मैं नर्स से कह देता हूँ तुम्हें मज़बूर न करे। शाम का भोजन पाँच बजे तैयार हो जाता है। घंटी बजती है। बस इस जीवन से एकसुर हो जा, फिर जल्दी ही ठीक हो जायेंगा।

रात हुई, सभी अपने अपने बिस्तर में लेट गए। वान देर तक जागता रहा, पता नहीं कब नींद आई। सुबह उसकी आँख एक पागल की सिसकियों के कारण खुल गई।

पागल ऊँची ऊँची रोने लगा, चीखें आकाश तक पहुँच गई। एक युवक रोते हुए उठा, वान से कहामैंने पैसे छीनने के लिए कत्ल नहीं किया श्रीमान्। मेरी तलाशी ले सकते हो। मैं तो वकील हूँ। मैं आपका केस लड़ने के लिए तैयार हूँ। पुलिस ने झूठे केस में फंसा लिया।

वान को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। आसपास देखा। बाकी लोग गहरी नींद में थे। सुबह हुई। एक एक करके पागल उठते गए और बुझे हुए चूल्हे के इर्द-गिर्द बैठते गए। वान सोचने लगा इस सेंट नामक आश्रम में पागल रहते हैं, मुझे यहाँ क्यों भेजा गया? वह डॉक्टर की कोठी की तरफ जाने लगा तो कुत्ते के रोने की आवाज़ सुनाई दी, नहीं ... शेर की आवाज़ थी... थोड़ा आगे गया तो देखा एक पागल आकाश की तरफ मुँह उठाये आवाज़ें निकाल रहा है। चूल्हे के आसपास आग सेक रहे लोगों पर उसकी आवाज़ों का कोई असर नहीं पड़ा।

एक पागल ने चाकू की नोक को अपनी छाती पर रख कर चिल्लाते हुए कहा मैं जा रहा हूँ। खबरदार। कोई रोके मत। छलांग लगाकर एक पागल ने चाकू छीन लिया, कहा तुम्हें पता नहीं आज रविवार है? रविवार के दिन नहीं मरते। आज छुट्टी है। आज कुछ नहीं करना। छुट्टी मनाओ। कल मरना।

वान ने डॉक्टर से पूछा ये मरीज़ इतने खामोश क्यों हैं डॉक्टर? जब दौरा पड़ता तभी चिल्लाते हैं बस। डॉक्टर ने बताया बातें करने का अर्थ होता है तर्क

देना, इससे उत्तेजना उत्पन्न होती है, उत्तेजना का अर्थ है दौरा। इनको अनुभव ने सिखा दिया है- एक चुप सौ सुख।

- ये पुस्तकें भी नहीं पढ़ते डॉक्टर?

- वान, इन्हें अपने संसार से बाहर मत निकालो। ये निकलना भी नहीं चाहते। तुम्हें याद है ड्राइडन ने क्या कहा था? कहा पागलपन में आनन्द है इस आनन्द का महत्त्व पागलों के अतिरिक्त किसी को नहीं पता। थीओ ने डाक द्वारा शेक्सपीयर का *रिचर्ड दूसरा, हैनरी चौथा, हैनरी पाँचवा* भेजे। साथ ही समाचार मिला उसने विवाह करवा लिया है, पैकट में रंग और ब्रश हैं। डॉक्टर ने कैनवस और स्टैंड मंगवा दिया। वान डेढ मास पश्चात् फिर से प्रकृति के सामने खड़ा हो गया। उसे लगा जैसे वार्ड में फैली मौत की दुर्गन्ध से बाहर आ गया है। बहुत लम्बा और प्यारा पत्र थीओ को भेजा, लिखा जब छुट्टी मिली तब पैरिस आऊँगा, बहुत धूप देख ली।

पागल, वार्ड से बाहर आकर खामोश उसे पेटिंग करते देखते, बिल्कुल मौन, आदरपूर्वक। पागलों की खामोशी सुन्दर है। वास्तव में यही लोग हैं इज्ज़तदार।

एक दिन वान ने डॉक्टर से कहा बाहर मैदान में जाकर पेटिंग कर सकता हूँ? डॉक्टर ने कहा नहीं वान। खतरा है। यदि तुम्हें बाहर दौरा पड़ गया? यहाँ तो मैं हूँ इसलिए चिन्ता नहीं।

- नहीं डॉक्टर। बल्कि मैं ठीक हो जाऊँगा। इस बन्दीगृह में मुझे दौरा पड़ सकता है, बाहर जाकर बिल्कुल ठीक हो जाऊँगा।

दयालु डॉक्टर ने दरबान को इशारा किया, अपने रंगों, कैनवस और स्टैंड सहित वान को बाहर जाने की आज्ञा मिल गई। बहुत खुश। सूर्यमुखी के फूल देखे ... आज केवल सूर्यमुखी ही कैनवस पर उतारेगा। प्रतिदिन रंग भरता, प्रतिदिन नयी ताकत का अनुभव करता। स्वस्थ होने लगा।

डाकिया रूलैं और डॉक्टर रे से मिलने चला गया, तभी ध्यान में आया, पहले पीले घर के मकान मालिक के कब्ज़े में से तस्वीरें तो ले आऊँ। उस शाम वह आश्रम में वापिस नहीं गया। अगली सुबह गड्ढे में मुँह के बल गिरा देखा तो लोगों ने उठाकर आश्रम में पहुँचाया। तीन सप्ताह तक बुखार नहीं उतरा, बेहोशी की अवस्था में बोलता रहतासत्यानाश, बुरा हो। नर्सें आपस में बातें करतीं यह पागल होने के कारण पेटिंग करता रहता है या पेटिंग के कारण पागल हुआ है?

उसे डेलाक्रीकस का वाक्य याद आया जब मेरे मुँह में दांत नहीं थे, जब मेरे फेफड़ों में ताज़ी हवा का आवागमन शुरू नहीं हुआ था, उस समय मैंने पेंटिंग को ढूंढ लिया था। वान सोचने लगा मेरी आयु बीतती जा रही है, मुझे कब मिलेगी?

उसे संदेश मिला डॉक्टर पेरो ने बुलाया है। चला गया। रजिस्टर्ड पत्र आया था। खोला, थीओ का था, चार सौ फ्रांक थे। इतनी बड़ी रकम। पत्र पढ़ा प्यारे वान, तेरी एक तस्वीर चार सौ फ्रांक में बिक गई, लाल बगीचा, जो पिछली बसंत में बनाकर भेजी थी। अब तुम सारे यूरोप में जाओगे। यदि डॉक्टर आज्ञा दे तो इन पैसों से टिकट खरीद कर पैरिस आ जाओ।

वान ने डॉक्टर और उसकी पत्नी को पत्र पढ़ाया। खुश वापिस आ रहा था। पत्नी ने डॉक्टर से पूछा ये सच हो सकता है कि इतने पैसों में एक तस्वीर बिकी हो? डॉक्टर ने कहा इसका भाई अच्छा है, वह इसे ठीक करना चाहता है। हौसला बहुत बड़ी शक्ति होती है।

अगले दिन थीओ की तार आई शुभ समाचार है। जोहंना ने बेटे को जन्म दिया है, जो तेरा नाम है, वही रखा है विनसैंट। माँ और विनसैंट ठीक हैंथीओ। समाचार सुनकर पेटिंग करते हुए स्वयं से कहाजब मेरे मुँह में दांत नहीं रहेंगे, फेफड़ों में सांस नहीं होगी, तब मुझे पेंटिंग मिलेगी।

एक वर्ष पश्चात् उसे पता चल गया कि उसे हर तीन महीने बाद दौरा पड़ता है। अब जब उसे लक्षण दिखाई देंगे स्वयं पलंग पर लेट जाएगा। वह देखता नर्सें बार बार छाती पर क्रॉस बना रही हैं, माला फेरती रहतीं, पाँच छह बार प्रार्थनाएँ करतीं, बाईबल के पृष्ठ बदलती रहतीं, पता न चलता मरीज़ पागल हैं या नर्सें।

थीओ ने पत्र द्वारा बताया कि किस दिन पैरिस आएगा। गाड़ी आने से दो घंटे पहले ही थीओ स्टेशन पर पहुँच गया। प्रेमपूर्वक मिले, घर आए, जोहंना के कंध ो पर हाथ रखकर कहा सुन्दर लड़की ढूंढी तुमने थीओ। भीतर बच्चे को सोता देखकर वान की आँखें भर आईं। जोहंना समझ गई वान उस मांस का लोथड़ा है जो स्वयं में से एक लोथड़ा पैदा करके नहीं जाएगा, जो उसके मरने के बाद जीवित रहे। वान की मृत्यु अनन्त होगी। जोहंना ने अभी दायां कान देखा नहीं था। बच्चा जाग गया, वान ने उठा लिया, थीओ ने वापिस लेकर गर्दन के नीचे हाथ रखते हुए कहा ऐसे पकड़ते हैं बच्चे को।

वान ने हँसते हुए कहाब्रश पकड़ने के अतिरिक्त कुछ और पकड़ना हीं नहीं आता, अपना अपना जीने का ढंग होता है थीओ। तुम जीवित मांस द्वारा जीओगे। मैं रंगों में जीवित रहूंगा।

अगले दिन थीओ और वान के मित्र मिलने के लिए आने लगे। जोहंना चाय-कॉफी देती रही। दर्जनों कलाकारों का मेला लग गया। सभी वान के लिए कोई न कोई उपहार लेकर आए। थीओ ने एक पैकट वान को दिया। खोल कर देखा

ये तो उसके सभी पत्र थे। एक एक पंक्ति संभाली हुई, बीस वर्ष से लेकर अब तक के 700 पत्र। फिर अलमारी खोली... दस वर्ष पहले खान मज़दूरों के रेखाचित्रों से लेकर अब तक के आखिरी रंगीन चित्र तक ... प्रत्येक पत्र, प्रत्येक दस्तावेज़, तिथियों सहित।

अगले दिन थीओ पत्नी बच्चे सहित दोपहर तक कहीं चला गया। वान अकेला रह गया। उसने निर्णय किया घर की सभी दीवारों पर तस्वीरें लगा देता हूँ ... काल क्रमानुसार। उसने घर में कोई जगह नहीं छोड़ी। शाम को जब तीनों वापिस आए तो वान ने कहा आँखें बंद करो, तुम्हें प्रदर्शनी दिखानी है। आँखें बंद की। दरवाज़ा खोलकर कहाआँखें खोलो, देखा तो वान का संसार दिखाई दे रहा था। पति पत्नी ने तालियों से उसकी प्रशंसा की तो वान ने कहा थीओ, पिता जी कहते थे बुराई में से अच्छाई उत्पन्न नहीं हो सकती। मैं उत्तर देता उत्पन्न होनी आवश्यक है। देखो दस वर्ष पहले जिसे चलना नहीं आता था, अब आकाश में उड़ रहा है। प्रदर्शनी नहीं, कलाकार का जीवन देखते हुए सभी आगे बढ़े।

जोहंना ने डच्च भोजन बनाया, वर्षों पश्चात् वान ने घर के भोजन का स्वाद अनुभव किया। थीओ ने कहा यहाँ डॉक्टर गाछे मनोवैज्ञानिक है, काम में तो निपुण है ही, उसकी विशिष्टता कलाकारों को ठीक करने में है, जैसे वो कहे वैसा करते जाना। वह स्वयं एक चित्रकार है, प्रति वर्ष प्रदर्शनी आयोजित करता है। वान ने पूछा क्या उसने मेरी कोई तस्वीर देखी है? हँसते हुए थीओ ने कहा तभी तो उसने तुम्हें पैरिस आने के लिए कहा? तेरी सूर्यमुखी वाली पेटिंग देखकर उसने कहा था इससे पहले ऐसा सूर्यमुखी कला के इतिहास में नहीं हुआ। इस अकेली पेटिंग के कारण वान अमर है।

गाछे खुशी से मिला, कहा कमाल हो गया, अपना काम करने का सामान साथ ही ले आया वान। मैं सोचता था यहाँ पेटिंग करने के लिए कहूंगा मेरे घर में, पता नहीं मानेगा भी या नहीं। थीओ ने जाने की आज्ञा मांगी और कहा ध्यान रखना डॉक्टर। कोई मुश्किल आए तो मुझे तार भेज देना। मेरा तो स्वयं मन करता है मैं पागल हो जाऊँ। वान, सुनो कोई शानदार रूह ऐसी नहीं जिसमें पागलपन का मिश्रण न हो, पता किसने कही है ये बात? अरस्तु ने।

- परन्तु डॉक्टर इसकी आयु अभी 37 वर्ष है, थीओ ने कहा, वास्तविक जीवन तो अभी शुरू होना है।

एक महीने में थीओ, केवल एक महीने में नौ बर नौ। सबसे पहले मेरा पोट्रेट बनाएगा। वान ने कहा नहीं अभी नहीं। अभी मैं आपको जानता नहीं। चित्र वो होता है जो व्यक्तिगत गुण अवगुणों को प्रकट करे, केवल नैन-नक्शों को नहीं।

कुछ दिनों बाद डॉक्टर का चित्र बनाने लगा। सारा दिन बीत गया। शाम को डॉक्टर ने अपना चित्र देखा, जैसे पागल हो गया हो खुशी से। गज़ब, अद्भुत, कमाल, देर तक प्रशंसा करने के पश्चात् कहा ये चित्र मुझे मिलेगा? वान ने हँसते हुए कहा और किसे मिलेगा? डॉक्टर की खुशी की कोई सीमा नहीं रही।

- मेरे पास छापे की मशीन है वान। जितनी चाहो तस्वीरें छपवा लेना। एक पैसा खर्च नहीं होने दूंगा।

तीसरा महीना आ रहा था, वान के दौरे का समय। चिंतित हो गया कि उसके कारण सभी परेशान होंगे। दूसरा समाचार मिला, थीओ का बेटा बीमार है, वान उसका हाल-चाल पूछने गया। बच्चे की अपेक्षा थीओ अधिक कमज़ोर लगा।

- तुम्हें क्या हो गया थीओ?

- थीओ ने कहा एक तो बेटे की चिंता, दूसरा कम्पनी ने मुझे कहा तुम्हारा काम ठीक नहीं, नुकसान हो रहा है, मुझे किसी दिन भी नौकरी से निकाला जा सकता है। मैं नए कलाकारों के चित्र खरीदता रहा, कम्पनी का नुकसान हुआ, वह बिक नहीं रहीं।

- यदि नौकरी से जवाब मिल गया, तब अपनी दुकान खोलोगे?

- कैसे खोलूंगा, मेरे पास पैसे कहाँ हैं?

- तुम व्यर्थ ही मुझ पर पैसे बहाते रहे थीओ।

- ऐसी बातें करके मुझे दुःखी मत करो वान। और बातें करो। मुझे पत्नी और बेटे की अधिक चिंता है।

कुछ दिन भाई के पास रूककर डॉक्टर के पास वापिस आ गया, चिन्ताग्रस्त, यदि थीओ को नौकरी से निकाल दिया, फिर भीख मांगेगे? भाभी और बेटा? वह होटल में चला गया। कुछ खाने पीने के लिए पैसे नहीं थे, थीओ से मांगने की स्थिति नहीं थी, रंग और कैनवस कैसे खरीदेगा? दौरा पड़ने में भी कुछ दिन बाकी थे। चलो, यदि पेंटिंग करने के लिए नए अनुभव उत्पन्न होने तो भी बंद हो गए तो? प्रकृति की इच्छा है ये कारखाना अब बंद हो।

जुलाई के मध्य में गर्मी हो गई, बच्चा अभी भी बीमार था, थीओ की आर्थिक स्थिति अधिक अच्छी नहीं थी तो भी पचास फ्रांक भेजे। शायद आखिरी पचास फ्रांक ही हों, वान ने सोचा। नदी के किनारे हरे घास पर चलते हुए खेतों में पहुँच गया,

फिर वापिस आकर डॉक्टर गाछे के पास भोजन किया, खाया तो पेट भर, परन्तु स्वाद कैसा था पता न चला। डॉक्टर, वान की तस्वीरों की प्रशंसा करने से नहीं रुका तो वान ने कहा ये किसी अन्य के हाथ है, मुझसे तो हस्ताक्षर ठीक ढंग से नहीं होते। सोचने लगा, मान लो थीओ की नौकरी बनी रहे, मान लो मुझे डेढ सौ फ्रांक मिलते रहें, तब मैं जीवित रहूंगा? अब करने योग्य काम नहीं रहा तो पागलखाने में एड़ियां रगड़ने का क्या मतलब? ये भी मान लो मैं बिल्कुल ठीक हो जाता हूँ, तो भी मेरा थीओ के पैसे पर अब कैसा अधिकार? उसकी कमाई अब उसके बेटे विनसैंट के लिए हैं मेरे लिए नहीं। अब मैं होश में हूँ, निर्णय करने में समर्थ, मान लो दौरा पड़ने के बाद दिमाग बिल्कुल नकारा हो गया, तब थीओ क्या करेगा? अब मैं स्वयं को गोली मारने में समर्थ हूँ, अटैक के बाद दिमाग नकारा हो गया तब तो ये काम भी हाथ से निकल जाएगा! अन्य किसी ने तो ये काम करना नहीं।

सामान लेकर पेटिंग करने के लिए खेत की तरफ चला गया, अभी ब्रश उठाया ही था कि कौओं की कतार इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगी, जैसे जिस्म नोच लेंगे ... उसने जल्दी जल्दी इन कौओ का ही चित्र बना दिया, नीचे लिखा पकी फसल पर कौवे। आखिरी पेंटिंग। जीवन में मिलने वाले सभी व्यक्ति एक एक करके याद आए ... अब सभी को अलविदा कहें ... हाँ विदा तो होते ही हैं, विदायगी को चित्रित नहीं करते, रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया, गिर गया। कुछ देर बाद संभल कर उठ गया, धीरे धीरे चलते हुए उसी होटल में पहुँच गया जहाँ रह रहा था, लहुलुहान। होटल के लोगों ने बिस्तर पर लिटाकर डॉक्टर गाछे को बुलाया। जल्दी से निरीक्षण करके डॉक्टर बैठ गया। पूछा दर्द कितना है?- कोई दर्द नहीं, वान ने कहा सिगार जलाकर दे दो। डॉक्टर ने कहा वान आज कम्पनी बंद है थीओ के घर का पता लिखवा दे।

- नहीं, आज उसे छुट्टी मनाने दो। छह दिन काम करने वाले को एक दिन भी आराम न मिले? आज नहीं बताना।

अगले दिन थीओ को दफ्तर में तार मिली, गाड़ी चढ़कर पहुँच गया।

- आ गया थीओ? वान ने कहा। थीओ ने बच्चे की तरह उसे गले लगा लिया। कुछ बोल नहीं पाया। डॉक्टर आया तो थीओ उसे बाहर ले गया, न में सिर हिलाते हुए कहा गोली अंदर है। इतना खून बह चुका है कि आप्रेशन नहीं हो सकता। बस काम खत्म। इतना बड़ा घाव, ये चलकर यहाँ तक पहुँच कैसे गया... जैसे फौलाद का बना हो। सारा दिन थीओ पलंग के समीप बैठा रहा।

वान ने कहा गाँव का घराट याद है थीओ? हम वहाँ खेलते थे। ऊँची लम्बी फसलें पार करते समय तुम मेरी बांह पकड़कर चलते, कहीं गुम न हो जाऊँ। रसोई के पीछे के बगीचे में खेला करते थे हम दोनों। अस्पताल में बचपन और गाँव याद आता रहा।

- बहुत समय बीत गया उन बातों को वान!

- हाँ ... लम्बा जीवन पथ। अपना ख्याल रखना। जो और छोटे का भी ख्याल रखना। गाँव में जाकर रहो, वहाँ बच्चा स्वस्थ हो जाएगा, अधिक स्वस्थ रहेगा। गूपल कम्पनी को छोड़ दे, क्या दिया उसने तुम्हें, क्या छोड़ा उसने तुममें?

- वान अब मैं अपनी गैलरी स्थापित करूँगा। पहली गैलरी तेरे चित्रों की होगी। बैनर लगवाऊँगा : विनसैंट वान गाग की सम्पूर्ण सामाग्री।

- ठीक है, थीओ जीवन को कला के लिए समर्पित कर, मेरा उद्देश्य पूरा हुआ।

अगली सुबह करवट बदलते हुए कहा अब मैंने जाना है थीओ। आँखें बंद कर लीं। जब आखिरी सांस ली तब उसका हाथ थीओ के हाथ में था। रूसो, गोरिओ तांगी, आरी, एमिल पैरिस से यहाँ होटल में पहुँच गए। होटल एक दिन के लिए बंद कर दिया गया। काले रंग की बग्घी के आगे दो काले घोड़े। उपस्थित कलाकार एक दूसरे से नज़रें नहीं मिला सके। पादरी को बुलाना भूल गए। कोचवान दरवाज़े से भीतर आया, कहा अब चलो जी। ताबूत उठाते समय डॉक्टर के अलावा कोई बोल नहीं सका। डॉक्टर ने कहा वान कहीं नहीं गया। उदास मत होना, वह हमेशा यहीं रहेगा। उसका प्रेम, उसकी सृजना, उसकी सुन्दरता हमेशा संसार को प्रकाशित करती रहेगी। वह विशाल पर्वत था। आर्ट का महान् शहीद।

थीओ ने धन्यवाद रूप में कुछ कहना चाहा ... मैं .... मैं.... बोल नहीं पाया।

ताबूत को उठाकर गाड़ी में रख दिया गया। गाँव के कब्रिस्तान में पहुँच गए। छह लोगों ने अर्थी उठाई, थीओ पीछे पीछे गया। अर्थी नीचे उतार कर मिट्टी डाली गई। वापिसी के समय थीओ ने फिर कुछ कहना चाहा, परन्तु नहीं।

कुछ दिनों पश्चात् डॉक्टर गाछे ने कब्र के इर्द-गिर्द सूर्यमुखी के बीज बो दिए। थीओ खामोश रहता। छह महीनों पश्चात् थीओ की मृत्यु हो गई। पैरिस के कब्रिस्तान में दफनाने की तैयारी हो रही थी। सांत्वना हेतु जोहंना ने बाईबल खोली, सैमुअल की पंक्ति पढ़ी, लिखा था मौत भी उन्हें अलग नहीं कर सकी। पढ़कर कहा पैरिस में नहीं, वान की कब्र के समीप। दोनों भाई एक साथ सोएँ।

ओवेर गाँव की धरती पर जब धूप चाबुक मारती है, तब थीओ, वान भाई के सूर्यमुखी फूलों की छाया के नीचे विश्राम करता है।

काफ़्का की पत्नी दोरा

(4 मार्च, 189815 अगस्त, 1952)

(जो सम्भव है, घटित होकर रहेगा यकीनन,
जो घटित हुआ, वही सम्भव था काफ़्का)

काफ़्का की पत्नी दोरा के जीवन सम्बन्धी रचनाएँ प्राप्त हैं किन्तु कैथी दायमन्त की रचना सर्वाधिक विश्वसनीय है। पुस्तक का नाम है, ***काफ़्का ज़ लास्ट लव।*** इस पुस्तक की रचना मूल स्रोतों के आधार पर की गई है और उन लोगों से मुलाकात की जो दोरा के अधिक समीपी रहे, इनमें उसके परिवार के सदस्य भी शामिल हैं। यहूदियों के पुरातन ग्रन्थ हिब्रू भाषा में है परन्तु जो भाषा यहूदियों बस्तियों में बोली जाती है वह यिद्दिश है जो हिब्रू के समीप है। हिब्रू और अरबी भी एक दूसरे से समानता रखती हैं, हिब्रू के पहले अक्षर, बे, वे, जीम, दाल, हे, आदि ही हैं। दोरा की यिद्दिश रचनाओं में से विवरण दिए हैं। उसने जर्मन में अपनी रचनाएँ प्रकाशित करवाई, उनका अध्ययन है। कैथी ने रूस, इज़राईल, पोलैंड, जर्मन और अमेरिका के प्राचीन अनुसंधान केन्द्रों में खोज की। कैथी बताती है जब 1971 में वह काफ़्का की कहानी ***मैटामारफोसिस*** का अनुवाद कर रही थी तो उसके अध्यापक ने पूछा, तू भी दायमन्त है कैथी, तू दोरा दायमन्त की रिश्तेदार हैं? कैथी ने कहा मैंने तो ये नाम पहली बार सुना है, कौन थी दोरा? अध्यापक ने कहा काफ़्का के जीवन की अंतिम स्त्री, उसकी बांहों में काफ़्का ने अंतिम सांस ली, दोरा ने उसकी रचनाएँ जला दी थीं। अध्यापक की बात सुनकर कैथी ने मैक्सब्रोद द्वारा लिखित काफ़्का की जीवनी को पढ़ा तो पता चला जब दोरा काफ़्का से मिली, 19 वर्ष की थी। यही उम्र कैथी की है।

कैथी लिखती है इस पुस्तक को लिखने में अनेक भले लोगों ने सहायता की परन्तु सच मानना, दोरा मेरी सहेली बन गई, वह हरपल मेरे साथ रहती, मैंने उससे सीखा, कैसे किसी के काम आना है, स्वयं को बदला कैसे जाता है। वर्ष 1948 में काफ़्का के विषय में उसकी पहली इंटरव्यू प्रकाशित हुई जिसमें उसने कहा था मैं निष्पक्ष नहीं हूँ, हो ही नहीं सकती, इस कारण जो तथ्य बताऊँगी उनका कोई महत्त्व नहीं, एक पवित्र वातावरण का निर्माण करूँगी मैं। जो कहानी तुम्हें सुनाऊँगी उसके भीतर एक पृथक् सत्य है और मैं उस सत्य का लघु भाग हूँ, इसलिए निष्पक्ष नहीं। ये पंक्तियाँ लिखते हुए कैथी का कथन है मैं दोरा के दायमन्त परिवार को

मिली, उन्होंने बहुत हौसला दिया। मुझे प्रमाण तो नहीं मिले, परन्तु अनुभव हुआ कि मैं दोरा दायमन्त परिवार की रिश्तेदार हूँ, इसलिए मैं भी निष्पक्ष नहीं हूँ।

तीन जून 1924 आधी रात, काफ़्का, सैनेटोरियम में सो रहा था। दोरा समीप बैठी उसे देख रही थी, तीखा नाक, गहरी आँखें, लम्बा कद, जैसे गोरे रंग का कोई हिन्दुस्तानी हो। पहली बार देखा तो दोरा को वह हिन्दुस्तानी ही मालूम हुआ था। सामने खुली खिड़की में से ताज़ी हवा आ रही थी, छाती धीरे धीरे ऊपर नीचे बैठ रही थी। अब वह निरन्तर मृत्यु की तरफ बढ़ रहा था परन्तु दोरा की जिद्द थी कि वह उसे मृत्यु के पंजे से छुड़ा लेगी। इस यहूदी लड़की ने बचपन में इंजील की साखियाँ सुनी और पढ़ी थीं जिनमें करामातें ही करामातें थीं। यहाँ भी करामात होगी काफ़्का स्वस्थ होकर घर जाएगा। पानी की एक छोटी घूंट पीते समय भी दर्द होता था, तो भी काफ़्का की इच्छा जीवित रहने की थी। उसे सांस लेने में तकलीफ होने लगी तो दोरा ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा यदि तू न बच सका तो मैं आत्महत्या कर लूंगी फरांज़। मासूम ब्लैकमेल। काफ़्का मर गया। दोरा वर्षों तक जीवित रही। ग्यारह मास पूर्व जब वह काफ़्का से मिली, उसी दिन एक स्वप्न ने जन्म लिया था कि इक्ठे फलस्तीन जाएँगे।

13 जुलाई 1923 को गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने हेतु बालटिक्क सागर के तट पर कैंप की रसोई में मछलियाँ साफ कर रही थी। दिन में पतले लम्बे एक व्यक्ति को दो बच्चों के साथ खेलते देखा था। स्वयं ये लड़की मध्यम कद एवं ठीक-ठाक सूरत की थी। गहरी काली आँखें, जब मुस्कराती, मोनालिज़ा जैसी उदासी उसके चेहरे पर बैठ जाती। अपनी ये सूरत उसे भी अच्छी लगती थी क्योंकि अनेकों फोटों में यही उदासी भरी मुस्कान है। ये अनाथ रिफ़ूज़ी बच्चों का कैम्प था जो प्रथम विश्व युद्ध में उजड़ गए थे। रविवार होने के कारण अधिक भोजन बनाना था। वह दात्रे से मछलियों के सिर धड़ से अलग करने लगी। पृष्ठभूमि पोलैंड की थी परन्तु दसवीं पास इस लड़की ने इश्तिहार पढ़े जिस कारण अनाथ यहूदी बच्चों की देखभाल के लिए वलंटीयरों की मांग की थी। ये लड़की स्वयं नफ़रत और भेदभाव का अनुभव कर चुकी थी इस कारण परिवार को बताए बिना कैम्प में आ गई। बच्चे उसे अधिक प्रेम इस कारण करते थे क्योंकि उसके जितनी कहानियाँ किसी को नहीं आती थीं।

पुरानी बाईबल की साखियों को सुनाते सुनाते वह यैरोशलम पहुँच जाती, कहती गैलीली के पत्र, कैनान देश, बड़ों की पवित्र धरती। सुना है रेगिस्तान है, तो क्या, हम बाग लगायेंगे, हमारे बच्चे, फिर बच्चों के बच्चे वहाँ निडर होकर खेलेंगे।

बहन भाइयों में सबसे बड़ी दोरा थी, माँ की मृत्यु के पश्चात् उनकी परवरिश दोरा ने की। काम था तो कठिन किन्तु इससे उसकी भीतर की ममता के अंश बलवान हो गए, बचपन में ही उसने जिम्मेवारी संभालनी सीख ली। यहूदी पिता हठ-धर्मी था। लड़कियों की शिक्षा के विरुद्ध, लड़कियाँ धर्म ग्रन्थों का पाठ कभी नहीं करेंगी। कहता पैगम्बरों की बातों का बच्चों से क्या सम्बन्ध? पहली पत्नी की मृत्यु के दस वर्ष बाद उसने दूसरा विवाह करवाया, तब तक दोरा जवान हो चुकी थी। पिता ने आज्ञा नहीं देनी थी, बिना बताए कैम्प में आ गई। कुछ समय तक थिएटर में काम किया। परम्परा से हटकर उसने एक अलग जीवन व्यतीत करने का निर्णय किया, स्वयं कमाएगी, खाएगी, स्वयं ही अपने निर्णय करेगी। पोलैंड छोड़कर जर्मनी आ गई, कहती दोस्तोवसकी के उपन्यास का कोई सामान्य पात्र आँखों में स्वप्न लेकर जैसे अंधेरे रास्ते की ओर बढ़ता है उसी प्रकार मैं बढ़ी अनजान रास्तों पर। पिता ने वापस लाने का प्रयास किया, व्यर्थ। पिता अनुसार कलंक लगा गई।

मछलियों के टुकड़े करते हुए उसका ध्यान फिर से बच्चों के साथ खेलते उस लम्बे युवक की तरफ गया। कैम्प में घोषणा की गई कि आज पराग का डॉ. काफ़्का नामक लेखक आएगा। कमरे में दरवाज़े से आ रही रोशनी कम हुई तो देखा, दरवाज़े पर वही लम्बा युवक खड़ा था, सिर थोड़ा सा एक तरफ झुका हुआ। कल रात की अपेक्षा थोड़ा अधिक लम्बा, छह फुट से अधिक। उसने रसोई में कदम रखा तो दोरा को घबराहट हुई। उसकी दृष्टि किसी जादूगर के समान थी। व्यक्ति ने कहा कोमल हाथों को खूनी काम करना पड़ा। सिर झुकाकर अपने टोप को छूकर सलाम किया। फिर चला गया।

शाम को भोजन के समय दोरा ने देखा, सभी बच्चे खामोश बैठे हैं परन्तु वह अजनबी कुछ बातें करने आया है। तो ये है पराग से डॉ. काफ़्का। समीप होटल में ही रहता है। कैम्प के रास्ते का पता नहीं था इसलिए घूमते घूमते रसोई की तरफ चला गया था। कल जब दोरा ने देखा था तो एक लड़का और लड़की उससे खेल रहे थे, समीप एक महिला भी खड़ी थी। दोरा ने समझा ये उसका परिवार है। परन्तु आज ये अकेला क्यों आया है हॉल में? बाद में पता चला कि होटल में वह अपनी बहन और भानजी के साथ रह रहा है, अभी अविवाहित है। ये समाचार सुनकर दोरा खुश हुई। प्रार्थना, क्या पता सुन ली जाए। पहले दिन मछलियों सम्बन्धी उसकी टिप्पणी से उसके शाकाहारी होने का बोध हो गया था। उसे पता चलता गया कि काफ़्का वकालत में पीएच.डी. करने के बाद बीमा कंपनी में अफ़सर के पद पर कार्यरत है और लेखक के रूप में प्रसिद्ध हो चुका है।

हॉल में दाखिल होते ही सभी बच्चे उत्सुक होकर उसकी तरफ देखने लगे। पाँच वर्षीय एक बच्चा खड़ा होकर कुछ कहने ही लगा था कि टांगे कांपीं, गिर गया, सभी हँसने लगे। लड़के का मज़ाक बन गया। काफ़्का उसके समीप गया। थपथपाते हुए कहा यार तू कितने आराम से गिरा और कितनी शान से स्वयं ही खड़ा हो गया, कमाल है तू। सभी ने तालियों और किलकारियों से बच्चे की प्रशंसा की तो वह भी हँसने लगा। दोरा इस घटना को भूल नहीं सकी। काफ़्का की मृत्यु के पश्चात् उसने इस घटना का विवरण देते हुए कहा था काफ़्का इतना शक्तिशाली था कि उसके कारण संसार बच सके, स्वयं उसने बचना नहीं था।

बच्चों के सैशन के पश्चात् दोरा उसके गले लग गई। वह ये जानकर खुश हुई कि काफ़्का को हिब्रू नहीं आती, सीखने का अभिलाषी है। दोरा को हिब्रू आती थी, काफ़्का ने कहा पढ़कर सुनाओ। दोरा सुनाने लगी। साथ ही बताया कि पिता भाइयों को हिब्रू पढ़ाते थे, मैं जबरदस्ती बैठ जाती, पिता की डांट- फटकार की चिन्ता नहीं। पिता कहता था गंवारों, बच्चों आदि के लिए ये भाषा नहीं बनी, लड़कियों का इससे क्या सम्बन्ध? यहूदियों की पुनर्जागरण लहर ज्यूनिज़म, सिंघ सभा जैसी थी जो लड़कियो को हिब्रू सीखने के लिए उत्साहित करती थी। इसी कारण पिता ज्यूनिस्टों को पसंद नहीं करता था। दोरा ने बगावत कर के हिब्रू स्कूल में दाखिला ले लिया और ये सनातनी भाषा सीखी। कैम्प हॉल के एक कोने में बैठकर दोरा ने पैगम्बर ईसाई की किताब खोलकर पढ़नी शुरू की। काफ़्का की आँखों में चमक और होंठो पर मुस्कान दिखाई दी। तभी दोरा ने किताब को बंद करके कहा किताब तो मैंने वैसे ही खोली, मुझे इसके वाक्य याद है, ये कहते हुए जिन प्रवचनों को पढ़ा था, ज़ुबानी सुना दिया। काफ़्का ने अत्यधिक श्लाघा की, कहा अनुभव हुआ ये प्रवचन किसी अन्य संसार से आए और सुने हैं।

काफ़्का ने यहाँ से अपने एक मित्र को पत्र लिखा वृक्षों के दूसरी तरफ बच्चे खेलते दिखाई दे रहे हैं। प्रसन्न, स्वस्थ, उत्साहित पूर्वीय यूरोप के इन यहूदी अनाथ बच्चों को पश्चिमी के यहूदी, बरलिन के प्रहार से बचाना चाहते हैं। सारा दिन और आधी रात तक इनकी हँसी और गीतों से गूंजता रहता है जंगल और समुद्र का किनारा। यह दावा तो नहीं करता कि मैं खुश हूँ। ऐसा प्रतीत होता है जैसे खुशी की दहलीज पर पहुँच गया हूँ। आज जीवन में पहली बार स्वेच्छा पूर्वक, खुशी से, मैं महान् पवित्र दिन सैबथ मनाऊँगा। इस कैम्प में सहायता प्रदान करने हेतु अनेकों को पत्र लिखे और कहा इन बच्चों का भला तो बाद में होगा, आपका भला तुरंत होगा। तन-मन से कैम्प की सेवा में मग्न दोरा उसे अच्छी लगी।

काफ़्का ने अनेक बार हिब्रू सीखने का प्रयास किया किन्तु असफल रहा। दोरा इस भाषा का उच्चारण मातृभाषा के समान करती। प्रवचन सुनाती, साखियाँ सुनाते समय किसी ऐसे एशियन साधु जैसी प्रतीत होती जो हज़ार वर्ष पूर्व प्राचीन तपोवन में ले गया हो। दोरा यहूदी दादियों, नानियों जैसी प्रतीत होती। अद्भुत रहस्यमयी वातावरण निर्मित हो जाता। वह सोचता आयु में मुझसे आधी लड़की कितनी सरलता से मानसिक और भावुक जंजीर तोड़ देती है, ये वो काम कर रही है जो मैं न कर सका, न कर सकूंगा। कितनी सहजता से इस लड़की ने पिता के विरुद्ध बगावत कर दी, मुझसे ऐसा साहस कभी उत्पन्न नहीं हो सका। उसने कहा दोरा, बचपन में पिता ने मेरे विरुद्ध युद्ध करके मुझे हरा दिया। मैं रणभूमि से अभी तक बाहर नहीं निकल सका। निरन्तर पराजित होता आ रहा हूँ। प्रतिदिन कुछ समय साथ बिताते। आयु के अंतिम पड़ाव में दोरा ने डायरी में लिखा मेरे साथ आलू छील रहा है, चूल्हे के समीप बैठा है, जंगल के बैंच पर मेरे समीप बैठा वो बातें करता दिखाई देता रहता है। काफ़्का ने अपने एक पत्र में लिखा दोरा मेरे साथ थी। हमने कुछ देर हिब्रू पढ़ी। बहुत समय पश्चात् एक मंगलमयी शाम बिताई। देर तक ये एहसास मुझे सुख देता रहेगा। परदेस में ऐसे रहती है जैसे इसका पुश्तैनी घर हो। हम दोनों में बड़ा अन्तर है। वह स्थिर है, मैं अस्थिर हूँ।

दोरा बताती है घंटों हम साथ बैठकर बातें करते। वह अनेक प्रश्न करता। उसको पूछने का ढंग आता था। बच्चों की तरह प्रश्न करता। मैं उत्तर देती रहती। जबकि इसके विपरीत होना चाहिए था, मैं अशिक्षित लड़की। होना ये चाहिए था कि मैं प्रश्न पूछती। वह दोनों कानों से उत्तर सुनता था सम्भव है मेरे दिए गए उत्तर उसे सही लगते हो। प्राचीन इंजील की कहानियाँ बार-बार सुनता। यहूदी कहानियाँ सुनाती तो उसे सजीव पात्र सामने दिखाई देने लगते।

काफ़्का को उसकी ज़िंदादिल शख्सीयत अच्छी लगती, बिल्कुल देसी, पाक साफ, बिना छल-कपट के, कोई दिखावा नहीं बनावट नहीं, प्राचीन कुदरत जैसे लड़की के लिबास में खेलने आ गई। यही था दोरा का प्रभाव। काफ़्का तराशा हुआ, पॉलिश किया हुआ, सूक्ष्म स्वभाव का व्यक्ति था, हँसमुख, थोड़ा सा शर्मीला, आपसे सब कुछ पूछेगा, स्वयं के बारे में मुँह नहीं खोलेगा। जानने की प्यास उस जैसी किसी में नहीं देखी। जब उससे उसके बारे में पूछते तो वह इधर- उधर देखने लगता, जैसे डर गया हो, प्रश्न कुछ और था, उत्तर कुछ और मिला। उसके साथ बातें करने वाला धीरे ध
ीरे स्वयं ही बातें करने के लिए मज़बूर हो जाता, काफ़्का कौन सा किसी को निर्देश

देता था। शोर न हो, जैसे कोई दबे पाँव चले, जैसे मीलों तक मखमल का कालीन बिछा हुआ हो, धीरे-धीरे नंगे पैर चलें।

दोरा इस कारण जर्मनी गई थी क्योंकि उसे लगता था कि जर्मन के लोग अधिक साहसी, स्थिर शख्सीयत के धारणी है परन्तु शीघ्र ही उसे पता चला गया ये सब उसका भ्रम था। वह अनिवार्य चीज़ जिस कारण इंसान को इंसान कहा जाता है, गैर-हाज़िर थी। उसने देखा काफ़का में बहुत कुछ कीमती था, परन्तु वह इसे अनदेखा करके अविनाशी की तलाश में घूम रहा था। जब वह आपको सुन रहा होता है, ये मत सोचो उसे इसका पहले से पता नहीं था, उसका अर्थ ये था कि जब वह किसी की बात सुनता है, तब वह बाहरी संसार से हाथ मिलाता है, उस समय उसे ऐसा प्रतीत होता है कि वह भी जीवित है, मैं उसे अच्छी लगती थी क्योंकि उसे अनुभव होता था जैसे उसे गारा मिल गया है और वह इच्छानुसार मूर्ति बनायेगा। वह सम्पूर्ण था, मैं शून्य।

दोरा ने लिखा पश्चिमी यूरोप के लोग हम पूर्वी लोगों को गंवार समझते हैं। मैं भी इसी विचार से गई थी कि मुझे अक्ल आ जाएगी। मैंने देखा तो वह थके टूटे अधूरे विवश लोग थे, जब बड़ी मुसीबत में घिर जाते हैं, जैसे विश्व युद्ध में, तब उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व उन्हें बचा लेगा। पश्चिम मैं रोशनी की तलाश में गई थी, वहाँ के अंधेरे में मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया, बल्कि मुझे अहसास हुआ, इन लाचार लोगों को देने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है। पश्चिम में लिखने बोलने की पूर्ण स्वतन्त्रता है परन्तु कहने के लिए उनके पास कुछ हो तो सही। हम पूर्वीय लोग कम बोलते हैं परन्तु हमें करतार और उसकी सृष्टि पर विश्वास है, इसी विश्वास के कारण ही संसार सुन्दर प्रतीत होता है। मेरे समक्ष पश्चिमी का तेज़ दिमाग काफ़का है, ये भी भिखारी के समान भिक्षापात्र मेरे आगे रख देता है, मैं इसमें पैगम्बरों की वाणी, इंजील की साखी डाल देती हूँ, मेरे पास और है ही क्या देने को? वह सन्तुष्ट हो जाता है।

पाँच वर्ष से वह तपदिक से पीड़ित था। बाल्टिक सागर के तट पर स्वस्थ होने के लिए नहीं, ये आजमाने आया था कि वह फलस्तीन की यात्रा करने के योग्य है या नहीं। एक वर्ष से तो वह चारपाई पर था। हिऊगो बर्गमान, हिब्रू यूनिवर्सिटी, येरूशलम में प्रोफैसर था, उसकी पत्नी ने पत्र द्वारा काफ़का को अपने घर में रहने के लिए बुलाया था, यहाँ के रेगिस्तान की हवा खुश्क है, तेरे ईलाज में सहायक होगी। वह मान गया, उसे लगा अब वह ठीक हो जाएगा, फिर यहूदी धर्म में अपनी जड़ों की तलाश करेगा, उन लोगों के साथ शामिल होगा जो फलस्तीन में यहूदी नस्ल के घर

का निर्माण करेंगे। उसने लिखा कि अक्तूबर 1923 में आएगा। दोरा के साथ फलस्तीन जाने की योजना निश्चित होगी।

छुट्टियाँ खत्म हो गईं, वह वापिस पराग नहीं जाना चाहता था। वह तो दस वर्ष पूर्व, तीस वर्ष की आयु में जर्मनी में रहने का इच्छुक था, अस्वस्थ होने के कारण अकेले जाने का साहस नहीं होता था, मित्रों को मनाया, कोई नहीं माना तो अंत में कुछ दिनों के लिए अपनी बहन को साथ ले आया। अब दोरा मिल गई। दोरा ने अकादमी ऑफ़ हिब्रू स्टडीज़ में दाखिला ले लिया। काफ़्का की इच्छा भी दाखिला लेने की थी। दोरा ने कहा कि वह मुफ्त फ्लैट ले देगी। फिर तो सब कुछ ठीक हो गया। वह अकेला नहीं होगा। जब ये अहसास हुआ कि सांसों की टूटती डोर को फिर से बांधा जा सकता है तो इंकार क्यों? एक दूसरे को जानने में तीन सप्ताह बीत गए। निर्णय किया कि अब बरलिन में रहेंगे। दोरा पहले कभी किसी पुरुष के साथ नहीं रही थी। उसे हैरानी होती, अविवाहित पुरुष स्त्री इक्ट्ठे रह रहे हैं, किसी को कोई आपत्ति नहीं। यदि कहीं दोरा के गाँव में इस बात का पता चल जाता, तो उसके माता-पिता की इज्ज़त मिट्टी में मिल जाती।

काफ़्का की इच्छा थी कि उसका विवाह हो, पिता बने परन्तु छह वर्ष पूर्व तपेदिक का पता चला, लाईलाज, केवल मौत, कौन अपनी बेटी को जवानी में विध ावा होने की आज्ञा देगा? लिखता है जब समाचार सुना कि भानजी का जन्म हुआ है, मुझे गुस्सा आ गया, ईर्ष्या हुई, अन्य कोई बात नहीं, केवल एक आत्मग्लानि कि मैं अपने बच्चे का चेहरा नहीं देख सकूंगा। दोरा, स्वस्थ, दृढ़ संकल्पी और प्यारी लड़की को देखकर मेरे भीतर फिर से एक बार आत्मविश्वास जागा। मिलेना को पत्र में लिखा अपनी बड़ी बहन के साथ पराग से बाल्टिक गया। बंद कमरे से मुक्ति मिली। वहाँ सबब बना कि अक्तूबर में फलस्तीन जाऊँगा। मैं चारपाई छोड़ नहीं सकता परन्तु जो मरीज़ चारपाई पर निर्भर है उस पर पाबन्दी तो नहीं लग सकती कि फलस्तीन जाने के स्वप्न भी न देखे। दोरा फलस्तीन जाने की इच्छुक है, कहती है जल्दी ठीक हो जाओ। वह स्वस्थ है। स्वस्थ लोगों को स्वप्न देखने का हक है।

हारन आरौन दायमन्त, पिता और फ़रीदा दायमन्त माता के घर दोरजा दायमन्त का जन्म 4 मार्च 1898 को हुआ। दोरजा शब्द का उच्चारण करते समय दोरा कहा गया और यही नाम प्रचलित हुआ। पोलैंड का ये शब्द दायमन्त, जो उनका खानदानी नाम है, अंग्रेजी में डायमंड (हीरा) है। जब वह पहली बार काफ़्का से मिली, उस समय उसकी आयु 25 वर्ष थी। शारीरिक संरचना से वह छोटी प्रतीत होती थी, गलती से लेखक ब्रोद ने उसे 19 वर्ष की लिख दिया। दोरा इस गलती को ठीक क्यों

करती? उसे यही ठीक लगा। दोरा के बड़े भाई का नाम दाऊद था, छोटों का याकूब, इब्राहिम और अरज। अरज का जन्म 1905 में हुआ। उसके जन्म समय माँ की मृत्यु हो गई जबकि इस सम्बन्धी कोई रिकार्ड प्राप्त नहीं है। जिस कब्रिस्तान में दफ़नाया था उसे यहूदियों के विरुद्ध दंगों के समय नष्ट कर दिया गया था।

पिता को पोलिश, जर्मन, यिद्दिश और हिब्रू भाषाओं को ज्ञान था। प्रातःकाल चार बजे उठकर सुच्चे मुँह पाठ करता। लोग उससे सलाह लेते, उसे यहूदी मन्दिर का मुखिया चुना गया। दानी व्यक्ति दान देते रहते। उसके घर में चाय पानी का लंगर चलता रहता जहाँ तालमूद ग्रन्थ की साखियों की व्याख्या होती, विचार विमर्श होते। व्यक्ति की परख उसकी रुचियों, विद्वता या पहरावे के आधार पर नहीं, उसके चरित्र से की जाती थी। पवित्र दिन (सैबथ) में माँ सारा दिन खाने पीने की वस्तुएँ बनाती और बच्चों को टोकरियाँ देकर गरीब बस्तियों में बांटने के लिए भेजती- ईश्वर किसी बच्चे को भूखा न रखे, अरदास करती रहती। ये धार्मिक परिवार रूढ़िवादी था, नवीन परम्पराओं को ग्रहण करने की आज्ञा इस परिवार में नहीं थी।

परन्तु अकस्मात् पुनर्जागरण की लहरों ने यूरोपीय यहूदियों को झिंझोड़ कर रख दिया, 1820 ई. में यहूदियों को समान अधिकार मिले तो उन्हें नया संसार मिला। सियासत, दर्शन, उद्योग, वित्त, आर्ट, विज्ञान और तकनीकी संसार में यहूदियों ने कदम रखे तो इन वर्जित क्षेत्रों में इन्होंने अपनी बुद्धि से सबको चकित कर दिया। बरलिन, वीआना, पराग, बुदापैस्ट और वारसा में यहूदी व्यापार और सभ्याचार छलांगे लगातार आगे बढ़ता गया। यहूदी बुजुर्ग नवीन सभ्याचार, नए लिबास, नए साहित्य के कट्टर विरोधी थे किन्तु वे विवश हो गए। नवीन सभ्याचार रुकने का नाम नहीं ले रहा था। इस वातावरण में दोरा जवान हुई। उसने पुजारियों से सुन रखा था कि ईश्वर प्राप्ति हेतु विद्वान् होना आवश्यक नहीं। व्रत रखने, संन्यास लेना आदि अनिवार्य नहीं, ईश्वर प्रत्येक क्षण आपके साथ है। खाते, पीते, खेलते, सोते, जागते, नाचते समय वह ईश्वर के साथ साथ रहती।

बगावत करके जब दोरा ने सैकुलर स्कूल में दाखिला लिया तो पिता को बहुत दुःख हुआ, परन्तु उसकी जिद्द के आगे झुक गया। ठीक है यदि उसका निर्णय नरक में जाने का है तो जाए। समय नष्ट कर रही है तो करे, कम से कम लड़के तो मेरा कहना मानते है, शुक्र है, तालमूद ग्रन्थ का पाठ करते हैं।

इन्हीं दिनों में हंगेरियन सल्तनत के राजकुमार फ्रांज़ फर्डीनंड का कत्ल हो गया। जर्मनी और रूस के मध्य की रणभूमि पोलैंड, कौन मानेगा कि पहले महीने में ही दोनों प्रतिद्वन्द्वियों ने पाँच पाँच लाख लोगों का कत्ल किया?

1896 में यहूदी दार्शनिक थिओडोर हर्ज़ल ने ***यहूदी स्टेट*** नामक लेख लिखा जिसमें इस बात को महत्त्व दिया गया था कि फलस्तीन में यहूदियों का देश हो। हर्ज़ल से पहले भी इस सम्बन्धी चर्चा होती थी परन्तु उसके लेख के तर्क और योजनाओं ने हलचल पैदा कर दी। अपनी अरदासों में पहले भी येरोशलम यहूदियों को भूला नहीं था। उनकी इंजील में उस समय की प्रार्थना अंकित है जब रोमन लोगों ने येरोशलम के मन्दिर को जला कर यहूदियों को उजाड़ दिया था, लिखा है हे येरोशलम, यदि मैंने तुम्हें भूला दिया तो मेरे दाएँ हाथ ने जो विद्या ग्रहण की है, वह नष्ट हो जाए। प्रत्येक अरदास में यही वाक्यअग्रिम वर्ष येरोशलम में।" जीयूनिस्ट लहर में अनेक नए पुराने यहूदियों ने तो दाखिला लिया ही, यहूदी कामरेड भी हिब्रू सीखने के लिए दाखिल हो गए। लहर इतनी तेज़ चली कि 2 नवम्बर को बर्तानिया के विदेशीय सचिव आर्थर जेमज़ ने घोषणा की प्रथम विश्व युद्ध के समाप्त होते ही सरकार यहूदियों को फलस्तीन देगी। इस घोषणा से लोगों का विश्वास को थिओडोर हर्ज़ल के घोषणापत्र में पक्का हो गया।

फिर भी, फलस्तीन अभी दूर था। हर्ज़ल कहता था एक ही समय में सारी दुनियां के यहूदी नहीं जाएँगे। सबसे पहले भूखी नंगी जनसंख्या जाएगी, सड़के बनाएगी, नदियों के प्रवाह की दिशा बदलेगी, बंजर धरती में खेती होगी। पुल बनेंगे, रेगिस्तान में रेलवे ट्रैक बनेंगे। तदुपरान्त मध्य वर्ग, अंत में उच्च्य वर्ग आकर रहेगा। दोरा ने कराकोव के यहूदी स्कूल में दाखिला लिया तो पता चला कि जिन यहूदियों ने पोलैंड को स्वतन्त्र कराने हेतु युद्ध किया था, स्वतन्त्रता के पश्चात् पोलैंड के सैनिकों ने उन्हें भेड़ों की तरह काट दिया। यह दोरा के जीवन परिवर्तन का अहम नुक्ता था।

यहूदियों ने जर्मन को प्रत्येक दृष्टि से समर्थन दिया तब भी नफ़रत ही मिली। वर्ष 1297 में सरकार ने जुलाहों को आदेश दिया था कि वह यहूदियों से रूई और सूत नहीं खरीदेंगे। प्रत्येक विपदा का कारण यहूदियों को माना जाता। 14 वीं शताब्दी के मध्य में प्लेग फैलने का दोषी भी यहूदियों को मानकर देशनिकाला दे दिया। 1671 में विशेष कृपा करते हुए सरकार ने 50 यहूदी परिवारों को देश में रहने की आज्ञा दी, वर्ष 1800 तक यहूदियों की संख्या 3300 हो गई। जब दोरा बरलिन गई, उस समय यहूदियों की संख्या 1 लाख 70 हज़ार के आसपास थी अब ये संख्या 5 प्रतिशत हो गई। प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने बहुत मेहनत की। बैंकों, स्कूलों, स्टोरों और व्यापारिक केन्द्रों के मालिक बन गए। जर्मनी के सबसे बड़े समाचार पत्र

उलस्टीन और ***मोसे*** के मालिक यहूदी थे। मान लो, 1920 की संस्कृति, यहूदी संस्कृति थी।

दोरा ने अपनी पढ़ाई और कैम्प की जिम्मेवारियों को निभाती रही और काफ़का बरलिन से वापिस पराग चला गया क्योंकि स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था। काफ़का की बहन ओटला भाई से मिलने पराग आई तो चारपाई पर छह फुट कंकाल को लेटे हुए देखा, दहल गई। किसी से बात किए बिना ही उसे अपने गाँव ले आई। ये काफ़का से नौ वर्ष छोटी, आत्मविश्वासी, स्वतन्त्र विचारों वाली, दूरदर्शी, अद्भुत मानसिक सन्तुलन की धारणी थी जिसने पिता के सिद्धान्तों की लाठी को दूर फेंक कर ईसाई से विवाह किया। काफ़का कहता था बहन मुझे तुझसे ईर्ष्या होती है। मुझमें तेरे जितना हौसला क्यों नहीं है। ओटला कृषि विज्ञान का पढ़ाई करके येरोशलम में रहना चाहती थी, काफ़का ने कहा पिता से बात मत करना, तेरी पढ़ाई की जिम्मेवारी मेरी। परिवार के सभी सदस्यों का कहना था कि जब भी ये भाई बहन मिलते हैं हमारे विरुद्ध साज़िश करते हैं। काफ़का ने ओटला से कहा यदि कुछ दिनों के लिए मैं तेरे घर अकेला रह जाऊँ? लड़की ने मकान किराये पर ले लिया, परिवार सहित चली गई और काफ़का उसके घर कुछ दिन नहीं, 1916-17 की सर्दियों में छह महीने तक रहा। इस समय में ये घर तपोवन (हरमिटेज) हो गया था जहाँ उसने महत्त्वपूर्ण रचना की।

काफ़का के बाद उसके दो भाईयों का जन्म और मृत्यु हुई, माता-पिता की खामोशी, उदासी देखता देखता, सोचता जैसे इन दो छोटे भाइयों का कातिल यही है, स्वयं से नफ़रत वह बचपन में ही करने लगा था।

अगस्त मास में दोरा ने बरलिन में काफ़का के लिए एक सुन्दर फ्लैट किराये पर ले लिया, हवादार, आस-पास बगीचा, बड़ा कमरा, रसोई, गुसल्खाना, एक तरफ प्यानो रखा था जो खामोश होते हुए भी संगीत सुनाता रहता। काफ़का को निमंत्रण भेजकर वह प्रतीक्षा करने लगी। काफ़का का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। मैक्सब्रोद को पोस्टकार्ड पर लिखा लगातार आवाज़े आ रही है, कोई दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है। वर्ष 1919 की जनवरी भी बीत गई, वह जा नहीं सका। नवम्बर में ब्रोद को लेकर वह शेलटन शहर अपनी बहन के घर चला गया, स्वास्थ्य के लिए यही ठीक था। दोरा के पत्र उसे मिलते रहे परन्तु वह बरलिन नहीं जा सका। सितम्बर 20, 1921 यहूदियों का धार्मिक पर्व प्रारम्भ होता था। धर्म ग्रन्थ में ईश्वर ने लिखा था, अगले वर्ष कौन रहेगा, कौन मरेगा। पुजारी व्रत रखता था, प्रार्थना करता था। दोरा को विश्वास था कि ईश्वर उसका और काफ़का का नाम जीवित व्यक्तियों

की सूची में लिखेगा। दोरा को काफ़का की तार मिली मैं आ रहा हूँ। स्टेशन पर लेने जाएगी। शेल्टन से पराग और पराग से बरलिन। काफ़का ने लिखा कल मैं बरलिन पहुँच जाऊँगा बशर्ते अंधेरी झाड़ी के पीछे से मृत्यु ने घात लगाकर हमला न किया। बरलिन में हो रहे कत्लेआम के बारे में सुनकर पिता ने जाने के लिए मना किया, परन्तु व्यर्थ। चलने से पहले काफ़का ने अपने मित्र आसकर बाम को लिखा यात्रा उतनी ही खतरनाक है जितना नैपोलियन द्वारा रूस पर सेना का आक्रमण कठिन काम था।

अस्वस्थ होते हुए भी हार्डी का पात्र जूड एक रात प्रेमिका सू को मिलने हेतु रेलगाड़ी में बैठा, उसे दूर से देखकर वापस आ गया। बहुत तेज़ बुखार। क्रोधित पत्नी ऐराबेला ने कहा क्यों गया था उस हरामज़ादी के पास? शांत जूड ने कहा दो काम करने ज़रूरी थे, पहले सू को देखना, फिर मर जाना। एक बार ये दोनों काम हो गए। जूड की मौत हो गई।

बहन ओटला को लिखा चलने लगा हूँ परन्तु प्रतीत होता है इस बार जिस खतरनाक सेना से मुकाबला होगा, पहले नहीं हुआ था। पिता मेरे जाने के विरुद्ध थे, माँ हमेशा की तरह उदास थी, चला आया। उसे मिलने के लिए मैक्सब्रोद भी बरलिन की गाड़ी में चढ़ गया। बरलिन में ब्रोद की प्रेमिका ऐमी रहती थी, उसे भी मिलेगा। काफ़का ने ब्रोद को इस रोमांस के नुकसान के बारे में कठिन निर्देश दिए। काफ़का ने इस लड़की पर पुस्तक लिखी, ***परी के साथ बिताई ज़िन्दगी*** । काफ़का के दिए तर्कों ने ब्रोद को प्रभावित किया, लिखा उसके तर्क को कोई नहीं काट सकता, मेरी तो हैसियत ही क्या है। सरलता से दुनिया को सही मार्ग पर अग्रसर कर देता है, किन्तु स्वयं का मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा रहा। ब्रोद और काफ़का की मित्रता को साहित्य के इतिहास में अद्‌भुत श्लाघा प्राप्त हुई जैसे जानसन और बोसवैल की मित्रता को। काफ़का पर मैंने जो शब्दचित्र लिखा था उसमें दोनों की पहली मुलाकात का उत्कृष्ट वर्णन है, ब्रोद 18 वर्ष का और काफ़का 19 वर्ष का था। ब्रोद ने जर्मन विद्यार्थियों के सामने नीतशे पर पेपर पढ़ा पढ़ते समय अन्य टिप्पणियों के अतिरिक्त ये भी कहा थाआवारागर्दी और अय्याशी के अतिरिक्त कुछ नहीं नीतशे। नीतशे पर टिप्पणियाँ करते हुए काफ़का ने ब्रोद के पेपर की वो धज्जियाँ उड़ाई कि ब्रोद हमेशा के लिए उसका प्रशंसक हो गया। हमेशा शांत रहने वाला काफ़का उस दिन तूफ़ान प्रतीत हो रहा था। 35 वर्ष बाद जब ब्रोद ने उसकी जीवनी लिखी, उसमें इस घटना को याद करते हुए कहा “मेरे विचार धुंधले और उलझे हुए थे, मुझमें तुच्छ अहंकार, भ्रष्ट ईर्ष्या और बनावटी समझ थी, काफ़का के तूफान के बाद आकाश निर्मल हो

गया। तत्पश्चात् मुझे पढ़ने की अक्ल हासिल हुई। प्रकृति जैसे धीरे से पौधों के कान में कुछ कहती है तो फूल खिल जाते हैं, काफ़्का के वचन भी ऐसे ही थे, ऐसे वचन ही वो सुनना चाहता था। उसने किस किस स्थान पर क्या क्या बात की, मुझे स्पष्ट दिखाई देती है। उसकी उपस्थिति में किसी के साथ अन्याय हो जाए, असम्भव।"

पुस्तकों के बारे में काफ़्का का कथन "जिस दुर्ग के दरवाज़े मुझसे नहीं खुले, पुस्तकें उनकी चाबियाँ हैं।"

टाईल और सबाईन दो सखियाँ काफ़्का ने कैम्प में आते जाते देखतीं, उन्हें ऐसा प्रतीत होता कि ये इस कारण कैम्प में आ जाता है ताकि कैम्प का सम्मान बढ़ जाए। रेस्तरां में आईसक्रीम खा रही थीं, लाल मोतियों से सज्जित कांच का आईसक्रीम का कप अद्भुत था। 16 वर्षीय टाईल ने आह भरते हुए अपनी सखी से कहा ये कप प्राप्त करने के लिए मैं सब कुछ देने के लिए तैयार हूँ। सबाईन ने हँसते हुए पूछा तुम्हारे पास देने के लिए है ही क्या? तभी दोनों ने देखा, एक तरफ काफ़्का खड़ा था। ये सोचकर कि कहीं काफ़्का उनकी बातें न सुन ले, बाहर चली गईं। एक महीने के बाद टाईल काफ़्का का हालचाल पूछने उसके फ्लैट पर गई। दरवाज़ा खोलकर काफ़्का ने कहा थोड़ा रूको। वह रुक गई। काफ़्का भीतर गया, एक पैकट टाईल को दिया, खोलकर देखा, गज़ब, वही लाल मोतियों से सुसज्जित आईसक्रीम कप। खुश हो गई। टाईल को काफ़्का ने कहा अपनी पुरानी कहावत है न, विवाह वाले दिन इसे चूर चर कर देना।

एक दिन उसने दोरा से कहा बरलिन में रहने का मेरा स्वप्न पूरा हो गया। पराग के पंजों में से कभी निकल सकूंगा, उम्मीद नहीं थी, बरलिन मेरी प्राप्ति है, इसे प्राप्त किए बिना मैंने मरना नहीं था। दोरा ने बताया उसकी सभी रचनाएँ एक तरफ, उसके साथ व्यतीत किया गया दिन, दूसरी तरफ, दूसरी तरफ ज़्यादा वज़नदार है। किसी लेखक को नहीं, एक शानदार पुरुष को मिलने गई थी मैं।

काफ़्का दोरा के बीते जीवन के विषय में प्रश्न करता रहता, दोरा बताती है बहुत ध्यान से सुनता, मेरा साधारण वाक्य सुनकर कभी कभी वह जड़ हो जाता। उसे पूर्व की देसी बातों की भूख थी, जैसे उसके भीतर दबे खजाने जैसा हो पूर्व .. . अनन्त भेद, अनन्त रमज़ें। उसे बातें करने का बहुत शौक था, बातें करते समय उसके होठों पर मुस्कान और आँखों में चमक नृत्य करती दिखाई देती। कभी कभी ऐसे मुस्कराता जैसे अपने वाक्यों में अंगुलियों द्वारा रंग भरने लगा है। जब उसे विश्वास हो जाता कि श्रोता वह रमज़ समझ गया है जिसे वह समझाना चाहता है, बहुत सन्तुष्ट होता। वाणी में संगीत, धीमी सुरें। मृत्यु साक्षात्, अंग अंग में दर्द,

अपना दुःख न बताकर मिलने वाले को सुखदायक बातें सुनाता काफ़्का मैं अब भी देख रही हूँ। उसमें कुछ अविनाशी था जिस कारण उसके बारे में कहना कठिन है। समय बीतने से नैन नक्श और बातें धुंधली हो जाती हैं, उसकी शख्सीयत दिन प्रतिदिन निखर कर सामने आ रही है।

जब लिखना शुरू करता, दोरा स्वयं ही उसे एकान्त में छोड़कर बाहर चली जाती, काफ़्का ने कभी नहीं कहा था। वह समझ जाती। दोरा ने पूछा फेलिस को प्रेम किया, उसमें क्या कमी थी, आपने विवाह से इंकार क्यों किया? काफ़्का ने कहा वह अच्छी थी परन्तु बिल्कुल सांसारिक, हिसाब किताब में कुशल, उससे विवाह का अर्थ होता समस्त यूरोप को अपने घर ले आना, यूरोप जिसका अर्थ है झूठ, धोखा। उसे सुन्दर घर, अच्छी आमदन और समय का पाबन्द पति चाहिए था। मैं अपनी घड़ी डेढ घंटा आगे रखता हूँ। जब भी उसे मौका मिलता घड़ी ठीक कर देती, मेरा सारा कार्यक्रम उलट पलट जाता। या मैं गलत था या वह, यह बात निश्चित है कि हम दोनों में से एक सही नहीं था।

दोरा ने लिखा जब मैं देख लेती कि उसने लिखना बंद कर दिया है, कमरे में चली जाती। जो लिखा था, उसे पढ़कर सुनाता। अंत में कहता, पता नहीं कैसे लिखता रहा मैं, भूत इर्द-गिर्द घूमते रहे, बच गया, ये कहते समय उसके होठों पर बच्चे जैसी मुस्कान होती, बच्चा ऐसे बातें करता है, जैसे उसे भूत-प्रेतों के बारे में सब पता है, बड़े कुछ नहीं जानते। मँहगे दर्जी से कपड़े सिलवाता, बढ़िया सूट, बूट और टाई, नहीं तो बाहर नहीं जाएगा। एक दिन कहने लगा दोरा, कभी कभी मुझसे कुछ अच्छा लिखा जाता है, जैसे अंधे चूचे को दाना मिल गया हो।

दोरा ने बताया बरलिन की सड़कों पर अमीरों के विशाल, भरपूर स्टोरों के बाहर अंगहीन भिखारियों, भूखे बच्चों, आश्रयहीन बूढ़ों को विलाप करते, रोटी मांगते देखता रहता, मँहगाई के कारण रोटी प्रतिदिन छोटी होती जा रही थी, सितार की एक तार का स्पर्श करो, अन्य स्वयं ही कांपने लगती हैं। इन सड़कों पर घूमकर काफ़्का घर आता, हालत ऐसी हो जाती जैसे युद्ध के मैदान से हज़ार बार मुड़कर आया हो, रंग नीला हो जाता था। यसू मसीह स्वयं अपना क्रॉस उठाकर पहाड़ी पर चढ़ा था, इस बात में कोई अतिशयोक्ति तो नहीं।

काफ़्का अन्य मामलों में उलझ जाता था किन्तु साहित्य रचना के समय वह पूर्णतः पारदर्शी होता, दृढ़ संकल्पी, साहित्य उसके लिए धर्म था, कहता था ये जो कुछ लिखा जा रहा है दोरा ये साहित्य नहीं है, यह तो वर्तमान के छोटे छोटे साये मात्र हैं। साहित्य रचना के समय वह सीमा से पार होता।

दोरा ने डायरी में लिखा अंतिम दिनों में उसने मुझसे कह दिया कि वह अब अकेला नहीं रह सकता, इसलिए जब मैं लिख रहा होता हूँ तब भी मेरे साथ रहा करो। मैं छोटे छोटे काम करती रहती, किताब पढ़ती रहती। वह लिख रहा था, एक रात मैं पढ़ते पढ़ते सोफे पर सो गई। जब आँख खुली तो देखा कि वह काम खत्म करके मेरे समीप बैठा है। उसका असाधारण चेहरा चमक रहा था, बिल्कुल वैसे जैसे चित्रों में फकीर का विस्माद दिखाई देता है, काफ़्का नहीं, ये कोई अन्य था। एक दिन काफ़्का ने मुझसे कहा टक्कर मारने से जब माथा लहुलुहान हो जाता है, तब मुझे तसल्ली होती है। दोरा ये सबूत है इस बात का कि जिस चट्टान से टकराया, वह कठोर थी।

मैक्सब्रोद काफ़्का और दोरा से मिलने हेतु बरलिन गया, लिखता है दोरा के साथ बिताए उसके दिन सबसे अधिक सुखदायी थे, मुझे अपनी ताज़ी रचनाएँ पढ़कर सुनाई। अब मैं उसकी रचनाएँ पढ़ता हूँ तो उसके वाक्य, अंदाज सामने आ जाता है। वाक्य सजीव हो उठते हैं, चारों तरफ संगीत प्रसरित हो जाता है। वह छपने के लिए तैयार नहीं होता तो कभी मैं भिखारी की तरह याचना करता, कभी चोरी करता, कभी जबरदस्ती छीन लेता, वह कहता यह ठीक नहीं है, गलतियाँ हैं।

प्रकाशक कुरट वोफ वरलेग ने काफ़्का को पत्र लिखा आपकी पुस्तकों की बिक्री नहीं हो रही। कुछ समय पश्चात् आपके पाठक जन्म लेंगे। हमें इनमें वर्णित वाक्यों की कीमत पता है। हमें गर्व है कि हम आपके प्रकाशक हैं।

ब्रोद ने पत्र द्वारा स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो उत्तर दिया बाकी अंगों का काम तो तमाम हो चुका है, सिर बचा है अभी, सिर ऐसे है जैसे शेर ने लोहे का टोप पहन लिया हो। अंधेरे में अकसर डूब जाता हूँ, देर बाद रोशनी दिखाई देने लगती है।

बहन ओटला दोनों से मिलकर मायके गई तो माता-पिता को दुःख हुआ कि पता नहीं किस बेकार सी लड़की को रख लिया है। ओटला ने दोरा ने प्रशंसा की, माता-पिता को विश्वास नहीं आया, दुःखी हुए।

1924 के नववर्ष पर बहन और माता-पिता की तरफ से इतने उपहार और वस्तुएँ मिली कि पैकट खोलते खोलते दोरा रोने लगी। काफ़्का की भानजी बताती है कि नाना-नानी को ये पूर्वी लड़की पसंद नहीं थी। कहतेये ठीक से खिलाती पिलाती नहीं, मार देगी हमारे बेटे को।

जनवरी के दूसरे सप्ताह में बुखार तेज़ हो गया। दोरा ने सबसे बड़ा डॉक्टर जो प्रोफैसर था, बुलाया। स्वयं तो आया नहीं, अपने सहायक को भेज दिया। पूरा

चैकअप करने के बाद सहायक ने कहाबुखार के अतिरिक्त अन्य कोई तकलीफ़ नहीं, कहकर 160 क्राऊन मांग लिए। काफ़्का ने कहा दोरा, अच्छा हुआ बड़ा डॉक्टर नहीं आया, हमें मांज देता यदि स्वयं आ जाता। मँहगाई का मुझे एक फायदा भी है। सस्ता, व्यर्थ भोजन स्वाद लगने लगता है।

प्रत्येक शनिवार की शाम अरदास में व्यतीत होती। बच्चा जैसे एक कहानी बार बार सुनता रहता है, वह दोरा से अरदास सुनता रहता हिब्रू भाषा के परमेश्वर, इज़रायल के यहूदियों को तेरी सहायता की आवश्यकता है, आने वाले सातों दिन भाग्यशाली हों, तेरी पवित्रता हमारे संसार को सिंचती रहे, अपने मुरीदों की मुराद पूरी कर पिता। स्वास्थ्य मिले, जीवन मिले, सभी को अन्न दे, धन दे, वैभव बख्श। येरोशलम के दरवाज़े खोल दे, हमेशा खुले रखना।"

फिर स्वयं अरदास करने लगता येरोशलम के दरवाज़े खुलेंगे, हम जाएँगे। समस्त संसार के पिता, केवल तुम ही हमारे रक्षक को। कड़वी जुदाई मधुर संयोग में बदलेगी, अगला सप्ताह, अगला मास, अगला वर्ष, सुखदायी हो। दोरा ने एक दिन कहा देखा अरदास में कितना सुख, कितनी शांति मिलती है। तुमने सारी उम्र अरदास नहीं की, संगत में नहीं गए, अब पता चला इसकी मधुरता का? यदि शुरू से ही ईश्वर को याद रखा होता तो ये कष्ट क्यों आते?

काफ़्का ने ब्रोद को लिखा मँहगाई के कारण इतना सुन्दर फ्लैट जल्दी छोड़ना होगा। तंगी इतनी है कि हमारे मकान मालिक ने अपना आखरी एक बैडरूम भी किराये पर दे दिया है। बार बार फ्लैट बदलने के कारण मैं सारा बरलिन शहर देख लूंगा। पराग कभी नहीं जाना अब मैंने।"

ब्रोद ने स्वादिष्ट भोजन का बड़ा पैकट भेजा, धन्यवाद करते हुए काफ़्का ने कहा, "हमने अकेले नहीं खाया। अपनी ज़रूरत के अनुसार रख लिया, बाकी दोरा अनाथाश्रम ले गई। बताया, उदास बच्चे खुश हो गए। पहले भी एक बार 20 क्राऊन देकर आई थी। पाँच दिन बाद मकान खाली करना है परन्तु अभी नया नहीं मिला। अच्छे मकान हमारे हाथों से शीघ्रता से निकल जाते हैं, घटिया में रहने को मन नहीं करता। मेरा मन नौकरी करने का है, परन्तु उठा ही नहीं जाता। चारपाई लेटे व्यक्ति को तो कोई नौकरी देगा नहीं।"

उसे कवि हारत पसंद था जो अद्‌भुत अंदाज में पुरानी गज़लों को मंच पर प्रस्तुत करता था, बिल्कुल जादूगर। जीनियस। हारत ने बरलिन में शो देखने के लिए काफ़्का को आमंत्रित किया। धन्यवाद करते हुए काफ़्का ने लिखा आ नहीं

सकता। दोरा दायमन्त आएगी। उसके साथ मेरे घर आ जाओ। बहुत समय हो गया तुम्हें मिले हुए।

दोरा उसका शो देखने गई, आकर हू ब हू, सभी कुछ काफ़्का को बताया, जो हारत ने किया और कहा। दोरा ने सोचा अभिनय द्वारा भी रोटी कमाई जा सकती है।

कैस्सर विद्वान् भी था और प्रकाशक भी। उसने लिखा काफ़्का जितना महान् लेखक वर्तमान में कोई नहीं, उसके वाक्यों में अलंकार नहीं, योजनाबन्दी नहीं, बिना किसी प्रयास के वह अनिर्मित सोने के ढेर लगा रहा है। मैं उससे 1924 की सर्दियों में मिला था। बीमार था। कमज़ोर। बिल्कुल बच्चे जैसा प्रतीत हो रहा था। बच्चे की तरह ही प्रसन्न। मुझे अनुभव हुआ जैसे वो बीमारी से भी प्रेम करने लगा है। उसने मुझे कहा इंसान सुन्दरता देखने में समर्थ रहे, तो कभी बूढ़ा नहीं होता।

प्रसिद्ध लेखक वरफल उसे मिलने आया। देर तक दोनों भीतर बैठे रहे। तभी अचानक दरवाज़ा खुला और वरफल रोते हुए बाहर निकल गया। दोरा ने पूछा, बताया काफ़्का को मेरी कोई रचना अच्छी नहीं लगी। नहीं तो न सही। मेरी खाल तो नहीं उतारनी चाहिए थी। दोरा ने कहा वह ऐसा ही है। वह तो अपनी खाल उतारता रहता है। अपनी रचना को जला देता है। प्रकाशित होने के लिए नहीं भेजता। कहता है- ये बकवास है। तू उसकी बात का बुरा मत मान। वह ठीक नहीं है न। उसने मेरे हाथों अपनी डायरियों को आग लगवा दी थी। राख देखकर शांत हो गया और कहा रचना व्यक्ति के अनुभव की राख होती है।

1919 में दोरा डॉ. नैलकन से मिली थी। दोनों एक दूसरे को अच्छे लगे। दोरा ने उसका फोन नम्बर ढूंढकर फोन कियादोरा हूँ, पहचाना? मेरा मित्र फरांज बहुत बीमार है। देखने आओगे? हमारे पास फीस देने के लिए पैसे नहीं हैं। आओगे? नैलकन आया, बताता है बहुत कमज़ोर था परन्तु मित्रता की मुस्कान थी होठों पर। कहा तो नहीं मगर आँखें बोल रही थीं क्यों अपना समय नष्ट कर रहे हो मित्र। अब कुछ ठीक नहीं होना। 1974 में जब डॉ. नैलकन एक हकीम के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था, लिखता है अफ़सोस, मैं इतने महान् लेखक के कोई काम नहीं आ सका। फीस नहीं थी। अपनी पुस्तक हस्ताक्षर करके मुझे दे दी। दोरा ने घर से बाहर निकलना बंद कर दिया। कपड़े सिलाई करके कुछ कमा लेती थी।

17 मार्च 1924 को उसने हार मान ली, बरलिन से पराग जाने के लिए तैयार हो गया। वह दोरा को साथ लेकर नहीं जाना चाहता था। दोरा क्यों गुलामी का जीवन व्यतीत करे? मेरे माता-पिता क्यों उसे अपमानित करें दोरा साथ जाने के

लिए जिद्द कर रही थी, अंत में काफ़का ने कहा नहीं। यहीं रहो। प्रतिदिन पत्र लिखूंगा। अच्छा, तो ऐसे करना, माता-पिता से मिलने के बाद जब मैं सैनेटोरियम में दाखिल हो गया, वहाँ आ जाना। जब तक गाड़ी आँखों से ओझल नहीं हुई, दोरा स्टेशन पर खड़ी रही।

30 वर्ष पश्चात् दोरा ने डायरी में लिखाजब याद आता है तो मैं काल्पनिक संसार में पहुँच जाती हूँ, काल्पनिक संसार दृश्यमान संसार की अपेक्षा अधिक वास्तविक है।

तीन सप्ताह बीत गए। काफ़का माता-पिता के पास रहा। दोरा का मन था कि वह काफ़का के पास पहुँच जाए, अपमान होता है तो होने दो, फिर क्या हुआ। परन्तु नहीं गई। पड़ोसियों से कह देती कि जा रही है, परन्तु काफ़का के आदेश से इंकारी होने का साहस उसमें नहीं था। हालत को बिगड़ते देख माता-पिता ने सैनेटोरियम भेजने का निर्णय किया। दोरा को पता चला, तो काफ़का से पहले वहाँ पहुँच गई।

सांस नाली तक तपेदिक पहुँच गई थी। पानी की घूंट पीना ऐसे था जैसे कांच के टुकड़े निगल लिए हों। मृत्यु संकेत देने लगी तो वीआना के अस्पताल में लेकर जाने का निर्णय लिया गया। बिना छत की जीप में पिछली सीट पर बिठाकर दोरा ने दो कम्बलों में उसे लपेट दिया। हवा न लगे, स्वयं आगे खड़ी हो गई। हल्की हल्की किनमिन हो रही थी, बर्फानी तूफान बह रहा था। चार घंटों में सफर तय किया। अस्पताल के उस बड़े कमरे में ले गए जहाँ मरीज़ मर रहे थे। दोरा को केवल दो घंटे उसके पास बैठने की आज्ञा मिली।

एक अच्छे खासे शरीर वाला मरीज़ इस हॉल में घूम रहा था। तरल पदार्थ टयूब द्वारा भीतर पहुँचाए जाते थे बाकी सब ठीक था। एक दिन वह मर गया। जब दोरा आई, काफ़का ने उसकी लाश की तरफ इशारा किया और क्रोधित दृष्टि से देखा। मृत्यु से डरने की अपेक्षा वह उस पर क्रोधित था कि अच्छा भला होते हुए भी वह क्यों मर गया। अनेक दिनों तक माता-पिता को पत्र न लिख सका, दोरा ने लिखा काफ़का के माता-पिता जीवित रहो। क्षमा मांगती हूँ, काफ़का की जगह मुझे लिखना पड़ रहा है। मैं उसकी जगह नहीं हूँ। मैंने सोचा काफ़का द्वारा कुछ भी न लिखने से अच्छा होगा मैं ही लिख दूं? आज तबीयत कुछ ठीक रही। अभी कुछ दिन और लगेंगे, फिर छुट्टी दे देंगे।- दोरा।

प्रतिदिन किसी न किसी की मृत्यु होती। दोरा सुबह सुबह आई तो साथ वाला बिस्तर खाली था। काफ़का ने बताया डॉक्टर तो पहले ही भाग गए थे। पादरी

धैर्यशाली था। चार घंटे बैठा बाईबल के वाक्यों से शांति देता रहा। पादरी तब गया, जब मरीज़ चला गया।

प्रसिद्ध साहित्यकार वरफल ने चीफ़ सर्जन को पत्र द्वारा प्रार्थना की कि काफ़्का को अलग कमरा दे दिया जाए। डॉक्टर ने कहा किसी वरफल ने किसी काफ़्का की सिफारिश की है। काफ़्का का तो मुझे पता है कि वह मरीज़ नम्बर 12 है, परन्तु ये वरफल कौन है?

ब्रोद को लिखा दूसरों की अपेक्षा मेरे जीवन में मधुरता अधिक थी इसलिए अन्यों की अपेक्षा मेरी मृत्यु अधिक कड़वी होगी। ब्रोद की सिफारिश से फेफड़ों के माहिर बहुत मँहगे दो डॉक्टर आए। दिन रात काफ़्का की सेवा करती इस लड़की को माता-पिता पसंद करने लगे। पत्रों के माध्यम से उसे आशीर्वाद देने लेगे। दोरा ने लिखा आपकी आशीषें मुझे कितनी खुशी देती हैं, मेरे बेरंग शब्द इसे वर्णित नहीं कर सकते।

ननद ओटला को लिखामेरी इच्छा है काफ़्का स्वस्थ हो जाए ताकि आपको कोई दुःख न पहुँचे। सोचती रहती हूँ। अन्य कोई बात मेरे दिमाग में नहीं आती। मुझे विश्वास है कि वह जल्दी ही ठीक हो जाएगा।

काफ़्का ने दोरा से कहा हमें विवाह करवा लेना चाहिए। दोरा ने कहा वर्ष से एक साथ रहे हैं, रीति-रिवाज़ों पर मुझे विश्वास नहीं। पिता मानेगा नहीं। ऐसे ही ठीक हैं। काफ़्का नहीं माना, दोरा के पिता को पत्र लिखा आदरणीय पिता, मैं आपके परिवार के सदस्यों की तरह पूर्णतः यहूदी तो नहीं हूँ, किन्तु मैं प्रार्थना किया करता हूँ। किसी दिन आपके जैसा भी हो जाऊँगा। मुझे विश्वास है कि दोरा के साथ विवाह करने की आज्ञा देकर आप मुझे अपने परिवार का सदस्य बना लेंगे। इतने सम्माननीय वाक्य पढ़कर दोरा को लगा कि आज्ञा मिल जाएगी। अपने पुत्र के हाथ पवित्र पादरी ने उत्तर भेजा। भाई भी पिता के समान धार्मिक था, बहन से कोई बात नहीं की, उसकी गोद में उत्तर फेंक गया, दोरा ने पत्र पढ़ा। केवल एक शब्द लिखा थानहीं।

डॉक्टर होफमैन ने कहा काफ़्का की मृत्यु समीप आ गई है दोरा। पादरी आ गया है। तू विवाह के लिए हाँ कर दे। मैं और मेरी पत्नी गवाहों के रूप में हस्ताक्षर करेंगे। दोरा ने कहा आपकी ये बात सहानुभूति देती है डॉक्टर, किन्तु मेरे ईमान अनुसार मरते हुए व्यक्ति को आराम से मरने देना ही सबसे बड़ा पुण्य है। मेरी और उसकी रूह को कष्ट न दो।

काफ़्का ने डॉ. राबर्ट से कहा अब आखिरी इंजैक्शन लगा दे डॉक्टर। मुझे और तकलीफ न दे। डॉक्टर ने दोरा को डाकखाने जाकर उसके माता-पिता को तार देने के लिए कहा। दोरा जाना नहीं चाहती थी परन्तु डॉक्टर का आदेश था। तीन जून, मारफीन का बड़ा इंजैक्शन दिया गया।

जब दोरा गुलदस्ता लेकर वापस आई, बेहोश हो चुका था। दोरा ने फूल उसके चेहरे के नज़दीक किए। काफ़्का ने आँखें खोलीं, दोरा ने कहादेख काफ़्का, कितनी मोहक सुगन्ध है, सूंघकर देख। बेहोश व्यक्ति ने फूलों की सुगन्ध हेतु अपना सिर ऊपर उठाया। फूल सूंघे। बोलने की क्षमता उसमें नहीं थी, हाथों, आँखों और सिर में अभी प्राण थे। दोरा ने दिल पर हाथ रख दिया। धड़कन धीमी हो रही थी। फिर काफ़्का की छाती पर अपना कान रखा। अंतिम सांस और अंतिम धड़कन को सुनकर दोरा ने कहा तेरे दुःख खत्म काफ़्का, मेरे शुरू।

दोरा जब स्वयं मृत्यु का सामना कर रही थी, लिखा फरांज की मृत्यु मेरी मृत्यु थी। सब खत्म। मेरे लिए चारों तरफ अंधेरा था। अब दूसरी बार मरना होगा। नर्स ने जब काफ़्का की पलकें बंद कीं, मैंने देखा, उसके केश उलझे हुए थे। काफ़्का ऐसे रहना पसंद नहीं करता था, मैंने दराज में से ब्रश निकाल कर उसके केश संवारे। पिता ने पराग में दफ़न किया। समाचार पत्रों में उसकी मृत्यु का समाचार देकर लिखा मेरे घर अफ़सोस करने मत आना जी।

ताबूत धरती के भीतर उतारा तो दोरा चीख मारकर गिर पड़ी, यहूदी परम्पराओं में उसकी सिसकियाँ गुम हो गईं। प्रो. उरजीदिल, जो यहाँ उपस्थित था लिखा मैंने मृत्यु के बारे में पढ़ा था, मृत्यु पर कविताएँ लिखीं थीं, ये होती क्या है, काफ़्का की मृत्यु के पश्चात् पता चला। सप्ताह पश्चात् श्रद्धांजलि देते हुए ब्रोद ने कहा मूसा को झाड़ी की लपटों में जो दिखाई दिया, हमें काफ़्का में दिखाई दिया। काफ़्का खत्म हो गया, काफ़्का की मृत्यु का दौर अब शुरू होगा।

काफ़्का के माता-पिता के पास दो मास रहने के पश्चात् दोरा बरलिन गइ। उसकी इच्छा थिएटर सीखने की थी।

मिलिक रेविच ने काफ़्का कर परिचय और एक कहानी का अनुवाद पत्रिका में प्रकाशित करवाया। लिखता हैबढ़िया अनुवाद नहीं था इस कारण मैंने अपना नाम प्रकाशित न करने का निर्णय किया। प्रकाशित सामाग्री को पढ़कर और अधिक निराशा हुई, क्यों प्रकाशित करना था। परन्तु अब तो काफ़्का जीवित नहीं है, ये सोचकर कुछ राहत अनुभव हुई। रूसी बार्डर के समीप यहूदी पॉलिश आबादी से मैंने रूबरू होना था। कार्यक्रम प्रारम्भ होने में समय था, एक जवान लड़की मेरे

पास आई, हाव-भाव से रहित उसका चेहरा था, पीला, उसने बात ऐसे शुरू की जैसे दूर किसी निर्जन स्थान से आवाज़ आ रही हो, नीरस, बेरंग आवाज़। उसने कहा मैंने काफ़्का बारे आपकी रचना पढ़ी है। मैं शर्मिंदा हो गया, इसे कैसे पता चला वो मेरी रचना थी? मैं इस विषय में बात नहीं करना चाहता था। अंततः मैंने पूछा तुमने काफ़्का को कितना पढ़ा है? वह शरमा गई, शुद्ध जर्मन भाषा में कहा मैं काफ़्का की पत्नी दोरा हूँ।

मंच पर मुझसे काफ़्का बाबत कोई बात सही नहीं हुई, बार-बार एक ही वाक्य मेरे कानों में गूंजता रहा मैं काफ़्का की पत्नी हूँ। हे ईश्वर, जिन श्रोताओं में दोरा दायमन्त बैठी हो, वहाँ मैं क्या कहूं। लैक्चर के बाद किसी ने प्रश्न नहीं किए। मैं बाहर निकला, इच्छा थी एक बार उससे मिलूं, वह स्वयं ही आ गई, वह लड़की जो काफ़्का को यिद्दिश और हिब्रू सीखाती थी, प्राचीन इंजील की साखियाँ सुनाती थी। दोरा ने बताया उसके माता-पिता मुझे पसंद नहीं करते थे परन्तु मृत्यु के पश्चात् उन्हें सांत्वना देने के लिए मैं उनके घर रही। बेशक उलझा हुआ व्यक्ति था परन्तु था तो उनका प्यारा बेटा। फिर वह चली गई। अलिज़बेथ बैटी, दोरा से चार वर्ष छोटी उसकी सहेली थी, 1995 में बैटी ने बतायावह दृढ़, आत्मविश्वासी लड़की थी, काफ़्का की बातें खत्म न होने देती उसके हाथ कितने सुन्दर थे ... उसकी आँखें कितनी सुन्दर...। कुछ लोग समझते, यह शेखी मार रही है। सामान्य लड़की, गरीब यहूदी परिवार में यिद्दिश बोलने वाली लड़की को काफ़्का जैसा जीनियस कैसे पसंद कर सकता है? बैटी बताती हैसमय बीतने से यादें धुंधलीं हो जाती हैं, दोरा की बताई बातें शीशे की तरह साफ हैं आज भी।

28 वर्ष की आयु में बरलिन के एक थिएटर में काम करने लगी। थिएटर उसकी सहेली का था, इसलिए रहना, खाना-पीना मुफ्त था और जेब खर्च हेतु तीन वर्षीय बच्चे की आया के रूप में भी काम करती। अकसर स्वास्थ्य खराब हो जाता। पीएच.डी. कर रहा कलापस्टाक, दोरा से अनेक बार मिला। काफ़्का की बहन ओटला को उसने पत्र में लिखा दोरा हँसमुख है, आस-पास रौनक लगा देती है, महका देती है, परन्तु इन सब पर उदासी की चादर बिछी रहती है। बीच में कई महीने बीमार रही परन्तु अब उतनी सुन्दर हो गई है जितनी काफका के समय में थी। तुम्हारी तरह स्वादिष्ट व्यंजन बनाती है।

कैसल का प्रथम संस्करण 1500 कापियाँ प्रकाशित हुई और कीमत 35 डॉलर निर्धारित की गई, दोरा को 150 मार्क महीने की रॉयलटी मिलने लगी। कलापस्टाक और विल्लीहास ने इसका प्रबन्ध किया था। वह खुश हो गई, थिएटर

के काम हेतु जिन अच्छे 30 कलाकारों को चुना गया, उनमें दोरा भी थी। इस थिएटर कम्पनी ने 20 वर्ष यूरोप में क्लासिकल नाटकों का अभिनय किया। इबसन के नाटकों ने तहलका मचा दिया था।

1927 में इसी थिएटर कम्पनी में बरटा लास्क नाम की 45 वर्षीय महिला आई जो नाटक लिखती थी। प्रथम विश्व युद्ध में उसका भाई एमिल लास्क, जिसने दर्शन में पीएच.डी. हीडलबर्ग यूनिवर्सिटी से की थी, ज़ार की सेना के विरुद्ध युद्ध करते हुए मारा गया। दो वर्ष पश्चात् दूसरा भाई हांस, पूर्वी फ्रंट पर युद्ध करते हुए मारा गया। बरटा, युद्ध के विरोध में कविताएँ और नाटक लिखते लिखते पूर्ण रूप से समाज सेविका बन गई थी। यही महिला बाद में दोरा की सास बनी। बरटा के ऐतिहासिक नाटक लिउना-21 को पुलिस ने एक शो के बाद बंद करवा दिया क्योंकि इसमें वर्णित मज़दूरों की त्रासदी के दृश्य बगावत करवा सकते थे। दूसरी बार इस नाटक का अभिनय वईमार नैशनल थिएटर में, जब बरटा 78 वर्ष की थी, किया गया।

दोरा ने शिल्लर, गेटे, हीन, इबसन और शेक्सपीअर के नाटकों का अभिनय किया। साथ पढ़ाई भी करती रही। इसी थिएटर कम्पनी काम करती उससे 12 वर्ष छोटी लूसी, जब 92 वर्ष की थी, ने 2002 में बताया मैं उसे दोरी कहती थी। उसके जैसी शक्तिशाली शख्सीयत मैंने आज तक नहीं देखी, सम्पूर्ण, सन्तुष्ट, आत्मविश्वासी, वह सब कुछ थी।

नाटक में ग्रैजुएशन सम्पूर्ण कर दोरा ने कुलैक्टिव थिएटर कम्पनी में 1928 में नौकरी शुरू की। एक वर्ष में 36 थिएटरों में नाटक किए। कुछ नाटकों में डबल भूमिका भी निभाई। उसका सिक्का चल गया, कठिन से कठिन भूमिकाएँ भी कीं, ये वर्ष उसकी कीर्ति का था।

30 अप्रैल, 1929 को कम्पनी का कॉन्ट्रैक्ट खत्म हुआ तो वह बरलिन एक सुन्दर फ्लैट में रहने लगी। आर्थिक तंगी थी। हड़तालों और प्रदर्शनी का दौर था। पुलिस चीफ़ कार्ल ज़िराबल, जिसने बरटा लास्क का नाटका लिउना-21 बंद करवाया था, घोषणा कर रहा था मैं हड़तालियों को सबक सिखा दूंगा, हर रोज गलियों में फायरिंग होती।

दोरा अनेक स्थानों पर गई, थिएटर में काम न मिला। थिएटर बदल चुका था, निर्जनता, एकान्त का वातावरण था, दोरा का क्लासिकल थिएटर पुराना हो चुका था। कम्यूनिस्ट, थिएटर को माध्यम बनाकर इंकलाब लाने में प्रयासरत थे और जनता उनकी तरफ झुक रही थी। मध्यवर्ग के लिए यही आशा की किरण थी। गोबलज़

ने नई पार्टी की स्थापना की और नज़रबंद हिटलर रिहा होकर कार्यशील हो गया। उसकी पहली सूची में कामरेड थे। बेरोज़गार दोरा को कामरेडों की बातें और योजनाएँ ठीक लगीं। वह मझदार में फंसी हुई थी। समाचार पत्रों में काफ़का के विषय में इंटरव्यूज़ छपतीं, भाषणों में वह काफ़का को ज़माने का सुपरमाईंड मानती, परन्तु काफ़का कम्यूनिस्टों के विरुद्ध था।

जर्मनी में जनवरी 1930 में भयानक आर्थिक तंगी ने अपना प्रभाव डाला, व्यापक बेरोज़गारी, मँहगाई, फैक्टरियाँ, कम्पनियाँ बंद, लाखों की संख्या में मज़दूर सड़कों पर आ गए। लाल झण्डों की संख्या बढ़ने लगी। दोरा की आजीविका रॉयलटी के पैसों से होती थी। दोरा ने कम्यूनिस्ट पार्टी की सदस्यता का कार्ड ले लिया, उसका गुप्त नाम मारिया रखा गया। मास्को पार्टी हैड आफ़िस ने दोरा के बारे में सूचना मांगी, ये सूचना भेजी गई :

कामरेड मारिया को मैं 1930 से जानता हूँ। डेढ वर्ष से वह पार्टी की गतिविधियों में कार्यरत है। उसकी अन्य गतिविधियों का मुझे नहीं पता। ये मुझे निजी तौर पर पता है कि वह अपने पहले पति काफ़का की सम्पत्ति और रॉयलटी में से हिस्सा लेती रही है और जिओनिस्ट यहूदी मैक्सब्रोद उसका हमदर्द है।

कामरेड उसकी अभिनय योग्यता को जानते थे, उन्होंने नुक्कड़ नाटकों द्वारा पार्टी का प्रचार करना था, उसे मंच शिक्षिका रख लिया गया। रूस के इंकलाब हेतु मंच का हथियार सफल हुआ था, नाज़ियों की सहायता देशी विदेशी धनी कर रहे थे, कम्यूनिस्ट उनके प्रापेगण्डे का मुकाबला प्रैस, रेडियो द्वारा नहीं कर सकते थे, नुक्कड़ नाटक सफल हो सकता था, पुलिस ने स्टेट को सूचना भेजीः

ये अभिनेता दिन प्रतिदिन भारी भीड़ को खींच रहे हैं। इनके नाटक भाषणों की अपेक्षा अधिक इंकलाबी हैं। इनके विरुद्ध सरकार को कोई कदम उठाना होगा नहीं तो ...।

परिणामतः नुक्कड़ नाटकों के विरुद्ध ऐक्ट पास हो गया। पार्टी द्वारा दी गई प्रत्येक जिम्मेवारी को दोरा निभा रही थी किन्तु एक कामरेड की टिप्पणी थी दिल से यह हमारे साथ नहीं है।

अर्थशास्त्री लुज्ज़ लास्क, दोरा के कमरे में नए कामरेड रंगरूटों को पढ़ाने आता था। ये नास्तिक यहूदी दोरा से पाँच वर्ष छोटा था। अच्छी पढ़ाई के बावजूद भी नौकरी नहीं मिली तो माँ द्वारा प्रेरित करने पर कम्यूनिस्टों के लिए काम करने लगा। सुन्दर नवयुवक था। शांत, दूरदर्शी, सहनशील स्वभाव का था, दोरा से भिन्न। दोरा से अधिक पढ़ा लिखा। फ्रैंच, जर्मन भाषा के साथ साथ यूनानी और लातीनी

भाषाओं का भी उसे ज्ञान था। पहले पाँच वर्ष उसने वकालत की पढ़ाई की परन्तु 1925 में ***दास कैपीटा*** पुस्तक पढ़ने के बाद अर्थशास्त्र में दाखिला ले लिया, वर्ष 1930 में उसने ***बरामदों का टैक्स*** पुस्तक प्रकाशित करवाई। सुखी परिवार का लड़का था ये। पिता डॉक्टर और यहूदी माँ बरटा लास्क विद्वान्, कलाकार, शायर, कट्टर कम्यूनिस्ट। दो बेटों और दो बेटियों की माँ। दोरा इसी घर में सामान ले आई और लुज्ज़ के साथ मार्क्सी साहित्य बांटना शुरू कर दिया। लुज्ज़ का जन्म 1903 में हुआ था। दोरा अकेलापन अनुभव करने लगी। ये बड़ा घर बच्चों से भरा और चहल पहल था।

जर्मनी बेरोज़गारी और निर्धनता से संघर्ष कर रहा था, अनुमान था कि डिक्टेटरशिप लागू हो सकती है, विस्फोट हो सकते हैं, सिविल-युद्ध हो सकता है, परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। चुनाव हुआ, सोशल डैमोक्रेट हार गए, संसद पर नाज़ियों का अधिकार हो गया। सामी लोग हिटलर से भयभीत थे। यहूदियों में बेचैनी थी। अमेरिका की यूनिवर्सिटी से अध्यापक की नौकरी का पत्र प्राप्त कर आईनस्टीन ने अपनी पत्नी से मुस्कराते हुए कहा एक बार ध्यान से देख लो अपना जर्मनी का ये घर। पत्नी ने पूछा क्यों? आईनस्टीन ने कहा शायद फिर कभी देख न पाएँ।

दोरा निश्चिन्त रही। प्रत्येक यहूदी और कम्यूनिस्ट को मासिक चंदा देना पड़ता था। दोरा ने यहूदियों को चंदा देना बंद कर दिया, दोरा दो भार उठाने में असमर्थ थी। बिना धार्मिक रस्मों के उसने लुज्ज़ से विवाह करवा लिया। रजिस्ट्रार ने लिखा अर्थशास्त्री लुज्ज़ और रंगकर्मी दोरा का विवाह दर्ज हुआ, 30 जून 1932।

28 फरवरी, 1933 को जर्मन संसद की इमारत में धमाका हुआ और आग की लपटें उठीं। नाज़ियों ने कामरेडों को दोषी बताते हुए कहा ये उनकी करतूत है। हिटलर ने पुलिस फोर्स के मुखिया से कहा अब हम बतायेंगे हम क्या हैं। जो भी हमारे रास्ते में आए उसे काट दो। कम्यूनिस्टों को फांसी पर लटका दो जो लोग इनके हमदर्द है उन्हें जेल में बंद करो। पुलिस फोर्स का नाम गैसटापो रखा। ऐंमरजैंसी लागू हो गई। दोरा रातो-रात अपराधियों की श्रेणी में आ गई। गिरफ्तारियाँ, मुकद्दमों की आवश्यकता नहीं, जिस पर पुलिस को संदेह है पकड़ कर गोली मार सकती है। अनगिनत लोगों को पकड़कर मारा जाने लगा। भीड़ें एकत्रित होती, प्रथम विश्व युद्ध में गाया जाने वाला गीत फिर से आकाश में गूंजने लगा हमारा दृढ़ विश्वास। हारेगा फ्रांस।

हज़ारों कम्यूनिस्ट, कलाकार, लेखक, सिविल अधिकारी, राजनैतिक नेता और यहूदी, जर्मनी छोड़कर भागने लगे, अभी बार्डर को सीलबन्द नहीं किया गया था।

अनेक लोग इस कारण चुपचाप दिन व्यतीत करने लगे शायद ये तूफान बंद ही हो जाए। लुज्ज़ और दोरा ने निर्णय किया यही रहकर लड़ेंगे। 23 मार्च, 1933 को लुज्ज़ बंदी बना लिया गया। दोष था कम्यूनिस्ट साहित्य बांटता है। चार दिन तक उसे यातनाएँ दी गईं दूसरों के नाम बताए। उसने कुछ नहीं बताया। घर की तलाशी में पुलिस ने ***खतरनाक गद्दार सामग्री बरामद की।*** छोटे भाई को बंदी बना लिया गया। कुछ सप्ताह पश्चात् जब देखा कि ये कोई गम्भीर अपराध नहीं है, रिहा कर दिये। रिहाई के बाद दोनों ने रूस जाने का निर्णय किया। 55 वर्षीय बरटा लास्क को एक महीने तक हवालात में रखकर छोड़ दिया। दोरा को जिस बात का भय था वही हुआ। काफ़्का की सभी डायरियाँ और रचनाएँ पुलिस ले गई। दोरा को पागलपन के दौरे पड़ने लगे। इस साहित्य को उसने छिपा रखा था, मैक्सब्रोद को भी नहीं बताया था, बता देती, बच जाता, ब्रोद ने उससे मांगा भी था, मगर उसने झूठ कहा कि उसके पास कुछ नहीं है। अब दो रास्ते उसके सामने थे, एक तो हमेशा के लिए खामोश हो जाए। किसी को पता न चले कि दोरा के पास कुछ था। परन्तु तब ये साहित्य हमेशा के लिए नष्ट हो जाएगा। दूसरा यदि वह इसके बारे में बता दे तो साहित्य के बचने की सम्भावना है। उसने दूसरा मार्ग चुना। ब्रोद को गुप्त पत्र लिखा मैंने झूठ कहा था, काफ़्का का साहित्य मेरे पास था, पुलिस ले गई, यदि बचा सकते हो तो बचा लो।

ब्रोद उसी समय शायर होफमैन के पास गया जो बरलिन में पराग के राजदूत के रूप में रहता था। उसने गैसटापो के साथ सम्पर्क स्थापित कर काफ़्का की रचनाएँ मांगी। गैसटापो ने उत्तर भेजासैंकड़ों मन कागज़ बरामद किए है। ढेर लगा हुआ है। कौन ढूंढेगा इस पहाड़ में से काफ़्का को? चार वर्ष पश्चात् ब्रोद ने एक लम्बे लेख द्वारा काफ़्का का साहित्य ढूंढने की अपील की। उसने इस लेख में दोरा का वर्णन नहीं किया। दुःखी महिला को शर्मिन्दा नहीं करना चाहता था।

स्टेट ने घोषणा की यहूदियों की दुकानों से सामान नहीं खरीदना, यहूदी अफ़सरों, न्यायाधीशों, जेल सुपरडैंट आदि सभी कर्मचारियों से इस्तीफा ले लिया गया। यहूदी बच्चों को स्कूलों से निकाल दिया। जिन्होंने पीएच.डी. शोध- कार्य सम्पूर्ण कर लिया, निर्णय किया गया उन्हें डिगरियाँ नहीं दी जाएँगी। वर्ष 1925 के अप्रैल मास में ***भीड़ कम करो ऐक्ट*** पास होने के उपरान्त से सब घटित हुआ। 10 मई को गोबलज़ (हिटलर का प्रापेगंडा मन्त्री) ने घोषणा की कम्यूनिस्टों, यहूदियों, अनार्यों और विदेशियों जैसी गंदगी से बचाकर जर्मनी को पवित्र करना है। उत्साही नाज़ी सैनिक चिल्ला रहे थे मार्क्स को जलाओ, फ्रायड को जलाओ। पुस्तकालयों में

आईनस्टीन, जैक लंदन, हैलन कैलर, मारग्रेट संगर और एच.जी. वैलज़ की पुस्तकों की लोहड़ी के इर्द-गिर्द नृत्य किया। काफ़्का साहित्य बच गया क्योंकि उन्हें उसके बारे में पता नहीं था कि वह कौन है। हैनरिक हीन को काफ़्का बहुत पंसद करता था, उसने लिखा था पुस्तकें जलाने वाले कुछ देर बाद इंसानों को जलाने लगते हैं। हीन की पुस्तकें जला दी गईं। इन दिनों दोरा गर्भवती थी। दोरा और लुज्ज़ घर बदल बदल कर छिप कर दिन बिता रहे थे। एक तो यहूदी, दूसरे कम्यूनिस्ट, बचने की सम्भावना कहाँ ? अगस्त 8, रात को छापा मारा, लुज्ज़ को ले गए। कपड़ों का एक अटैची साथ ले जाने दिया। कुछ दिनों पश्चात् अटैची, जो आधा जला हुआ था दे गए। इसमें खून से लथपथ एक निक्कर मिली, मार दिया? शायद।

1 मार्च, 1934 को दोरा ने स्वस्थ सुन्दर लड़की को जन्म दिया। कभी कभी संदेश मिलता, लुज्ज़ जीवित है। उसने पुलिस चीफ को पत्र लिखा, इस जज़्बाती पत्र में अपील की गई थी कि निर्दोष लुज्ज़ पर अत्याचार करना उचित नहीं। आठ मास पश्चात् वह घर आ गया, चमत्कार से कम नहीं था। उसने अपने साथियों को गोलियों का शिकार होते देखा था। उसने बताया जेल सुपरडैंट ने मुझे बुलाकर कहातुम्हारी पत्नी के इस पत्र के कारण तुम पर रहम आ गया वर्ना...।

परिवार ने निर्णय किया कि मज़दूरों के स्वर्ग, रूस चले जाएँ। सबसे पहले बरटा माँ गई। यद्यपि दशकों से वह कम्यूनिस्ट लीडर रही थी, मास्को शहर को उसकी पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी और रहने की आज्ञा मिलने में एक वर्ष लग गया। चार महीने बाद लुज्ज़ को रूस में आने की आज्ञा मिल गई। वह 28 फरवरी 1935 को रूस पहुँच गया। माँ को लाईब्रेरी सहायक और लुज्ज़ को मार्क्स-ऐंजलज़-लैनिन विद्यालय में जूनियर अकादमिक सहायक रख लिया। दोरा ने भी प्रार्थना पत्र लिख दिया। सोचतीरूस में फिर से रंगमंच पर कार्य करेगी। यहूदी नाटक उसे अभी भी प्रिय थे।

समाजवाद, सांझा लंगर, सांझी ज़मीन, समानता के अधिकार, मुफ्त ईलाज, मुफ्त शिक्षा, अच्छा वेतन, दूर से अत्यधिक मोहक दृश्य थे। इन मासूमों को क्या पता था कि 1934 के अंत में स्टालिन रूस में वही सब कुछ करेगा जो हिटलर जर्मनी में कर रहा था। हिटलर ने अपने नाज़ी मित्रों और साथियों को पार्टी पवित्र करने हेतु गोलियों से भून दिया था। इसी प्रकार स्टालिन कत्लों द्वारा रूस को पवित्र कर रहा था। हिटलर ने 60 लाख यहूदियों का कत्ल किया। रूसी धरती को प्रत्येक प्रकार के कल्पित राजनैतिक विद्रोहियों को उतनी ही निर्ममता से हिटलर से अधिक संख्या में स्टालिन ने मारा। इसे पार्टी की शुद्धि लहर कहा गया।

दोरा, मेरीआना पुत्री से सन्तुष्ट थी। सितम्बर 15 को यहूदियों के विरुद्ध एक कानून पास हुआ, उनसे नागरिकता छीन ली गई, ये जर्मन लोगों से विवाह नहीं करवाएँगे, अन्य कोई सामाजिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे। किसी यहूदी को धर्म परिवर्तित करके ईसाई बनने की आज्ञा नहीं थी। इस संघर्ष के इतिहासकार लूसी दादोविच ने लिखा हैजो यहूदी है, वह यहूदी है, यहूदी है, यहूदी है, मारो। नाज़ियों का यही एक नारा था।

दोरा के ससुर डॉ. जैकबसन लास्क को रूस आने का निमंत्रण मिला। उसमें लिखा था कि दोरा और उसकी बेटी भी साथ आ सकते हैं, औपचारिक आज्ञा बाद में मिल जाएगी। दोरा ने अटैची में सामान रख लिया। काफ़का की कुछ पुस्तकें और केश संवारने वाला सुनहरी ब्रश। काफ़का की निजी निशानी केवल यही बची थी। चलने से पूर्व मित्रों के साथ होटल में खुशी खुशी भोजन किया, शुभ यात्रा हेतु यहूदी प्रार्थना की, यिद्दिश भाषा में यहूदी गीत गाए, नरक, स्वर्ग बन गया, कुछ समय के लिए।

कवि स्टैनसिल अगले दिन इन्हें रेलवे स्टेशन पर विदा करने गया। बेटी दो वर्ष की थी। दोरा ने मुट्ठी में चांदी के जितने सिक्के आए, स्टैनसिल को देते हुए कहा छोटों को बड़े दिया करते हैं। गैसटापो कर्मचारियों ने उन्हें जाते हुए देखा, थाने में रिपोर्ट की आज 11.2.1936 को लास्क परिवार मास्कों के लिए रवाना हो गया। जर्मनी छोड़कर सोवियत बोलशिवकों की नौकरी करना गद्दारी है।

दो दिन दो रात की यात्रा के बाद कारवाँ मास्को पहुँच गया। जवानी में डॉ. लास्क इतना व्यस्त रहता था कि बच्चों की तरफ ध्यान नहीं दिया। नाज़ियों ने उसे इतना मुक्त कर दिया कि पौत्री के साथ खेलता रहता। पौत्री को अपने पिता बारे कुछ पता नहीं था।

दोरा को मास्कों स्वप्नों का शहर प्रतीत हुआ, चलते चलते हिब्रू भाषा में चमकता हुआ साईनबोर्ड पढ़ा ***यहूदी अभिनेताओं का थिएटर***, पहली बार यहूदी होने पर गर्व हुआ, है एक स्थान जहाँ यहूदियों का सम्मान होता है। मास्को में नवीनता आ रही थी, मैटरो चलने लगी, नई कलोनियाँ आबाद होने लगीं। दोरा के मित्र आए और यहूदी रूसी अभिनेता डायरैक्टर सुलेमान मिखाईल को किंग लीअर की भूमिका दिखाने हेतु ***स्टेट यहूदी थिएटर*** ले गए। ये रात वह कभी भूल नहीं सकी। सुलेमान की अदाकारी तो थी ही सबसे अद्भुत, बाकी सब कुछ भी शानदार था।

अनेक वर्षों पश्चात् स्टेनसल की यिद्दी पत्रिका हेतु उसने लिखापीले, बीमार, अपराधी जर्मनी में से निकलकर इस थिएटर के लोग कैसे लगे, बता नहीं सकती, हिब्रू शब्द देख देखकर मैं थकती नहीं, दुआ करती हूँ रूस सुखी रहे। लम्बी पंक्तियों में विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न जातियों के लोग टिकट खरीदने के लिए खड़े, ठण्ड से बचने के लिए कभी कभी धीरे धीरे कूदने लगते, किंग लीअर का यहूदी नायक देखने के लिए तत्पर। आज जो इसका नायक है, उसी सुलेमान ने 1920 में इस थिएटर का निर्माण किया था। आपकी कल्पना जितनी चाहे बड़ी हो, आप इसकी सुन्दरता तक ख्यालों में भी पहुँच नहीं सकते। नाटक कैसा लगा, नहीं लिखूंगी, संसार के आर्ट आलोचक लिख चुके हैं। समाप्त होने पर लोग सुलेमान के आसपास ऐसे चक्कर लगाते हैं जैसे चिड़ियाँ चक्कर काटती हों। सुलेमान से हरेक प्रेम करता है।

रूसी नागरिकता लेने हेतु उसने फार्म भरा, प्रत्येक तथ्य सही। लिखा छह वर्ष से जर्मनी में कामरेडों की लीडर रही। अधिकारियों ने कहा जर्मन में रहते उन कामरेडों के नाम बताओ जो आपके तथ्यों के सही होने की पुष्टि करें। दोरा ने कहा कामरेड रोशीलड, परन्तु इस समय वह जेल में है।

बेटी को तेज़ बुखार हो गया, एक बार तो बचने की कोई आशा नहीं रही। अस्पताल में दाखिल करवाया। दवाईयाँ नहीं थीं। मैली चादरें और गंदे कम्बल, चादरें सप्ताह में एक बार धुलतीं, कम्बल कभी नहीं। सूखी उल्टी को खुरच कर उतार देते। जीन लिआन ने लिखा था समाजवाद में क्योंकि सभी बराबर हैं, आप साफ़ चादरें, साफ़ कम्बल घर से अस्पताल में नहीं लेकर आ सकते। अधिक मात्रा में मशीनरी खरीदी जा रही है, अनगिनत राजनेता कत्ल हो रहे हैं, अस्पतालों की तरफ ध्यान देने की फुर्सत किसे है, पैसे कहाँ हैं?

खुफिया पुलिस अफसर ने पूछा उला नामक महिला को जानती हो? दोरा से सिद्ध करना था कि वह रूस में कोई भी तथ्य छिपाएगी नहीं, कहा हाँ, वह मेरे साथ थिएटर में काम करती थी। अफसर ने बताया तुम्हें पता है वह दोहरी भूमिका निभाती रही? रूस में आश्रय लेकर काम नाज़ियों के गुप्तचर के रूप में करती रही, उसके बेटे की आयु तेरी बेटी जितनी है। उसके पति बैकर को यहाँ गद्दारी के दोष में दस वर्ष की कैद की गई है।

30 जून 1935, दोरा के देवर अरनैस्ट की लाश मास्को अस्पताल के मेज़ पर मिली, सारे परिवार में वही एक सबसे साहसी था। उसकी मृत्यु के कारण का

किसी को कुछ पता न चला, माँ बरटा ने दुःख को कम करने हेतु लिखना शुरू कर दिया।

मास्को में पब्लिक मुकद्दमों के समाचार गर्म थे, कैसे पुराने इंकलाबी नायकों, ज़ीनोवीव और कामीनीव से गद्दारी करने के इंकलाबी बयान लिए गए, फिर गोलियों से भून दिया गया, उनके बाद 60 जरनैलों एवं पार्टी लीडरों को भी खुलेआम ऐसे ही कत्ल किया गया। लैनिन और तासकी के बाद पार्टी का सबसे छोटी आयु का चिन्तक कामरेड निकोलाई बुखारन था। लैनिन उसे पार्टी का कोहिनूर कहता था। वर्ष 1938 में स्टालिन द्वारा चतुर्थ एवं अंतिम बदनाम मास्को मुकद्दमे में किस प्रकार अपमानित करके मारा गया, पढ़कर कंपकंपी होने लगती है। एक रूसी दूसरे से बात करके सहमत था, क्या पता कौन के.जी.बी. का ऐजंट हो?

सज़ा काट रहे बैकर को गोली मार दी गई। दोरा, बैकर और उसकी पत्नी को जानती थी, ये बहुत बड़ा अपराध था।

जर्मन सरकार ने ***बीमार यहूदी दिमाग की कृतियाँ*** कहकर काफ़का के साहित्य पर पाबन्दी लगा दी, मास्को में ईटालियन कामरेड लिनारी रहता था जो काफ़का पाठक था, मसोलीनी के यातना केन्द्र में उसकी दोनों टांगे और एक हाथ काट दिया गया था। दोरा ने उससे पूछा क्या रूसी निवासियों के लिए काफ़का रचनाओं के अनुवाद उचित होंगे? लिनारी ने हाँ कहते हुए कहा यकीनन वह महान् व्यक्ति था।

दोरा की घबराहट दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी क्योंकि उसके किसी न किसी परिचित को कुछ समय बाद बंदी बना लिया जाता और उसकी मृत्यु का समाचार मिलता। विदेशी कामरेडों पर सरकार की कड़ी दृष्टि थी।

1 मार्च को मेरीआना का तीसरा जन्मदिन मनाया गया। दोरा ने ध्यान से देखा, वह काफ़का जैसी बनती जा रही थी, वैसी ही गहरी गाल और आँखें। शरीर पतला क्यों है, टैस्ट करवाने पर तपेदिक के लक्षण दिखाई दिए। सिर के बाल झड़ने लगे। डॉक्टर इंकार करने लगे ... रूस में ईलाज नहीं। रूस से बाहर जाकर ईलाज करवाने की आज्ञा नहीं मिलेगी, दोरा जानती थी, तो भी उसने स्विटज़रलैंड जाने हेतु अर्ज़ी भेज दी, दोरा को यकीन हो गया, आज्ञा मिलेगी, बेटी को बचा लेगी। एक और मुश्किल, यदि रूस ने जाने की आज्ञा दे भी दी तो स्विस वीज़ा कैसे मिलेगा? दोरा ने एक चालाकी की हुई थी, रूसी पासपोर्ट लेकर जर्मनी पासपोर्ट जमा करवाना होता है। उसने नहीं करवाया था, इसकी सज़ा गोली है। हो गोली की सज़ा। तो क्या।

दोरा की वह अर्ज़ी खारिज हो गई जो उसने कम्यूनिस्ट पार्टी आफ़ रशिया की मैंबरशिप हेतु भेजी थी ***इसकी पृष्ठभूमि संदेहजनक है।*** बिना पार्टी की सदस्यता लिए विदेशी व्यक्ति के लिए जीवित रहना कठिन है। दोरा की उस अर्ज़ी का कोई उत्तर नहीं आया जो उसने रूस छोड़ने की आज्ञा के लिए भेजी थी।

पति लुज्ज़ को बंदी बना लिया गया, किसी गलत व्यक्ति के साथ सम्बन्ध होने का पता चला था, दोरा ने लिनारी को काफ़का की पुस्तकें दे दी थीं, उसे भी बंदी बना अनजान स्थान पर ले गए। दोरा के हक में किसी ने बात तो क्या करनी थी कोई उसकी बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं था। कुछ साहित्य नाज़ी ले गए, बचा हुआ रूसी। निर्णय था तो खतरनाक किन्तु दोरा निर्णय ले सकती थी। उसने ग्रह मंत्रालय को पत्र लिखा जर्मनी में काफ़का साहित्य पर पाबन्दी है। मैंने लिनारी को वे पुस्तकें दीं जो अभी प्रकाशित नहीं हुईं। सारा संसार जानता है कि ये रचनाएँ अनमोल हैं, लिनारी के पास से यदि आपने पुस्तकें बरामद की हैं, वे मुझे वापस कर दें तो मैं ही नहीं समस्त दुनिया आपकी धन्यवादी होगी। दोरा को न तो पत्र का उत्तर मिला न ही पुस्तकें। मेरीआना आशा के विपरीत चतुर्थ जन्मदिन मनाने तक जीवित रही, सिर पर बाल आने शुरू हो गए। 26 मई को औपचारिक रूप से लुज्ज़ को जासूसी करने का दोषी माना गया, महीनों तक उसकी माँ बरटा को पता न चला उसे कहाँ ले गए। लुज्ज़ सोचता रहा अदालत में जाकर अपने निर्दोष होने का सबूत देगा तो रिहा हो जाएगा। अदालत में पेशी न हुई, पुलिस विभाग ने पाँच वर्ष की कैद सुना दी, पूर्वी साईबेरिया भेज दिया गया। दोरा ने फिर कभी उसका चेहरा नहीं देखा।

स्टालिन द्वारा आतंक के शिकार विदेशियों पर रेनर बार्थ बड़ी अथार्टी है, वह अनुमान लगाता है जो विदेशी रूस से वापस जाना चाहते थे, सरकार ये वायदा लेकर कि वहाँ जाकर रूस के लिए जासूसी करोगे, भेज देती थी, क्योंकि विदेशों में ऐजंटों की कमी थी। इसे जासूसी करना नहीं ***पार्टी के विशेष काम करना*** कहा जाता था, अपनी बेटी को बचाने के लिए दोरा ऐसा कर सकती थी। जिनके पतियों को कैद हो जाती, उनकी पत्नियाँ और बच्चे या तो भूखे मरते या स्टालिन की सरकार जर्मन गैसटापो को सौंप देती, वह मार देते। परन्तु दोरा के केस में ये सब अनुमान हैं, वास्तव में क्या हुआ किसी को कुछ पता नहीं।

स्टीमर द्वारा काले समुद्र को पार करके वह इसतंबूल पहुँची। फिर रेलगाड़ी द्वारा बुलगारिया, यूगोसलाविया से इटली होते हुए स्विस के बार्डर लुगानो पहुँच गई, स्विटज़रलैंड सरकार ने उसे बार्डर पार करने की आज्ञा नहीं दी। यहाँ से उसने हालैंड जाने का निर्णय किया, जहाँ उसकी ननद रहती थी। इस यात्रा का खर्च कहाँ से आया,

कोई नहीं जानता। रूथ लास्क अपनी भाभी और भतीजी को देखकर बहुत खुश हुई। भतीजी को पहली बार देखा था, उसके जन्म से पहले वह जर्मन छोड़ चुकी थी, दोरा ने देवर के कत्ल और पति की कैद के दुःखदायी समाचार सुनाये, रूथ ने कहा मुझे तो ऐसा प्रतीत होता था अब मैं कभी किसी को देख नहीं सकूंगी किन्तु देखो तुम और मेरी भतीजी दोनों आ गईं।

दोरा ने कहा यदि यहाँ इसका ईलाज सम्भव न हो सका तो मैं इसे इंग्लैंड लेकर जाऊँगी। संसार के सबसे अच्छे डॉक्टर हैं वहाँ। रूथ ने कहा हाँ, लंदन के पूर्व में यहूदी बस्तियाँ हैं, वहाँ उजड़े हुए लोगों के लिए राहत कैम्प भी हैं। जर्मनी धमकियाँ दे रहा था, दोरा सोचने लगी यदि इंग्लैंड विरूद्ध जर्मनी ने युद्ध शुरू कर दिया तो बार्डर सील हो जाएगा, फिर मैं कैसे जा पाऊँगी? तब तो यहीं फंस जाऊँगी। कुछ दिन आराम करके दोरा अपनी बेटी सहित लंदन के लिए रवाना हो गई। चार घंटों की समुद्रीय यात्रा समाप्त कर बार्डर पर पहुँची तो प्रवेश की मनाही। इंग्लैंड एक जर्मन को आने दे? वापस ननद के घर पहुँच गई।

जब चैकोसलवाकिया पर जर्मनी ने आक्रमण किया, मैक्सब्रोद तलअवीव की तरफ जाने वाले समुद्री जहाज़ में बैठ गया। उसके पास एक अटैची था जिसमें काफ़्का की अप्रकाशित रचनाएँ थीं। चैकोसलवाकिया बार्डर से चलने वाला ये अंतिम जहाज़ था। वर्ष 1937 में ब्रोद ने काफ़्का की जीवनी प्रकाशित करवाई जिसे दोरा ने नहीं पढ़ा था। अब यूरोप आकर उसे पढ़ा। एक अध्याय तो दोरा पर ही लिखा हुआ था। वह ब्रोद को समझ नहीं सकी। झगड़ती थी, झूठ बोलकर काफ़्का की रचनाएँ, मैक्स को दे देती। ब्रोद के लिए काफ़्का और दोरा एक ही वस्तु के दो नाम थे। ब्रोद का वाक्य ***सैनेटोरियम में वीआना ईलाज हेतु बीमार काफ़्का के लिए जो टैक्सी मिली उसकी छत नहीं थी, वर्षा हो रही थी, आँधी तूफान चल रहा था, कहीं ठण्ड न लग जाए, खुली जीप में दोरा स्वयं खड़ी हो गई, अपने पीछे काफ़्का को बिठा दिया, थोड़ी हवा तो रुके।*** पढ़ा, रोने लगी।

ब्रोद ने लिखा था जब वह काफ़्का से पहली बार मिली, 19 वर्ष की थी, वास्तव में वह 25 वर्ष की थी, ब्रोद ने 6 वर्ष कम कर दिए। दोरा ने भी अपनी आयु में से 6 वर्ष काट दिए। सारे संसार ने ब्रोद की बात को सत्य माना।

पाँच बार इंग्लैंड की सीमा से निराश वापिस आई, फिर उसने आखिरी अर्ज़ी अपनी बेटी का वास्ता देकर लिखी कि उसका एक रिश्तेदार हेग में रहता है। फोन करके बुला लो। मुझे मत जाने दो, मेरी बीमार बेटी को ईलाज के लिए ले जाएगा। अफ़सर मान गया। मेरीआना चली गई और दोरा वापिस आ गई, तीन और प्रयास किए,

तीसरे प्रयास में आज्ञा मिल गई। दो मास की आरज़ी आज्ञा मिली, अवधि बढ़ाने की कोशिश करने लगी, छह महीने मिल गए।

बेटी यात्रा करने में असमर्थ थी, कमज़ोर थी, परन्तु समाचार बता रहे थे कि जर्मनी, पोलैंड पर आक्रमण करने वाला है। जैसे भी हो, जल्दी निकला जाए। बीमार बेटी सहित इंग्लैंड में प्रवेश कर गई, एक सप्ताह बाद पोलैंड पर आक्रमण हो गया, विश्व युद्ध शुरू, संसार के सभी बार्डर सील, दोरा के पिता हरशल दायमन्त की मृत्यु 1938 में हो गई थी, इसलिए परिवार पर आए संकटों को देखने से मुक्त एवं भाग्यशाली रहा। पहला घेरा जर्मनी ने दोरा के मायके बैदज़िन शहर में डाला, असंख्य यहूदी अपने मन्दिर (सिनेगाग) में प्रार्थना करने हेतु चले गए। सितम्बर 9, आधी रात पेट्रोल डालकर आग लगा दी गई। सभी जलकर राख हो गए, आस-पास के 50 घर भी तबाह हो गए, 27 हज़ार यहूदी इस शहर में रहते थे। एकत्रित करके एक कौंसल बना दी जिसका मुखिया यहूदी को बनाया गया कहा गया कि किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाएँगे। सभी को क्रमानुसार काम देंगे। बेशक काम जर्मन यातना केन्द्र की सेवा का हो परन्तु तनखाह मिलेगी और जान बचेगी। पंक्तियों में खड़ा करके सबसे पहले युवा एवं स्वस्थ लड़के लड़कियों को चुन लिया जाता और काम पर भेज देते। दोरा की 17 वर्षीय बहन सारा चुनी गई, फिर कभी सारा का कुछ पता नहीं चला कहाँ गई।

इंग्लैंड में रहते हुए विदेशियों की सूची बनाई गई, ए,बी, सी, श्रेणियों में बांटा गया, ए श्रेणी खतरनाक दुश्मन, नज़रबंद करो, बी श्रेणी उनके हमदर्द कम खतरनाक, पुलिस को बताए बिना निवास स्थान से पाँच मील की दूरी पर न जाएँ, कैमरा, दूरबीन, नक्शा रखने की मनाही, और सी श्रेणी के लोग नाज़ियों से पीड़ित शरणार्थी थे, खतरनाक नहीं, रहने दो। जनवरी 1940 को दोरा को बी श्रेणी मिली। दोरा की ननद ने 15 अप्रैल को अमेरिका में शरण ली।

जिस दिन जर्मनी ने हालैंड पर आक्रमण किया, प्रधानमन्त्री चमरलेन ने इस्तीफा दे दिया, चर्चल ने कमान संभाल नी, संसद में प्रश्न उठा कि 70 हज़ार जम्रन आस्ट्रीअन रिफूजियों का क्या किया जाए? निर्णय हुआ कि 16 से 60 वर्ष के बी श्रेणी के पुरुष रिफूजियों को कांटों वाली तार के भीतर रखा जाए। एक सांसद ने कहा महिलाओं को क्यों नहीं? महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक खतरनाक जासूस होती हैं। ठीक है, महिलाएँ भी नज़रबंद, दोरा इनमें एक थी। ऑक्सफोर्ड जैसी महान् यूनिवर्सिटी का बयान छपा ***सभी विदेशी मुसीबत की जड़ हैं, नज़रबंद किए जाएँ।***

पुलिस ने दोरा के दरवाज़े पर दस्तक दी और चलने का इशारा किया। दोरा ने शीघ्रता से अपनी बेटी के कपड़े अटैची में रखे और काफ़्का का ब्रश पर्स में रखकर पुलिस के साथ चल पड़ी, उत्तरीय लंदन की होलवे जेल में बंद कर दी गई।

पहले दिन खाने के लिए केवल चाय और बिस्कुट मिले। दोरा ने बेटी के गुर्दे खराब होने का डर बताकर ताज़ा पानी और सब्जी मांगी, कोई असर नहीं। हिटलर और स्टालिन के अत्याचार से बचकर इंग्लैंड गई दोरा के साथ ये सब कुछ हुआ। दो दिनों के बाद कैदियों को बसों में लादकर लिवरपूल ले जाया गया, मार्ग में खड़े दर्शक इन्हें गालियाँ देते, अण्डे फेंककर अपमानित करते, दोरा और बेटी को सीट नहीं मिली, एक पीछे बैठी महिला ने कमज़ोर लड़की को बुलाने का इशारा किया, मेरीआना ने माँ की तरफ देखा, माँ ने आज्ञा दे दी तो उस महिला ने उसे गोद में बिठा लिया। इसका नाम जोहंना था। दोरा इसे हैनी कहकर पुकारती थी। इस साधारण-सी घटना कारण दोनों में उम्र भर की मित्रता कायम हो गई। 24 वर्षीय हैनी गायिका थी, दो महीने पहले ही यहूदी संगीतकार पाल से विवाह हुआ था, लिवरपूल से जहाज़ में बिठाकर इन तीन हजार महिलाओं और बच्चों को ***आईल ऑफ मैन*** नामक टापू पर उतार दिया। इंग्लैंड, स्काटलैंड और आयरलैंड के मध्य 33 X12 वर्ग मील का ये द्वीप अनेक कहानियों में घिरा हुआ है। कभी ये अच्छा सैर स्थल था, आज ये जेल है। हैनी यहाँ समीप ही नज़रबंद थी, अकसर मिलने आती। दोरा की छह वर्षीय बेटी के बारे डायरी में लिखा ***मेरीआना पैदाईशी कलाकार है। गम्भीरता और हास्यरस उसके होंठो पर सामूहिक रूप से थिरकते रहते हैं, पूर्णतः मौलिक कलाकार।***

बैलजियम, नार्वे और फ्रांस ने जर्मनों की पराजय स्वीकार कर ली। पैरिस की लूट का मज़ा लेने के लिए मसोलीनी की ईटालियन सेनाएँ आ गईं। पैरिस ध ुएँ का पर्वत प्रतीत हो रहा था, हैनी और दोरा सुबह शाम यहूदी प्रार्थनाएँ करतीं, फिर एक दूसरे से पूछतीं यदि इंग्लैंड पराजित हो गया तो हमारा क्या होगा? बर्तानिया के कैदी बर्तानिया की कुशलता मांगते। इंग्लैंड की पराजय का अर्थ यातना केन्द्र . .. यातना केन्द्र का अर्थ गैस चैंबरों में व्यापक मृत्यु।

हैनी ने समय बिताने हेतु डायरी लिखना शुरू किया, लिखा ***दोरा काफ्का है... तो सब कुछ है।***

दोरा का निर्णय था कि रूस और इंग्लैंड में व्यतीत की गई अवधि के बारे कुछ नहीं लिखेगी, कुछ नहीं बतायेगी। हैनी लिखती है ***काफ़्का की मृत्यु हुए 16 वर्ष हो गए हैं, ये उसकी बातें ऐसे करती है जैसे वह जीवित हो, जैसे वह सोचता***

था इंसान ऐसा होना चाहिए, ये वैसी बनना चाहती है, जो सही है, पवित्र है, जो रूहानी है, उसे प्रेम करो, प्रेम और मृत्यु एक ही वस्तु के दो नाम हैं।

इस टापू पर आलीशान होटल थे। जिन कैदियों के पास पैसा था, उन्हें सब कुछ मिल जाता। एक होटल में दोरा ने कुक की नौकरी कर ली और उन पैसों से बेटी के लिए सब्जी, फल ले आती। बेटी अभी कमज़ोर थी। एक दिन उन्हें एक फिल्म ***द विज़ार्ड ऑफ ओज़*** दिखाई गई। सभी को पसंद आई। मेरीआना ने कहा नायिका इतनी सुन्दर है, परियों जैसी कि उसके द्वारा किए गए गलत काम भी गलत प्रतीत नहीं होते। एक दिन हैनी और मेरीआना ने इस फिल्म के संवादों को आधार बनाकर अभिनय किया, सभी को हँसाया, मेरीआना ने कहा हैनी आंटी, इस फिल्म की चुड़ैल की मृत्यु मुझे अच्छी नहीं लगी, हम ऐसा करते हैं इसका स्वभाव बदल देते हैं, यदि ये नेकी करेगी तो बच जाएगी, दोनों ने चुड़ैल का स्वभाव बदल कर उसे बचाया। मेरीआना ने चुड़ैल की भूमिका निभाई, नेकी करती इस छोटी चुड़ैल पर कैदियों ने फूलों की वर्षा कर दी। 6 वर्ष की लड़की संवेदना देखकर हैनी हैरान रह गई।

कैदी महिलाएँ जेल प्रबन्ध की आलोचना करतीं तो दोरा कहती आपको पता नहीं दुःख क्या होता है। सभी औरतें यहूदी नहीं थीं, कुछ जर्मन महिलाएँ नाज़ियों की हमदर्द थीं, नाज़ियों की विजय का समाचार सुनकर खुशी मनातीं। दोरा को अपने पति, सास, ससुर के बारे में कुछ पता नहीं था, काफ़्का की बहनें कैसी हैं, कहाँ हैं, पता नहीं, ससुर की 77 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई परन्तु ये समाचार दोरा को अभी नहीं मिला।

बर्तानिया को ये कैदी बहुत बड़ा भार प्रतीत होने लगे। कैनेडा ने कहा हम 12 हज़ार कैदी लेने के लिए तैयार हैं। जहाज़ 600 कैदियों को कैनेडा लेकर जा रहा था कि जर्मन तारपीडो ने भून दिया, सभी डूब गए। इस दुर्घटना ने सभी को दहला दिया।

दोरा ने कैदियों में कलाकार तलाश लिए। स्वयं नाटक का निर्देशन और अभिनय करती। हैनी की मधुर आवाज़ गूंजती। प्रत्येक शाम कोई न कोई मनोरंजनदायक अभिनय किया जाता। हैनी ने लिखा अब मैं सांस लेने लगी हूँ, अब मेरा मन फिर से धड़कने लगा है। 3 जुलाई काफ़्का का जन्मदिन था। दोरा ने कहा आज जीवित होता तो 57 वर्ष का होता। आओ आज हम उसका जन्मदिन वैसे ही मनाए जैसे वो मनाता था, नाटक खेलें, कविताएँ सुने। शबेअर का ***लाईलक टाईम*** तैयार करवाया गया, दोरा ने सीग्गल का गीत गाया, मेरीआना ने जर्मन गीत सुनाया जो माँ से बिछुड़ी

बेटी गाती है। श्रोताजन वाह वाह करने लगे। प्रत्येक की आँखे भर आईं। हैनी का कथन है जब यिद्दिश यहूदी गीत गाती है, संवाद बोलती है, उस समय दोरा अत्यधि ाक सुन्दर प्रतीत होती है, वह वास्तव में बता रही होती है, यहूदी संस्कृति खामोश नहीं हुई, यहूदी मरे नहीं। वह हमें उत्साहित कर देती है। उसे गेटे का गीत ***चरखा कातती ग्रैचन*** याद था, मुझे फ्रांज शबेअर का ये गीत सुनाया, फिर मुझे कहा पहले लिखो, फिर पढ़ो, इसके बाद गाओ, मैंने ऐसा ही किया तो पता चला, युवा लड़की के हृदय के भाव कैसे प्रकट होते हैं। यही दोरा ने बताना था।

अस्सी दिनों में पाँच देश पराजित हुए। अमेरिका खामोश बैठा था, युद्ध से दूर रहने का निर्णय था, परन्तु अब इंग्लैंड का नम्बर था। जून में राष्ट्रपति रूज़वेल्ट का बयान आया आवश्यकता पड़ने पर इंग्लैंड को उधार हथियार दूंगा।

इंग्लैंड पर जुलाई के मध्य में आक्रमण शुरू हो गए। अगस्त में धमाके देश के भीतर पहुँच गए। प्रतिदिन 1500 बंबर और फाईटर काली घटा की तरह छा जाते। ये वो दिन था जब लंदन जैसा आधुनिक सभ्यता वाला देश उजाड़ कब्रिस्तान बन गया था। इंग्लैंड के सभी बड़े शहरों में तबाही हुई। ये अफवाह आम थी कि जर्मन सेना इस टापू पर अब आई अब आई। हैनी और मेरीआना कमज़ोर हो गईं, एक महीने में एक लिफाफा मिलता, चार लाईनों की चिट्ठी भेजी जा सकती थी, दोरा का कोई नहीं था, इसलिए वह अपना लिफाला हैनी को दे देती ताकि वह दो पत्र लिख सके। जनवरी 1914 को हैनी की रिहाई के आर्डर आ गए। एक कमेटी बनी जो कैदियों से पूछती थी वह युद्ध में क्या सेवा कर सकती हैं, जो काम की होती, उसे रिहा कर उससे काम लिया जाता, बी श्रेणी को सी श्रेणी में बदल दिया जाता। फरवरी में कुल दस हज़ार रिफ्यूज़ी रिहा कर दिए गए, हैनी का पति पाल भी। मार्च में हैनी ने दोरा को पत्र लिखा, उपहार भेजे, दोरा सी श्रेणी में आ गई परन्तु अभी रिहाई के आर्डर नहीं आए थे। जब रिहा होगी, कहाँ जाएगी पता नहीं।

रिहाई हुई, डोर्थी नामक लड़की जो वाईटहैड के निर्देशन में पीएच.डी. कर रही थी, को दोरा के बारे में पता चला। उसने दोरा को ढूंढ लिया। अपने कमरे में ले आई, एक कमरा, एक छोटी रसोई। एक लोहे का मेज़। जब हवाई आक्रमण का सायरन गूंजता तीनों मेज़ के नीचे छिप जातीं। बचाव का यही उपाय बताया गया था। डोर्थी लिखती है मेरीआना हमेशा भयभीत रहती, जब कोई आता, माँ के पीछे छिप जाती, एक तरफ से आने वाले को देखती रहती।

एक दिन डोर्थी, मेरीआना को लम्बी सैर के लिए ले गई। चलते चलते बच्ची ने कहा आज मेरे पहले पिता का जन्मदिन है। डोर्थी समझ गई। दोनों ने

जंगली फूल चुने, एक स्थान पर गोल दायरे में रखकर माथा टेका, इस तरह काफ़्का का जन्मदिन मनाया।

दोरा लंदन में स्टैनसल से मिली, वही कवि जो उसे रूस की गाड़ी पर चढ़ाने आया था, वह एक समाचारपत्र निकाल रहा था। उसने दोरा को बताया मेरे लिए केवल दो व्यक्ति हैं साहित्य में, काफ़्का और फलाबेअर। मैं किसी अन्य को नहीं जानता। मेरे लिए केवल एक भाषा ही जीवित है, वह है यिद्दिश। शनिवार को दोनों यहूदी मन्दिर में मिलते। दोरा हमेशा कुछ न कुछ सुनाती, श्रोता उसकी आवाज़, उसके एक एक अक्षर, अर्थ को पीने के लिए उत्सुक खड़े होते।

दोरा ने अनेक काम किए। उसने दर्ज़ी की दुकान खोलकर कर्मचारी रखे। दुकान बहुत चली। पैसा कमाकर होटल खोला, बहुत चला, वह भी किसी को बेच दिया, कारण पूछने पर कहा मैं इतने पैसे कहाँ संभालती? स्वयं लंदन में रहती, काम करती, बेटी को दूर स्कूल में दाखिल करवा दिया जहाँ हवाई आक्रमण का खतरा नहीं था। 8 मई, 1945 को युद्ध समाप्त हुआ तो दोरा ने रिश्तेदारों को पत्र लिखकर पूछा ठीक हो? कौन कौन बचा? किसी का उत्तर नहीं आया, वह डर गई, मैक्सब्रोद को तालवीव तार भेजी, उत्तर आ गया, शुक्र है।

दोरा को यिद्दी भाषा के यहूदी नाटक देखने के लिए आमंत्रित किया गया। वह गई। उसे रिविऊ लिखने के लिए कहा गया, इंकार कर दिया; लिखा ***यहाँ किसी को ये प्यारी भाषा नहीं आती, मेहनत करके संवादों को याद किया है। यहूदी रूह लुप्त है। मैं बताऊँगी यिद्दिश थिएटर क्या होता है। 1946 में डायना हैलपरन के लंदन में किए गए यहूदी नाटकों के अभिनय को देखकर दोरा ने कहा यही है वास्तविक कला, वास्तविक रूह, ये जीवित रहेगी। ताज़ी हवा की सुगन्ध आई। ... शेक्सपीयर का 'मरचैंट ऑफ वीनिस' नाटक रंगमंच पर देखा। खून पी रहे यहूदी शाईलाक को देखा। मुझे लगा मेरे वस्त्रों में किसी ने आग लगा दी है। जैसे मुझे ठग लिया गया हो, अपमानित हुई। शेक्सपीयर जैसा महान् शायर हमारी कमर में इतना भयंकर घूंसा मार गया कि पसलियाँ टूट गईं। इस नाटक से आनन्द अनुभव करते गैर यहूदियों से मुझे ईर्ष्या होने लगी। चाकू, घाव, बकवास, अपमान ... सब यहूदियों के विरुद्ध है, ये है कला कला के लिए, बेशक हमें यूरोपीय कहो या हम यूरोप में घुल मिल गए हैं परन्तु ये हमारा कल्चर नहीं। यहूदी आत्मा को सींचने वाली खुराक कल्चर है, कला नहीं। जो कला प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है, जितने चाहे रंग भर दो, वह कला नहीं होती। अधिक मांग नहीं है मेरी, मेरा कहना है, इंसान, इंसान तो बने कम से कम। हम***

यहूदियों का ईर्ष्यालू, क्रोधित ईश्वर इस प्रकार का कलाकार नहीं। मैंने अनगिनत बार मंच पर शाईलाक को देखा है, जितनी चाहे अभिनय की प्रशंसा करते जाओ, हम बतौर यहूदी इस नाटक को रद्द करते हैं क्योंकि इसके रचयिता एवं व्याख्याकारों ने इतनी नफ़रत, डकैती और हिंसा की शान दिखा कर कला को अपवित्र, दागी कर दिया है।

मीज़ल ने इस नाटक का यिद्दिश भाषा में अनुवाद करके इसका मंचन किया, दोरा को दिखाकर टिप्पणी लिखने के लिए कहा। दोरा ने लिखा मेरे पास इंजील का वाक्य है ***अभी हम निराश नहीं हुए। एक तरफ शेक्सपीयर है, उसका शाईलाक, दूसरी तरफ ये हमारा यिद्दिश थिएटर है, मेरा मन खुशी से झूम उठा, नाचने लगा। ये है हमारी भाषा, हमारा कल्चर, श्रेष्ठ कला। मीज़ल मित्र, तेरी उपमा हेतु मेरे पास शब्द नहीं हैं। वही शेक्सपीयर ... वही शाईलाक...। शाबाश मीज़ल शाबाश। तेरी भाषा, तेरी कला, तेरा यिद्दिश थिएटर कायम रहेंगे। मेरी इच्छा है जहाँ 'मरचैंट ऑफ वीनिस' का अभिनय हो, शाईलाक का अभिनय ऐसा व्यक्ति करे जो जन्म से यहूदी हो, तभी न्याय होगा, तभी कला विजयी होगी, किन्तु हमारे नए छोटे कलाकार जब चमकने लगते हैं तो फिल्मी संस्थाएँ उन्हें खरीद लेती हैं, तब वे अमेरिका चले जाते हैं। हमारे बच्चे हमसे छिन रहे हैं। तमारा सोलोमोव चला गया, फेला, शलोमो, कोहिन, सभी गए। अब यहूदी रंगमंच पर कितने शलोमो, कितने कोहिन हैं?***

दोरा ने जनवरी 1947 में अपने दो भाइयों और एक बहन को ढूंढ लिया, सास भी उसे मिल गई। उसके 11 भाई-बहनों में से केवल तीन बचे थे, बाकी सभी मारे गए। पचास वर्षीय भाई दाऊद दायमन्त का सब कुछ खत्म हो चुका था ... ईश्वर भी... उसे ईश्वर पर भी विश्वास नहीं रहा। नाज़ियों ने सब छीन लिया। 24 वर्षीय छोटी बहन सारा जीवित थी क्योंकि उसका ईश्वर पर विश्वास अभी कायम था। जब युद्ध समाप्ति की घोषणा हुई, यातना केन्द्रों में 80 लाख लोग, बेघर, देश निर्वासित थे। इन्हें आबाद करना था। सारा, रूसी कैम्प से रिहा होकर अपने देश पोलैंड जाना चाहती थी। रिहाई के समय एक फौजी उसे जबरदस्ती घसीट कर एक तरफ ले गया, कहा मैंने तुम्हें स्वतन्त्र किया है, इसके बदले में तू भी मुझे उपहार दे, लड़की चिल्लाई, फिर फौजी के चेहरे पर घूंसा मारा। फौजी ने उसे ठोकरे मारी, लेकिन छेड़खानी नहीं की। बैदज़िन पहुँच कर सारा ने अपने घर के दरवाज़े पर दस्तक दी, अजीब आवाज़ें सुनाई दीं, यहाँ तो पोलैंड के निवासी रह रहे थे, उन्होंने सारा को भीतर आने की आज्ञा नहीं दी, उसकी आँखों के सामने फटाक से दरवाज़ा बंद कर दिया

गया, बेहोश हो गई। छह वर्ष तक यातना केन्द्र में इस उम्मीद से जीवित रही कि रिहा होकर अपने घर जाएगी, परिवार से मिलेगी। इतनी मुसीबतों में भी उसने बहनों, भानजों, भानजियों की तस्वीरें संभाल कर रखी हुई थीं, इनमें दोरा और मेरीआना भी थीं। वह शहर की सीमा की तरफ गई, उसे बताया गया कि जो लोग जीवित हैं उनकी सूची वहाँ दीवार पर लगा रखी है। उसने सूची पढ़ी। सूची में उसका अपना नाम था, केवल सारा, बाकी सब खत्म। ये तो शुक्र हुआ कि सारा बच गई। कैम्पों में से जीवित बचे यहूदी लोग अपने घरों में पहुँचे, कब्ज़ा करने वाले पोलिश लोगों ने मार दिए। नाज़ी चले गए, यहूदियों के प्रति नफ़रत खत्म नहीं हुई। ढाई लाख यहूदी रिफ़ूजी कैम्पों में रहने के लिए मज़बूर हो गए।

अमेरिका के राष्ट्रपति ने पैनसिलवेनिया यूनिवर्सिटी के कानून विषय के प्रोफैसर हैरीसन को कैम्पों की स्थिति के निरीक्षण हेतु भेजा। उसने बताया ***नाज़ियों के कैम्पों से इतना अन्तर है कि अब लोगों को गोली नहीं मारी जाती। अन्य सब कुछ वैसा ही है। यहूदी कहते हैं हमें फलस्तीन भेजो। मरना है तो पूर्वजों के देश में ही मरें। एक लाख परमिट तुरंत चाहिएँ। उजाड़ रेगिस्तान में रहने के इच्छुक हैं।***

सारी दुनिया यहूदियों की दुश्मन। चींटियों की तरह वे तलावीव की तरफ सरकने लगे। मध्य सागर किनारे, रेगिस्तान में एक शहर आबाद होने लगा। अंग्रेजों का विचार था कि मुसलमान इन्हें दुत्कारेंगे नहीं क्योंकि एक ही सामी (Semitic) पृष्ठभूमि है।

फलस्तीन के मुसलमानों ने इन्हें नम्बर एक शत्रु के रूप में माना। फलस्तीन के पूर्व में जार्डन दरिया किनारे इनको अलग आबाद करके नगर का नाम ट्रांस-जार्डन रखा। विजयी बर्तानिया के समक्ष इन लोगों ने मिन्नतें कीं कि ये हमारा पुश्तैनी स्थान है, हमें यहाँ रहने की आज्ञा दी जाए। बर्तानिया ने वाईट पेपर जारी किया जिसमें वायदा किया कि पाँच वर्ष के समय दौरान 75 हज़ार यहूदियों को इज़रायल जाने की आज्ञा दी जाएगी। यहूदियों के युवा नेता दाऊद-बिन-गुरीआं ने पहले विश्व युद्ध में यहूदी तुर्कों को अंग्रेज़ों की सहायता हेतु मनाया था। दाऊद ने घोषणा की ***जब हमने हिटलर के विरुद्ध युद्ध किया, मरे, उस समय हमारे पास अंग्रेज़ों द्वारा लिखा वाईट पेपर नहीं था। अब हिटलर नहीं, अब हम इस वाईट पेपर के विरुद्ध युद्ध करेंगे, मरेंगे। हम सदियों से उजड़े घूम रहे हैं, मर रहे हैं। साठ लाख लोगों की मौत बहुत है। संसार ने घोषणा कर दी है कि युद्ध बंद***

हो गया है। हम बचे हुए यहूदी, तिरस्कृत व्यक्ति, संसार के विरुद्ध युद्ध करेंगे। हमने युद्ध-बंदी की घोषणा नहीं की।

1947 से फलस्तीन, मुसलमानों और यहूदियों की रणभूमि बनता रहा, अंग्रेज़ों ने अरबी लोगों को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया। यहूदियों ने अपने बचाव हेतु स्वयं एक सेना बना ली। यहूदी लोग अरबी निवासियों से बंजर ज़मीन खरीदने लगे। अंग्रेज़ों ने इसका भी विरोध किया।

दोरा को जब पता चला कि सारा जीवित है, उसके पति का नाम अब्राहम है और उसके घर बेटी का जन्म हुआ है, उसने लोशेन समाचार पत्र में विज्ञापन दिया ***बधाई हो मेरी बहन, नई ज़िन्दगी, नई रोशनी। तेरी वफादार और प्रिय बहन दोरा की तरफ से शुभ भविष्य की मंगलकामना।***

बेटी मेरीआना के समान दोरा को भी गुर्दे की तकलीफ हो गई। चेहरा और टांगे सूज गई, चारपाई से उठ नहीं सकती थी, तो भी सिलाई करके निर्वाह करती। उसने समाचार पढ़ा कि इंग्लैंड, यहूदियों के फलस्तीन में रहने का विरोधी है, बीस हज़ार से अधिक यहूदी एक वर्ष में नहीं जा सकते। अमेरिका ने एक लाख यहूदियों को शरण दी, अनाथों को प्रमुखता दी गई। सारा को फलस्तीन जाने के लिए दो वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

दोरा का स्वास्थ्य ठीक हुआ तो बेटी का तबीयत खराब हो गई। प्रत्येक सप्ताह लिऊटन जाकर इंजैक्शन लगवातीं। दशक पश्चात् ब्रोद ने काफ़का की जीवनी सम्बन्धी नवीन संस्करण प्रकाशित करवाया, नया अध्याय लिखा ***काफ़का के विषय में इतना कुछ लिखा गया है कि सारा पढ़ नहीं सकते। भ्रान्तिपूर्ण एवं स्वयं विरोधी रचनाएँ हैं, कोई काफ़का को जान नहीं सका, इर्द-गिर्द परिक्रमा कर रहे हैं, मैं उसका मित्र हूँ, मैं भी उसे इतना ही जानता हूँ कि वह व्यक्ति को स्वच्छ, सम्पूर्ण देखने का स्वप्न लेता है।***

काफ़का के विषय में बेकार लिखा जा रहा था। दोरा के मन में आया कि वह अपनी खामोशी तोड़ दे। होदिन उसके घर इंटरव्यू लेने गया। दोरा अंग्रेज़ी भाषा बोलने में निपुण थी, किन्तु उसका फैसला था कि इंटरव्यू जर्मन भाषा में होगी, उसी भाषा में जिसमें काफ़का लिखता था। दोरा का ख्याल था केवल जर्मन भाषा जानने वाला व्यक्ति उसके समीप पहुँच सकता है। होदिन ने लिखा दोरा ने पहली मुलाकात में कह दिया था ***मैं निष्पक्ष नहीं हूँ, हो ही नहीं सकती, उसकी मृत्यु को 20 वर्ष बीत चुके हैं। शब्द, तथ्य क्या करेंगे, महत्त्वपूर्ण है वह वातावरण,***

जिसकी सृजना काफ़्का ने की। मेरे भीतर का काफ़्का सत्य है, मोहब्बत उसके वर्णन में शामिल हुई होगी ही।

उसने पहली मुलाकात से लेकर अंतिम पल तक की बातें बताईं, यादों के झरने बहने लगे, जैसे कल की बातें हों।

मैं मछलियाँ काट रही थी। उसने कहा ये कोमल हाथ ... ये काम। वह आवाज़ आज तक मुझे सुनाई देती है। हमेशा खुशमिजाज। ऐसी आँखें, जैसे कहता हो जो मुझे पता है उसके बारे में आपको क्या पता। बच्चों जैसी छोटी छोटी शरारतें। वह सूली से बचने का इच्छुक था, उसे ये भी पता था सूली के बिना जीवन, जीवन नहीं होता, उसे पता था कि ब्रह्माण्ड की सुप्रीम कोर्ट से कोई मुक्त नहीं होता। मुझ पर उसका प्रभाव क्यों पड़ा पता नहीं। लोग कहते हैं पूर्व शांत है, खामोश है, पूर्व युद्ध नहीं चाहता। मुझे ये लगा जैसे रोशनी है ही पश्चिम में। यहाँ आकर मुझे ये पता चला पश्चिम बेचैन है। यहाँ कुछ गड़बड़ है। पूर्व के लोग अधिक बात नहीं करते। काफ़्का में मुझे पूरा पश्चिम मिला। मुझे सीखाने की बजाय वह मुझसे सीखने लगा, उसे लगा, दोरा सम्पूर्ण पूर्व है। उसने मुझसे धर्म सीखा। एक उम्मीद बनकर मैं उससे मिली। प्रत्येक रचना सबसे पहले मुझे सुनाता। कभी कहता मेरी रचनाएँ प्रेत हैं। मैं इनसे बचना चाहता हूँ। आग लगा दो दोरा, मुझे मुक्त करो। मुक्त होकर उसने क्या, कैसा लिखना था, क्या पता, वह मुक्त हुआ ही नहीं। साहित्य रचना के अतिरिक्त उसे प्रत्येक वस्तु संदेहप्रद प्रतीत होती। ब्रह्माण्ड के टुकड़े जोड़ने का अभिलाषी था, किसी एक को देखने के लिए उसे पता था पूर्व ब्रह्माण्ड की एकता को पहचानता है। जीवित रहने के लिए रूहानी ताकत चाहिए, बिना किसी समझौते के। पश्चिम इससे वंचित है।

होदिन को इंटरव्यू के लिए प्रश्न करने की आवश्यकता नहीं हुई। चल पड़ती तो रुकती नहीं थी, शीघ्रता से घंटे व्यतीत होते जाते। दोरा ने होदिन को वो कहानी सुनाई जो उसने काफ़्का से सुनी थी ***खान मज़दूर अपनी प्रेमिका के साथ खान की तरफ गया, पैर फिसला, गहरे अंधेरे में चला गया, कभी वापस नहीं आया, लड़की उसकी याद में बूढ़ी हो गई परन्तु विवाह नहीं करवाया, प्रतीक्षा करती रही, आएगा। एक दिन उसके पास लाश पहुँची, खान की गैसों के कारण लाश वैसी की वैसी थी जैसी उस दिन, जिस दिन बिछुड़े थे। विवाह और श्मशान घाट एक हो गए।***

जब मैं उसकी पुस्तक पढ़ती हूँ, मुझे उसकी वही आवाज़ सुनाई देती है जो वह मुझे सुनाता था, शुरू शुरू में मुझे जर्मन कम आती थी, ये कुछ अधिक नवीन भाषा थी। काफ़का को इस भाषा का बहुत ज्ञान था, किन्तु वह पुरातन की तलाश करता रहा, उसके भीतर पुरातनता छिप कर बैठी थी। वह किसी विशेष युग की प्रतिनिधिता नहीं करता, मानव की होनी का प्रतिनिधि है। उसका यथार्थ दैनिक घटनाएँ नहीं, जन्म लेने वाले उस अनन्त पल का प्रतिनिधि है जो कुछ समय के लिए पकड़ में आया और बीत गया।

1948 में काफ़का की भानजी अपने पति सहित दोरा से मिलने आई। सारे परिवारों में केवल वही बची थी एक। ओटला बच सकती थी क्योंकि उसका पति आर्य था। नाज़ी, आर्यों को छोड़ देते थे बेशक उनके पति, पत्नियाँ यहूदी हों। मरने के लिए ओटला ने अपने पति से तलाक लिया, फिर स्वयं नाज़ियों के पास जाकर कहा मैं यहूदी हूँ। मुझे मारो। अन्य लोगों सहित उसे गैस चैम्बर में मारा गया। काफ़का की बहन, काफ़का के स्वप्न के समान जीवित रहने और मरने की इच्छुक रही। लाखों यहूदी मर रहे हैं और मैं इस कारण बच जाऊँ कि मेरा पति आर्य है। इस विवाह और ऐसे जीवन को धिक्कार है। वह पिता के विरुद्ध, काफ़का का पक्ष लेती। काफ़का कहता तू बहुत बहादुर लड़की है। मैं डर जाता हूँ, तुम नहीं डरती। ओटला ने अपनी बहादुरी की इज्ज़त कायम रखी।

काफ़का की भानजी मेरीआना स्टीनर पहली बार 1990 में दोरा के बारे में बोली, कहा कवि मूर ने मुझे बताया दोरा लंदन में रहती है। बीमार है, तंगी तुर्शी में है। उसकी एक बेटी है, उसका नाम भी मेरीआना है। वर्ष 1948 में ये लड़की लंदन अंग्रेज़ी के प्रकाशक सैक्कर एण्ड वार्बर से मिली, कहा मुझे पता है इंग्लैंड में लेखकों को रॉयलटी दी जाती है परन्तु यहाँ दोरा नामक स्त्री गरीबी भोग रही है। आपको उसके घर का पता है? प्रकाशक का पत्र कुछ दिनों पश्चात् दोरा का पता लेकर आ गया। अपने एक परिचित प्रापटी डीलर के पास मैंने घर लेने हेतु जिधर जाना था, उसी तरफ का पता था ये। एक सहेली को साथ लेकर मैं डीलर से मिलने गई, अभी हम बैठी ही थीं कि एक महिला आती दिखाई दी। मैंने अपनी सहेली से कहा वह दोरा आ रही है। वह हँसकर कहने लगी जब से तुझे ये कार्ड मिला है, प्रत्येक महिला तुझे दोरा दिखाई देती है।

दोरा डीलर के पास आई, कहा मुझे एक कमरा किराये पर चाहिए। उस समय मैं 11 वर्ष की थी जब 1924 में दोरा को देखा था। अभी मैं डीलर से कार्ड पर लिखे पते के बारे में पूछना ही चाहती थी कि दोरा स्वयं ही आ गई। धरती और

आकाश में बहुत अन्तर है, मेरा विश्वास है। इस प्रकार मिलने के अनेक अवसर मेरे जीवन में आए। इस तरह का मिलाप मुझे बहुत अच्छा लगता है। ये मिलाप मुझे भी तो पसंद करते हैं तभी तो आते हैं। मैंने पूछा आप दोरा हो? उसने कहाहाँ। मैंने कहा मैं मेरीआना हूँ। उसे समझ न आई। फिर मैंने कहा वल्ली की बेटी हूँ। उसे फिर भी पता नहीं चला। तब मैंने कहा काफ़्का की भानजी, उसकी बहन वल्ली की बेटी। वह समझ गई। कांपने लगी। तभी आँसू आ गए। कमरे में, पाँच छह लोगों की उपस्थिति में जब हम मिलीं, हमें यकीन नहीं आया, हमें लगा जैसे कोई स्वप्न हो।

15 मई 1948 के पवित्र दिन नया ध्वज आकाश में लहराया, सफेद रंग, दाऊद का नीला तारा बिल्कुल मध्य में। दोरा सहित लाखों यहूदियों को प्रसन्नता हुई। इज़रायल मिल गया। लाखों अरब उदास हुए। नए युद्ध का प्रारम्भ। यू.एन. ओ. ने दस्तावेज पास करके फलस्तीन को दो भागों में बांट दिया। एक अरब स्टेट, दूसरी यहूदी स्टेट। जार्डन दरिया ने दोनों देशों को अलग कर दिया। येरूशलम को सांझा स्थान बना दिया गया, जैसे रोम।

अरब निवासियों ने इस विभाजन को स्वीकार नहीं किया। मिस्र, लैबनान, ईराक, जार्डन और सीरिया ने एक साथ आक्रमण कर दिया, तालावीव की तरफ से मिस्र ने गलीली पर, सीरिया ने नज़ारथ पर, लैबनान और जार्डन ने येरूशलम पर आक्रमण किया। जन्म लेते ही ये बच्चा चारों तरफ से घिर गया। यहूदी मरते रहे और मरने के लिए बाहर से वहाँ पहुँचते भी रहे। सारा अपने पति और बेटी सहित अवीव पहुँची। दोरा को ये समाचार मिलते रहे। अनेक बार उसका मन वहाँ जाने को करता। देश को स्वतन्त्र हुए एक वर्ष बीत गया था, परिवार के सदस्य वहाँ रहते थे, अब सफ़र के लिए पैसे नहीं। बेटी के ईलाज में सारा पैसा खर्च हो जाता।

1947 में रूस से सुलेमान मिशोल लंदन आया, वही सुलेमान, जिसको दोरा ने रूस में किंग लीअर का अभिनय करते देखा था, उसने बताया कि जर्मन ने रूस का जो पूर्वीय यूरोप छीना था वहाँ नाज़ी, पुरानी इंजील के पृष्ठ धरती पर फेंककर उनपर नृत्य करते हैं। ये बात बताते समय बूढ़ा अभिनेता कांपने लगा। दोरा ने कहा बाईबल का वाक्य है भले बख्शे जाएँ। दूसरा वाक्य है बुरों को न बख्शा जाए। सुलेमान पहला वाक्य ईश्वर ने तुम्हारे लिए भेजा है। तुम अपने लोगों को कितना प्रेम करते हो। मेरे लिए तुम कुदरत के कानून की तस्वीर हो। गर्मियों में वृक्ष शाखाओं को पत्ते, फूल, फल देते हैं। सर्दियों में आग लग जाने पर स्वयं भी बचने

का इच्छुक नहीं होता। तेरे साथ धोखा नहीं होगा क्योंकि सुलेमान तुमने संसार को धोखा नहीं दिया।

जनवरी 1948 में समाचार छपा सुलेमान मिशोल की मृत्यु कार दुर्घटना में हुई। स्टालिन ने उसका कत्ल करवाया। यहूदियों को मारना स्टालिन के ऐजंडे में भी आ गया था। दोरा ने श्रद्धांजलि लिखकर समाचार पत्रों को भेजी, शीर्षक था सुलेमान मिशोलएक यहूदी। स्वयं से पूछती मैं यहूदी हूँ या नहीं? कहीं यूरोप ने मुझे निगल तो नहीं लिया? यदि निगलने से बच गई हूँ तो फिर इज़रायल क्यों नहीं जाती?

काफ़्का की भानजी प्रत्येक सप्ताह अपनी कार में दोरा को अस्पताल में उसकी बेटी से मिलाने ले जाती। बिस्तर पर लेटे लेटे 15 वर्ष की हो गई। जवानी आई परन्तु खामोश, बेआवाज़ निकल गई।

यहूदियों ने घोषणा की इज़रायल में सभी यहूदी, हिब्रू भाषा बोलेंगे, पैगम्बरों की भाषा। दोरा ने आह भरते हुए कहा परन्तु यिद्दिश? क्या इसे गंवारों की भाषा कहा जाएगा? हमारा कल्चर कैसे बचेगा? जब अवसर मिलता, यहूदियों के समूह में यिद्दिश भाषा के गीत गाती, मंच पर अभिनय करती। कहती हिब्रू सम्पूर्ण सत्य है, मैं मानती हूँ, यिद्दिश छोटा सा सत्य, सत्य का छोटा सा भाग भी क्यों मरे?

काफ़्का की भानजी एक दिन पैसे देने आई, कहा ये काफ़्का की सम्पत्ति का भाग है। दोरा ने इंकार नहीं किया। एक तो मेरीआना के लिए ज़रूरत थी, दूसरे इज़रायल जाने की इच्छा थी। इज़रायल में रह रहा दोरा का भाई दाऊद भी सहायता करनी चाहता था। इज़रायल रूस का राजदूत नमीर, दाऊद का मित्र था।

दाऊद ने नमीर को इस बात के लिए सहमत कर लिया कि दोरा को सरकारी निमंत्रण देकर काफ़्का पर भाषण करवाया जाए। उस समय तक काफ़्का साहित्य का हिब्रू भाषा में अनुवाद लोगों तक पहुँच चुका था। अक्तबूर में जाकर दिसम्बर में वापसी की योजना बनाई गई।

दोरा इज़रायल गई। पहली बार अहसास हुआ, जीवित है और मैक्सब्रोद ने बड़े थिएटर में उसके भाषण का प्रबन्ध किया था। भाषण सुनने के लिए लोग दूर दूर से आए। यूरोप ने काफ़्का अधिक पसंद नहीं किया। इज़रायल ने किया, यहूदियों ने कहा वो हमारा बुज़ुर्ग था। हमें जगाने के लिए आया था।

भाई दाऊद बहुत प्रेमपूर्वक उससे मिला, कहापिता ने तुम्हारे साथ अच्छा नहीं किया, हम भी पिता की मानते रहे। बहन सारा, यहाँ तालावीव में रह रही है, तुम्हें पता है? शीघ्र ही मिलाऊँगा।

दोनों बहनें मिलीं। दोरा ने बताया जेल कैम्प में मेरे पास तेरी छोटी आयु की तस्वीरें थीं, इस तरह तू मेरे लिए जीवित रही। हम फिर से मिल गई हैं। अब बिछुड़ना नहीं। बहुत हो चुका।

जब सारा 77 वर्ष की थी 1999 में, बताया बहन ये कहकर गई थी कि मेरीआना को लेकर वापस आऊँगी। उसने बताया था काफ़्का की इच्छा संसार को अपना एक बच्चा देने की थी। ये सौगात न दे सका।

भाई दाऊद का कारोबार अच्छा चला। उसने बतायादोरा, सभी मुझसे यही कहते थे मैं घर क्यों नहीं खरीद लेता। मैं कहतापहले कारोबार खरीदूंगा। घर की दीवारें खाने से भूख तो नहीं मिटेगी? ये देखो, अब कितना बड़ा घर खरीदा है। एक नाज़ी अफ़सर का घर था ये।

दोरा के भतीजे ज़ेलिग ने बताया जब मैं छोटा था तभी पापा ने मुझे अकार्डीयन बजानी सिखा दी, कहता था ये लड़कियाँ पकड़ने के काम आएगी।

भाई दाऊद के पास बहुत दिन रहने के पश्चात् वह सारा के पास चली गई। भानजी बताती है जब मौसी आई तो हमें लगा जैसे हम अनाथों को परिवार मिल गया हो। बाद में जब 1999 में मौसी की कब्र पर आई तो भानजी ने बहुत बातें बताईं ... कि कितनी सुन्दर लोरियाँ, घोड़ियां सुनाती... अनेक कहानियाँ याद थी उन्हें ... हम साथ ही चिपके रहते। एक दूसरे का हाथ पकड़ कर मैक्सब्रोद के घर जा रही दोनों बहनों की तस्वीर स्पष्ट दिखाई दे रही है। दोरा ने ब्रोद को बताया कि अरदास के समय, सारा, युद्ध में मरे परिवार के सभी सदस्यों का नाम लेती है। सारा के पास एक महीना रही। भिन्न भिन्न स्थानों से निमंत्रण आते रहे, प्रत्येक स्थान पर गई।

वापसी का समय आ गया, दो सूटकेस और काफ़्का का ब्रश बहन के घर छोड़कर चली गई मेरीआना को लेकर आऊँगी, अंतिम सांस तक यहीं रहूँगी।

वापस लंदन पहुँचकर अस्पताल में बेटी मेरीआना से मिली। इस लड़की को दुनिया के बारे में कुछ पता नहीं था ... घर या अस्पताल, अन्य कुछ नहीं देखा। एक दिन बेटी से पूछा दस वर्ष हो गए तेरे पिता के बारे में कुछ पता नहीं चला। हम उसे मृत घोषित कर दें? - न मामा ... क्या पता जीवित हो। दोनों इस बात पर सहमत हो गईं। बेटी का आप्रेशन हुआ, ठीक हो गया। सम्भव है स्वस्थ हो जाए।

बेटी को ठीक करते करते स्वयं बीमार हो गई। माँ-बेटी आमने-सामने। डॉक्टर ने समाचार दिया कि तेरी ननद रूथ लास्क, अमेरिका से मिलने आ रही है। चिंतित हो गई। बारह वर्ष पश्चात् मिलने की खुशी होनी चाहिए थी, परन्तु बंदरगाह से उसे कौन लेकर आएगा? अस्पताल में मिलेंगे? कैसी सख्त होनी है। हैनी का सहारा लिया। स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ तो घर आ गईं। बुआ से मिलकर मेरीआना बहुत खुश हुई। बुआ को भी रूस गए परिवार के विषय में कुछ पता नहीं था।

पता चला कि जर्मन में काफ़्का साहित्य पुनः प्रकाशित होने जा रहा है। दोरा बहुत खुश हुई। ननद से कहा जर्मनी बच जाएगा। काफ़्का ने मानवता को मेज़ पर लिटाकर आप्रेशन किए थे। उसकी इच्छा थी मानव बचे। सब कुछ व्यर्थ, बीमार, काट काट कर फेंकता रहा। मार्थी, मेरे लिए इतना मक्खन मत भेजा करो, मैंने कौन सी घी की दुकान करनी है। खा नहीं सकती मैं। इसलिए अब बस। तेरे लिए सूट की सिलाई करूँगी। एक गर्मियों के लिए, एक सर्दियों के लिए।

मार्च 1952, दोरा ने अपना 54 वां जन्मदिन मनाया। आखरी जन्मदिन है, जानती थी, इस कारण वसीयत लिखने लगी। लिखा मेरी कब्र पराग में काफ़्का की कब्र के समीप हो। लिफ़ाफे पर लिखा मृत्यु के बाद खोलना। पत्र मैक्सब्रोद का पता लेकर चला गया। अगस्त 15 को मौत हो गई, मैडम स्टीमर ने बताया बेटी पंलग के पास बैठी थी। मैंने दोरा से कहा निश्चिन्त होकर विदा हो। बेटी का ध्यान मैं रखूंगी। दोरा ने कहा जो भी सम्भव हो वो करना। ये उसका अंतिम वाक्य था।

दफ़न करते समय पाँच लोग थे। तेज़ बर्फानी हवा चल रही थी। बारिश की बूंदें गोलियों के समान लग रहीं थीं। अचानक पत्रकार आ गए। उन्हें स्वयं ही पता चल गया था, समाचार देने वाला कोई नहीं था। कुछ पूछने की बजाए पत्रकार बहुत रोए, कहती थी मेरी मृत्यु के साथ यिद्दिश भाषा मरनी नहीं चाहिए।

अनेक मित्रों ने मेरीआना से कहा हमारे घर में रहो। नहीं मानी। मामा के कमरे में रहूंगी। कुछ पैसे इक्ट्ठे कर बैंक में जमा करवा दिए। एक अर्ज़ी बर्तानिया की नागरिकता लेने के लिए लिखी। सभी यही कहते थे बेशक काफ़्का की बेटी नहीं, थी बिल्कुल उस जैसी। स्वभाव, सूरत भी। माँ ने कहा था, हमने एक साथ इज़रायल जाना था, अब तुम अकेली जाना।

लुज्ज़ की सज़ा के पाँच वर्ष पूरे हो गए, फिर भी रिहा नहीं किया, कहा युद्ध की समाप्ति के बाद छोड़ेंगे। वर्ष 1946 में रिहा हुआ तो अंगहीन होकर। दायीं आँख की रोशनी 1943 में चली गई थी और बायीं आँख 30 प्रतिशत बची थी। ऐनक

लगाने से ही कुछ दिखाई देता था। रिहा तो हो गया परन्तु जाए कहाँ, जर्मनी में पत्र लिखता रहा कोई उत्तर नहीं। माँ बरटा लास्क ने अप्रैल 1946 से लेकर जून 1948 तक उसके बारे पत्र लिखे, किसी का उत्तर नहीं। आयु 67 वर्ष हो गई थी, बीमार रहती। मन्त्री को लिखा मैंने 24 वर्ष तक पार्टी की सेवा की, बायीं पक्षीय साहित्य की रचना की। कभी कोई गलत काम नहीं किया। मैं उससे मिलने साइबेरिया नहीं जा सकती, डेढ महीने का सर्दी का सफ़र मुझे मार देगा। कृपया उसे मेरे पास भेज दो। हम दोनों जर्मनी चले जाएँगे। माँ को जर्मनी जाने की आज्ञा मिल गई। लुज्ज़ को नहीं।

स्टालिन की मृत्यु के पश्चात् 1953 में वह रिहा हुआ। अंततः पूर्वी जर्मन (GDR) में माँ बेटे को जाने की आज्ञा मिल गई। शर्त थी जर्मनी से बाहर नहीं जाना। लुज्ज़ ने चिट्ठियाँ लिखीं कि मेरी पत्नी और बेटी इंग्लैंड में हैं, उन्हें ढूंढना है, आज्ञा दो, आज्ञा नहीं मिली। इतनी यातनाएँ झेलने के बाद भी माँ बेटे का कम्यूनिज़म और पार्टी पर से विश्वास खत्म नहीं हुआ था। इस अजीब विरोधाभास को जानने के लिए रूस के इतिहासकार इसहाक डिऊशर की रचनाएँ पढ़ो। उसने, ***ईश्वर जो हार गया,*** का जो रीविऊ ***साबक कम्यूनिस्टों के ईमान*** के नाम अधीन लिखा, वह पठनीय है।

एक पुराने समाचारपत्र में दोरा की श्रद्धांजलि प्रकाशित हुई। पढ़ने से लुज्ज़ को पता चला कि उसकी मृत्यु हो गई है, बेटी लंदन में है। अक्तूबर 1953 में पुलिस अधिकारी ने मेरीआना के दरवाज़े पर दस्तक दी, उसके पिता का पत्र। अनाथ मेरीआना को पिता मिल गया, दादी भी है। चाचा हरमन, चाची ऐलिस, भाई अरनस्ट, सभी हैं।

स्टीमर की निगरानी में मेरीआना स्वस्थ होने लगी। माँ की सखियाँ उसकी सखियाँ बन गईं। पुस्तकें पढ़ती रहती, बीस वर्ष की जलावतनी के पश्चात् जर्मनी में अपने बरबाद हो चुके जन्मस्थान पर पहुँची। बाल्यावस्था की तस्वीरें घर में रखी थीं। पिता गर्व से छोटी मेरीआना की तरफ देख रहा है, माँ देख रही है। 87 वर्ष की बरटा, पार्टी साहित्य लिख रही है, उसे सम्मानित किया जा रहा है और साथ ही बाल साहित्य की रचना भी कर रही है।

बुआ रूथ ने मेरीआना को अमेरिका आने का संदेश भेजा, 28 वर्षीय लड़की ने जाने का निर्णय किया। समुद्री जहाज़ द्वारा कैलीफोरनिया पहुँची। बुआ और फूफा घर ले गए। दो मास के लिए गई थी, चार मास वहाँ खुशी खुशी बिताकर वापस लंदन आ गई।

1973 में जब लुज्ज़ 70 वर्ष का हो गया तब कहीं लंदन जाकर अपनी बेटी से मिलने की आज्ञा मिली। अमेरिका रह रही बुआ को जब पता चला भाई लंदन जा रहा है उसने भी उसी दिन पहुँचने का निर्णय किया। सभी ने खुशी खुशी समय व्यतीत किया और वापस आ गए। वापसी के कुछ दिनों पश्चात् लुज्ज़ की मौत हो गई।

6 जून, 1977 मेरीआना 43 वर्ष की थी, वसीयत लिखी। माँ की कब्र पर पत्थर नहीं रखवा पाई। लिखा ऋण उतारने के पश्चात् जो रकम बचे, उससे माँ की कब्र बनवा देना। उसे लगता था कि नाज़ियों द्वारा छीने गए काफ़्का के पत्र मिल सकते हैं। सारा मौसी की बेटी तोवा अपने पति मोती के साथ उसे इज़रायल से मिलने आए। इज़रायल के लिए आमंत्रित किया। यात्रा खर्च के लिए पैसे देकर गए। मेरीआना ने विवाह नहीं करवाया था। 1980 में मानसिक रोग की शिकार होने लगी, उसे अजीब आवाज़ें सुनाई देतीं, दूसरे किसी को नहीं सुनाई देती थीं, पुलिस के पास शिकायत लिखवाई। अस्पताल में दाखिल रही। फिर एकान्तवासी हो गई, न किसी के पास जाती, न आने देती, दरवाज़ा ही नहीं खोलती थी। दवाईयाँ खाने से इंकार करते हुए कहा मैंने स्वस्थ नहीं होना। मैं मरना चाहती हूँ, 50 वर्ष की आयु तक मेरी मृत्यु हो जाएगी।

हैनी अपने पति के साथ उसके फ्लैट में गई, घण्टी बजाई, बहुत देर बाद भीतर का एक दरवाज़ा खुला, दूसरा जाली वाला बंद ही था। पीछे होकर कहने लगी मैंने किसी को भीतर नहीं आने देना। हैनी ने कहा तुम हमारे परिवार की सदस्य हो मेरीआना, देखो तुम्हारे लिए कितनी मिठाईयाँ और फल लेकर आए हैं। मेरी ने कहा मेरा कोई परिवार नहीं, मैंने कुछ नहीं लेना। जाओ। रोते हुए हैनी पैकटों सहित वापस कार में बैठ गई।

कुछ दिनों पश्चात् हैनी ने बहुत प्यारा पत्र भेजा। बिना लिफ़ाफा खोले वापस भेज दिया, लिफ़ाफे पर लिखा था मुझे पत्र न लिखा करो, नहीं रुके तो पुलिस पास शिकायत कर दूंगी।

काम कर नहीं सकती थी, पैसे खत्म हो गए। मकान के किराए सहित अन्य सभी ऋण 1000 पौंड से अधिक के थे। मकान मालिक ने कानूनी नोटिस भेज दिया। बिजली कट चुकी थी। पड़ोसियों ने पुलिस को सूचित किया कि कई दिनों से दरवाज़ा नहीं खुला। पुलिस ने दरवाज़ा खोला, तो फर्श पर गली-सड़ी लाश पड़ी थी।

कब्रिस्तान में बारह स्त्री-पुरुष दफ़न करने गए। पादरी ने अरदास की। हैनी ने डायरी में लिखा ***48 वर्षीय मेरीआना सैंकड़ों वर्षीय समझदारी की मालकिन थी, संन्यासी, एकान्तवासी। जब वह फर्श पर गिरी और मरी, उसने किस को आवाज़ दी होगी? आयु छोटी। दुःख बड़े।***

काफ़का और दोरा के गुम कागज़ों की तलाश चलती रही। यूरोप में स्थान स्थान पर सर्च कमेटियाँ बनाई गईं, जर्मनी से पाबन्दी युक्त साहित्य ढूंढने की आज्ञा हेतु पत्र लिखे गए। सान डीगो यूनिवर्सिटी अमेरिका ने भी इस सम्बन्धी शोध विभाग स्थापित करके जर्मनी पास पटीशन दायर कर दी। जो रचना आप इस समय पढ़ रहे हो, वह सान डीगो यूनिवर्सिटी की प्रोफैसर कैथी दायमन्त की शोध में से लिए गए नोटस पर आधारित है।

दोरा के बड़े भाई दाऊद के बेटे ज़वी का जन्म 1947 में हुआ, दो वर्ष का था जब 1949 में माता-पिता इज़रायल चले गए, वर्ष 1960 में जब पिता की मृत्यु हुई उस समय आयु 13 वर्ष थी। पिता से बुआ दोरा के बारे में कुछ नहीं सुना था। वर्ष 1996 में एक दिन समाचारपत्र में दोरा और काफ़का की प्रेम कहानी पढ़ी। दोरा के नाम के साथ दायमन्त लिखा था। ज़वी सोचने लगा, मैं भी दायमन्त हूँ, क्या पता दोरा नामक इस लड़की से मेरा कोई रिश्ता हो? क्या वह युद्ध में बच गई थी? फिर कहाँ गई? विवाह हुआ? उसके बच्चे हुए? कहाँ ढूंढूं?

इंटरनैट पर उसने काफ़का की साईट खोली। काफ़का के शोधार्थी नील बोखोव की मेल आईडी मिली, उसे पत्र के माध्यम से प्रश्न पूछे, अपने बारे में बताया। नील ने चार पृष्ठों की जानकारी भेजी तो पता चला कि लुज़्ज़ नामक व्यक्ति से 1926-1936 के बीच कभी दोरा ने विवाह करवाया था और उसकी बेटी का नाम मेरीआना था। ये भी पता चला कि 15 अगस्त 1952 में दोरा की मृत्यु हुई, कब्र लंदन में है। वह कब्र देखनी चाहता था। परन्तु डच्च शोधार्थी नील को पता नहीं था कब्र कहाँ है। ज़वी ने निर्णय किया, बुआ की कब्र ढूंढ कर रहेगा। अमेरिकन शोधार्थी कैथी दायमन्त के बारे में पता चला, ज़वी ने उसे पत्र लिखा। कैथी ने बताया मैं बारह वर्ष से दोरा पर कार्य कर रही हूँ, मुझे कब्र के बारे में पता है, अभी तक पत्थर नहीं रखा गया, कैथी ने बेटी की मृत्यु का समाचार भी दिया। दोनों ने निर्णय किया, 15 अगस्त 1999 को कब्रिस्तान जाकर पत्थर रखने की रस्म निभाएँगे, जिस तिथि को दोरा को दफ़न किया गया था। लास्क परिवार के बारे में पता चला। ज़वी जहाज़ द्वारा बरलिन पहुँच गया। लास्क परिवार के सदस्य उससे मिलकर बहुत खुश हुए। ज़वी ने अपना परिवार ढूंढ लेने की लम्बी कथा इज़रायल के सबसे बड़े समाचारपत्र

येदी अखरोनो में 20 मई 1999 को प्रकाशित करवाई। उसी दिन ज़वी को तोवा का फोन आया, ***मैं तेरी बुआ सारा की बेटी हूँ। मेरी माँ अभी जीवित है, तालावीव में है।*** जो पता बताया वह ज़वी के घर से दस मिनट की दूरी पर था। करामात, अचानक बुआ और मौसी के परिवार मिल गए।

बरलिन से लास्क परिवार लंदन पहुँचा, अर्नस्ट की विधवा दाईना, बुआ रूथ, पौत्री सभी। दोरा के मायके का परिवार, ज़वी, उसकी पत्नी शोशी और चार बच्चे, सारा, सारा की बेटी तोवा। सारा 77 वर्ष की थी और दोरा की ये 46 वीं बरसी थी। दोरा, काफ़्का, मिलेना के रिश्तेदारों के अतिरिक्त प्रशंसक, शोधार्थी, पाठक, आलोचक सभी इक्ट्ठे हुए। जर्मनी और इज़रायल के अतिरिक्त हालैंड और अमेरिका से आए। हैमस्टैड में, किंगज़ कॉलेज के हॉल में दोरा के श्रद्धांजलि समागम का प्रबन्ध किया गया। 94 वर्षीय मेजर बोदांसकी मंच पर आया, कहा यिद्दिश लेखक पेरेज़ की जो कहानी दोरा को सबसे अधिक पसंद थी, उसे अभिनय द्वारा मंच पर प्रस्तुत करूँगा। जब दोरा का अभिनय देखा था उस समय मैं जवान था। उपस्थित श्रोताओं में बहुत कम थे जिन्हें यिद्दिश आती थी, अभिनय इतना शानदार रहा कि हाव-भाव प्रत्येक बात समझा रहे थे। हॉल विस्मादी अवस्था में गुम हो गया।

कब्रिस्तान जाकर ज़वी ने यिद्दिश में और सारा ने तोराह में से प्राथनाएँ कीं। सारा ने वो पल याद किए जब दोरा लम्बी जुदाई के बाद इज़रायल आकर मिली थी ***मेरी एक ही जीवित बहन, मैं कितनी खुश थी तुमसे मिलकर। तुम तो कहती थी इज़रायल में मरेंगे, कभी नहीं बिछुड़ेंगे। फिर तुमने इतनी जल्दी क्यों की? केवल तुम थी वह निर्मल, निश्छल, पवित्र रूह जो उन्हें क्षमा कर सकी जिन्होंने तुम पर अत्याचार किए। तुम्हें शांति मिले, स्वर्ग की पवित्र रूहों में तेरा निवास हो।***

सुन्दर सफेद संगमरमर की स्लैब पर दोरा के साथ मेरीआना का नाम भी लिखा गया। काफ़्का की मृत्यु उपरान्त राबर्ट कलापस्टाक ने जो श्रद्धांजलि प्रकाशित करवाई थी उसमें दोरा का भी स्मरण था। उस श्रद्धांजलि में दोरा बारे जो पंक्ति लिखी, वो ये थी :

जिसने दोरा को जाना,
उसने प्यार को जाना।

कब्र की स्लैब पर यही शब्द लिखे गए। सलाम करके मुसाफिर अपने अपने देश में चले गए।

(काफ़्का जानता था कि काम कैसे करना है। जो उसने लिखा या किया, वह सम्पूर्ण है। जहाँ कहीं सर्वोत्तम देखो, श्रेष्ठ रचना देखो, वहाँ आपको काफ़्का दिखाई देगा। फलाबेअर और फ्रायड में दिखाई देता है। मैक्सब्रोद)

ईदी

9 जुलाई 1992 को रावलपिण्डी की तरफ जा रही यात्रियों की रेलगाड़ी घोटकी स्टेशन पर खड़ी मालगाड़ी से टकरा गई। मालगाड़ी फासफेट से भरी हुई थी। सैंकड़ों घायल हुए, सैंकड़ों मारे गये। इस दुर्घटना में सहायता करने के लिए ईदी को लेने हैलीकाप्टर आ गया। स्टाफ सहित वह हैलीकाप्टर की तरफ चल पड़ा। दिमाग में कोई विचार नहीं, टांगों में शक्ति नहीं, सब कुछ जैसे सुन्न हो। उसे लगा जैसे कोई मुर्दा नयी पीड़ा लेकर कब्र में से उठकर चल पड़ा हो। पायलट संदेश ले और दे रहा था। चलने से पहले नर्सों, डाक्टरों, दवाइयों, ऐम्बुलैंसों और कफ़नो का प्रबन्ध ा कर गाड़ियों का एक कारवाँ सड़क के रास्ते से/ज़रिए भेज दिया।

दो घंटे के पश्चात् पायलट ने ईदी से पूछा आपका कोई नाती अस्पताल में है, मौलाना, ईदी कांपने लगा हाँ है, क्यों? बताया उसकी मृत्यु हो गई है। हवाई स्टाफ ने ईदी के साथ मिलकर दुआ के लिए आकाश की तरफ हाथ फैलाये। पायलट ने पूछा वापिस चलें? ईदी ने कहानहीं, पहले ही देर हो चुकी है। काम बहुत है। मेरी पत्नी बिलकीस से कह दो कि दफना दे, मेरी प्रतीक्षा न करे। विवाह से पूर्व उसने अपनी पत्नी से कहा दिया था, मेरा समस्त वजूद तेरा है, परन्तु यदि कोई बड़ा दुःख देखूंगा तो सारा वजूद तुमसे वापिस ले लूंगा। ठीक है? उसने कहा ठीक है।

बेटी ने बिलाल को जन्म दिया तो ईदी को अनुभव हुआ नाती मेरे लिए संसार में आया है। देखो कितना काम है। मेरे साथ काम करेगा। जैसे बहुत देर से एक दूसरे को ढूंढ रहे हों और मिल जाएं। इकट्ठे ही नाश्ता करते। नाना अपनी बासी रोटी में से एक बुरकी देता तो नाती पूछता नाना क्या आप सच में गरीब हो? ईदी हँसते हुए कहता गरीब नहीं हूँ पुत्र, बासी रोटी इसलिए खाता हूँ ताकि मुझे गरीबी याद रहे।

ईद के दिन रौनक होती। बिलाल के लिए कपड़े और खिलौने आते। खुश होकर पैकट खोलते हुए कहता यह आज खाऊँगा, यह कल यह परसो। नाना कहता बिलाल तुम्हें पता है कुछ बच्चों के पास कपड़े होते ही नहीं? बिलाल हँसते हुए बाँह छुड़ाकर कपड़ों की अलमारी के पास जाकर कहता परन्तु मेरे पास तो हैं।

ईदी की निगरानी में मानसिक रोगी एक युवा लड़की नुरमाल ज़ेरे ईलाज थी। ठीक हो रही थी। बिलाल के साथ खेलती रहती। नहलाती, कपड़े पहनाती। एक सुबह बिना ठण्डा पानी मिलाए उबलते पानी की भरी बाल्टी बिलाल के ऊपर उडेल दी। चीखता हुआ बिलाल वहीं गिर गया। अस्पताल ले गये। मृत्यु का समाचार मिला।

दुर्घटना स्थल पर पहुँच कर ईदी कार्य का निरीक्षण करने लगा, काम बांटने लगा। लोगों ने ईदी को पहचान लिया उन्होंने मेरे बेटे को नहीं ढूंढा ईदी ... वह देखो मेरा पिता, तुरंत अस्पताल नहीं लेकर गये तो मर जायेंगे..., अल्लाह का शुक्र है ईदी आप आ गये। मेरे बच्चों को ढूंढो, कहाँ हैं वे? ... मेरे बच्चे मर गए हैं ईदी, उनकी माँ का बहुत खून बह गया है, वह मर रही है, बचाओ।

ईदी को याद आया, जले हुए शरीर से अस्पताल के बिस्तर पर लेटे नाती की आँखों में यही उम्मीद थी ... नाना है न। अब मुझे कौन मार सकता है? यही उम्मीद ईदी को देखते ही सैंकड़ों लोगों की आँखों में जाग गयी थी। एक युवक रोते हुए आया पिता तो मिल गया है, माँ कहाँ है? पिता की लाश मिलने के बाद भी वह माँ की लाश ढूंढ रहा था- कोई उस जैसी दिखाई नहीं देती ईदी।

काम में मग्न ईदी के सामने बिलाल आकर खड़ा हो जाता। कभी नाना, कभी नानी उसके साथ लुका-छिपी खेलते, पकड़े जाने के डर से दौड़ते, बिलाल संदूक में छिपता, कभी चारपाई के नीचे, पकड़े जाने पर खुशी से चिल्लाता। नानी अपने हाथों से एक एक बुरकी अलग अलग नाम लेकर खिलाती यह कुतब के लिए है ... यह कुबरा के लिए, अब यह फैसल के लिए है ... यह अलमास के लिए।

रेलवे स्टेशन पर टांगें, बाँहें, सिर, इधर-उधर बिखरे पड़े थे। चारों तरफ खून की दुर्गन्ध। लाऊड स्पीकर पर खून दान की अपील की जा रही थी। अस्पताल भर गये थे। अन्यों को मस्जिदों में भेजा जाने लगा। ईदी फाऊँडेशन की 75 ऐम्बुलैंसें घायलों एवं मृतकों को लेकर भिन्न भिन्न दिशाओं में दौड़ रही थीं।

इन भयंकर परिस्थितियों में चरित्रहीन व्यक्ति भी पहुँच गए थे। एक युवक ने शव को पहचाना, कागज़ पर हस्ताक्षर कर ऐम्बुलैंस द्वारा घर ले गया। परिवार ने शव लेने से इंकार कर दिया, कहा हमारे घर के किसी सदस्य की मृत्यु नहीं हुई। युवक भागकर कहीं छिप गया। सरकार से मुआवज़ा लेने हेतु नाटक किया था। ऐम्बुलैंस शव वापिस ले गई।

इस दुर्घटना में कोटली गाँव के एक परिवार के नौ सदस्यों की मृत्यु हो गई थी। इतने शव कौन लेकर जायेगा? इतने शवों को देखकर कितने पुरुष-स्त्रियाँ, बच्चे

रुदन करेंगे। ईदी ने कहा मैं जाऊँगा, मुझ पर चीखों का कोई असर नहीं होगा क्योंकि मैं बिलाल के लिए रोऊँगा, इन शवों की ओर मेरा ध्यान ही नहीं जाएगा। परन्तु सभी के नुकसान मिलकर एक बड़े नुकसान को जन्म देते हैं?

ईदी ने प्रार्थना करते हुए कहा ईश्वर, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। परन्तु जब दुःख देखता हूँ, तुम्हें भूलकर, दुःखी व्यक्ति से प्रेम करने लगता हूँ।

एक बुजुर्ग कांपता हुआ ईदी के पास आया ईदी, मेरा एक ही पुत्र था। और कोई नहीं है मेरा। मैं अकेला हूँ ईदी, बिल्कुल अकेला। किसी को मेरे दुःख का इल्म नहीं। ईदी ने कहा मुझे इल्म है भाई, मैं तुम्हारा दुःख जानता हूँ। आदिकाल से जानता हूँ।

दिन समाप्ति पर ईदी का काम खत्म हुआ। हाथों पैरों पर खून सूख कर जम गया था, मुश्किल से उतारा। खून से भरे कपड़े बदले। घर वापिस जाने के लिए हैलीकाप्टर में बैठ गया। सीट बैल्टें कस लीं। हैलीकाप्टर उड़ने लगा। मन में बिलाल आ रहा था जब मैं चौराहे पर मांगने के लिए बैठता, बिलाल खुश हो जाता। ये काम उसे सबसे अधिक प्रिय था। सिक्के गिनता रहता। कोई याचक मांगने आ जाता, ईदी कहता दे दो। कुछ पैसे इसे दे दो बिलाल। बिलाल पूछता नाना आपको इसकी कहानी सत्य लगती है? कहीं ये झूठ तो नहीं कह रहा?

- तो भी इसे कुछ पैसे दे ही दो बिलाल।"

एयरपोर्ट से ऐम्बुलैंस द्वारा कब्रिस्तान होकर घर पहुँचा। पति पत्नी एक दूसरे से जैसे छिपना चाह रहे थे। बैठ गये। छोटे छोटे जूते रखे थे। उनकी तरफ देखने लगे। छोटी छोटी कमीज़ों आदि में चेहरा छिपा कर बहुत रोये। बेटी कुबरा, कमज़ोर, बेजान खड़ी रही। न शरीर पर काबू, न शब्दों पर। ईदी ने कहा आज जो बात बिलाल के बारे में करनी है, कर लो बेटी। फिर कभी उसका नाम नहीं लेना हमने। ठीक? उसने कुछ नहीं कहा।

ईदी के पूर्वज सिंधी हिन्दु थे जो थोड़ी बहुत खेती करते थे। तीन सदियों पहले मुसलमान हो गए थे। इन्हें मोमीन कहते रहे परन्तु पता नहीं यह नाम कैसे विकृत होकर, मैमन हो गया। ईदी परिवार गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश में रहकर व्यापार करने लगा। गुजराती में ईदी का अर्थ आलसी होता है, परन्तु यह बहुत सी उद्यमी परिवार था। मुहम्मद अली जिनाह ने मैमनों की सहायता से बम्बई में हबीब बैंक खोला था। मैमन धनी व्यापारी घरानों से सम्बन्ध रखते थे जिनका मुकाबला केवल पारसी कर सकते थे, अन्य कोई नहीं। प्रशासनिक जिम्मेवारियाँ मैमनों को तथा नौकरियाँ आम हिन्दुस्तानियों को दी जातीं। पिता का नाम अब्दुल शकूर ईदी और

माँ गुरबा थी। जूनागढ़ के समीप बंटवा नामक 25 हज़ार जनसंख्या वाले कस्बे में 20 हज़ार मैमन थे।

माँ दयालु थी। व्यापार करने गया पिता अनेक बार महीनों तक घर न आता। सूखे मेवों की पेटियाँ भेजता रहता। माँ इनके छोटे छोटे पैकट बनाकर गरीब बस्तियों में बांटने के लिए ईदी को पकड़ा देती। स्कूल जाते समय माँ हर रोज दो पैसे देती, कहती एक पैसा तुम्हारा है, दूसरा किसी ज़रूरतमंद का। दूसरा उसे देना जो तुझे ज़रूरतमंद लगे। वह चेहरा देखकर समझ जाती जिस दिन ईदी दोनों पैसे खुद खर्च कर देता कितना खुदगर्ज है तू। कैसा पत्थर दिल है तेरा? इतनी छोटी उम्र में ही तुमने गरीबों को लूटना शुरू कर दिया? बड़ा होकर पता नहीं क्या क्या करेगा, पता नहीं। शर्मिन्दा ईदी नज़रें झुकाए खड़ा रहता।

स्कूल जाते हुए उसने देखा, लड़कों की एक टोली ने पागल को घेर रखा है। छड़ी से तंग कर रहे हैं। बिखरे केशों वाले पागल की दृष्टि ऐसी, जैसे सांप डंक मार रहे हों। ईदी उनके पास आकर चिल्लाया शर्म नहीं आती तुम्हें? इसकी सहायता नहीं कर सकते तो कम से कम रहम तो करो। लड़कों ने देखा, एक कमज़ोर सा लड़का कैसे हुक्म दे रहा है। पागल को छोड़कर उसकी तरफ आए, बहुत पीटा। घर आकर माँ को बताया। माँ ने घाव धोए। दवा लगाई, आशीर्वाद देते हुए कहा तू उसकी ज़ुबान बना, जिसकी कोई ज़ुबान नहीं थी, बेसहारा का सहारा। ईश्वर तेरा भला करेगा पुत्र, नेक काम के लिए यदि मार भी खानी पड़े, तो झिझकना मत।

पढ़ाई में ज़्यादा अच्छा नहीं था। पाँचवी कक्षा पास करके कपड़े के व्यापारी के पास पाँच रूपये मासिक वेतन की नौकरी करने लगा। वहाँ और भी कई लड़के नौकर थे। ईदी ने मालिक को दो लड़कों द्वारा चोरी करने की बात बताई। उनमें से एक ने कहा ईदी भी हमारे साथ था। सेठ ने गर्जते हुए कहा ख़बरदार यदि और बकवास की तो। हाजी शकूर का पुत्र चोर नहीं हो सकता।

सोचता मैं माचिस और पैंसिलें गलियों में बेचूंगा, होने वाली आमदन में से शेअर खरीदूंगा, बचत अधिक होगी तो अस्पताल बनाऊँगा, एक फैक्ट्री भी, जहाँ केवल गरीबों को रोजगार मिलेगा। अपाहिजों के लिए अलग गाँव निर्मित करूँगा। साथी कहते तू सपने देखता है, शेख चिल्ली, हवाई महल बनाता रहता हैं। ईदी कहता अभी मैं काम कम कर सकता हूँ, परन्तु कम क्यों सोचूं? जितना दूर तक सोचा जा सकता है, सोचूंगा।

देश विभाजन के समय मैमन पाकिस्तान नहीं जाना चाहते थे। एक तो जिनहा ने प्रार्थना की मैमनों के बगैर पाकिस्तान का व्यापार बंद हो जाएगा, दूसरे

वल्लभ भाई पटेल ने बंटवा पर आक्रमण करवा दिया। उसका उद्देश्य मैमनों के कारोबार को हासिल करना था। दंगे होने लगे तो शांति प्रिय मैमन कोशिश करने लगे। कराची की एक खाली हवेली में ठहरे। यद्यपि अनेक लोग उजड़ी हिन्दु सम्पतियों पर कब्ज़े करते गए, परन्तु ईदी के पिता इसके विरोधी थे। एक कमरा किराए पर लिया और एक दुकान किराए पर लेकर पिता कमीशन ऐंजट का काम करने लगा। ईदी ने पहले रेहड़ी पर थोड़ा बहुत सामान बेचा, लाभ होने पर एक छोटी सी पान की दुकान खोल ली।

लोग पिता से कहते तुम्हारे पास पैसे की कमी नहीं। लड़के को अच्छा कारोबार करवा दो, बड़ी दुकान लेकर दे दो। पिता कहता नीचे से शुरू करेगा, सफल होगा। इसे आदमी की हैसियत और पैसे की कीमत का पता होना चाहिए। पहले ही ऊपर पहुँच जाए तो बच्चा नीचे की सच्चाई से अनभिज्ञ होने के कारण फेल हो जाता है। नीचे से ऊपर जायेगा, तो गिरेगा नहीं।

1948 ई. में मैमनों ने दान राशि से चलने वाली डिस्पैंसरी की स्थापना की। वलंटीयर मांगे गए। ईदी ने नाम लिखवा दिया। कुल आठ वंलटीयरों में से ईदी सबसे छोटा था। अब्बा से लोग पूछते तुमने कितना दान दिया है? अब्बा ईदी की तरफ अंगुलि से इशारा करते हुए कहता सब कुछ।

ईदी ने देखा, बीमारों से भेदभाव किया जाता है। पहले मैमनों को दवाई दी जायेगी। यदि बच गई तो दूसरों को। ईदी सारा दिन नौकरी करके आधी रात तक डिस्पैंसरी में मुफ्त डयूटी देता, परन्तु बाकी वलंटीयर पाँच घण्टों के बाद दरवाज़ा बंद करके चले जाते। एक्सरे करने वाले लड़के रिश्वत लेते। प्रबन्धकों की मीटिंग हुई, एक अमीर दूसरे को प्रशंसा कर रहा था। चापलूसी के सभी वाक्य समाप्त हो गए तब ईदी खड़ा हुआ, कहा मैंने भी बात करनी है। यह क्या बात करेगा? हँसने लगे, ताने देने लगे, हटा नहीं तो चुपचाप सुनने लगे। ईदी ने सभी चोरियों, कमज़ोरियों का पर्दाफाश कर दिया। हवा में घूंसे लहराये, हाथापाई हुई, ईदी को धक्के देकर बाहर निकाल दिया गया, कोई सहायता के लिए नहीं आया। किसी ने ईदी से कहा बुरा हुआ, तुम्हारा अपमान हुआ है ईदी। ईदी ने कहा बिल्कुल नहीं, मेरा अपमान कोई नहीं कर सकता। मुझे थोड़ा परेशान किया है उन्होंने। अपमान तो उनका हुआ है जो चोर हैं, झूठे हैं। पिता ने शाबाश दी और कहा तुम कठिन परिश्रम और ईमानदारी से उनको पराजित करोगे। अनदेखा करते रहो, अपना मार्ग मत छोड़ना।

1951 में अपनी बचत राशि 2300 रुपये में उसने मीठादार में एक डिस्पैंसरी स्थापित की। कंपनियों से सीधे ही कम पैसों में दवाईयाँ खरीदता, एक

डॉक्टर को नौकरी पर रखा। स्वयं फारमेसी और लैब का निरीक्षण करता रहा। रात को डिस्पैंसरी के बाहर रखे मेज़ पर सो जाता, यदि को मरीज़ आता हो उसे फस्ट-ऐड दे देता। यद्यपि ईलाज की फीस बहुत कम थी, परन्तु फिर भी बचत होने लगी थी। इन्हीं बचत के पैसों से उसने दुनिया को देखना चाहा। बस यात्रा द्वारा 1956 में ईरान, तुर्की, यूनान, बलगारिया से होता हुआ योगोसलाविया में पहुँचा, फ्रांस तथा तुर्की भी गया। जाँच अधिकारी सीमा पर रोक कर चैंकिग करते, केवल दो जोड़े वस्त्र तथा कुछ खाने के सामान के अतिरिक्त कपड़े के थैले में कुछ न मिलता तो गरीब यात्री समझकर कुछ दानी अफसर थोड़े पैसे भी दे देते। दुआयें देता हुआ आगे बढ़ जाता।

देखता, पश्चिम देशों की गति कितनी तेज़ थी। बहुत कठिन परिश्रम करते हैं। पाकिस्तान? पाकिस्तान इनके साथ कैसे मिलेगा। जिनहा ने प्रथम दौर में विजय प्राप्त की, द्वितीय दौर में पराजित दिखाई दे रही है। सोचता, देश स्वयं ही अपने विरुद्ध होता जा रहा है।

लोग उसे कुछ खाने को दे देते, खा लेता। रेलवे स्टेशन पर सो गया। सुबह उठकर देखा जूते गायब। कोई बात नहीं। नंगे पाँव सड़क पर चलना कठिन था। एक स्त्री ने पुराने जूते दे दिए, साईज़ बड़ा था, उन्हीं के साथ यात्रा करता रहा। इंग्लैंड पहुँचकर अपने पुराने गुजराती मित्र सिदक ईदी का घर ढूंढ लिया। वह अच्छे पद पर था। ईदी से कहा तुम्हें भी अच्छी नौकरी मिल सकती है यहाँ, जितनी मेहनत करोगे उतनी ही कमाई होगी। ईदी ने कहा मेरे बिना पाकिस्तान कैसे चलेगा? जैसा इंग्लैंड है, मैं पाकिस्तान को भी वैसा बनाना चाहता हूँ।

अनुपस्थिति में उसके विरुद्ध अफवाहें फैलाई गईं कि वह दान के पैसे लेकर भाग गया है। डिस्पैंसरी के लोगों ने प्रचार किया तभी तो हमने उस चोर को निकाला था।

वापिस आकर दुकान का ऊपरी कमरा किराये पर लिया और जच्चा-बच्चा शिक्षण केन्द्र खोलने की घोषणा की। कोर्स में दाखिला लेने के लिए निवेदन पत्रों की जैसे बाढ़ आ गई। आलोचकों ने प्रचार किया यह दुराचारी है, बुरे कामों के लिए नई दुकान खोली है, यह मुसलमान नहीं आदि। जिन लड़कियों ने भय से पहले सत्र में दाखिला नहीं लिया था, वे दूसरे सत्र में आ गईं। दान-पात्र में दानी लोग अधिक दान डालने लगे। क्योंकि वह अकेला इस केन्द्र का कर्त्ता-धर्ता था इसलिए सुस्त, कमज़ोर कर्मचारियों को हटाकर मेहनती व्यक्तियों को काम पर रख लेता।

1951 में पाकिस्तान में हांगकांग फलू नामक बीमारी फैली, अत्यधिक संख्या में मौतें होने लगीं। परामर्श के विपरीत, ईदी ने सेवा करने का निर्णय किया।

शहर के बार 13 तम्बू लगवाकर ऐलान कर दिया कि रोगी आएं। दवाईयों का जितना प्रबन्ध हो सकता था, किया। दान-पात्र के ऊपर लिखा देने के लिए कुछ है तो दो, नहीं तो न सही। ईदी का सब कुछ तुम्हारा है। आपका ईदी।

एक मैमन व्यापारी अनेक दिनों तक ईदी के कार्य का निरीक्षण करता रहा। उसने एक ही बार में बीस हज़ार रुपये दान में दिए। उसी शाम सात हज़ार में पुरानी वैगन लेकर उस पर रंग करवाया, ऊपर लिख दिया गरीब की मोटर। उसके बाद कभी धन की कमी नहीं हुई। सारे सिंध शहर में पाँच ऐम्बुलैंस गाड़ियाँ थीं। आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध नहीं होती थीं। ईदी उपस्थित रहता, यहाँ तक कि पुलिस विभाग को भी इंकार नहीं करता था। अब तक दान केवल निर्धन ही देते थे, पहली बार किसी धनी ने दान दिया। तत्पश्चात् एक सेठ ने तीन लाख रुपये दान में दिए। उन पैसों से पुरानी ऐक्सरे की मशीन खरीदी, प्लाट खरीदा, दो डॉक्टर रखे, दो हॉल, तीन वरांडे चार कमरे मैटरनिटी यूनिट के लिए किराये पर ले लिए।

फुटपाथों और सीवर के पाईपों में लेटे हुए लोगों को छत के नीचे लेकर आया। धनी चीखते देखो, यह निर्धनों को कितनी घटिया दवाई दे रहा है। ईदी कहता तुम इन्हें अपने महलों में ले जाओ, सेवा करो, अल्लाह खुश होगा। सहायता नहीं करनी तो न सही, मुझे तो मत रोको।

उसने देखा झुग्गी झोंपड़ियों में से आने वाले लोगों से दुर्गन्ध आती है। वलंटीअर रोगियों को नहला देते तो स्वयं भी साबुन के साथ रगड़ रगड़ कर नहाते। कपड़े धोकर कीटनाशक पदार्थ में डाल देते, अनेक बार तो सूखे कपड़े दान कर देते। ईदी ने इस ऐलर्जी से मुक्ति पाने हेतु लाशों के संस्कार का कार्य शुरू किया। कुँओं और समुद्र में तैरती दुर्गन्धित लाशें, हाथ लगाते ही मांस झड़ जाता। टैलीफोन लगने से काम बहुत बढ़ गया। दिन रात चलना, केवल चलना। घायलों को पहले उठाता, लाशों को बाद में।

सेठों ने पैसे के दुरुपयोग की अफवाहें फैलाईं, ईदी ने बयान छपवाया जो मुझे पैसे देता है, वह मुझसे हिसाब मांगने का हकदार है। जिसे दान देने के पश्चात् पश्चात्ताप होता है, वह आकर पैसे वापिस ले जाये। प्रत्येक दानी को रसीद दूंगा, रसीद दिखाकर पैसे वापिस ले जा सकता है। जिसने कभी दान नहीं दिया, उसे न तो हिसाब दूंगा, न परवाह करूँगा।

1958 में पिता ने दोनों भाईयों में जायदाद का विभाजन कर दिया। ईदी लखपति बन गया। बैंक में राशि जमा करवाकर अपना निजी खर्च उससे करने लगा, जो बच जाता उसके शेअर खरीद लेता। ईदी के विरुद्ध सबसे अधिक बुरा बोलने

वाले सेठ का बच्चा छत से गिर गया। ऐम्बुलैंस न मिली। ईदी को पता चला, तो गाड़ी लेकर वहाँ पहुँचा। गिरे हुए बच्चे को उठाकर छाती से लगाया, शत्रुओं को गाड़ी में बिठाकर अस्पताल पहुँचा। अस्पताल में दाखिल करवाकर वापिस आते समय माँ का कथन याद आया जितना प्रेम मैंने तुम्हें किया, उतना प्रेम मनुष्यों से करना। अल्लाह ने स्वयं को ऐसे ही तो 'रब्ब-उल्ल-आलमीन' नहीं (सारे संसार का सांझा ईश्वर) कहा। बच्चा बच नहीं सका। सेठ की पत्नी प्रत्येक मास ज़कात के पैसे ईदी को भेजती रही।

एक दिन ईदी बस में सफ़र कर रहा था। उसका घुटना एक बूट सूट पहने सुसज्जित व्यक्ति के घुटने से छू गया। बाबू चिल्लाया मुझे मत छू। तू गंदा व्यक्ति हैं। पाँच सात लोग उठे, कहा दुर्भाग्यवश यदि तू लावारिस मर गया तो इसके बिना तुझे कौन दफ़न करेगा? ईदी ने सब को शांत किया।

ईदी देख रहा था, जिन मैमनों को जिनहा ने पाकिस्तान जाने के लिए मनाया था, नहीं तो व्यापार खत्म हो जाएगा, वह भ्रष्ट हो गए थे। धन और चापलूसी से चुनाव में खड़े लोगों की सहायता करते और फिर व्यापार करते। पैसे के बल पर दोषी रिहा हो जाते। इस अंधेरगर्दी के विरुद्ध लड़ने के लिए 1962 के संसदीय चुनाव के फार्म भर दिए।

पहले मनाने के प्रयास किए गए, फिर धमकाया गया, कागज़ वापिस न लिए तो फिर बुरे प्रचार की प्रक्रिया शुरू की। समाचार छपने शुरू ईदी के अस्पताल में से जो चार लड़कियाँ लापता हैं, पता है ईदी ने कितने में किस किस को बेचा है? पता है ईदी ने कितने लाख का गबन किया है?

ईदी सुन्न हो गया। यह क्या हुआ? यह जानने के लिए कि कोई मुझे पसंद करता है या नहीं, फार्म भरे थे। ये तो इस नेक कार्य को ही बंद करवा देंगे। उसे नास्तिक, चोर, व्यभिचारी तथा अशिक्षित, मूर्ख आदि कहा गया। न उसकी पार्टी, न उसने प्रचार किया, क्यों व्यर्थ ही पैसा नष्ट करना? वोटें पड़ीं, परिणाम आया, 29 वर्षीय युवक रिकार्ड तोड़ वोटों से जीता।

1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ। बंब चलते, चीखें चिल्लाहटें। ईदी के पास सैंकड़ों की संख्या में युवक, वलंटीअर भर्ती होने लगे। ईदी पहले दिन ही समझा देता नेताओं की नकल नहीं करनी, मुकाबला नहीं करना। इनके जैसी सियासत नहीं करनी। ऊँचा उठना है तो मेरी सियासत करो, धर्म की, सहानुभूति की सियासत। संदेह हो तो पहले जैसी सियासत करो। देखना, एक दिन ऐसा

आएगा इनको छोड़कर मेरे पास आओगे। मेरी सियासत स्थिर है, जहाँ है, वहाँ से कोई हिला नहीं सकता। सेवा की सियासत करो।

भिन्न-भिन्न अवसरों पर छह विधवा तथा तलाकशुदा स्त्रियों से ईदी ने पास विवाह का प्रस्ताव भेजा, किसी ने परवाह नहीं की सीमेंट का बैंच हनीमून का बिस्तर होगा। मुर्दे इसके बाराती होंगे, ऐसी टिप्पणियाँ करती हुई लड़कियाँ और स्त्रियाँ हँसती। 15 वर्षीय बिलकीस का विवाह हुआ था, देश विभाजन के समय विधवा हो गई। 19 वर्ष की जब उसकी मौसी उसे ईदी के नर्सिंग होम में काम दिलवाने लाई थी, लड़की बहुत खुशमिज़ाज थी, कार्य करने में फुर्ती और विनम्रता दोनो ही। उसे देखकर ईदी का कड़वा स्वभाव मधुर हो जाता, विनम्र होने का प्रयास करता, कभी होंठो पर मुस्कान आ जाती। एक लड़की ने ईदी की ओर इशारा करते हुए कहा देखो, ईदी हँस रहा है और चिल्लाने की बजाय बातें कर रहा है। बिलकीस ने कहाअभी जीवित है। ईदी ने यह व्यंग्य सुनकर कहा मैं ऊँची इमारत बनाना चाहता हूँ। नीवें गहरी, और गहरी खोद रहा हूँ, चौदह वर्षों से मौतों के बीच घिरा व्यक्ति जीवित होने का कैसे दावा कर सकता है? शुक्र है किसी को लगा कि मैं जीवित हूँ।

उसका यश बढ़ने लगा। चौराहे में ठूठा रखकर बैठ जाता। दानियों की भीड़ एकत्रित हो जाती, ट्रैफिक जाम हो जाता। रिपोर्टर पूछते ईदी तुम्हारे पास पैसों की कमी है जो चौराहे में बैठ जाते हो? कहता नहीं, जितनी आवश्यकता है उतने पैसे हैं। कुछ व्यक्ति हैं, जो सोचते हैं कि मेरे कर्मचारियों की अपेक्षा मुझे दान देंगे, इसका अधिक पुण्य मिलेगा। मेरे पास अब पाँच ऐम्बुलैंसें, विशाल नर्सिंग होम, बड़ा अनाथाश्रम और पैसे हैं। तो भी मुझे ठूठा याद करवाता है कि ईदी, वास्तव में तू भिखारी है। यही तेरी असली औकात है। न मैं मौलवी हूँ, न फकीर। मेरी हैसियत, भिखारी की हैसियत मुझे भूलना नहीं चाहिए। अब लोग बिना रसीद मांगे भी लगातार पैसे दे रहे थे। ईदी ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहता ये है पवित्र इसलाम। मानव, मानव की बाँह पकड़े, दुःखी की दवा बने।

बिलकीस के साथ सगाई हुई तो मैमनों ने संदेश भेजा यदि तुम बयान दे दो कि ईदी ने तुम्हारे साथ छेड़खानी की है, ब्लैकमेल किया है तो तुम्हें पच्चीस हज़ार देंगे। बिलकीस के साथ उसका निकाह हो गया। कोई दिखावा, कोई रस्म-रिवाज़ नहीं। ईदी हँसते हुए कहता मैं भारतीय हीरो दिलीप कुमार या राजकुमार जैसा नहीं हूँ, परन्तु जैसे फिल्मों में उनका रोमांस और विवाह होता है वैसे ही मेरा हो गया। उनका नकली, मेरा असली। सखियों को जब बिलकीस की सगाई

का पता चला तो उन्होंने कहा बिलकीस क्या कर रही हो तुम? हमारे पति हमें पहाड़ी प्रदेशों में घुमाने लेकर जाया करेंगे, तब यह तुम्हे क्रबिस्तान दिखाने ले जायेगा। बिलकीस बहुत हँसती। कोई लड़की ईदी के समान भारी आवाज़ में कहती बिलकीस लाशों को नहला दिया? बिलकीस पागलों के केशों से जुएँ निकाल दीं? जब हम मेकअप करेंगी, तुम घायलों के घावों पर मरहम और लाशोंपर इत्र लगाओगी।

सड़क किनारे कोई नवजात शिशु को फेंक गया। ईदी ने बिलकीस को देते हुए कहा यह अपना है। अफवाहें उड़ीं ये ईदी का नाजायज़ बच्चा है जो विवाह से पहले की करतूत है। ईदी को मार दो, यह बदमाश है, गुनाहगार है।

नया विवाह, कुर्सी पर बैठकर जब बिलकीस कोई काम रही होती तो गली में गुजरता हुआ कोई शरारती लड़का यह कहकर भाग जाता देखो, भिखारियों को कुर्सियों पर बैठे देखो। जब पहली बार गर्भवती हुई, उल्टियाँ शुरू हो गईं। ईदी उसकी उल्टियों को हाथों में संभालता, यह उसे बताने के लिए कि पीड़ित व्यक्ति की कोई भी चीज़ ईदी को बुरी नहीं लगती। मैमन समाज उसे अपमानित करते करते थक गया, ईदी हँसते हुए कहता उस व्यक्ति को कोई अपमानित कैसे कर सकता है, जिसका कोई सम्मान ही नहीं?

अमीना की सहायता से बिलकीस ने बेटे को जन्म दिया। बिलकीस ने पूछा यह किसका नाजायज बच्चा मेरी गोद में डाल दिया है? अमीना ने कहा किसी का भी हो, समझो तुम इसका पालन करोगी। मान लो तुम इसकी माँ हो। ईदी के पिता ने पौत्र का नाम कुतब रखा। कुतब का अर्थ होता है ध्रुव तारा।

अपने बच्चे के साथ बातें करते हुए बिलकीस कहती नए वस्त्र पहनकर उस सखी के घर चलें। ईदी खामोश रहता तो कहती चलो समुद्र किनारे चलते हैं। मैं लहरें देखूंगी। तुम लहरों में से मेरी लाश ढूंढना। फिर कहती हमारे रिश्तेदार बहुत अच्छे हैं, मिलना चाहते हैं परन्तु हम उनके मरने के बाद उनके घर अफसोस करने जायेंगे।

एक क्रोधी व्यक्ति दफ्तर में आकर चिल्लाने लगा, कहा लाशों का व्यापार उचित नहीं है। इस इलाके के बच्चे हर समय भयभीत एवं सहमे रहते हैं। सभी शांत रहे। वह ऊँचा बोलते बोलते वापिस चला गया। तीन दिन बाद आकर कहने लगा जी छठी मंजिल पर मेरे भाई की हार्ट अटैक होने से मृत्यु हो गई है। ऐम्बुलैंस चाहिए। ईदी ऐम्बुलैंस लेकर चला गया।

बिलकीस चिढ़कर कहती अच्छा होगा यदि मुझे तलाक दे दो। अल्लाह करे मेरे बाद तुम्हें पत्नी न मिले। ईदी खामोश रहता। फिर चिल्लाती तुम्हें मेरे जैसी

पत्नी मिली, क्या अल्लाह का शुक्रिया अदा किया? कभी अल्लाह को याद किया? ईदी कानों को हाथ लगाते हुए कहता अल्लाह को कभी भुलाया मैंने? मेरे पास अल्लाह और तुम्हारे अतिरिक्त है ही क्या? अन्य कुछ नहीं चाहिए मुझे।

ईदी जब कभी गलत निर्णय लेता तो बिलकीस कहती पश्चात्ताप मत करो। गल्ती हुई है। बेईमानी तो नहीं की। कमी को सहन करो। अधिक नुकसान नहीं हुआ। ईदी कहता स्त्री चाहे तो अच्छे भले व्यक्ति को निकम्मा बना सकती है, इसी प्रकार साहसी स्त्री का पति बुज़दिल नहीं हो सकता।

बिलकीस पागलों की बातें सुनती रहती। ईदी पूछता यह झूठ कहते हैं, तुम्हे सत्य प्रतीत होता है? बिलकीस कहतीअच्छे भले व्यक्ति झूठ कहने से नहीं रुकते। इनके मन का भार कम हो जाता है, मेरा कौन सा कोई नुकसान होता है?

1971 में भारत-पाकिस्तान का युद्ध हुआ तो पाकिस्तान दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। बंगला देश में रहने वाले पंजाबी व्यापारी, बंगालियों की नफ़रत के भय से पाकिस्तान आ गए। मँहगी सम्पत्ति को घाटे में बेच आए। यहाँ आकर कोई व्यवसाय शीघ्रता से कैसे चल सकता था? अनेक लोगों ने ईदी को दान दिया था। सभी अपनी रसीदें लेकर ईदी के पास पैसे वापिस लेने के लिए पहुँच गए। ईदी ने सभी के पैसे वापिस किए, कहा जब तक कोई व्यवसाय स्थिर नहीं हो जाता यहीं रह सकते हो। जिन्होंने दान नहीं भी दिया, वे भी रह सकते हैं।

छह मंज़िल की इमारत गिरकर 13 फीट ऊँचे ढेर में बदल गई। 20 परिवार मारे गए। ईदी ने क्रेनों को निर्देश दिया, लाशों और घायलों के लिए अलग अलग तम्बुओं का प्रबन्ध किया। ढाई वर्ष का बच्चा बाहर खेलने के कारण बच गया था। उसके माता-पिता और सात वर्षीय भाई मलबे में दब गए थे। एक तरफ से किसी बच्चे की आवाज़ आई। भारी बीम हटाया गया तो एक घायल बच्चा मिला। सिर पर चोट, छाती की पसलियाँ दब गई थीं। अस्पताल में उसने बताया माँ खाना बना रही थी। धमाके के बाद मुझ पर कुछ गिरा और अंधेरा हो गया। मैंने माँ की आवाज़ सुनी, हम दोनों भाइयों को पुकार रही थी ... इमरान ... जावेद। बहुत देर तक आवाज़ सुनता रहा। फिर वह खामोश हो गई। मैंने सोचा मैं मर गया हूँ। तभी मुझे किसी की आवाज़ सुनाई दी ... किसी ने ईदी को पुकारा था, तो मैं भी चिल्लाने लगा। ईदी का नाम सुनकर लगा मैं अभी मरा नहीं। अब ईदी मुझे बचा लेगा। दोनों अनाथ बच्चों को दादी के पास पहुँचा दिया गया। उस वर्ष ईद नहीं मनाई गई। भुट्टों वहाँ पहुँचा, ईदी से कहा मैं सहायता करूँ? ईदी ने कहा और कौन करेगा? शीघ्र राहत भेजो। उसने धन, राशन एवं दवाईयों की शीघ्र सहायता भेजी।

एक व्यक्ति रोते हुए आया मेरी पत्नी तथा दो बेटियाँ कपड़े सिलाई करके गुज़ारा करती थीं। शाम होते ही मैं उनसे जबरदस्ती पैसे छीनकर शराब पीता। वे रोती और परमात्मा से अरदास करतीं हमें मौत दे दे। वे तीनों मर गईं। मैं कब मरूँगा? ईदी कहता तू क्यों मरे? जितना संताप उन्होंने सहन किया, अब तू भुगत। तेरी फरियाद सुनने वाला यहाँ कोई नहीं है।

दो पुत्रों एवं दो पुत्रियों का पिता ईदी बच्चों को कहीं घुमाने नहीं ले जा सका। वह घूमने की जिद्द करते रहते। एक दिन संदेश मिला कि दूर सिंध देश में एक लाश पहुँचानी है। पत्नी ने कहा बच्चों को भी साथ ले चलो। कहीं और न सही क्रबिस्तान ही दिखा लाओ। माता-पिता जहाँ भी जाते हैं, बच्चे उनके साथ जाना चाहते हैं, जाने से उनको खुशी मिलती है। ठीक है। ईदी ने आज्ञा दे दी। जिस ऐम्बुलैंस के आगे माँ, बेटी की लाश के समीप बैठी थी, बच्चें पिछली सीट पर खुशी से छलागें लगाने और चहकने लगे।

रात हो गई। लड़की की माँ रास्ता भूल गई। ऊँचे टीले पर खड़ी होकर आवाज़ें लगाने लगी। आवाज़ की गूंज वापिस आती परन्तु कोई हुंगारा नहीं। एकांत में सांपों की फुंकार सुनाई देती। ईदी ने गाड़ी की लाईटें जला दीं। सामने चार नकाब पहने घुड़सवार बदूंकें लेकर खड़े दिखाई दिए। औरत भागती हुई टीले से उतरकर गाड़ी में बैठ गई, बताया ये कोलहरी के खतरनाक डाकू हैं। पहले गोली मारते हैं फिर देखते हैं जिसे गोली लगी वह कौन था।

नकाबपोशों ने गाड़ी को घेर लिया। लाश देखी, भयभीत बच्चों को देखा, पूछा कौन हो तुम? ईदी ने बताया मैं अब्दुल सत्तार हूँ जिसे ईदी कहते हैं। इस लाश को छोड़ने जा रहा था, रास्ता भूल गया। डाकू ने पूछा कहाँ जाना है? गाँव का रास्ता बताते हुए कहा अत्यधिक भयंकर इलाका है। रात को सफ़र क्यों किया। चलते समय ईदी ने सलाम करते हुए दायां हाथ माथे से लगाया। चारों डाकूओं ने छाती पर हाथ रखकर झुककर सलाम का उत्तर दिया। बिलकीस और बच्चों ने राहत की सांस ली। ईदी ने बिलकीस को डांटते हुए कहा बच्चों को खतरे में डाल दिया था न?

बाईस वर्षीय एक कैदी की मृत्यु जेल में हो गई। उसे स्थानक कब्रिस्तान में दफना दिया गया। उसके मित्र आए और कहा ये पंजाब का निवासी था। माता-पिता दूसरी जगह दफनाने के हक में नहीं हैं परन्तु उनके पास लाश ले जाने के लिए पैसे नहीं है। आप छोड़ आओ। ईदी ने हाँ कर दी। बिलकीस ने कहा मैं और फैसल बेटा भी जायेंगे। ईदी ने कहा लम्बा सफ़र है, परन्तु तो भी क्या?

सुबह जल्दी निकलने का निर्णय किया गया। जाने से पहले पागलखाने का दौरा करने गया। निगरान ने कहा जी वह लड़की सीढ़ियों पर बैठी है। चढ़ने उतरने वाले को गालियाँ देती हैं, और दांतों से काटती है। ईदी उसके पास गया, उठने के लिए कहा, वह टस से मस न हुई। ईदी ने थप्पड़ मारा। उसने रास्ता दे दिया।

रास्ते में एक ढलान के मोड़ पर गाड़ी उल्ट गई। सभी बच गए। परन्तु ईदी का जबड़ा टूट गया। समीप कोई अस्पताल भी नहीं, मीठादार फोन किया तो वहाँ से गाड़ियाँ चल पड़ी। शोर मच गया कि एक्सीडैंट में ईदी की मौत हो गई। भुट्टो मलबे वाली हवेली के स्थान पर बनने वाली इमारत के प्लाट अलॉट करने के लिए मीठादार आया हुआ था। पूछा ईदी कहाँ है? बताया गया। उसने तुरंत अपना हैलीकाप्टर वहाँ भेजा। अस्पताल से छुट्टी मिली तो भुट्टो को किराया देना चाहा, उसने इंकार कर दिया। ईदी बिलकीस से कहने लगा बीमार लड़की को थप्पड़ मारकर चला था। अल्लाह को मंजूर नहीं था। देख लिया? मिली न सही सज़ा?

एक मेहनती विद्यार्थी कैंसर की पहली स्टेज पर था। उसे इलाज के लिए पैसे चाहिए थे। ईदी करांची के चौराहे में ठूठा लेकर बैठ गया। अन्य भिखारी गाड़ियों आगे पीछे भाग भाग कर भीख मांग रहे थे। ईदी मूर्ति के समान वहीं जम गया। लोग ईदी को देखते, रुकते, जेबें खाली करते और चले जाते। तीन दिनों में ढाई लाख रूपये इक्ट्ठे हो गए। दूसरे भिखारी बड़बड़ करने लगे इसने हमारा कुँआं सुखा दिया है, भूखे मरें या कहीं दूसरी जगह चलें। बिलकीस ने हँसते हुए कहा दूसरी जगह क्यों जाना, बड़े भिखारी के साथ मिलकर काम करो।

1977 में ज़िआ उल्ल हक्क ने सत्ता हथिया ली। भुट्टो को बंदी बनाकर बाद में मार दिया। पाकिस्तान में किसी ने हमदर्दी की आवाज़ नहीं निकाली। बिलकीस ने कहा ईदी, यह बुरी घटना थी किन्तु लोग खामोश हो गए। ईदी ने कहा पाकिस्तान की हुकुमतों ने लोगों को सुन्न कर दिया है, दिमाग को जैसे दीमक लग गई है। भुट्टों ने लोगों को स्वप्न दिखाए, लोगों ने वोटों से संदूक भर दिए। मिला कुछ नहीं। वह सड़कों पर आकर जुलुस निकालने लगे तो ज़िआ ने परिस्थितियों का फायदा उठाते हुए लोगों से कहा अपने अपने बिलों में वापस जाओ। भयभीत लोग वापस आ गए।

ज़िआ उल्ल हक्क ने ईदी को सम्मान-पत्र एवं पाँच लाख रुपये भेजे। ईदी ने सम्मान पत्र रखकर पैसे वापिस भेजते हुए कहा सम्मान-पत्र के लिए धन्यवाद। सरकार से पैसे नहीं लेता। जो काम सरकार को करना चाहिए वही कर रहा हूँ, परन्तु

सरकार नहीं कर रही या नहीं कर सकती तो फिर प्रजा को स्वयं करना चाहिए। मैं लोगों के आगे हाथ फैलाऊँगा।

कभी कभी बिलकीस से स्वभाव से परेशान होकर कहता तुम मुझे चैन लेने दोगी या नहीं?

बिलकीस हँसती चैन? तुम्हें पता है चैन क्या होता है? न आप चैन में रहना न किसी दूसरे को रहने देना। तुमने तो मरने के बाद भी कहना है मुझे कोई नहीं नहलाएगा, मैं स्वयं ही नहाऊँगा। खबरदार कोई मुझे कब्र में उतारने आया। मैं खुद ही उतर जाऊँगा।

वह अरदास करता अल्लाह, मुझसे कोई ऐसा बड़ा काम करवाओ, ऐसा काम जो संसार की तकदीर को बदल दे। बिलकीस हँसते हुए कहती कभी न कभी अल्लाह सोचेगा अवश्य, इस सुस्त संसार में ये कौन है जो काम के अतिरिक्त कुछ नहीं मांगता?

डिक्टेटर के हाथ में सारी ताकत होती है, यदि चाहे तो संसार की तकदीर बदल सकता है परन्तु ज़िआ उल्ल हक्क के पास सत्ता में रहने के अतिरिक्त अन्य कोई दृष्टि नहीं थी। उसने ईदी को संसद का सदस्य बनाकर सामाजिक हित विभाग सौंप दिया।

राष्ट्रपति ने कहा ईदी को हैलीकाप्टर दिया जाये। एक कर्नल उसका सचिव होगा। ईदी ने कहा मैं हैलीकाप्टर लूंगा दान के पैसों से, क्योंकि इसकी आवश्यकता है। मेरी जासूसी करने वाले किसी कर्नल की मुझे आवश्यकता नहीं, मेरा काम ऐसे ही ठीक चल रहा है।

लोग नाजायज़ संतान को सड़कों पर इधर-उधर फेंक देते। ईदी ने नर्सिंग होम के बाहर झूले लटका दिए- इनमें अपना अनैच्छिक बच्चा रख जाओ। मौलवियों ने फतवा जारी किया नाजायज़ संतान को पत्थर से मार दो। ईदी ने घोषणा की आओ, मेरे यहाँ झूले में रखे बच्चों को मार कर दिखाओ। इसलाम मासूमों को दोषी नहीं मानता, इसलाम मासूमों को दण्ड नहीं देता, मौलवियों ने कहा इसलाम नाजायज़ संतान को गोद लेने की आज्ञा नहीं देता। ईदी ने कहा आप कुत्ते, बलूंगड़े भी तो पालते हो। ठीक है। जब तक इस्लाम से आज्ञा नहीं मिलती, इनको ऐसे ही रख लो। सम्पत्ति का हकदार न बनाओ। उपहार दे दो, वजीफा दे दो। उसने स्थान स्थान पर इश्तिहार चिपकाये एक गुनाह कर चुके हो। अब बच्चा मारकर दूसरा गुनाह मत करो। तुम्हारे बच्चे का पालन हम करेंगे। मौलवियों ने कहा ईदी काफ़िर है। इसे दान देना कुफ़र है।

संसद का सत्र प्रारम्भ हुआ। ईदी को निमंत्रण मिला। ईदी बस में संसद पहुँचा। फौजी अफ़सर पहचान कर भागे आये ईदी साहिब, वह लाल बत्ती वाली कार आपकी है। आपने हमें क्यों नहीं बताया? हम लेने आ जाते। कहाँ ठहरे हुए हो? हमने आपके लिए होटल का प्रबन्ध कर रखा है। ईदी ने कहा मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। पुराना कुर्ता-पजामा, रबड़ के स्लीपर, कंधे पर बोरी का थैला, बिलकीस ने कहा कुर्ता-पजामा तो बदल लो। पहले की अपेक्षा कुर्ता-पजामा ठीक था परन्तु माहौल के अनुकूल अभी भी ठीक नहीं था। सारा दिन सौगन्ध लेने की रस्म से ईदी थक गया। मैं यहाँ क्या करने आया हूँ? शायद इसी कारण मुझे संसद में लिया गया है कि नाजायज़ हुकुमत जायज़ दिखाई दे! मन्त्री अपने दिखावे के भाषणों से ज़िआ की खुशामद कर रहे थे। अपने अपने विभागों के लिए ग्रांटें मांग रहे थे। ईदी ने बोलने के लिए समय मांगा। पाकिस्तान कहाँ कहाँ से किस किस बीमारी से पीड़ित है और इसके ईलाज के लिए कौन कौन सी दवाइयों की आवश्यकता है, बताने लगा। बताया कि सरकार लोगों से बहुत दूर है। उसने बताया कि वह कहाँ तक सहायता कर सकता है, इस सहायता हेतु सरकार से पैसे नहीं लेगा, सरकार स्वयं खर्च करे। संसद सुन्न हो गई जब उसने कहा ज़िआ उल्ल हक्क तथा उसकी सरकार को नहीं पता कि इसलाम क्या है, तो फिर इसलामी कानून कैसे लागू करेगी? जब कोई साहूकार नई मर्सडीज़ बैंज़ में शान से निकलता है तो उसी समय भूखे के हाथ में बंब आ जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रैस ने कहा भिखारियों के इजलास में केवल एक दाता देखा- ईदी।

कुछ दिनों के पश्चात् एक फौजी अफ़सर ईदी फाऊडेंशन में आया। कहा ईदी साहिब, मुझे ज़िआ साहिब ने भेजा है। उनको लगा आप उनसे नाराज़ हो। उन्होंने इसका कारण पूछा है। ईदी ने कहा नाराज़ नहीं हूँ। मैं यह बताने का अभिलाषी हूँ कि देश का हित कैसे हो सकता है। मेरे पास इसका ईलाज है। यह ईलाज ज़िआ साहिब कर सकते हैं। वह चला गया। फिर नहीं आया। बिलकीस ने कहा अधिक पंगा मत लिया करो। उसने भुट्टो को नहीं छोड़ा। तुम्हारी क्या हैसियत है?

1982 में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुहारतो ने पाकिस्तान आना था। ईदी को निमंत्रण भेजा गया। निमंत्रण इंडोनेशिया के स्फार्तखाने से आया था, अर्थात् सुहारतो की तरफ से। ईदी चल पड़ा, शायद सुहारतो ने किसी से ईदी का नाम सुना हो। निमंत्रण पत्र देखकर एक अफ़सर ईदी को वी.आई.पी क्षेत्र में छोड़ आया। ऐलान हुआ जहाज़ आने वाला है। सभी वी.आई.पी, जहाज़ तक बिछायी गयी लाल दरी

के दोनों तरफ पंक्तिबद्ध खड़े हैं। ईदी ने देखा चमकते लिबास, बूटों की नोकें ऐसे चमक रही थीं जैसे दरी के किनारों पर मोती जड़े हुए हों। इनके साथ ईदी भी खड़ा था। एक अफसर नज़दीक आया कहा ईदी साहिब। मुझे अफ़सोस है, मुझे बताना है पड़ रहा है कि ऐसे अवसरों पर विशेष लिबास पहने जाते हैं। या तो आपको कपड़े बदलने होगें या .... अफ़सोस है सर, आपको यहाँ से जाना होगा। ईदी ने कहा जब मुझे निंमत्रण भेजा गया था, उस समय सरकार को मेरे लिबास का पता नहीं था? आपका ख्याल था निमंत्रण पत्र मिलते ही मैं नये वस्त्र सिलवा लूंगा? यह सुनकर अफसर चला गया। फिर अन्य दो अफसर आए। कहा ईदी साहिब यह हमारा निजी मामला नहीं है। यह हमारी डयूटी है, हम स्वागत में कोई कमी नहीं रहने देना चाहते। आप चले जाओ।

ईदी ने बुलंद आवाज़ में कहा दफ़ा हो जाओ। मैं यहीं खड़ा रहूँगा। जिस व्यक्ति ने तीस वर्ष तक न दिन देखा न रात, काम करते हुए पागल हो गया, वह आपको बुरा लगता है। मैं निमंत्रण स्वीकार कर पहुँच गया हूँ। अब मैं अपना निर्णय नहीं बदल सकता। वह नज़रे झुका कर चले गए। वापस आकर ईदी ने इस घटना का विवरण देते हुए सरकार को लिखाआईंदा मुझे किसी सरकारी समारोह में न बुलाया जाये। जो कुछ नहीं करते, लूटते हैं, खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं, उन्हें बुलाया करो। अब अफसर क्षमा मांगने आए ईदी साहिब आपका वहाँ होना बहुत ज़रूरी था, बल्कि प्रशंसनीय था, ईदी साहिब ... ईदी साहिब।

बिलकीस से कहा जब अफसर मुझे बाहर का रास्ता दिखा रहे थे, मेरा मन किया कि बैग में से रसीद बुक निकाल कर अभी इनसे दान मांगना शुरू कर दूं। बिलकीस ने कहा फिर तो उन्होंने आपको उठाकर बाहर ही फेंक देना था। ईदी ने कहा मुझे कोई बाहर नहीं फेंक सकता। मेरा अपमान मानवजाति का अपमान होना था।

उसने लैबनान जाने की आज्ञा मांगी। एम्बैंसी ने बैंक स्टेटमैंट मांगी। ईदी ने कहा भिखारी के पास कहाँ बैंक स्टेटमैंट? मेरे पास कोई पैसा नहीं। वीज़ा मिल गया। जहाज़ दुबई उतरा। यहाँ बस द्वारा बैरूत जाना था। बस ने जहाँ उतारा, वहाँ मस्जिद और मीनार देखे। भूख लग रही थी। मस्जिद में नमाज़ पढ़ी। एक पहरेदार गेहूँ की बोरियों की रखवाली कर रहा था। इशारे से उससे रोटी मांगी, उसने कहा क्षमा करो। ईदी बैठा रहा। वह पहरेदार एक बड़ी रोटी पर चार पाँच टमाटर रखकर दे गया। रोटी का चौथा भाग ईदी ने टमाटर के साथ खाया बाकी बची रोटी को थैले में डाल लिया। बैरूत उजड़ चुका था। खाली घर, ढह चुके होटल, उजाड़ सुनसान

गलियाँ। होटल के सामने लेटे हुए एक व्यक्ति से पूछा मैं कहाँ रह सकता हूँ? उसने अपना हाथ ऊपर उठाकर कहा जहाँ आपकी इच्छा हो। धरती आकाश सभी खाली हैं। प्रत्येक वस्तु मुफ्त है। शहर नहीं, कब्रिस्तान लगता था यह। एक बुजुर्ग सिपाही डयूटी दे रहा था। उसे बताया कि मैं संसद का सदस्य हूँ, मुझे पाकिस्तान के स्फार्तखाने का रास्ता बता दीजिए। सिपाही हैरान हो गया, कहा एम.पी. तो अमेरिका और यूरोप की सैर करने जाते हैं। आप इधर कैसे आ गए? सिपाही को भूख लगी थी। दोनों ने ईदी के थैले में बची रोटी को टमाटर के साथ खाया। कागज़-पत्र देखकर सिपाही ने कहा इस खड़ी हुई गाड़ी में यदि पैट्रोल डलवा दो तो मैं आपका ड्राइवर एवं गाईड दोनों ही होऊँगा।

बेघर लोग तम्बुओं में रह रहे थे। भूखे बच्चे हाथ पसार कर ईदी के आगे खड़े हो जाते। ईदी ने हरेक परिवार को दो दो सौ डालर दिए। धन्यवाद करते हुए कहते, हमारे अरब भाई तो आए नहीं। आप पाकिस्तान से सहानुभूति करने आ गए। ईदी ने कहा पाकिस्तान की सलामती के लिए दुआ करो।

1983 में सिंध में तानाशाही के विरुद्ध लोग आवाज़ उठाने लगे। ईदी पर दोष लगाए, लाशें उठाने के बहाने से हथियार सप्लाई करता है। ईदी ने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर प्रश्न किया गया यदि डाकूओं के विरुद्ध है तो ईदी उनके विरुद्ध बयान क्यों नहीं देता? ईदी ने कहा बच्चे डाकू क्यों बने, इसका कारण ढूंढ कर ईलाज करो। माहौल इतना भयंकर हो गया है कि सिंध की मस्जिदों में कोई नमाज़ पढ़ने नहीं जाता। यदि पुलिस और सेना होते हुए भी आम व्यक्ति सुरक्षित नहीं है तो हथियारों को इन लोगों में बांट दो। वे स्वयं अपनी रक्षा कर लेंगे। आपके बंगले, कारें, बैंक राशि आपके गुनाहों के सबूत हैं।

ईदी को पता चलता कि किसी स्थान पर पुलिस और डाकूओं के मध्य गोलीबारी हो रही है, अपनी गाड़ी लेकर वहाँ पहुँच जाता। लाऊड स्पीकर पर घोषणा करता ईदी लाशों एवं घायलों को लेने आया है। गोली चलाना बंद करो। गोलीबारी बंद हो जाती। दोनों तरफ से घायलों एवं लाशों को लेकर वापस चला जाता। मुकाबला फिर शुरू हो जाता।

रमज़ान के दिनों में शाम को घर वापिस जा रहा था। ईदी ने सड़क के किनारे एक कार के पीछे दो हथियारबंद लोगों को बैठे देखा। ऊपर देखा तो सुनार की छत पर ए.के सैंतालीस लिए युवक खड़े थे। गोलियाँ चलने लगी। एक ने कहा ईदी साहिब चले जाओ, नहीं तो मारे जाओगे। ईदी ने कहा मैं नहीं जाऊँगा। इस मुसीबत को खत्म ही कर दो तो अच्छा है। छत से एक युवक चिल्लाया बैठ जाओ

ईदी साहिब, साथ ही नीचे छलांग लगा दी। गोली उसके दिल के आरपार हो गई। खून के फव्वारे दीवार पर गिरे। ईदी की जान बचाते हुए दो युवक मारे गए। खून से भीगे कपड़ों को देखकर बिलकीस ने पूछा यह क्या? सारी बात बताई। अगले दिन बिलकीस घटनास्थल पर पहुँची। मांस के टुकड़े अभी बिखरे हुए थे।

पुलिस मुठभेड़ में मारे गए डाकूओं की लाशों को सम्मान सहित मीठादार में दफनाया गया। खतरनाक डाकू कश्मीरो के रिश्तेदार उसकी कटी हुई टांग लेकर आए। टांग को दफल कर दिया गया। उस साईज़ की टांग बनवाकर रिश्तेदारों को दे दी गयी। पुलिस घट्टानी डाकू की लाश लेकर आई। किसी ने कहा घट्टानी बहुत खतरनाक डाकू था। बिलकीस ने चिल्लाते हुए कहा किसी माँ के गर्भ से डाकू जन्म नहीं लेता। कानून इससे बड़े लुटेरों की सुरक्षा कर रहा है।

डाकुओं के अपने अपने इलाके थे, अपनी अपनी चैक पोस्टें, ईदी की गाड़ी रुकती तो आवाज़ आती ईदी बाबा है। जाने दो।

1986 ई. में फिलपीन सरकार ने मैगासासे सम्मान देने का निर्णय किया। पति-पत्नी ने अपने दो जोड़ी वस्त्र उठाए। जहाज़ से उतरे तो बैंड बाजा स्वागत हेतु बज रहा था। एक कार में बिठाकर पाँच सितारा होटल में ले गये। होटल का कमरा देखकर बिलकीस बच्चों की तरह वस्तुओं को छू छूकर देखने लगी। यह गद्दे, कितने साफ, कितने नर्म। तकिया सूंघकर देखो। गुलाब की सुगन्ध। ये गुलाब जल में कपड़े धोते होंगे। यह पर्दे देखो। एक एक नहीं, अनेक कपड़ों को एक साथ सिला गया है। इधर गुसलखाने में आकर देखो... फर्श में चेहरा दिखाई देता है। वह गद्दे पर लेटी और जल्दी ही सो गई। ईदी फर्श पर सो गया। सुबह उठते ही कहने लगी मैं अपने लिए ऐसा गद्दा खरीद कर ले जाऊँगी। पहले कभी ऐसी नींद नहीं आई।

सम्मान समारोह में बड़ी गिनती में लोग आए हुए थे। पति-पत्नी का नाम पुकारा गया। दोनों उस स्थान पर खड़े हो गए जहाँ फिलिपन एवं पाकिस्तान के झण्डे लहरा रहे थे। पाकिस्तान के राष्ट्रीय गीत के पश्चात् राष्ट्रपति ने सम्मान-चिह्न, सोने का तमगा और बीस हजार डालर का चैक दिया। पति-पत्नी दोनों की आँखों में आँसू आ गए। नीचे उतरे तो तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज उठा।

अगले दिन प्रधानमन्त्री कैरी अकाईनो ने रात्रि भोजन के लिए आमंत्रित किया। ईदी शांत रहा परन्तु बिलकीस खुशी और हैरानी में प्रत्येक वस्तु को देखते हुए कहती यह देखो ईदी ... यह देखो झूमर एवं लाईटें जैसे आकाश में लटक रही हों। वापिस के समय थाईलैंड के बादशाह द्वारा दावत दी गई। तत्पश्चात् बंगला देश में ईदी फाऊंडेंशन की ब्रांच के निरीक्षण हेतु चले गए। पाकिस्तान वापिस आकर

बिलकीस अनेक महीनों तक यात्रा की कहानियाँ सुनाती रही। हर सुबह उसकी कहानी में कुछ नया शामिल होता।

आरमीनिया भुकम्प के समय ईदी फाऊडेंशन द्वारा दी गई सहायता के कारण सोवियत देश द्वारा शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एक समागम में एक धनी सेठ ने कहा ईदी कोई लोक हित नहीं करता। यह तो व्यापार कर रहा है। किसी सेठ को उसका निगरान नियुक्त करना चाहिए। लोगों ने उसे जूतों से पीट कर बाहर निकाल दिया। ईदी को पता चला, हँसते हुए कहा डाकू, नेकी का सर्टीफिकेट लेने आया था।

उसके ऊपर दोष लगाये जाते ईदी फुटपाथों से चरित्रहीन स्त्रियों को उठाकर ले जाता है जिस कारण व्यभिचार बढ़ता है। वह हिन्दुओं और ईसाईयों की तरफ अधिक ध्यान देता है। ईदी कहता मानसिक रोगी को क्या पता व्यभिचार क्या होता है। पुरुष उनके साथ जबरदस्ती करता है, फिर दोष लगाकर कैद में डलवा देता है। आश्रम में पागल गर्भवती स्त्रियों को दाखिल किया गया है। रही बात हिन्दुओं और ईसाईयों की, इस्लाम अनुसार ईश्वर एक है। अय्याश लोगों ने अनेक ईश्वर रखे होंगे परन्तु तिरस्कृत, पीड़ित, दुःखी व्यक्तियों का ईश्वर एक ही है। एक मुसलमान होने के कारण मुझे गर्व है कि मैं जितना प्रेम मुसलमान से करता हूँ उतना ही गैर मुसलमानों से करता हूँ। मेरी एम्बुलैंस केवल गरीब के घर में नहीं जाती अपितु एक धनी व्यक्ति द्वारा बुलाये जाने पर मैं वहाँ भी पहुँचता हूँ। करोड़पति व्यक्ति अपने माता-पिता को बोझ समझकर यहाँ छोड़ जाते हैं। कहते हैं कोई तकलीफ़ हो, ईदी साहिब बताना। जो अपने माता-पिता को नहीं रख सकते, वो ईदी को क्या देंगे? मिलने भी नहीं आते।

रोगियों और अनाथ लोगों की संख्या बढ़ने लगी तो कराची हाईवे पर 65 एकड़ ज़मीन खरीद कर पुरुषों के लिए अलग केन्द्र खोल दिया। मिठादार में जो केन्द्र था वहाँ स्त्रियाँ थीं। मानसिक रोगी सबसे बड़ी समस्या थे। वह गुसलखाने में नहीं जाते थे। जहाँ इच्छा होती वहीं मल कर देते। खुरच खुरच कर शरीर को छील लेते। जूएँ न निकलवाते। दवाईयों का कोई असर नहीं होता था। प्रत्येक सुबह ईदी उन्हें स्नान करवाने जाता, शोर होने लगता ईदू बाबा आ गया .... ईदू बाबा आ गया। बहती नाक और मुँह से झाग निकल रही होती, ऐसे बच्चे उसे चूमना चाहते, उसके गले लगना चाहते। सभी को स्नान करवाकर दवाईयाँ लगाकर, वापस आते हुए कहता हर रोज़ हज्ज कर लेता हूँ।

ईदी के आलोचक धनी मैमन को कैंसर हो गया। ईदी को बुलाकर कहा इंजैक्शन लगाने से इतना दर्द होता है कि मैं घंटों तड़पता रहता हूँ। उस समय मुझे तेरा काम समझ में आता है। ईदी ने कहा यदि मानवता न रही तो कोई काम भी नहीं रहेगा। हम अल्लाह के दायरे से बाहर नहीं जा सकते। एक सेठ ने बुलाया और कहा तुमने अपने लिए तो कुछ भी जमा नहीं किया ईदी। ये सवा लाख रुपये तुम्हारे लिए है केवल, संस्था के लिए नहीं। ईदी पैसे छोड़कर वापिस आ गया।

उसने निर्णय किया कि प्रत्येक 25 किलोमीटर की दूरी पर भलाई केन्द्र खोलेगा। इसके लिए सारे देश का दौरा किया। झुग्गी झोंपड़ियों में रहते लोग टूट चुके थे। नंगे बच्चे पागलों की तरह ईदी की तरफ दौड़ते। आह भरते हुए ईदी कहता रेगिस्तान की भविष्यवाणियाँ। शहरी लोगों को मेरे कपड़े अच्छे नहीं लगते। इन लोगों को मेरे कपड़े कितने सुन्दर लगते होंगे? आज मैंने ये रंगदार कमीज़ क्यों पहनना था? मैं ऐसा जीवन नहीं जी सकता, जिसका ये स्वप्न भी नहीं देख सकते।

बलोचिस्तान में केन्द्र स्थापित करते समय ईदी को किसी ने बताया जब किसी बलोच सरदार की गाड़ी जा रही हो तो आपकी एम्बुलैंस उससे आगे निकलने की गुस्ताखी न करे। यहाँ एम्बुलैंस को चुराया भी जा सकता है। आपके लोगों का अपहरण करके, फिरौती भी मांगी जा सकती है। हैरान होते हुए ईदी ने कहा यह कोई दूसरा देश है? ये मेरा पाकिस्तान नहीं?

यही हुआ। एम्बुलैंस चोरी हो गई। ईदी ने सरदार पास शिकायत की। बलोच सरदार ने इलाके के लोगों को बुलाकर कहा ईदी की एम्बुलैंस वापस करो नहीं तो तुम लोगों से पैसे छीन कर नयी एम्बुलैंस खरीद कर दूंगा। अगले दिन एम्बुलैंस मिल गई।

ढाई सौ केन्द्रों की स्थापना हो चुकी थी जो वायरलैस्स नैटवर्क के माध्यम से सम्पर्क में थे। कोरियर कम्पनी ने निःशुल्क अपनी सेवायें उपलब्ध करवाईं। पाकिस्तान इंटरनैशनल एयरलाईन से प्रत्येक महीने ढाई क्विंटल डाक मुफ्त ले जाने का प्रस्ताव रखा, मंजूर हुआ।

प्रयास यही होता कि जिस इलाके द्वारा दान दिया गया है, उससे उसी इलाके को सुविधा मिले परन्तु अत्यधिक गरीब इलाकों में केन्द्र स्थापित करने हेतु इस नियम को बदला भी जाता। एक हज़ार कर्मचारी अस्थाई डयूटी पर थे, परन्तु कुल खर्च का ये दस प्रतिशत ही थे। एम्बुलैंस 500 के लगभग थीं। ईदी बारह करोड़ पाकिस्तानियों की सुरक्षा हेतु आठों पहर तैयार रहता। परन्तु कोई एयरलाईन लाश ढोने के लिए तैयार नहीं थी। इस कारण ईदी को एयर सर्विस की आवश्यकता हुई।

1988 में अमेरिका के राजदूत राबर्ट ओकले ने हैलीकाप्टर देने का प्रस्ताव पेश किया। ईदी ने कहा यदि इसके साथ कोई शर्त रखी तो मंजूर नहीं, बिना शर्त मंजूर कर लेंगे। जहाज़ मिल गया।

पंजाब के मुख्य मन्त्री नवाज़ शरीफ़ से मिलने के लिए निमंत्रण भेजा। शरीफ़ ने उसके मिशन की जानकारी मांगी। ईदी ने कहा भलाई करने की विशाल एवं स्थिर सियासत अन्य कोई नहीं। बाहरी देशों से ग्रांटें मांगनी बंद करो। पाकिस्तान में अधिक पैदावार हो सकती है, आत्मनिर्भर बनो। तंगी काट लो। बाहरी देशों पर निर्भर न रहो।

हैदराबाद में दिमागी बुखार (Meningitis) की बीमारी का प्रकोप हुआ। यह नर्वस सिस्टम को जकड़ लेती, बुखार, सिरदर्द, रीढ़ की हड्डी में दर्द और किसी केस में मौत। लोग बाढ़ के समान ईदी के केन्द्रों में गए। फ्रांस से ऐमरजैंसी फ्लाईट द्वारा 30 लाख इंजैक्शन मंगवाए गए और पाकिस्तान की फ्लाईटों द्वारा केन्द्रों में भेजे गए। सरकार ने शाबाश देने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। यद्यपि 250 लोगों की मृत्यु हो चुकी थी तो भी लाखों लोगों की जान बच गई। ईदी के वलंटीयरों ने खुश होते हुए कहाअब हम पर्वतों से टकरा सकते हैं।

एक दिन एक युवक विनम्रता पूर्वक मीठादार दफ्तर में आया, सलाम किया। पतला सुन्दर युवक था। कहने लगाजी मेरा नाम जावेद है। मैं बैंक में क्लर्क हूँ। छह मंजिल बिसमिल्ला इमारत ढेर में से आपने मुझे जीवित निकाला था। आपकी बेटी अलमास से मैं निकाह करना चाहता हूँ। बिलकीस आ गयी। उसने कहा अलमास को देख तो ले। उसने कहा कोई ज़रूरत नहीं। आप हाँ कह दो। ढोलकी बजने लगी। सभी ईदी से पूछने लगे आपको पता था कि आप अपने दामाद को बचाने गए हो? गीत गाये गए। सगाई की रस्म पूरी हुई।

दूरदर्शन की तरफ से दोनों को बुलाया गया। हॉल खचाखच भरा हुआ था। दर्शक खड़े होकर तब तक तालियों से उनका स्वागत करते रहे जब तक दोनों बैठ नहीं गये। बिलकीस को स्टेज संचालक ने कहाईदी पर रोशनी डालें। बिलकीस ने कहावह रौशन है। उस पर रौशनी क्या असर करेगी? सचिव ने फिर से कहा अपने विवाह के बारे में बताएँ। बिलकीस ने कहा विवाह जूए के समान होता है जिसमें कोई जीतता है कोई हारता है। हम दोनों की जीत हुई।

अनेक बार ईदी उन घटनाओं पर हैरान होता जिनके कारण ग़ैबी होते। काले पुल के नीचे एक फकीर रहता था। मृत्यु उपरान्त पुल के समीप उसे दफ़ना दिया गया। उसकी कब्र पर मेला लगने लगा। यातायात में कठिनाई आने लगी। सरकार ने ईदी से कहा इसे मीठादार के कब्रिस्तान में दफ़ना दो। दो महीने पश्चात्

जब लाश निकाली गई, न वह खराब हुई, न दुर्गन्ध आई। दूसरे स्थान पर उसे दफ़ना दिया गया।

धोबी घाट के किनारे एक फकीर रहता था। कोई कुछ दे देता तो खा लेता। एक दिन लोप हो गया। दो दिन बाद देखा, नाले में मरा हुआ था। लाश को निकाला, साफ पानी से नहलाया गया। जब उसे एम्बुलैंस में रखा तो एम्बुलैंस में सुगन्ध फैल गई। सभी हैरान, यह क्या हुआ?

एक दिन किसी ने समाचार दिया सरकार ईदी फाऊडेंशन को अपने नियंत्रण अधीन लेना चाहती है, अर्थात् राष्ट्रीयकरण करेगी। ईदी ने कहा ठीक होगा। मैं बिलकीस की चादर ज़मीन पर बिछाकर दान मागूंगा, एक नयी फाऊडेंशन बना लूंगा। एक की बजाए दो फाऊडेंशन बन जाएंगी। दोगुना काम होने लगेगा। ये भी देखेंगे कौन सी फाऊडेंशन अधिक काम करती है, सरकार की या अपनी ईदी फाऊडेंशन। सभी बहुत हँसते और प्रत्येक कर्मचारी स्वयं पर गर्व करता।

किक्रेट खिलाड़ी इमरान खान ने 12 करोड़ खर्च कर कैंसर के ईलाज हेतु एक बड़े अस्पताल का निर्माण किया। किसी कारण ईदी के विरुद्ध अपमानजनक शब्द कह दिए। प्रैस ईदी के पास उसकी प्रतिक्रिया हेतु पहुँची। ईदी से पूछा क्या आपमें कोई मुकाबला है? ईदी ने कहा बिल्कुल नहीं। जो मैं कर रहा हूँ, इमरान वही कर रहा है। जिन रोगियों का ईलाज मैं नहीं कर सका, उन्हें इमरान के पास भेजूंगा। वह स्टार है, मैं खाकसार वह बादशाह है, मैं भिखारी। बादशाह भिखारियों से बहस नहीं करते, अपमानित नहीं करते। मैं उसका सम्मान करूँगा।

एक संपादक ने कहा मौलाना आप सरकार के विरुद्ध बोल जाते हो, यदि संपादक सैंसर न करें तो आपके विरुद्ध देशद्रोही या बगावत का मुकद्दमा दायर हो सकता है। ईदी हँसते हुए कहता नेताओं ने कितनी बार मुझे मूर्ख कहा है। मैं अदालत में वह समाचारपत्र ले जाऊँगा और जज से कहूंगा पागल व्यक्ति बगावत करने के काबिल नहीं होता।

बिलकीस पूछती गली सड़ी लाशों को संभालते समय हम सभी नाक बंद कर लेते हैं। आपको बदबू नहीं आती? ईदी कहता मेरा मानना है, ये लाश मेरी भी हो सकती है, तुम्हारी भी। इनका सम्मान होना चाहिए।

वर्ष 1900 में एम्बुलैंसों की संख्या 500 हो गई जिनमें से 50 सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी अस्पतालों में दान दे दी गईं। एक करोड़ लोग राहत प्राप्त कर चुके थे। भावी पाँच वर्षों में 800 एम्बुलैंसें, पाँच जहाज़ और पाँच हैलीकाप्टर लेने की योजना थी। ईदी के पायलटों को हवाई सेना ने प्रशिक्षण देना स्वीकार कर लिया।

अनेक तेल कंपनियों ने मुफ्त तेल देना स्वीकार किया, शहरी एयरविभाग ने ईदी जहाज़ों के सभी टैक्स माफ कर दिये। तीस लाख बच्चों का पुनर्वास हुआ। 80 हज़ार मानसिक रोगियों तथा नशेड़ी लोगों का ईलाज करके घर भेजा गया। दस लाख बच्चों ने ईदी फाऊडेंशन से प्रशिक्षित नर्सों की सहायता से ईदी मैटरनिटी केन्द्रों में जन्म लिया। जिनको लोग फेंक जाते थे ऐसे बीस हज़ार बच्चों को बचाया गया, 40 हज़ार लड़कियाँ नर्स का काम सीखकर गाँवों में आजीविका कमाने लगीं थीं। दो लाख लावारिस लाशों को दफ़नाया गया। अमेरिका ने 911 ऐमरजैंसी लाईन वाली टेलीफोन एक्सचेंज दी।

उसने पत्नी को बताया मैंने अपनी वसीयत लिख दी है। कराची हाईवे के बड़े प्लाट के कोने में हम दोनों की कब्र होगी। कब्रों के समीप बड़ा लोहे का संदूक ताला लगाकर रख दूंगा। तुम्हें पता है मैं मस्जिद बहुत कम गया हूँ, नमाज़ भी कम पढ़ी है, परन्तु लोग मुझे फकीर समझेंगे। मेरे साथ करामातें जोड़ देंगे। मानसिक रोगियों के रिश्तेदार संदूक में दान डालकर ईलाज मांगेगे, बड़ी लम्बी कारों वाले ध ानी एक्सीडेंट से बचने के लिए दान देंगे। तेरा पति मरने के बाद भी लोगों की जेब कुतरेगा। क्यों है न पूरी ठगी? मेरा कारखाना चलेगा, लोग सच्चा सौदा करेंगे। लाखों को मिली, लाखों को राहत मिलती रहेगी।

अमृता शेरगिल
(30 जनवरी, 1923 5 दिसम्बर, 1941)

अमृता का काल कालोनीअल जागीरदार समाज की परम्पराओं, रीतियों, रुझानों के बदलने का समय है। भारतीय लड़के लड़कियाँ यूरोप जाने के लिए प्रत्येक सम्भव प्रयास करते हैं तथा वहाँ आबाद हो जाने बाद वापिस नहीं आते। अमृता का निर्णय यूरोप से आर्ट की शिक्षा ग्रहण कर भारतीय संस्कृति को चित्रित करना था। ऐसा करने के लिए यहाँ आना, प्राचीन आर्ट का अध्ययन करना तथा पश्चिमी औज़ारों एवं तकनीकों द्वारा भारतीय सभ्याचार को अभिव्यक्त करना था। धनी सरदार की बेटी, तीक्ष्ण बुद्धि, उच्च विद्या एवं सुन्दरता की मालकिन, प्रत्येक दृष्टि उस पर ठहर जाती। कहती थी आर्टस्टि की ज्ञानेन्द्रियों का सुचारु होना अनिवार्य है। यदि मैं आँखो से किसी सुन्दरता को पीने में असफल हुई, फिर कागज़ पर कैसे चित्रित करूँगी? मेरे सामने स्थूल साकार जगत् है, उसे अपने मन में उतार कर रंगों द्वारा अनुवाद करना है। दृश्य, ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित, उत्तेजित करेंगे, उतेजना कैनवस पर उतर कर शांत हो जायेगी।

ऐमिली डिकिनसन की कविता में से अमृता की शख्सीयत प्रकट होती है

मैं सुगन्धियों में घुली शराब हूँ,
मुझे ओस की बूंदों ने बेचैन किया।
आसमान की नीली आग में पक कर,
मैंने बसंत की अनंत सुन्दरता में कदम रखा।

अमृता का दावा है कि बेशक धार्मिक आर्ट हो, आर्ट, कामुकता से स्वतन्त्र नहीं होता, कभी कभी इतना ताकतवर कि शारीरिक सीमाएँ पार कर जाए।

पैरिस के ईकोल नैशनल के बीओ आर्टस कॉलेज (National Superieure des Beaux-arts) में शिक्षा प्राप्त कर जब अपने जद्दी फार्म हाऊस में आई, उसकी आयु इक्कीस वर्ष थी। कौन जानता था उसकी आयु के केवल सात वर्ष बाकी बचे हैं। कैनवस के सामने ब्रश पकड़ कर बैठती तो उसे पाल गोगैं दिखाई देता, कभी सेज़ान, कभी वह अपने गाँव की हवेली के बाहर खेतों की ओर देखती तो उसे वान गाग का गाँव मारले दिखाई देता। उसने पैरिस के स्कूल ऑफ आर्ट से शिक्षा ग्रहण की पर उसके सामने अजंता एलोरा, खुजराहो की कला अपना लोहा मनवा रही होती। यदि ननिहाल का प्रभाव होता तो उसे भारतीय स्त्री-पुरुषों के नैन नक्श अच्छे नहीं लगने थे। हुआ इसके विपरीत, पश्चिमी तकनीक सीखकर उसने भारतीय दृश्यों को देसी रंग रूप में कैनवस पर उतारा। डॉक्टर गीता के शब्दों में वह लम्बी चोंच वाली

छोटी चिड़िया थी जो प्रत्येक फूल का रस पीने के लिए उतावली थी। भारतीय आभूषण, चमकती रेश्मी साड़ियाँ, लम्बे झुमके पहनकर निकलती, प्रत्येक सुबह उसे नया इश्क और नया ख्याल चाहिए था। उसकी मानसिक उथल पुथल अनन्त थी, इसी बेचैनी में से उसकी शांत कृतियाँ निकलीं। उसे अहसास था कि वह धनी परिवार की बेटी और सुशिक्षित कलाकार है। इस आत्मविश्वास के कारण ही उसकी इच्छा थी कि भारत का आधुनिक कला से परिचय करवाया जाये। उसने निर्धन, उदास ग्रामीण स्त्रियों को रूप प्रदान किया।

मजीठिया खानदान, शेरगिल परिवार, महाराजा रणजीत सिंघ का रिश्तेदार था जिस कारण उनके पास एकड़ों में नहीं मुरब्बों में ज़मीन थी। क्योंकि सरदार अतर सिंघ मजीठिया ने महाराजा रणजीत सिंघ की मृत्यु के पश्चात् उसका राजपाट बचाने हेतु अंग्रेजों से युद्ध किया, जिस कारण सम्पत्ति का एक बड़ा भाग अंग्रेजों ने छीन लिया। अतर सिंघ के पुत्र, अमृता शेरगिल के बाबे, सूरत सिंघ को बनारस में नज़रबंद कर दिया गया। परिस्थितियाँ बदलती देख ये सरदार 1857 में युद्ध के समय अंग्रेज़ों की सहायता हेतु आ गया। युद्ध में विजयी होने पर अंग्रेज़ों ने उसकी छीनी सम्पत्ति वापिस कर दी और उसे राजा की उपाधि मिली। यू. पी. के गोरखपुर ज़िले में उसे और ज़मीन अलॉट की गई।

सूरत सिंघ के घर 1870 में उमराउ सिंघ का जन्म हुआ। अमृता के चाचा सुन्दर सिंघ ने गोरखपुर में गन्ने की खेती की और शूगर कारखाने की स्थापना की। यह धनी सरदार अंग्रेज़ी सरकार के प्रति वफादार रहा, समाज सेवा की संस्थाओं को दान देता, सिक्ख संस्थाओं को धन देता, व्यापारिक एवं परमार्थक दोनों पक्षों से सफल।

उमराउ सिंघ की रुचि संस्कृत, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन में थी। उमर खय्याम के अतिरिक्त उसने सरमद की रूबाईयों का अग्रेंजी में अनुवाद भी किया। ग्रह विज्ञान, योग और लिपियों की बनावट में रुचि रखता। मुहम्मद इकबाल के साथ मित्रता रही, टालस्टाय के लेखन से प्रभावित होकर शाकाहारी बन गया और हमेशा के लिए विस्की छोड़ दी। अपने पिता के बारे में अमृता ने लिखा
मेरे सरदार पिता को सारा पंजाब जानता है। शांत चित्त, दर्शन एवं धर्म का विद्यार्थी, दिखावे से दूर, सामाजिक मुक्ति, विशेषतः नारी मुक्ति का समर्थक। मेरी माँ की रुचि कला में थी। कला क्षेत्र मेरी प्रेरणा मेरी माँ बनी। हम दोनों बहनों का जन्म बुदापैसट में हुआ और युद्ध के पश्चात् भारत आईं।

हंगेरियन प्रोफैसर गिऊला जरमानू भारतीय संस्कृति पर खोज कर रहा था, उसकी मित्रता उमराउ सिंघ से हो गई और शिमल में उसकी मेज़बानी में अनेक मास व्यतीत किए। इस बारे में अमृता को उमराउ सिंघ ने लिखा आत्म की खोज और पुस्तकों के अध्ययन ने मेरी उदासी को कम नहीं किया। मैं एक पवित्र एवं नेक रूह से मिला, वह भी किसी तलाश में है बेशक हमारे मार्ग अलग अलग हैं। विचार विमर्श करते समय उसने मेरी अनेक शंकाओं का निवारण किया। मैंने उसकी रुचि संस्कृत के ध्वनि विज्ञान में उत्पन्न की। मेरे पश्चात् वह यह खोज कार्य सम्पूर्ण करेगा, मुझे विश्वास है।

उमराउ सिंघ का बाकी परिवार धन और यश प्राप्ति में मस्त था, अकेला एकांत प्रिय मानव अध्यात्म की तलाश में था। धन-दौलत की कमी नहीं, परन्तु विरक्त, निर्लेप। फोटोग्राफी का शौक था परन्तु साधारण फोटाग्राफर नहीं, फोटो कलाकार, जो दृश्य की अपेक्षा प्रभाव को पकड़ता। उसकी 80 फोटों प्राप्त हैं, उसकी अपनी भी हैं, सभी फोटो आत्मचिन्तन और वियोग को प्रकट करती हैं। वाईवां ने बताया कि शीशे पर उसके द्वारा खींची गई एक दर्जन रंगदार तस्वीरें हैं। उस समय बहुत कम लोगों को आटोक्रोम नामक इस विधि का ज्ञान था। अमृता, पिता को समझाती, सिद्ध करती कि कैमरा मानवीय मन का स्पर्श नहीं कर सकता, यह काम चित्रकार का है।

मजीठिया सरदार सूरत सिंघ की मृत्यु के पश्चात् अमृता के चाचा को उत्तराधिकारी मानकर अंग्रेज़ों ने उसे राजा की पदवी दे दी। 1888 में पिता की मृत्यु के बाद उसके दोनों पुत्रों को कैपटन गुलाब सिंघ अटारी की निगरानी में रखा गया। गुलाब सिंघ अटारी वाला सरदार था जिसकी पुत्री से उमराउ सिंघ का विवाह हुआ, चार बच्चे बलराम, सत्यावान, विवेक पुत्र और पुत्री सुमेर का जन्म हुआ और फिर इन बच्चों की माँ का निधन हो गया। बड़ा भाई अंग्रेज़ों के साथ काम करने लगा तो उमराउ सिंघ इन जिम्मेवारियों से मुक्त हो लंदन चला गया। लंदन में उसकी मुलाकात महाराज दिलीप सिंघ की शहज़ादी बांबा सोफ़िया जिंदां दिलीप सिंघ से हुई। बांबा, उमराउ सिंघ पर फिदा हो गई, वह उससे विवाह करवाना चाहती थी। शहज़ादी बांबा की तीव्र अभिलाषा थी लाहौर जाकर अपने बाबा महाराज रणजीत सिंघ की हकुमत की निशानियाँ देखने की। उसने उमराउ सिंघ को अपनी इच्छा बताई तो सरदार अपने साथ पंजाब ले जाने के लिए तैयार हो गया। बांबा ने अकेले भारत आने की बजाय अपने साथ अपनी हंगेरियन सचिव मैरी ऐंतवुनैत को भी यात्रा हेतु तैयार किया। ऐंतवुनैत एक सुशिक्षित, नेक और सभ्यक लड़की थी जो लंदन में स्थाई

रूप से बसने की कोशिश कर रही थी। ऐंतवुनैत सुन्दर होने के साथ-साथ संगीतकार भी थी, बांबा की संगीत में रुचि थी, इसलिए यात्रा रोचक रहेगी। जब भूरे केशों वाली जवान ऐंतवुनैत को उमराउ सिंघ ने देखा तो उसके मन में कंपकंपी होने लगी। उमराऊ सिंघ का क्या दोष, वह थी ही ऐसी, देखते ही दर्शक की धड़कन का बढ़ना स्वाभाविक था।

उमराउ सिंघ खामोश रहने वाला शरीफ सरदार था जिसकी रुचि साहित्य, दर्शन के अध्ययन में थी। उसने इस लड़की के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा, जिसे उसने सहमति दे दी। वर्ष 1912 में लाहौर में सिक्ख परम्परा अनुसार आनंदकारज की रस्म हुई। सदियों से लाहौर का प्रभाव महानगर के रूप में स्थापित था। अमृतसर का प्रभाव सिक्ख जाति के लिए शिरोमणि रहा है परन्तु लाहौर में विश्व के प्रसिद्ध व्यक्ति आते जाते रहते, अनेक विद्याओं, कोमल कलाओं और व्यापार का आदान-प्रदान होता। अमृतसर उत्तरीय भारत की धार्मिक राजधानी थी और लाहौर सभ्याचारक राजध ाानी। बांबा लाहौर में रहने लगी। यहाँ उसने अंग्रेज़ डॉक्टर सरदलैंड से विवाह करवाया, निसंतान रहे। 1957 में जब उसकी मृत्यु हुई तो अपनी सारी सम्पत्ति, हवेली, पेटिंगें अपने खानसामे करीमबख्श सुपरा के नाम कर गई। (पाकिस्तान सरकार के पुरा-विभाग ने करीमबख्श से कला कृतियों को खरीद कर सुरक्षित संभाल लिया, जिन्हें मैं लाहौर आरकाईवज़ में देखकर आया हूँ।- मन्नू)

लाहौर से अमृतसर आकर कुछ समय अपनी हवेली में रहे फिर हंगरी जाने का फैसला किया। हंगरी जाने का निर्णय करने के समय एक कारण यह था कि संकटग्रस्त अंग्रेजों से हिन्दुस्तान छीना जा सकता है। सरदार उमराउ सिंघ का महाराज दिलीप सिंघ के परिवार से सामीप्य सम्बन्ध होने के कारण वह अंग्रेज़ी सरकार के संदेह के केन्द्र में आता था। अपने बड़े भाई की तरह अंग्रेज़ों की सेवा करने की बजाय वह मिस बांबा के समीप होने के कारण मुसीबत बन सकता था। इस तनाव से बचने के लिए वह पत्नी सहित हंगरी चला गया। वहाँ से दस वर्ष पश्चात् भारत वापिस आया। विवाह के एक वर्ष पश्चात् 30 जनवरी 1913 को अमृता शेरगिल का जन्म हुआ। रेशमी काले केश, बड़ी, सुन्दर, हैरानी में घूमती आँखें विचित्र संसार को जानने का प्रयास करती रहतीं। माँ कहती ये कितनी सुन्दर है। पिता कहता इसकी
जानने की शक्ति बहुत तीक्ष्ण है। एक वर्ष पश्चात् दूसरी बेटी इंदिरा का जन्म हुआ।

मैरी ऐंतवुनैत का बाबा धनाढ्य, जिंमीदार, आस्टरीया की फौज में अफसर था। मैरी प्यानो बजाने में कुशल तो थी ही उपेरा में काम करने के लिए रोम में शिक्षा ग्रहण की। उपेरा में काम तो नहीं किया परन्तु उसकी आवाज़ में आकर्षण था, लय

थी, इटालियन भाषा उच्चारण में निपुण यहूदी परिवार की बेटी थी। विवाह के तुरंत बाद मैरी अपनी बहन बलांका के घर में रही। बलांका का पति संसद का सदस्य था और उसका सात कमरों वाला घर संसद के समीप था। उसने मैरी और उमराउ सिंघ को दो बैडरूम का सैट दे दिया।

माँ ने अमृता के बारे में लिखा कुछ समय पहले की कोमल बेबी शीघ्रता से चेतन हो रही थी, शरारती हो रही थी। झूले में खामोश लेटी हुई आने जाने वालों को हैरानी से देखती रहती, कोई समीप आता तो हँसने लगती, फिर कमरे में घुटनों के बल चलने लगी, शोर करती रहती, पक्षियों जैसी चहकती आवाज़, नौ मास की अमृता चारपाई को पकड़ कर तेज़ कदमों से दौड़ती, पकड़ते तो खुशी से चहकती, हँसती, जुलाई 1914 तक छोटे छोटे हंगरी वाक्य बोलने लगी थी, पड़ोसी बच्चों के साथ खेलने के लिए लॉन में जाती। सबसे अधिक प्रेम अपनी छोटी बहन इंदिरा से करती। अपने सभी खिलौने उसके आगे रख देती, इच्छानुसार पक्षियों के नाम रखकर उसे आवाज़ें देती। जब 17 नवम्बर, 1918 को **बपतिमसा** दिया गया तो अमृतसर को याद करते हुए पिता ने अमृता और माँ ने अनतोनिया नाम रखा। माँ ने लिखा वे दिन बहुत ही खुशी भरे थे। अमृता साढे पाँच वर्ष की थी, पढ़ाने के लिए टयूटर को रखा। पढ़ाई की चिंता नहीं थी, केवल बच्चे अनुशासन में रहे इसलिए। दो महीनों में ही अमृता ने हंगेरियन लिखनी और पढ़नी सीख ली। रंगदार पैंसिलों से तस्वीरें बनाती रहती। प्रत्येक खिलौने की तस्वीर बना देती। आस-पास उड़ते, बैठते पक्षियों की तस्वीरें। बाकी बच्चे छपी ड्राईंग में रंग भरते, अमृता अपना स्कैच स्वयं तैयार करती। यदि कोई ठीक करने की कोशिश करता, रोक देती, बेशक गलत बनाये, पर बनायेगी स्वयं ही। कहती बने हुए स्कैचों में रंग भरना कौन सा कठिन है? कठिन तो स्कैच बनाना है।

बुदापैस्ट शहर से दूर इस परिवार ने गाँव में अपना घर बनाया। यहाँ के ग्रामीण जंगल, पशु, पक्षी उसके मन मस्तिष्क में उतरने लगे। यहीं गाँव में उसका मौसेरा भाई विकटर एगन उसके बचपन का साथी था। दोनों के अनेक मासूम रहस्य सांझे थे। शेरगिल परिवार जब भारत आता, शुरू शुरू में अमृता और विकटर इसका विरोध करते। अमृता के मन में हमेशा यही विचार आता, वह विकटर के साथ आयु व्यतीत करेगी।

अमृता कहती मुझे भाषा में निपुणता प्राप्त करना अच्छा लगता है। रंगों की भाषा के अतिरिक्त मुझे कुछ समझ में नहीं आता। मुझसे कोई पूछे पेटिंग कब शुरू की तो मेरे पास कोई उत्तर नहीं। पता नहीं कब से, शायद होश संभालने से भी

पहले। मुझे प्यानो का पता है कब वादन शुरू किया, रंगों का, स्कैचों का काम बचपन से चल रहा है। मेरा मन मुझे निरन्तर यही समझाता है, मैं रंगों के लिए बनी हूँ और किसी के लिए नहीं।

बाद में विकटर ने बताया बचपन से देखता आया हूँ, वह कागज़ के प्रत्येक टुकड़े पर चित्र बना देती, डाक के लिफाफे पर, दीवारों पर। कोई स्थान नहीं था जहाँ तस्वीर न हो। कभी काले रंग की पैंसिल का प्रयोग नहीं किया। प्रत्येक समय रंग बिरंगी पैंसिलें उसकी जेब में होतीं। अजीब सूरत की अजीब मूरतें, कोई कोई मानवीय नैन नक्श वाली भी होती।

माँ हंगेरियन लोक गीत गाती तो अमृता पूछती ये गीत पेंट करके दिखाऊँ? माँ लोक कहानी सुनाती, अमृता कहानी को कागज़ पर चित्रित कर देती। इसका कारण माँ के गहरे भूरे केश थे या कुछ और, गहरे रंगों का प्रयोग करती। यदि कहीं उसने माता-पिता के प्रभाव को स्वीकार किया होता, वह संगीतकार होती, माता-पिता को रंगों के संसार का न तो ज्ञान था, न ही रुचि। इस रास्ते का चयन उसने स्वयं किया था। सत्य यह है कि माँ मॉडर्न आर्ट के विरुद्ध थी, उसे ये बिल्कुल बकवास प्रतीत होता था, पागलों का खेल। मॉडर्न आर्ट देखते ही वह हँसने लगती।

1920 में हंगरी की राजनैतिक परिस्थितियाँ बिगड़ने के कारण परिवार ने भारत जाने की आज्ञा मांगी, सरकार ने इंकार कर दिया क्योंकि खुफिया रिपोर्टों अनुसार उमराऊ सिंघ को बागी शख्स लाला हरदयाल, राजा महेन्द्र प्रताप, हरबंस सिंघ अटारी मिलते रहे थे। भाई ने सहायता की तो आज्ञा मिली। दस वर्ष हंगरी में व्यतीत करके 2 जनवरी, 1921 को भारत के लिए रवाना हो गये।

वापसी में पैरिस जाने का निश्चय किया ताकि बच्चों को पैरिस की आर्ट गैलरियाँ और उपेरा दिखाया जा सके। अमृता ने असली मोनालिज़ा पेंटिंग को पहली बार देखा तो मग्न हो उसे देर तक खड़ी देखती रही। पहले माँ के पास इसकी नकलें देखी थीं। समुद्रीय जहाज़ में अमृता का आठवां जन्मदिन मनाया गया। अमृता लिखती है मालवा जहाज़ पर कूच बिहार की महारानी और उसकी सेविकाओं की उपस्थिति में केक काटा गया, मिठाई खाई।

जवान होकर उसने ऐलान कर दिया कि वह आर्ट के अतिरिक्त कुछ नहीं करेगी तो माँ ने उसके लिए अध्यापक ढूंढने शुरू कर दिये। शिमला में मेजर विटमार्श रह रहा था, कुछ समय के लिए उसने प्रशिक्षित किया। दूसरा अध्यापक बेवां पैटमन स्त्रियों के स्कैच बनवाने में निपुण था और लंदन के स्लेड आर्ट स्कूल में शिक्षक रह चुका था। उसने प्रशिक्षण देना शुरू किया। पचास वर्ष बाद उसने अपने मित्र को

पत्र में अमृता के बारे में लिखा वह अद्भुत प्रतिभा की धारणी थी। देर तक कठिन मेहनत करती। एक रेखा खींचकर वह तस्वीर के पूरे प्रभाव को बदल देती। तीन डाईमैंनशनों वाले संसार को कागज़ पर दो डाईमैंनशनों में कैसे उतारना है, वह जान गई थी। जितना अधिक से अधिक सिखा सकता था, सिखा दिया।

फरवरी में मुम्बई, दिल्ली होते हुए लाहौर पहुँचकर भाई की हवेली में ठहरे। पहली पत्नी के बच्चों को सम्पत्ति का बड़ा भाग दे दिया। मजीठा और लाहौर के घर पहले बच्चों के हिस्से में आने पर स्वयं के लिए शिमला में 2500 वर्ग गज़ का बंगला खरीदा। मैरी ने इस घर की सजावट यूरोपियन जागीरदारों की तरह कीमती सामान से की। छोटी बहन इंदिरा की रुचि संगीत में थी, उसने नृत्य-गायन सीखना शुरू किया।

वर्ष 1921 में शिमला में एक इटालियन मूर्तिकार युवक आया और शेरगिल परिवार के साथ आना जाना हो गया। मैरी इतालवी भाषा में कुशल थी, जल्दी ही दोनों में इश्क हो गया। मूर्तिकार की पत्नी और बच्चे फलौरैंस शहर में थे, दोनों ने सलाह की कि बच्चों को सनातनी इतालवी कला और भाषा की झलक दिखाने के लिए फलोरैंस जाया जाये। यह एक प्रकार से रोमांटिक साजिश थी। पहले युवक गया, बाद में मैरी अपनी बेटियों सहित फलोरैंस आ गई। जनवरी 1924, अमृता को सांता ऐनंसीआटा में दाखिल करवा दिया गया। लड़की को स्कूल का सख्त रोमन कैथोलिक व्यवहार पसंद नहीं था। माँ का विचार था कि फलोरैंस शहर का वातावरण उसे इटालियन आर्ट के समीप ले जायेगा। जहाँ तक सम्भव हो सका माँ ने धार्मिक शिक्षा देनी चाही, यहाँ तक कि अल्पायु में **बपतिमसा** भी दिया परन्तु दोनों लड़कियों की वृत्ति धार्मिक न बन सकी। अमृता मानती है कि फलोरैंस की संक्षिप्त यात्रा से उस पर इटालियन प्रभाव अवश्य पड़ा। वह कमज़ोर भावुक भारतीय शैली को फेंकने की अभिलाषी थी परन्तु यहाँ यूरोप जैसे उस्ताद शिक्षा देने के लिए नहीं थे, न संतुलित प्रशंसा मिले, न स्वास्थ्यवर्धक आलोचना। स्कूल से निकलने के लिए नंगी तस्वीरें बनानी शुरू कर दीं। शीघ्र ही माँ के इश्क का भोग पड़ गया तो अमृता को स्कूल से हटा लिया गया। अमृता ने लिखा पहले तो मैं फलोरैंस के वातावरण से नफ़रत करती रही परन्तु अब बोध होता है कि मुझ पर उसका स्थायी प्रभाव पड़ा। रैनसां की कृतियाँ मन में बस गईं जिन्होंने बाद में पैरिस में रंग दिखाया। कभी कभी मुझे गर्व होता कि मैं इटालियन मास्टरज़ में से हूँ, उनकी संतान हूँ।

फलोरैंस से वापिस आई तो माता-पिता ने सलाह करके शिमला के अच्छे ईसाई स्कूल में दाखिल करवा दिया। जैसे बाकी बच्चे ग्रहण करते हैं, अमृता भी वैसे

ही विधिवत् शिक्षा ग्रहण करे। पेटिंग और संगीत खाली समय में घर आकर सीखे। उसे कक्षा के बंधन में कैसे बांधा जा सकता था? स्कूल में घोषणा कर दी मैं नास्तिक हूँ, न ईश्वर में विश्वास, न धर्म में। उठाओ अपनी बाईबल। कहीं अन्य बच्चों पर भी इसका प्रभाव न पड़े, प्रबन्धकों ने शिमला की जीसस ऐंड मेरी कॉनवैंट में से मनमानी करने के दोष में बाहर निकाल दिया तो मौज बन गई, ड्राईंग या प्यानो केवल दो काम करती। माता-पिता ने घर में टयूटरों के माध्यम से शिक्षा देना जारी रखा।

अमृता की माँ ने फैसला सुनाया कि बच्चों का भविष्य, पढ़ाई-लिखाई बहुत ध्यान मांगती है। परवरिश के लिए पंजाब का वातावरण उचित नहीं। परिवार फिर हंगरी पहुँच गया। माँ ने दूसरा फैसला सुनाया अब गाँव में नहीं, बुदापैसट शहर में रहना है, आखिर सभ्यक संसार का कार्य-व्यवहार भी तो सीखाना है। वह प्यानो-वादन की शौकीन थी। उसने अमृता को भी प्यानो-वादन सीखाया। कभी माँ की इच्छा रही थी कि वह प्यानो-वादक स्टार बने। परन्तु परिस्थितियों ने साथ नहीं दिया। अब वह अपनी बेटी को प्यानो-वादक स्टार बनायेगी। छोटी इंदिरा भी सीखने लगी। दोनों की प्रतिभा देख माता-पिता सन्तुष्ट थे, उन्हें विश्वास था जिस क्षेत्र में ये कदम रखेंगी निपुणता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। ये लड़कियाँ बड़ी होकर कितनी उलझनें, मुसीबतें खड़ी करेंगी, इसका किसी को क्या पता था?

इन्हीं दिनों में पिता उमराउ सिंघ शेरगिल ने फारसी शायर उमर खय्याम की कविता का अंग्रेजी अनुवाद करना शुरू कर दिया। अमृता पिता की बातें सुनती, अनुवाद पढ़ती। खय्याम की खुमारी के रंग उसके चित्रों में उतरने लगे। इस समय में बनाई गईं तस्वीरें अन्यों से अलग थीं।

ग्रीष्म ऋतु में शिमला रहते और सर्दी में परिवार गोरखपुर के समीप सराया गाँव के फॉर्म हाऊस में जा पहुँचते। यहाँ आऊट डोर पेंटिंगों में अमृता ने पूर्णतः ग्रामीण यू.पी. संस्कृति को चित्रित किया है। स्त्रियाँ उसका कहना मानकर मॉडल बनने के लिए घंटो उसके सामने बैठी रहतीं। यद्यपि दक्षिण में भी घूम चुकी थी परन्तु गोरखपुर, शिमला और मजीठा उसकी दृष्टि के केन्द्र में रहे।

बारह वर्षीय अमृता ने पड़ोस में तेरह वर्षीय लड़की का विवाह देखा, पति की आयु पचास वर्ष, जिसकी तीन पत्नियाँ पहले भी थीं। लड़की कीमती आभूषण और वस्त्र पहने हुए, शृंगार की हुई गुड़िया के समान, सहमी खड़ी हुई, बड़े समारोह में विवश, लाचार, कुर्बानी के लिए तैयार। इस दृश्य ने अमृता पर भारतीय नारी की विवशता का गहरा घाव किया। उसकी सभी तस्वीरों में चित्रित नारियाँ उदास हैं।

खामोश रहकर अत्याचार सहने वाली स्त्रियाँ। उसके द्वारा चित्रित नारी भीड़ में गुम दिखाई देती है, दबी हुई हिंसा, आँखों में अभिव्यक्त होती है, किसी स्थान पर नारी छुरी से आत्महत्या करने के प्रयास में है।

जवानी में उसकी रोमांटिक स्वतन्त्रता का खेल इस पृष्ठभूमि का उपभावुक, नादान प्रतिक्रम है। बगावत यदि सार्थक परिणामों की ओर नहीं बढ़ी तो व्यापक तबाही के अतिरिक्त क्या प्राप्त होना है? इससे समानता रखती बगावत अमृता प्रीतम ने भी की थी। अमृता प्रीतम का आत्मकथन है जैसे कंजरों के पास बहुत कला होती है, उसी प्रकार, हम जो कलाकार है, हमारे पास बहुत कंजरखाना है।

विवाह तो करवा लिया परन्तु मैरी ऐंतवुनैत, शेरगिल के साथ खुश नहीं थी, गृह क्लेश रहता, मैरी आत्महत्या की धमकियाँ देती, पिता संन्यास लेने की बातें करता। ऐसा वातावरण बाल-हृदय को प्रभावित अवश्य करेगा। एक पेंटिंग ऐसी है जिसमें एक क्रोधी औरत पुरुष पर इस प्रकार झुकी हुई है जैसे चाकू से वार करने के लिए आतुर हो।

भारतीय कूटनीतिज्ञ बी.के. नेहरु की पत्नी फौरी, हंगरी निवासी थी। इनकी रिहायश भी शिमला में थी। शेरगिल परिवार के साथ व्यतीत किए गए कुछ दिन 96 वर्ष की आयु में भी फोरी को याद थे, बताती है मैरी ऐंतवुनैत को यह पसंद नहीं था कि फोरी हिन्दुस्तानी बने। अगस्त 1936 को फोरी को पत्र में मैरी ने अंततः एक हंगेरियन लोक गीत लिखा, जिसका अर्थ है :

ओ, हंगेरियन अपने वतन साथ वफा करना,
तेरा देस आज तेरा झूला, तेरा देस कल को तेरी कब्र।
जनम वक्त राखा, मौत वक्त रखवाला, ओ हंगेरियन।
पर और कहीं किते तेरा स्थान नहीं ओ हंगेरियन।

फोरी बताती है कि शेरगिल का परिवार पूर्णतः हंगेरियन था, खाना-पीना यहाँ तक कि रहन-सहन, पहनना सभी कुछ। मैरी ने सारी उम्र भारतीय लिबास नहीं पहना।

जून 1924 से अप्रैल 1929 तक परिवार शिमला में रहा। 1927 में माँ ने भारत देखने का निर्णय लिया, अमृता उस समय तेरह वर्ष की और इंदिरा बारह वर्ष की थी। शेरगिल, सराया में अपने फार्म हाऊस में ही ठहरा और ये तीनों बनारस, कलकत्ता और दार्जलिंग की यात्रा के लिए निकलीं, वापिसी लखनऊ से होगी। ये वर्ष भारत दर्शन के अतिरिक्त एक अन्य कारण से भी अमृता के लिए स्मरणीय बन गया।

हंगरी से अमृता का एक मामा इरविन बैकटे, शेरगिल परिवार से 1927 में मिलने आया। बैकटे ने तिब्बत और लद्दाख तक 1500 कि. मी. पर्वतीय यात्रा की। यद्यपि उसकी रुचि पेटिंग में थी परन्तु उसकी प्रसिद्धि भारतीय संस्कृति के विद्वान् के रूप में हुई। बच्चों को वह जन्म से जानता था, उमराउ सिंघ से भी उसकी मित्रता हो गई क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में सांझ थी। वह तीन वर्ष भारत में रहा। उसने लिखा "भारत अपनी प्राचीन परम्परा एवं संस्कृति को भूलकर यह सोचने लगा है कि पश्चिमी कला शिरोमणि है। शिक्षित भारतीय लोग अपने पूर्व की मूल आत्मा से दूर होते जा रहे हैं और पश्चिम के कूड़ा-करकट में कुछ निरर्थक तलाश रहे हैं। कोई देसी व्यक्ति अपनी प्राचीन हिन्दु पेंटिंगों, मूर्तियों में से कुछ प्राप्त करने का प्रयास करता है, तो उसे नज़रअंदाज कर देते हैं। पश्चिम के द्वितीय, तृतीय स्तरीय व्यक्तियों की भी प्रशंसा हो रही है, सम्मानित किया जा रहा है।" उसने हंगरी निवासियों को रामायण, महाभारत और कामसूत्र का ज्ञान दिया। *हिस्टरी आफ इंडियन आर्ट* उसका शाहकार है जो उसकी मृत्यु के वर्ष 1963 में प्रकाशित हुआ फिर जर्मन में उसका अनुवादित संस्करण प्रकाशित हुआ। उसने सिद्ध किया कि भारतीय आर्ट चिरस्थायी है, इस्लाम की कला के प्रभाव को स्वीकार किया, आश्चर्य है कि जिन स्थानों पर कभी मुगल राज्य नहीं रहा, वहाँ के हिन्दु कलाकारों ने भी इस्लामी कला से उत्तम प्रभाव ग्रहण किए। यही इसके जीवित रहने का भेद है।

शिमला में रहते हुए उसने अमृता को हंगेरियन आर्ट के क्लासिकल मास्टरों का पता दिया। सामने मॉडल को बिठाकर कैसे पेंटिंग करते हैं, प्रारम्भ में अमृता ने बैकटे से ही सीखा, घरेलू नौकर नौकरानियों को बिठाकर पेंटिंग करती। उसे अनुभव हुआ कि अमृता असाधारण कला की धारणी है। वह स्वयं कलाकार था, अच्छे स्कूलों से सीखता रहा परन्तु जब अनुभव हुआ कि इससे शिखर तक नहीं पहुँच सकेगा तो दूसरे कारोबार करने लगा क्योंकि उसे साधारण स्तर की कला पसंद नहीं थी। उसे लगा जहाँ वह पहुँच नहीं सका, अमृता पहुँचेगी। वह विश्व की 22 भाषाओं का उच्चारण कर लेता था। तिब्बतिन इंडोलोजी में उसे प्रसिद्ध स्कालर के रूप में जाना जाता है। वह माता-पिता को इस बात के लिए सहमत करने में सफल हो गया कि अमृता को पैरिस जाना चाहिए। उसका परिचय पैरिस की अनेक वर्कशापों एवं कलाकारों से है, इस कारण कोई दिक्कत पेश नहीं आएगी। उमराउ सिंघ बहुत मुश्किल से माना। लिखता है मैरी के साथ पैरिस जाने के लिए मैं मान तो गया, परन्तु एक पल के लिए भी उधर जाने का मन नहीं था। हंगरी में आठ वर्ष का वनवास काट कर तो आया हूँ, और क्या चाहिए? इस वनवास ने जो जो सीखाया, वह कड़वा

था। भारी मन से मैं अपनी पुस्तकों का बैग उठाकर चला आया, यही सोचकर कि कुछ समय का कष्ट और है। परन्तु यही समय लम्बा होकर पाँच वर्ष का हो गया, इस समय में मेरा भाई और पुराने सभी मित्र बिछुड़ गये।

उन दिनों में यह विस्मयजनक निर्णय था, बेटी की शिक्षा, शिक्षा क्यों, आर्ट की ट्रेनिंग हेतु सारा परिवार देश छोड़कर लम्बे समय के लिए दूसरे देश में प्रवास करे। वर्ष 1929, समुद्रीय यात्रा शुरू कर दी। 16 वर्षीय अमृता पैरिस, विश्व के सभी कलाकारों के मक्के में पहुँच गई जहाँ वह अधिकांश समय आर्ट में व्यतीत करेगी। नस्ल, धर्मों, साहित्य और कोमल कलाओं का आदान-प्रदान होगा, स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलेंगे। जीवन की पूर्ण स्वतन्त्रता विद्यमान। गर्मियों में पैरिस पहुँचे, प्रोफैसर पीर वेलैंट ने प्रसन्नता सहित अपने विख्यात स्कूल ग्रैंड शामीअर में दाखिल कर लिया। अमृता की आयु 16 वर्ष की थी। यहाँ उसने मानवीय शरीर की संरचना सीखी। यहाँ प्रशिक्षण के समय उसे एपैंडेसाईटस की तकलीफ को भी सहन करना पड़ा। आप्रेशन सफल रहा, पुनः अपना काम सीखने लगी।

इसके बाद इससे बड़े स्कूल ईकोल नैशनल में दाखिला लिया यहाँ का उस्ताद लूसीआ सिमोन था। उत्तर-प्रभाववादी कलाकारों में सिमोन प्रमुख था। इतनी कम आयु की लड़की को दाखिल नहीं करता था परन्तु प्रतिभा देखकर उसने आज्ञा दे दी। अमृता बताती पढ़ाता तो वह था ही नहीं। कुछ सुझाव देकर हमे सोचने, कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित करना, हमारी तकनीकी त्रुटियां दूर कर देता। जिन शिक्षार्थियों में नवीन बिम्ब सृजना की क्षमता होती, उनकी भरपूर प्रशंसा करता। कहता रंग, रूप, ख्याल की आत्मा सादगी है। माँ बहुत प्रयास करती कि अमृता पैरिस को हाई-फाई सोसाईटी दिखाये, उपेरा दिखाये, सिनेमा दिखाये, लोग देखें कि पूर्व की शहज़ादी कितनी सुन्दर है, उसका पालन-पोषण कितने अच्छे ढंग से हो रहा है, देखकर कोई खानदानी लड़का इसका हाथ मांग ले। परन्तु अमृता का वहाँ दम घुटता, सभी को छोड़कर, भागकर अपनी वर्कशाप में आ जाती। पेटिंग करने के लिए उसे हाई सोसाईटी नहीं चाहिए, वह सामान्य जीवन का चित्रण करेगी, सादगी पूर्ण जीवन। पैरिस की आर्ट गैलरियों में जाकर वह भारतीय आर्ट के सामने खड़ी हो जाती, वही उसे विस्मादित करता, भारतीय आर्ट की श्रेष्ठता का बोध उसे पैरिस में हुआ। कहती भारतीय कला का एक अंश पूरे रैनेसों से अधिक मूल्यवान है, अधिक वज़नदार।

उमराऊ सिंघ संस्कृत, दर्शन और फारसी साहित्य पढ़ता। मैरी घर की सजावट हेतु मंहगी वस्तुएँ खरीदती। वह अपनी वैभवता की नुमाईश करेगी, चाय,

डिनर पार्टियां करेगी, ऐसा करते हुए अपनी बेटियों के लिए कोई रईस खानदान ढूंढेगी। कम समय में अमृता अच्छी फ्रैंच बोलने लगी थी।

माँ उसे पाटियों में लेकर जाना चाहती परन्तु अमृता इंकार कर देती। खाली समय में वह अपने हम उम्र मित्रों के साथ कॉफी हाऊस जाना पसंद करती। बादलेअर उसका पसंदीदा कवि था जिसने लिखा पैरिस डूबा हुआ है, स्तह से थोड़ा ऊपर दिखाई देता है, ज़्यादा डूबा हुआ है, अदृश्य है।

हैनरी मतीसी 1894 के पैरिस का वर्णन करते हुए कहता है तंग गलियों में लोगों की भीड़, रद्दी खरीदने वाले, पुराने वस्त्र बेचने वाले, चाकू तीखे करने वाले, कुत्ते मारने वाले, मछलियां बेचने वाले, पिंजरों में पक्षी बेचने वाले, दरवाज़ों की मुरम्मत करने वाले, उनकी विभिन्न प्रकार की आवाज़ें, सामने दरिया में असंख्य नावों के बादबान, सीटियाँ, इंजन की आवाज़ें, क्रेनों द्वारा सामान उठाने एवं उतारने की आवाज़ें... ये है पैरिस शहर।

अपनी नानी को नग्न स्त्री की पेंटिंग भेजते हुए लिखा नातिन की तरफ से नानी को सलाम और ये उपहार। प्यारी नानी, अफ़सोस है अच्छी पेटिंग नहीं भेज सकी क्योंकि उत्तम कृतियों को प्रदर्शनी हेतु रख लिया है।

यू.पी. के राजा नवाब अली का पुत्र यूसफ़ खान पैरिस घूमने आया हुआ था। ये अमीरज़ादा बहुत सुन्दर था। माँ ने सोचा अमृता के लिए लड़का ठीक रहेगा। इनकी मुलाकात करवा दी। कुछ मुलाकातों के पश्चात् सगाई हो गई। इन मुलाकातों के दौरान ही अमृता गर्भवती हो गई। ईलाज हेतु विकटर के पास गई। विकटर ने गर्भपात किया। अपनी बहन को पत्र लिखा ये सब माँ के हठ कारण हुआ है। ईटालियन मूर्तिकार को मिलने के समय भी मुझे बहाना बनाया गया था, अब फिर से अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मेरी बलि दी जा रही है। माँ को पत्र लिखा यूसफ़ भला व्यक्ति नहीं है। वह अनेक लड़कियों के साथ झूला झूल रहा है। मुसलमान के साथ विवाह करवाने के क्या नुकसान हैं, मुझे नहीं पता था, पापा ने बताया। मेरे बाद दूसरी से और दूसरी के बाद तीसरी के साथ, वह चार विवाह करवा सकता है। कानून मेरी कोई सहायता नहीं करेगा। अपने बारे में निर्णय लेने का हक मैं किसी को नहीं दूंगी।

एक दिन पैरिस के थियेटर पीगाल में लगी प्रदर्शनी देखने गये। एक कमरे में रबिन्द्रनाथ टैगोर की पेंटिंगों की प्रदर्शनी थी। टैगोर की पेटिंगों को देखकर उमराउ सिंघ ने कहा ऐसा समझदार व्यक्ति भी मॉर्डन आर्ट कर रहा है, हैरान हूँ। अमृता ने कहा इसकी पेंटिंगें इसकी कविताओं से अच्छी हैं। अमृता ने माता-पिता से

कहा मेरा पैरिस का प्रशिक्षण समाप्त। अब भारत चलें। माता-पिता भारत वापिस जाने के हक में नहीं थे, उन्हें अपनी बेटी के रोमांटिक किस्सों का पता था। उमराउ सिंघ को लगा यदि हिन्दुस्तान में रहेगी तो खानदान को कलंकित करेगी, बहुत बदनामी होगी। यहाँ जो कर रही है, वहाँ किसी को क्या पता। पिता ने इंकार कर दिया तो पत्र लिखा हमसे स्नेह करने की अपेक्षा आपको अपने खानदान की शान अधिक कीमती एवं प्रिय है। मैं दुराचारी नहीं हूँ। मेरा ईमान गिरा नहीं है। मेरी इस बात को बहुत कम लोग समझ सकते हैं। मैं अपने कलात्मक विकास हेतु भारत जाने की इच्छुक हूँ, मुझे आपके हौसले एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है। आपका विचार गलत है कि भारत को मैं नहीं जानती, न जान सकती हूँ। पिता जी मैं भारत को जानती हूँ, और अधिक जान जाऊँगी। जिस वस्तु की मुझे आवश्यकता है, वह यूरोप में नहीं है। मेरी यहाँ की कला केवल अकादमिक है, मृत। भारत इसमें प्राण डाल देगा। भारत के ग्रामीण लोगों का अनंत आत्म-समर्पण, पूर्ण विश्वास, सम्पूर्ण धैर्य, उनकी कुरूपता में महान् सुन्दरता, पश्चिम के सस्ते नकली जज़्बातों से मुक्त हैं हिन्दुस्तानी।

पैरिस में उसकी शोहरत को सुनकर माता-पिता प्रसन्न होते परन्तु उन्हें क्या पता था कि अमृता भारत को अपने कैनवस का केन्द्र मान चुकी है, हिन्दुस्तान में रहते हुए उसे प्रतीत होता जैसे वह पश्चिम की बेटी है, सभी अहसास पश्चिमी। पैरिस में इसके विपरीत हुआ, वह पूर्णतः देसी हो गई। उसने लिखा 1933 में भारत ने मुझे चारों तरफ से घेर लिया। मैं वापिस आने के लिए तड़पने लगी। उसके उस्ताद सिमोन ने कहा इतने रौशन दिमाग कलाकार को भेजने का मन नहीं करता परन्तु मुझे पता है, पैरिस के नीरस धूम्रमयी वातावरण में यह खत्म हो जायेगी, इसके रंगों को भारतीय धूप चाहिए। नवम्बर 1934 में चलकर दिसम्बर में वह भारत वापिस आ गये। 1931 से 1935 के समयावधि में अमृता ने जो पत्र विकटर को लिखे, वे सब मिल गए हैं, नीले पीले कागज़ों पर काली स्याही की लिखित।

मार्च 1931- तुम इतने अच्छे और ईमानदार हो कि मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ। आर्टस्टि के रूप में मैं ठीक हूँ, व्यक्तित्व रूप से बेकार। मेरे आचरण में अत्यधिक कमियाँ हैं। जो बात अच्छी है वह ये कि मुझे अपनी कमियों का पता है।

मई 1933 - मुझे अकादमी का असाधारण सदस्य चुन लिया गया। इसका लाभ ये होगा कि मैं निरीक्षकों को बिना दिखाये अपनी इच्छानुसार दो चित्र प्रदर्शनी में रख सकूंगी। जो पेंटिंगें मुझे सबसे अधिक अच्छी लगती हैं, जज उन्हें रद्द कर देते हैं। मैं बने बनाये फ्रेम से बाहर निकल कर कुछ पेंटिंग करूँगी तो कुछ शानदार बन

सकता है। अग्रिम वर्ष में जो चित्र मेरी इच्छा अनुरूप होंगे, उनकी रूप-रेखा की कल्पना मैंने कर ली है।

अगस्त 1933 - मेरी कला में निखार आया है। मुझे स्वयं का और मेरी रचना का पता है, यह पूर्व निश्चित नहीं है। कभी कभी ये विचार मुझे पागल कर देता है कि क्या नेक बनकर ब्रश चलाया जा सकता है? मैं बिना जज़्बात के पेंटिंग कर रही हूँ परन्तु ये खौफनाक है, सोचती हूँ बिना शक्तिशाली जज़्बात के तस्वीर आकृष्ट कैसे बनेगी? जज़्बात और समर्पण। यदि मन में संदेह हों तो समर्पण कैसे हो सकता है? मैं विश्वासपूर्वक पेटिंग करूँ या संदेह पूर्वक? जिन्हें पता नहीं होता कि जाना कहाँ है वे भी कहीं न कहीं पहुँच ही जाते हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है जैसे मैं किसी बड़े परिवर्तन के तूफान के सामने खड़ी हूँ।

अक्तूबर 1933 - मेरी प्रारम्भिक प्रतिभा वापस आ रही है। प्रतिक्षण मैं चौराहे में फंस जाती हूँ, समस्या नैतिक है, बौद्धिक है या शारीरिक, मुझे दोनों तरफ स्पष्ट दिखाई दे रहा है। प्रमाणित नैतिक-मूल्य नहीं चलते। शक्कर किसी को मीठी तो किसी को कड़वी प्रतीत होती है। अनन्त सत्य का मुझे नहीं पता। अनेक रोमांटिक बातें सुन लीं, जैसे, नेकी वह है जब आप किसी के लिए अपने हितों का त्याग करते हो, बुराई वह है जब आप अपने हितों की प्राप्ति हेतु दूसरों को कुर्बान कर देते हो। मेरे आस-पास ऐसा उलझा हुआ संसार है जिसे नेकी-बुराई की रस्सी में बांधा नहीं जा सकता। समस्या का कोई समाधान नहीं, इस कारण बेचैनी का होना स्वाभाविक है। बेचैनी का निरन्तर शिकार होती हूँ। मुझे पता है रोने से मेरी बेचैनी दूर हो जाती है। मैंने खुद से कहा रोओ। मैं रोने लगी। फिर कहा चुप करो। चुपचाप ब्रश उठाया और पेंटिंग करने लगी। देर रात तक पेटिंग करती रही।

विद्या माली का काम करती है, जो तुमसे सहमत नहीं, उसे उखाड़कर बाहर फेंक दो। विद्या प्रारम्भिक इच्छाओं को मूल से उखाड़ने का हौसला देती है क्योंकि ये पशु वृत्तियाँ हैं। स्वयं का निर्णय स्वयं करना सही होता है। निर्णय करके अंत में असफल भी हो जाओ तो भी सफल हो क्योंकि निर्णय किसी का नहीं तुम्हारा था। अपना निर्णय स्वयं लेना सफल होने का प्रारम्भिक एलान है। दूसरों के निर्णय के आधार पर काम करने वाले पशु हैं।

शिमला 1935- यूरोप की ठण्ड एवं धुंधले वातावरण में मैं तंग हो गई हूँ। यहाँ प्रत्येक वस्तु प्राकृतिक है। यूरोप में मैं सफल नहीं हो सकती, इसके रंग मेरे स्वभाव जैसे नहीं। यूरोप के रंग पीले हैं, प्रत्येक वस्तु पीली। यूरोपियों और भारतीयों के रंग तो विभिन्न हैं ही, इनके साये भी अलग अलग हैं, धूप प्रत्येक वस्तु का शेड

बदलती है। गोरे का साया नीला-जामुनी है और भारतीय का सुनहरी-हरा। मेरा साया पीला है। वान गाग को किसी ने बताया था कि देवताओं का प्रिय रंग पीला है।

न्यूयार्क का फोटाग्राफर रिचर्ड ऐवेदो कैमरे द्वारा अदृष्ट घटनाओं को पकड़ता, कहता जहाँ से आप पर्दा नहीं हटा सकते, मैं पर्दा हटाये बिना बता और दिखा सकता हूँ कि पर्दे के पीछे क्या है। इसकी उदाहरण 1957 में उसके द्वारा ली गई मारलिन मनरो की तस्वीर है। हॉलीवुड की नायिका मनरो उसके स्टूडियों में आई, नृत्य किया, गीत गाया, रोमांस किया, सब कुछ करने के पश्चात् थककर एक तरफ बैठ गई, उदास ... क्योंकि करने के लिए कुछ शेष नहीं था। इस समय ऐवेदो ने फोटो क्लिक की। फोटो में उसकी सुन्दरता, चंचलता, कामुकता और स्थायी सुख साफ दिखाई देते हैं। कुछ वर्षो बाद जब मनरो की मृत्यु का समाचार मिला, लाखों की संख्या में इस फोटी की बिक्री हुई। फोटोग्राफर ने उसके चेहरे पर मौत पकड़ रखी है। फोटोग्राफर ने उस क्षण को पकड़ा जो किसी को दिखाई नहीं दिया। फोटोग्राफर ने कहा मनरो नामक कोई स्त्री किसी को कैसे प्रभावित कर सकती है? मनरो स्वयं में से एक मरलिन की सृजना करती और पेश करती, प्रस्तुत की गई ये सृजना दर्शकों को आकृष्ट करती।

ओलीवर गोलडस्मिथ (1728-74) अनुसार निपुण एक्टर वह होता है जो स्टेज पर वास्तविक, साधारण, आकृष्ट एवं प्राकृतिक प्रतीत हो, मंच से उतरने के पश्चात् बेशक ऐसा लगे जैसे अभिनय करने लगा है।

यूनैसको का कर्मचारी बलदून ढींगरा शेरगिल परिवार के घर पैरिस में अकसर आता जाता था, बताता है अमृता के प्रिय लेखक दास्तोवसकी और टाम्स मॉन थे। ढींगरा टालस्टाय की प्रशंसा करता, दोनों में विचार विमर्श होता तो अमृता कहतीदास्तोवसकी सुप्रीम है क्योंकि वह अनथक यात्री है, आर्ट के प्रति ईमानदार। बुराई की शर्मनाक तलख़ी के बावजूद डगमगाता नहीं था, छिपाता नहीं था, जीवन में से नेकी तलाश करने की उसे आवश्यकता प्रतीत नहीं होती थी। टालस्टाय तब तक उत्तम कलाकार था जब तक उसने ईसाई धर्म की पवित्रता और अहिंसा के पक्ष में प्रचार शुरू नहीं किया। उसका मानवीय हितकारी एवं धार्मिक नकाब खतरनाक था। जो दोस्तोवसकी को मारना चाहते हैं, वह टालस्टाय को कुल्हाड़ी की तरह उसके विरुद्ध प्रयोग करते हैं।"

1934 के आखिर में जब वह भारत आई तो शिमला में माता-पिता के पास रहने की बजाय मजीठिया हाऊस, महल जैसे अपने पारम्परिक घर अमृतसर में चली गई। वहाँ सभी रिश्तेदार मिलने के लिए आते जाते रहते। अमृता लगातार उनके चित्र

बनाती। उसने पश्चिमी वेशभूषा का पूर्णतः त्याग करके साड़ी पहनना शुरू कर दिया। माँ ने शिमला से कुछ स्वैटर आदि भेजे जिनके रंग डिज़ाईन, बनावट भारतीय नहीं थी। उसने वापिस भेजते हुए लिखा मैं अब पश्चिमी वेशभूषा नहीं पहनूंगी, जिन लोगों में रहूंगी, उनके जैसी दिखाई दूंगी, सुमेर अपनी साड़ी लेकर आई मेरे पास, मुझे देने के लिए, कहने लगी मैं तो अब फ्रांसीसी लिबास ही पहनूंगी, मैंने क्या करनी है ये? नादान, भारतीय नारियों को ये नहीं पता कि देसी लिबास में वह कितनी सुन्दर दिखाई देती हैं। परन्तु मैंने ज़री वाली साड़ी लेने से इंकार कर दिया क्योंकि इसकी कीमत छह सौ रूपये से अधिक है, इसके बदले में इतनी कीमती कोई भी वस्तु देने के लिए मेरे पास नहीं है। अफ़सोस।

वह गहरे रंग की साड़ियां पहनती जिसमें से उसका बादामी रंग का चेहरा अधिक दिखाई दे। देखने वाला देखता रह जाता। गर्मियों में शिमला चली गई। वहाँ उसको दो कलाकार भाई, बरदा उकील और सरदा उकील मिलने आये। 1926 में इन दोनों ने कलकत्ता और दिल्ली में आर्ट स्कूल की स्थापना की थी। महाराजाओं के शहज़ादे, ब्यूरोक्रैट, अकसर गर्मियों की तफ़रीह के लिए इधर- उधर घूमते रहते। अमृता से मिलते। अनेकों ने यहाँ समर होमज़ बना रखे थे। अमृता को डिनर एवं लंच पार्टियों के निमंत्रण मिलते रहते। सारा दिन काम करती, शाम को थकावट उतारने के लिए पार्टी में चली जाती। अनेक व्यक्ति उसे पागल प्रतीत होते।

दिल्ली से दर्शनशास्त्र के एक विद्यार्थी प्रेम को मॉडल के रूप में शिमला ले आई। पहले दिन उसे समझा दिया प्रेमचन्द, मेरे दो मन हैं, एक औरत का दूसरा कलाकार का। तुम्हें एक कलाकार यहाँ लेकर आया है क्योंकि तुम्हारा कुरूप चेहरा, चित्रित होने के लिए मुझे प्रभावित करता है। बतौर एक औरत मेरे पास तेरे लिए कोई स्थान नहीं है। मैं अपनी सीमा स्वयं निर्धारित करती हूँ, बीअर और शैम्पेन पीती हूँ, नाचती हूँ, इश्क करती हूँ और सभी को रद्द कर देती हूँ। मेरे इस जीवन में तेरा कोई स्थान नहीं। आर्ट मेरा कारोबार है। मेरा मन कुछ और चाहता है।

उसके ऐसे व्यवहार ने अनेक लोगों के मन को चोट पहुँचाई। व्यक्ति सोचता इस लड़की को प्राप्त करना कितना सरल है। थोड़ी देर बाद अमृता कह देती तुम्हें रद्द करना कितना आसान है।

आल इंडिया रेडियो दिल्ली का सहायक डायरैक्टर रशीद अहमद मिलता रहता, मित्रता हुई, देश विभाजन के समय पाकिस्तान चला गया और रेडियो पाकिस्तान का डायरैक्टर जनरल रिटायर हुआ, लिखता है वह जानने की, खोजने की अभिलाषी थी, सामाजिक बंधनों से स्वतन्त्र। प्रत्येक प्रकार के प्रभावों का स्वागत

करती, परन्तु स्वीकार स्वेच्छा से करती, कोई आंधी उसे उड़ा नहीं सकती थी। वह मानवीय रूहों को घायल करने में समर्थ थी परन्तु इतनी दृढ़ कि उसके भीतर का कलाकार प्रत्येक जज़्बे से निर्लेप रहता।

1932 में अंग्रेज मैलकम मासको में ***गार्डीयन*** समाचार पत्र में काम करता था जहाँ उसे कम्यूनिस्ट सरकार के दोगलेपन का पता चला, लोगों का शिकार किए जाने का पता चला। उसकी पुस्तक ***विंटर ईन मासको*** अत्यधिक प्रसिद्ध हुई परन्तु उसे नौकरी से हटा दिया गया तो उसने कलकत्ता ***स्टेटसमैन*** के लिए काम करना शुरू कर दिया। कलकत्ता संपादक के साथ झगड़ा हो गया तो निपटाने हेतु इसका स्थानान्तरण शिमला में कर दिया गया। यह एक प्रकार से दण्ड ही था। यहाँ उसकी मुलाकात अमृता से हुई। अपनी आत्मकथा में वह शिमला बारे लिखता है ग्रीष्म ऋतु में, सारी सरकार पहुँच से बाहर पहाड़ियों में चली जाये और दूर से ही राज्य करे, विस्मयजनक है। ये शहर वास्तव में है ही अंग्रेजी सरकार की उपज, साहिब लोगों ने साहिब लोगों के लिए आबाद किया। जब अंग्रेजों का राज्य समाप्त होगा, यह राज्य कैसा था, केवल शिमला देखकर पता चल जायेगा। एक इंच स्थान भी देसी नहीं। चर्च, माल रोड, रविवार शाम को माल रोड पर टहलते अंग्रेज, बज रहा ब्रॉस बैंड, स्त्रियों के सिर पर रंग-बिरंगी छतरियाँ और पुरुषों के सिर पर सफेद टोप। प्रतिष्ठा अनुसार आबादियों घर के साईज़, प्रत्येक के नाम एवं पदवी की तख्ती, बाहर से ही पता चल जाना चाहिए किसका दरवाज़ा है। छोटा सा थियेटर भी है जहाँ नाटक होते हैं, फिल्म चलती है। किपलिंग ने एक नाटक में यहाँ ऐक्ट किया था। वायसराय महल की सुरक्षा सिक्ख गार्ड करते हैं। सिपाहियों ने दाढ़ियों को उलटा बांध कर जालियों में कसा हुआ है। कमांडर-ईन-चीफ़ लार्ड किचनर ने अपना महल शिमला से थोड़ा दूर बनाया है।

अपनी पत्रकार बिरादरी के बारे में उसकी टिप्पणी है पत्रकार सरकार के पीछे ऐसे भागते हैं जैसे जहाज़ के पीछे शार्क जाती हैं ताकि जहाज़ से समुद्र में फेंका गया कचरा खा सकें। बाद में मैलकम ने अपनी डायरी में जून 1935 को इस वातावरण का वर्णन करते हुए लिखा है, “अमृता की माँ अभिमानी एवं दुष्ट स्वभाव की लगती है, उसके रहन-सहन का ढंग ज़मींदारों जैसा है और शेरगिल उसे पसंद नहीं करता, परन्तु लाचार होकर बर्दाशत कर रहा है। सरदार की दाढ़ी खुली है, लम्बे कमीज़ के ऊपर बैल्ट लगा लेता है, ऐसा प्रतीत होता है जैसे टालस्टाय के ज़माने का रूसी किसान हो। तेज़ हवाओं में उसकी दाढ़ी उड़ने लगती है। पत्नी से दुःखी वह पुस्तक पढ़ने लगता है, दर्शन पर चर्चा करता है या फिर छत पर खड़ा होकर

तारे देखने लगता है। उसकी शून्य आँखें उसकी स्थिति का बोध करवाती हैं। अमृता उसे मंदबुद्धि वाली कामुक लड़की लगती हैमैं इस लड़की से अनेक बार मिला, कई बार उसके साथ होटल में नाचा, अनेक बार उसने कहा कि मैं फोन करूँगी, एक शाम मैंने कहा मैं तब तक नाचना चाहता हूँ जब तक बेहोश नहीं हो जाता। उसने कहा मैं कभी बेहोश नहीं हुई। मेरे बेहोश होने की बात को उसने सच मान लिया।"

मैलकम बारे अपनी बहन को लिखे पत्र में अमृता का कथन है वह शानदार अंग्रेज़ है, दिलचस्प, बुद्धिमान्, आकृष्ट। उस जैसा अभी तक कोई नहीं मिला। मेरे बारे में भी उसका यही विचार है। चुगलखोरों की नीरस भीड़ में हम दोनों को मिलकर बहुत प्रसन्नता होती है। इस ऋतु में इसके अतिरिक्त अन्य शिकार भी किए।

घर ले जाकर उसने मैलकम को अपनी पेंटिंगें दिखाई, मैलकम को ठीक-ठाक लगीं परन्तु खुश करने के लिए कह दिया तू जीनियस है। अमृता खुश हो गई, इसी खुशी में उसने मैलकम की पेटिंग बनाई जो अब दिल्ली की नैशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट में रखी हुई है। मैलकम ने लिखा कैनवस पर उतारते समय ऐसा प्रतीत होता था जैसे मेरा शिकार करने लगी हो, जैसे मुझे निगल जायेगी। पसीने से भीग जाती, काम खत्म करके, थककर, कुर्सी पर गिर जाती। ये सब गंवार लगता।

22 मई, 1935 के दिन अपनी डायरी पर लिखता है सिप्पी मेले पर मैंने एक स्त्री को देखा, आधी हंगेरियन, आधी भारतीय, साड़ी में लिपटी हुई। वार्डन पारसी ने परिचित करवाते हुए कहा सेसिल होटल में डांस किया जाये? मुझे जज़्बाती उलझन की सुगन्ध का अनुभव हुआ। मैं अपनी पत्नी को लंदन में पत्र लिखने भूल गया, हम शराब पीते, नाचते, पुनः मिलने फोन करने का वायदा करके अलग हो जाते। पैरिस से पढ़कर आई है। गज़ब है।

6 जून, 1935- परसों आई, एक साथ भोजन किया, नृत्य-गाना देखते रहे, खुश थे। कल ***स्टेटसमैन*** को अस्तीफा लिखकर भेज दिया। कभी कभी मैं उसे नफ़रत करने लगता हूँ, उदाहरणतः आज उससे मिलने गया। वह प्राप्त प्रेम पत्र को बहुत प्रसन्नता से पढ़ रही थी, कहने लगी"आज सुबह वार्डन के साथ सैर करने गई, वह कहने लगा मैं आपकी अंगुलियाँ चूम लूं? मुझे उसका ऐसा दम्भी, अभिमानी, बिगड़ा दिखावा अच्छा नहीं लगा। ऐसे लगा जैसे मुझे उल्टी आ जायेगी।

- हम बातें करते रहे, समझ लो दिखावा करते रहे। हर बार पहले से अधिक दबाव देकर मेरे होंठ चूम लेती। पहाड़ी पर चढ़ गये। मैंने ध्यान से उसका चेहरा देखा, जीवन से विरक्त, आँखों के नीचे दायरे, अतृप्त मुख। आते समय कहने लगी, बहुत

भूख लगी है, बहुत सारा भोजन करूँगी। दो तीन बार मैं उसकी बातों पर ज़ोर ज़ोर से हँसा, फिर छोड़ आया।"

ये मैलकम ही था जिसने अमृता को बताया"तू नारसीसिस्टिक (स्वयं को सबसे उत्तम और सुन्दर मानते हुए स्वयं पर मोहित हो जाना) रोग से पीडित है। मैलकम उसे एक तरह से कुंवारी लड़की ही मानता है क्योंकि किसी पुरुष के साथ मिलाप, उस पर कोई प्रभाव नहीं डालता। जीवन में कोई आया, कोई गया, कोई फर्क नहीं।"

16 जून 1935 6.45 पर मैंने स्नान किया, जैसे रंग पसंद करती थी, उस अनुरूप पैंट कोट पहना, टाई लगायी। हरी साड़ी, लाल सुनहरी बार्डर, वह आठ बजे आ गई, आते ही अपने आशिकों की कहानियाँ सुनाने लगी, ऐबनार्मल व्यवहार। फिर एक एक करके अपने जेवर उतारने लगी, फिर अपने केश खोल दिए। एक ही नाटक को जैसे कोई बार-बार देखने लगे, वही चकाचौंध, अद्भुत वातावरण, दस बार देखो या बीस बार, आकृष्ट, परन्तु एक पल ऐसा आयेगा ही जब आप कहोगे बस। एक समय जब आपको चिढ़ और घृणा होगी।

कुछ दिन बाद लिखा"कल रात जब मेरे सामने साड़ी पहनी, मैंने उसमें निश्चित प्रेम की भावना देखी, पहले ऐसा कुछ नहीं देखा था, वह मेरे समीप आकर बैठ गई, शांत, सिर झुकाये उदास।"

- क्या हुआ? मैंने पूछा। कोई उत्तर नहीं दिया।

- लेट हो गई हूँ। मम्मी-पापा डांटेंगे। ***तुम मुझसे ऊब गये हो*** एक भी वाक्य नहीं कहा उसने, परन्तु चेहरे को देखकर अनुमान लगाया जा सकता था। मेरा मन द्रवित हो गया। ये ऐसा वातावरण होता है जब कुछ लिखने का मन करता है, मुझमें सृजन शक्ति ऐसे समय होती है, परन्तु मैं लिखता नही, लिखने के लिए जब कोई बात है ही नहीं। मुझे सोफे पर बिठाकर मेरा चित्र बनाने लगती, ध्यान पूर्वक देखता, घात लगाकर शिकार की तरफ बढ़ रहे शिकारी के समान क्रियाशील, ध्यान केन्द्रित, कभी कभी सांस तेज़ चलने लगती, ऊपरी होंठ और माथे पर पसीना झलकता। जंगली अनुभवों को रंगों में प्रवाहित करती तेज़ तेज़ ब्रश चलाती। उसके चेहरे के तनाव का दृश्य उसका चित्र प्रकट करता। उस द्वारा चित्रित भारतीय स्त्री-पुरुषों के चेहरों पर जीवन की अपेक्षा मृत्यु अधिक दिखाई देती है, निराशा। स्वयं कभी गुलाब जल के समान पवित्र और खुश, नवजात अस्पृश्य रूह, कभी दृढ़ विश्वासी, कभी चरित्रहीन, बिल्कुल अशिष्ट। लम्बा समय उसके साथ व्यतीत करके भी मुझे पता नहीं चला कि वो है क्या। क्या उसमें ऐसा कुछ भी था जिसके बारे

में कोई जान सके? उसे देखते ही अजीब सा वातावरण छा जाता जैसे कच्चा मांस खाने की शौकीन, जैसे आग से उतारकर उबलती तरी पीने के लिए आतुर।

सितम्बर 1935 में वह लंदन जाने के लिए तैयार हुआ। विदायगी की शाम को चित्रण करते हुए उसका कथन है"उसके बाहर निकलने का ये समय नहीं था, परन्तु मुझे विदा करने के लिए दिन छिपते ही स्टेशन की तरफ चल पड़ी। हम फ्रैंच में छोटी छोटी बातें करते हुए प्लेटफार्म पर घूमते रहे। आखिर एक छोटी सी पहाड़ी गाड़ी के इंजन ने सीटी बजाई। उसके साथ व्यतीत किया गया समय .
.. अच्छा भी था ... बुरा भी। गाड़ी चलने लगी। हम दोनों तब तक एक दूसरे को देखकर हाथ हिलाते रहे जब तक आँखों से ओझल नहीं हुए। मुझे पता था, मैं उससे कभी नहीं मिलूंगा, मिलने की इच्छा भी नहीं होगी। 1941 में पता चला कि उसकी मृत्यु हो गई अचानक। अभी तो कम उम्र ही थी। बाद में पता चला उसकी माँ ने आत्महत्या कर ली। इन दो मौतों के समाचार का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ।"

1935 में उसने ***पहाड़ी पुरुष*** और ***पहाड़ी स्त्रियाँ*** दो पेंटिगें बनाई, जिनकी बहुत चर्चा हुई। उन कृतियों को निर्धन मानवीय शान के प्रतीक से सम्मानित किया गया। अमृता के अपने शब्द है, "पैरिस से वापिस आई तो भारत मेरी आशा के विपरीत दिखाई दिया और स्थिर हो गया। उदास परन्तु सुन्दर लोग, काला रंग, पतले सूखे जिस्म खामोश चल रहे थे जैसे कागज़ पर खींची रेखायें चलने लगीं हो, अनन्त खामोशी में घिरे हुए।"

1938 में सराया आकर और कई पेंटिंगें बनाईं ***औरतें, तालाब में नहा रहे हाथी और लाल स्तम्भ वाला वरांडा*** प्रसिद्ध हुईं। उसे पहाड़ी, राजस्थानी, दक्षिणी चेहरों की बनावट चित्रित करने का अनुभव था। मुगल एवं अजंता कला के सूक्ष्म भेदों का ज्ञान था। इन कृतियों के बारे में बताती है, "देखकर आपको पता चल जायेगा कि ये मेरे जीवन के खुशदायक पल थे। दक्षिण से वापिस आकर ***दुल्हन का शृंगार, ब्रह्मचारी, बाज़ार जाते दक्षिणी ग्रामीण*** तैयार कीं।"

गीता ने लिखा, ***"दुल्हन का शृंगार*** पेटिंग देखो। स्त्रियों की गम्भीरता, कोई हाव-भाव नहीं, यदि कोई भाव है भी तो उदासी का है, जैसे बलि देने की तैयारी हो रही हो, उत्सवों जैसा कुछ नहीं, रुदन भी नहीं, पवित्र कुर्बानी, वियोग, समर्पण जिससे मानवता का विकास होगा। कूकनूस पक्षी का गीत, गीत में से लपटें, लपटों में से पक्षी की राख, राख में से नये कूकनूस का जन्म। (मिथक अनुसार ये पक्षी बड़ी उम्र के समय जंगल में से सूखी शाखायें, तिनके एकत्रित करके ढेर बना लता है। ऊपर बैठकर दीपक राग गाता है तो तिनकों आदि को आग लग जाती है जिसमें कूकनूस

जल जाता है। सावन मास की वर्षा जब मल्लहार गायेगी तो राख में से कूकनूस जन्म लेकर उड़ने लगेगा।)

अमृता की इस पेटिंग को सही ढंग से समझने के लिए प्रो. पूर्ण सिंघ का हिन्दी लेख ***नयनों की गंगा*** सहायक होगा। शहनाई और सारंगी के स्वरों में खुशी है या उदासी, जीवन है या मृत्यु, श्रोता अलग नहीं कर सकता। बेटी की, उसके माता-पिता की, उसे प्रेम करने वाले सभी की स्थिति एक जैसी होती है।

उसने स्वयं को अनेक कैनवसों पर चित्रित किया। एक बार वह बिल्कुल सामने दिखाई दे रही है, सुडौल जिस्म वाली युवा औरत, खुले केश नीचे सरकते हुए, तांबे के रंग जैसा चेहरा, गले में मोतियों का हार, कलाईयों में चूड़ियाँ, कलाकार नहीं, एक औरत, वैसी ही, जैसी संसार चाहता है, हो। वर्ष 1939, जब उसकी प्रसिद्धि शिखर पर थी, ये पेंटिंग बनाई। पाल गोगें का इस पर स्पष्ट एवं समस्त प्रभाव दिखाई देता है। एक पेंटिंग 1932 की है, खिड़की के सामने कुर्सी पर बैठी है, गम्भीर चिन्तन, साधारण लिबास, पेंटिंग कर रही है, जिस हाथ में ब्रश पकड़ रखा है वह मज़बूत दिखाई देता है, प्रभाव ये है केवल मन नहीं, कलाकार का जिस्म भी मज़बूत होना चाहिए। इस शैली को देखते ही हमें माईकलएंजलो का बचपन याद आ जाता है, उस्ताद ने उसे स्कैच बनाते हुए देखकर कहा तेरा हाथ मज़बूत है माईकल। माईकलएंजलो ने उत्तर दिया ब्रश पकड़ने के लिए नहीं उस्ताद, ये हाथ तो हथौड़े के लिए बना है, पत्थर तराशने के लिए।

अमृता की कला तकनीक विदेशी है परन्तु इसमें भारतीय रूह विराजमान है। उसने गरीब मज़दूर, भिखारिन, चित्र बनाये परन्तु इनमें रहम या उपभावुकता नहीं, धैर्य है, समर्पण है, आलोचना नहीं, प्रचार नहीं। 1937 में उसने भारतीय फिल्मों पर पेपर पढ़ा जिसमें कहा भारतीय फिल्म निर्देशकों को जब घास की एक पत्ती में सुन्दरता मिल गई तो वे सफल हो जायेंगे, धरती को ऊँचा-नीचा दिखाना होगा, हल चलाते बैलों की जोड़ियों का फिल्मांकन करना होगा, स्टूडियों के नकली हल, नकली बैल नहीं, वास्तविक चित्रण। मेरा कहने का अभिप्राय ये नहीं है कि केवल ग्रामीण जीवन ही फिल्मांकन के योग्य है। हमारे पास किसानों के अतिरिक्त भी जटिल बौद्धिक दिमाग उपलब्ध हैं, जिनके सूक्ष्म भावों को कोई समझ नहीं सका। हमारे निर्देशक आर्ट की खोज करें, जहाँ से मिले प्राप्त करें। दक्षिण भारतीय स्त्रियों की लहराती साड़ियाँ और किसानों की साधारण धोतियाँ देखें, धान के खेत में दिन छिपने के समय की धूल का चित्रण, छोटी छोटी वस्तुओं और घटनाओं की सुन्दरता इन्द्र के महलों से अधिक उत्तम एवं रमणीय हैं।

1936 में सराया में ***छोटा अछूत*** और ***बूढ़ा*** पेंटिंगें बनाईं। ये बूढ़ा सरदार सुन्दर सिंघ मजीठिया है, ये पेटिंग सुन्दर सिंघ के बेटे कृपाल सिंघ के कहने पर बनाई थी। पूरी करके कहा देखो कितनी सुन्दर है, तुमने कहा था सुन्दर पेटिंग बनानी है, बना दी परन्तु इसके बीच का आर्ट कमज़ोर है।

दिल्ली एवं पूर्वीय महानगर उसे अच्छे नहीं लगे, कहा न तो ये पश्चिमी हैं, न पूर्वीय, दोनों सभ्याचारों के मुख को चिढ़ा रहे हैं। अमृता उच्चकोटि प्रतिभा की धारणी है, इसकी पहचान मुम्बई में हुई। 16 नवम्बर, 1936 को बरदा उकील ने उसे ताज होटल में आमंत्रित किया जहाँ कला प्रेमियों एवं कला आलोचकों के लिए 20 नवम्बर को प्रदर्शनी लगाई गई। ***संडे सटैंडर्ड*** समाचारपत्र में कार्ल खंडालवाला ने विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें लिखा जिन्होंने आर्ट के विषय में जानना, सीखना है, वे अमृता की पेंटिंगें देखें। वह अकादमी स्टूडियो की विधियों एवं वाद-विवादों से पार निकल चुकी है। उसका काम परम्परा से हटकर है, परन्तु बारीकबीनी किस्म का नहीं।

व्यवसायिक रूप में वकील, कार्ल खंडालवाला बाद में मुम्बई हाई कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त हुआ।

15 जनवरी 1937 को बंबे आर्ट सोसाईटी द्वारा ***ग्रुप आफ़ दी गर्लज़*** को गोल्ड मैडल देकर सम्मानित किया गया। ***टाईमज़ आफ़ इंडिया*** ने लिखा स्पष्ट एवं साधारण शैली। तीक्ष्ण बुद्धि की धारणी इस लड़की के रंग प्रभावशाली तो हैं परन्तु भार से मुक्त।

ब्रिटिश आर्मी अफ़सरों को अजंता एलोरा की गुफाएँ 1819 में मिलीं और अनेक बार इनके चित्र बनवाये गये। वर्ष 1915 में हैदराबाद स्टेट के प्राचीन अनुसंध ाान विभाग ने सय्यद अहमद से इसकी नकलें बनवाईं। अमृता ने सय्यद अहमद की पुस्तक देखकर कहा अच्छा ये है अजंता, नीरस और भारी पेटिंग, कमज़ोर। अहमद की पेटिंग, बेजान है। जब उसने अजंता की गुफायें देखी तो बहन इंदिरा को लिखा अद्भुत स्थान, ऐसी खामोशी कहीं नहीं देखीं। जिसने अजंता को नहीं देखा, उसे क्या पता शांति क्या होती है। पत्थर काट काट कर विराट् मूर्तियाँ बनाई गईं, असंख्य शृंखलाएँ, रोशनी इतनी जैसे तारे झिलमिला रहे हों, तराशे पत्थरों से टपकता पानी, अद्भुत कला, गज़ब उदासीनता, जो कहते हैं ***बंगाल स्कूल आफ़ आर्ट*** अजंता एलोरा से प्रभावित है, गलत हैं। अजंता गिरी है तो बंगाल छिलका। धार्मिक आर्ट सहित प्रत्येक आर्ट उत्पन्न तो पदार्थ के आश्चर्य से होता है परन्तु ये पदार्थ की सीमा से पार निकल जाता है। रंग और आकार की बारीकी का बोध आँख के अनुभव बगैर

कैसे हो सकता है? मैंने अब सीखना शुरू किया है, मेरे समकालीन चित्रकार मेरे उस्ताद नहीं हो सकते। अजंता गुफाओं के मूर्तिकारों को सलाम। इन्होंने मुझे प्रभावित किया। असंख्य महान् चित्रकार प्रभावित हो जायें, उनका स्वागत। जीवन में पहली बार कुछ सीखने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। अजंता में धड़कन, सूक्ष्मता और खामोश प्रेम जलवागर है। यहाँ सीखने के लिए सामग्री उपलब्ध है।

शिमला आर्टस सोसाइटी द्वारा उसे सम्मानित करने का निर्णय किया गया तो अमृता ने ठुकरा दिया। ***द हिन्दु*** समाचारपत्र में उसने लेख द्वारा बताया कि बंगाली आर्टिस्ट बौने हैं। जो हल्के ढंग एवं विधियों का उपयोग दर्शकों को आकृष्ट करने के लिए करते हैं, नए कलाकारों को ये सीखना नहीं चाहिए, जिन्होंने सीख लिए उन्हें उपयोग नहीं करना चाहिए। गरीब, मज़दूरों एवं भिखारियों के चित्रों में आम इंसान क्यों गायब है? मैं पारम्परिक रूप से भारतीय नारी नहीं हूँ, मेरा जन्म, परवरिश पश्चिम की है, मेरे चित्रों में तुम्हें भारत दिखाई देगा। मेरा शरीर और शारीरिक रुचियाँ पश्चिमी होने के बावजूद भी मेरी आत्मा भारतीय है। तुम भारतीयों को क्या हो गया है पता नहीं चलता। भावुकता छोड़ो, वास्तविकता का चित्रण करो।

उसने अपनी कमियों को अनदेखा नहीं किया, लिखा मैं पढ़ती तो रही, सीखा कुछ नहीं। मेरी मानसिक बनावट अजीब है। कोई मेरे ख्यालों में दखल दें मैं सहन नहीं कर सकती। अध्यापक का दखल भी नहीं। इस आदत के कारण मुझे नुकसान हुआ।

वापसी के समय बरदा उकील के साथ हैदराबाद में स्टेट मेहमान के तौर पर ठहरी, उसे प्रदर्शनी हेतु हॉल दिया गया और पुलिस भी तैनात की गई। ये स्थान बनजारा हिलज़ के अमीर इलाके में है। 8 दिसम्बर 1936 को उद्घाटन समारोह में सरोजिनी नायडू पहुँची और पहली मुलाकात में ही दोनों के बीच मित्रता हो गई। दो पहाड़ी बच्चों की पेटिंग 250 रूपये में बिकी जो समयानुसार अच्छी राशि थी। नायडू बारे लिखा प्यारी औरत है, खतरनाक टिप्पणियाँ देती है, मौलिक ढंग से व्यंग्य करती है, किसी की परवाह नहीं करती परन्तु आदमी को आदमी समझने में निपुण है। अमृता ने अपनी कुछ कृतियाँ भारतीय आर्ट गैलरी में रखने के लिए दीं जिनको नवाब ने पसंद नहीं किया। स्पष्ट परन्तु धीरे से कहा मुझे आपके क्यूबिक अनुभव पसंद नहीं हैं। दक्षिण के अन्य महलों ने भी उसकी कला की प्रशंसा नहीं की। उसे लगने लगा था कि उसकी कला के खरीददार मिल जायेंगे परन्तु यहाँ तो मुफ्त में लेने के लिए भी धनाढ्य वर्ग तैयार नहीं। दक्षिण के मदुराय और रामेश्वरम के महान् मन्दिरों के आर्ट ने भी आकर्षित नहीं किया, जो लोग माथा टेकने आ रहे थे उन्होंने

आकृष्ट किया। जनवरी 1937 में अपनी बहन को पत्र में लिखा लोगों के लिबास में यद्यपि सफेद रंग मुख्य है परन्तु अन्य गहरे रंगों की कोई कमी नहीं, विशेषतः स्त्रियों की वेशभूषा में। पुरुष, स्त्रियाँ बच्चे आसाधारण रूप में सुन्दर हैं। स्त्रियाँ चोली एवं धोती पहनती हैं, मध्यम भाग नग्न रहता है। केशों को सुसज्जित करने का ढंग अद्‌भुत, बिना क्लिप लगाये सभी केश संभाले हुए, लम्बे लम्बे। आदमी केवल कमर पर धोती पहनते हैं, अन्य कुछ नहीं। मन्दिर में आते समय सफेद लिबास प्रमुख है। हिसाब लगाओ तो, आस-पास गहरी हरियाली, नारियल एवं केले के लम्बे लम्बे वृक्ष, सभी के बड़े बड़े पत्ते, वही वृक्ष जो अजंता की कला में प्राप्य हैं, धरती पर खड़े होकर झूम रहे हैं।

भारत के सबसे धनी नवाब सलारगंज ने अपना अजायबघर दिखाया। लोगों ने अत्यधिक प्रशंसा की। उसने अमृता की राय पूछी, कहा अच्छे सहज स्वभाव वाला व्यक्ति लेटनज़, बुगरानज़, वत्तस क्यों खरीदे जबकि सज़ान, वान गाग, गोगें बाज़ार में आ गये हों? मैं दरम्याने को अच्छा नहीं कह सकती निज़ाम साहिब।

यहाँ से बरदा उकील के साथ मदुराय और रामेश्वरम गई, दो दिन घूमकर मन्दिर देखे, लिखा 1500 ईसवी के बने ये धार्मिक स्थान इमारत निर्माण कला का नमूना हैं। मन्दिरों में जाते हज़ारों यात्री अधिक आकृष्ट करते हैं, पुरुष-स्त्रियाँ सफेद लिबास में। दक्षिण देखने के पश्चात् कोई शिमला या उत्तरी भारत में कैसे रह सकता है? दक्षिण में यूरोपियन नहीं हैं, अच्छा हुआ, निम्न सभ्यता का दिखावा यहाँ नहीं आया, अभद्र प्रिंट और अभद्र बूट, सैंडल नहीं। हाथों से बनी, कढाई की हुई अद्‌भुत साड़ियाँ, देसी जूती। इनका कत्थाकली नृत्य देखो, एक ही समय में सूक्ष्म एवं ताकतवर।

दक्षिण यात्रा उपरान्त उसकी पेटिगज़ में हरा रंग अधिक दिखाई देने लगा, पाम के पत्ते दिखाई देते। पद्मनाभपुरम महल, मत्तनचेरी महल, कोचीन का दुर्ग देखो। अधिक लोगों को उस समय इन स्थानों के आर्ट का पता नहीं था। कन्याकुमारी तक पहुँची। गाँधी जी की प्रार्थना सभाओं में लोगों की अधिक संख्या एवं उत्साह देखा, एक पेटिंग प्रार्थना सभा की बनाई। यहाँ उसकी कृति ***केले बेचने वाले*** बनी और कबूल हुई। गुलाबी धरती पर गोल मुख वाले दक्षिण भारतीय सुन्दर रूप में चित्रित थे। पीछे का दृश्य केले के वृक्षों का, केले के लाल फूलों से रंजित धरती, केले के कोमल हरे पत्तों की सुगन्ध में रंगे केले के फल, बेच रही स्त्रियाँ, ग्राहक, रंगों का सम्पूर्ण मेला परन्तु एक यूनिट के रूप में। जिस्म सांवले रंग के, ग्राहकों की प्रतीक्षा में सफेद आँखें बिछाए ऐसे बैठी थीं जैसे किसी करामात का इंतजार हो। विशिष्ट

को सामान्य बनाने की कला में निपुण हो चुकी थी। हाथ में केवल एक फूल लेकर खड़ी लड़की अधिक आकृष्ट करती है।

कोचीन से इंदिरा को लिखा सुबह से शाम तक का समय इस उजड़े महल में व्यतीत करती हूँ। कुछ ऐसी अद्‌भुत पेटिंगज़ हैं जिन पर अभी तक किसी का ध्यान नहीं गया। संभाल न होने के कारण खराब हो रही हैं। अश्लील कहकर भी इन्हें मिटाया जा सकता है। पशु-पक्षी काम क्रीड़ा की स्थिति में चित्रित हैं, स्त्री-पुरुष का प्रेम चित्रित है, काम क्रीड़ा नहीं। विशाल चित्र भी हैं, लघु भी। पूरी की पूरी दीवारें चित्रित की हुई हैं, जैसे विशाल कालीनों को दीवारों पर चिपका दिया गया हो।

- जटिल डिज़ाईन थे परन्तु चेहरे साधारण, आदिवासी इनकी महानता का बोध उस समय होता है जब आप इनका अनुकरण करते हो। मैं तीन दिनों से यही कर रही हूँ। इन लोगों को आकारों का, संरचना का कितना गहन बोध था। अजंता के चित्रों में जिस्म पतले हैं, परन्तु इनके जिस्म सुडौल और भारी हैं। पेंटिंग अजंता की श्रेष्ठ है परन्तु मूर्तिकला कोचीन की उत्तम है। प्रत्येक अंग, प्रत्येक आभूषण सम्पूर्ण। यदि ध्यान न दिया गया, सब खत्म हो जायेगा। इनकी तो तस्वीरें तक नहीं खींची गईं।

वापस शिमला आकर उसने नवीन अनुभव एवं नवीन क्षमता से चित्रकारी प्रारम्भ की। दक्षिण और मुम्बई से वह सैंकड़ों रंग-बिरंगी साड़ियाँ खरीद कर लायी थी। अपने पहाड़ी नौकर-नौकरानियों को पहनाकर मॉडल के रूप में बिठा लेती। वर्ष 1937 में उसने बहुत काम किया। इन दिनों में वान गाग द्वारा अपने भाई थीओ को लिखे पत्रों को पढ़ा, कार्ल को लिखा क्या उसका वो चित्र देखा है जिसमें खेत के ऊपर उड़ रहे कौओं का चित्रण है? ये चित्र मेरे भीतर हिंसक भाव उत्पन्न करता है, आत्मिक व्याकुलता। मुझे गोगैं अधिक प्रभावित करता रहा है, अब ऐसा लगता है जैसे वान गाग बड़ा है। थीओ को लिखे पत्र कितने शानदार हैं। उसका चरित्र उसके चित्रों में स्पष्ट दिखाई देता है। वान गाग असाधारण से भी कुछ ज़्यादा है।

दुल्हन का शृंगार और ***ब्रह्मचारी*** तस्वीरों पर दक्षिण भारत और वान गाग दोनों का प्रभाव दिखाई देता है, गेरूए रंग की धरती, संध्या की चमकने वाली ध ूप सदृश सफेद लिबास।

उमराऊ सिंघ अनुसार भारत वापस आकर हम अपनी हवेली में गए जिसकी दीवारें एक शताब्दी पूर्व के चित्रों से सुसज्जित हैं। अमृता ने कहा बचपन में मुझे ये दीवारें पेंटिंग लगती थीं, उस समय अकादमिक ड्राईंग का ज्ञान न होने के

कारण मैं इनकी संरचना की कमियों को नहीं जानती थी। अब वह इनकी नकल उतारने के लिए तैयार नहीं हुई। एक दिन अमृता ने बताया कि अजंता की एक तस्वीर के सामने वह एक घंटा खड़ी रही। किसी ने पूछा इसमें क्या अच्छा है? उत्तर दिया पाँवों का एक जोड़ा इस पेटिंग में से निकलकर बाहर जाता दिखाई दे रहा है।

दिन प्रतिदिन उसकी लोकप्रियता बढ़ती गई। निरन्तर प्रदर्शनियाँ लगतीं। आधुनिक चित्रों को खरीदने के लिए अभी लोग तैयार नहीं थे। धनी वर्ग को इनकी समझ नहीं थी, जो समझते थे उनके पास पैसे नहीं थे। अमृता इस बात से सन्तुष्ट थी कि उसकी कला को रबिन्द्रनाथ टैगोर और जैमिनी के तुल्य समझा जाता है। स्वयं भी वह इन दोनों से प्रभावित थी।

दक्षिण से वापसी के समय बरदा उकील के साथ कुछ दिन इलाहाबाद में रही। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफैसर आर.सी.टण्डन और अमरनाथ झा, डीन आर्ट फैक्लटी ने ***रोरिख इंस्टीच्यूट आफ़ आर्ट एण्ड कलचर*** में अमृता की प्रदर्शनी का प्रबन्ध किया गया। 2 फरवरी, 1937 की इस प्रदर्शनी बारे इंदिरा को लिखा विशाल हॉल में पाँच सौ व्यक्ति बैठे थे, ऊँचे मंच पर मैं, सभी की दृष्टि का केन्द्र। मैं बिल्कुल मूर्ख लग रही थी। प्रो. झा ने मेरे आर्ट की प्रशंसा के पुल बांध दिए। मैं भीड़ का एक भाग बनकर आराम में रहती हूँ। इतने लोग आपकी तरफ ही देखें, मूर्ख तो लगोगे ही। दो तीन बार मैं उन अवसरों पर भी ऊँची ऊँची हँसी, जिन पर हँसना नहीं चाहिए था। वह मेरी तस्वीरों में वर्णित दुःखान्त, संकट, उदास शैली आदि के विषय में बता रहा था जो मेरी तस्वीरों की पृष्ठभूमि में थे। डीन लम्बे समय तक मेरे चित्र ***छोटा-अछूत*** के विषय में बोलता रहा और कहा इस पेटिंग का प्रत्येक भाग ध्यान से देखने योग्य है। ये चित्र यहाँ प्रदर्शनी में था ही नहीं।

आटोग्राफ लिए गए, प्रैस ने इंटरव्यू ली, अमृता इस परिणाम पर पहुँची कि उसकी कला के बारे में किसी को ए,बी,सी का भी ज्ञान नहीं, कोई इस कारण प्रशंसा कर रहा था कि अमृता ने भारत की निर्धनता, लाचारी का अत्यधिक मनोरम चित्रण किया है, कुछ कह रहे थे कि इसके अलावा उसे कुछ उत्तम दिखाई क्यों नहीं दिया।

इलाहाबाद से उसके कला प्रेमी का पत्र आया कई महीने पहले आपके बारे में ***इलस्सट्रेड वीकली*** में पढ़ा था, अब बरदा उकील और ईला सेन द्वारा आपके बारे में लिखी रचनाओं को पढ़ा है। मेरी इच्छा है कि मैं हिन्दी जगत् को आपसे परिचित करवाऊँ। कृपया मेरी सहायता करें। जो आपकी तस्वीरों को भद्दी बताते हैं, मैं उनसे सहमत नहीं हूँ। परन्तु मैं हैरान हूँ कि आप ऐसा संकटमयी वातावरण उत्पन्न

ही क्यों करती हो जिसमें से निकलने की कोई संभावना नहीं। आपकी जो कोई भी पेटिंग देखता हूँ, मेरी व्याकुलता बढ़ जाती है।

जिस किताबिस्तान पब्लिशिंग हाऊस ने जवाहर लाल नेहरू से ***गलिंपसिज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्टरी*** लिखवाई, उसने अमृता से कहा कि आधुनिक भारतीय कला पर पुस्तक लिखे, उसने कहा लिखना तो चाहती हूँ, यदि सत्य लिख दिया तो लोग पुस्तक के टुकड़े टुकड़े कर देंगे।

1937 में अमृता के कुछ नए मित्र बने। मुज्जफर अली ख़ां किज़लबाश और जमील असगर, दोनों वकील, विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए। मुज्जफर पश्मिी बंगाल का मुख्य मन्त्री बना और जमील लाहौर हाईकोर्ट का जज। चमनलाल की अंग्रेज पत्नी हैलन के साथ उसकी मित्रता हुई। हैलन उसकी कला प्रशंसक रही। हैलन के बारे में इंदिरा को लिखानकली और असली आर्ट सम्बन्धी उसकी परख अद्‌भुत है। वह सुन्दरता की तलाश में है। उसकी गहन समझ करामात जैसी है। वह कोई कला पारखी नहीं, परन्तु वान गाग के बड़प्पन को समझती है, देगा की सूक्ष्मता का उसे बोध है, बाख के सुरों को पहचानती है। बीथोवन, दास्तोवसकी, चैखव के संसार में पहुँच जाती है। वह अजूबा है जिसकी जड़ें बहुत गहरी हैं।

बड़े आकार के चित्रों की जगह मिनीएचर करने लगी। अक्तूबर 1937 में इंदिरा का विवाह के.वी.के सुन्दरम के साथ हुआ। ये आई.सी.एस अफसर स्वतन्त्र भारत का प्रथम मुख्य चुनाव कमिश्नर नियुक्त हुआ। घर में विवाह की गतिविधियों ने अमृता का काम कुछ समय के लिए रोक दिया।

जगह जगह से डिनर के निमंत्रण मिलते परन्तु इंकार कर देती। सितम्बर 1937, कार्ल को लिखा आपने ठीक कहा, मैं अपने संसार में गुम रहती हूँ, इसमें इतना दोष मेरा नहीं जितना मेरे आस-पास का है। यदि आप शिमला में रह रहे दुपाए को जानते, तो मैं दोषी सिद्ध न होती। मध्यम स्तरीय विचारों में उलझने की अपेक्षा अच्छा है उनसे किनारा करना। मैं अपना एक सुन्दर, प्यारा स्व-चित्र बनाया है, देखकर मुँह में पानी आ जाए। नए मॉडलों के लिए ये एक बुरकी है।

उसने तीस तस्वीरों को लेकर लाहौर में प्रदर्शनी लगाने का निर्णय किया। 21 नवम्बर, 1937 को कला-प्रेमी अमृता का काम देखने आए। सुनहरी ज़री से जड़ित साड़ी और तिब्बती आभूषण पहने अमृता स्वागत हेतु दरवाज़े पर खड़ी थी। पंजाब सरकार के वित्त मन्त्री मनोहर लाल ने उद्‌घाटन किया। मंच पर जब वह अमृता की प्रशंसा कर रहा था, तो वह नज़रे झुकाए मुँह को साड़ी से ढक कर हँसती रही। जो अपना स्व-चित्र उसे सबसे बुरा लगता था क्योंकि वह बिल्कुल अमृता जैसा

था, सबसे अधिक उसकी प्रशंसा की गई। आलोचक और प्रशंसक सभी तरह के लोग आए, लाहौर ने इसका नोटिस लिया।

सबसे गम्भीर आलोचना चार्लस फेबरी, ***सिविल एण्ड मिलटरी गज़ट*** के कला निरीक्षक ने की, उसने कहा आँखों के लिए ये रंग-बिरंगी दावत ठीक थी। उसे शानदार तो नहीं कह सकते, है यकीनन आधुनिक आर्टिस्ट। महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सामान्य ढंग से प्रस्तुत करने में कुशल है यद्यपि कहीं कहीं आवश्यकता से अधिक सजावट भी है।

फेबरी भी हंगेरियन था और लाहौर म्यूज़िम का क्यूरेटर, पुराखोजी, विद्वान्। जैसे मुम्बई में कार्ल ने हौसला दिया, वैसे ही लाहौर, फेबरी ने। क्या अमृता से उसका रोमांस हुआ? उसके पति विकटर ने लिखा जो भी अमृता के सम्पर्क में आया, उसने उसकी कला की उचित परख की हो, मुझे विश्वास नहीं है। मुझे स्वयं पर यकीन नहीं कि मैं उसके बारे सोचते वक्त संतुलित रहा हूँ। कार्ल खण्डालवाला और बरदा उकील के निर्णय भी विश्वसनीय नहीं हैं। हम सभी उसके ताने-बाने में उलझे हुए हैं। वह प्यारी थी, प्रेम करने योग्य, शानदार, महान् शख्सीयत, अद्‌भुत, ईश्वर की तरफ से भेजी गई, प्रत्येक क्षेत्र सम्बन्धी ज्ञान, पेंटिंग और संगीत दोनों में कमाल, जिसका भी स्पर्श करती उसमें प्राण डाल देती, साहित्य की जानकारी, यूरोपीय भाषाओं में निपुणता, जिसने अमृता को जाना, वह निष्पक्ष रह सके, असम्भव। भावनाओं से आपको स्वतन्त्र नहीं होने देगी।

फेबरी मौलिक कला का समालोचक था जिसने लिखा धर्म दर्शन द्वारा, अध्यात्मिकता के माध्यम से भारतीय कला से जान पहचान करवाई जाती है। धर्म के इस परदे के नीचे आर्ट धुंधला हो जाता है, सत्य पर परदा पड़ जाता है। सबसे प्रिय अंश छिप जाता है। स्वर्गवासी आनन्द कुमार स्वामी भी पुजारीवाद जैसे रोग का शिकार हो गया। वह भी सजीव हांड-मांस को देखने की अपेक्षा धर्म के स्वप्नमयी संसार में गुम हो गया।

सिंध घाटी की खुदाई में फेबरी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। रत्ना माथुर उसकी पत्नी बनी जो पेंटिंग करती थी, बाद में इंटीरियर डिज़ाईनर बन गई। देश विभाजन के समय लाहौर छोड़कर दिल्ली में रहना पड़ा। भारतीय कला पर भाषण देता, ***स्टेटसमैन*** में कला-निरीक्षक की पदवी पर नियुक्त हुआ। उसने पहली बार सतीश गुजराल और धनराज भक्त की कला को ढूंढकर लोगों के सामने रखा, इंदराणी रहमान और यामिनी कृष्णामूर्ति जैसी नर्तकियों का परिचय लोगों को दिया। वर्ष 1950 में पुत्र क्रिस्टोफर गौतम का जन्म हुआ। ये विचार मन में रखते हुए कि गौतम उसके

मार्ग का अनुकरण करे, पुत्र की पढ़ाई की ओर विशेष ध्यान देने लगा परन्तु कैंसर के कारण 1968 में माथुर की मृत्यु हो गई। सारा दिन काम- काज देखता रहा, फिर शाम को ढाई घंटे में ***स्टेटसमैन*** के लिए लेख लिखा, बच्चों और नौकरों को विदा कर लेट गया। देखा, हमेशा के लिए विदा।

अमृता ने हैलन का पोरट्रेट बनाया और उपहार रूप में भेज दिया। इकबाल सिंघ को ***रैड बरिक्क हाऊस*** पेंटिंग उपहार रूप में भेंट की। उसकी प्रथम विश्वसनीय जीवनी इकबाल सिंघ ने लिखी। उसके जीवनीकारों में कोई ऐसा नहीं जिसने इकबाल सिंघ द्वारा लिखित जीवनी का विवरण न दिया हो।

लेखक और ब्रॉडकास्टर अशफ़ाक अहमद 1950 में लाहौर की एक गली में से गुज़र रहा था कि कबाड़ी की दुकान पर अमृता की बनाई पेंटिंग देखी। कबाड़ी से पूछा कितने पैसे? कबाड़ी ने कहा जी सुनहरी फ्रेम के तीन रूपये दे दो, फालतू की तस्वीर को निकालकर फेंक देना। खरीद ली, अशफ़ाक ने तीन रूपये दिए, फ्रेम में से तस्वीर निकालकर फ्रेम कबाड़ी को दे दिया, अमृता शेरगिल को साथ ले गया। जुबेदा आगा के माध्यम से ये ऐतिहासिक पेंटिंग इस्लामाबाद पहुँची। अब ये नैशनल आर्ट गैलरी इस्लामाबाद में सुरक्षित है।

हैलन और दीवान चमन लाल के साथ खुदाई देखने हड़प्पा गई। दो पुरुषों और नृत्य करती स्त्री की लाल पत्थर की मूर्ति देखकर जैसे विस्मादित हो गई। वहीं रुकी रही, देखती रही। उसे आल इंडिया फ़ाईन आर्टस एण्ड क्राफ्टस द्वारा महिला कलाकार कहकर सम्मानित किया तो उदास हो गई, कहा मैं तो स्वयं को आर्टिस्ट समझती थी। अब पता चला कि मैं महिला कलाकार हूँ। लेडी आर्टिस्ट, पुरुष आर्टिस्ट का क्या मुकाबला करेगी?

14 फरवरी 1938 को सराया में आकर पेटिंग करने लगी। कार्ल को लिखा ***हरे छप्पड़ में नहाते हाथी*** बनाई। दूसरी पेटिंग ***खेत में काम करती औरतें*** हैं। मेरा विवाह समीप आ रहा है, थोड़ी घबराहट हो रही है क्योंकि मैं अच्छी पत्नी नहीं बन सकूंगी।

इन्हीं दिनों में लेखक मुलक राज आनन्द को मिली। आनन्द का विचार था कि अमृता की अपेक्षा उसकी प्रसिद्धि आगे निकल गई है। बाद में आनन्द ने लिखा कि 1930 तक वह दन्तकथा के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी। कहा करता थायदि मैं चित्रकार होता तो मेरी इच्छा अमृता द्वारा बनाए चित्र ***घड़े सहित लड़की*** जैसा चित्र बनाने की होती। लंदन से वापस आए आनन्द को उन पुराने दिनों से अमृता आगे निकली दिखाई दी जब आर्ट के क्षेत्र में कोई कुशल, गम्भीर व्यक्ति नहीं

था। अपनी मुलाकात के बारे में लिखता है तनावग्रस्त, झुंझलाई, उत्तेजित, अत्यधिक सुन्दर और पेंटिंग में गुम अमृता। जवान हुई तो उसका यश दूर दूर तक फैल गया।

डॉक्टर बनने की इच्छा से विकटर कठिन पढ़ाई कर रहा था। पिता के लिए जैसे कोई फ़र्क नहीं, परन्तु माँ विकटर के साथ अमृता का विवाह होने के विरुद्ध थी। अमृता सुन्दर थी, कलाकार थी, किसी प्रसिद्ध शख्सीयत के साथ, किसी रईस के साथ, जिससे चाहती, विवाह करवा सकती थी। विकटर न तो अमीर था न ही प्रसिद्ध। दूसरी बात, सगी मौसी के बेटे के साथ विवाह वर्जित होता है, इस पक्ष से भी गड़बड थी। माँ की विरोधता ने अमृता को और भी दृढ़ कर दिया, वह वही करेगी जो माँ की इच्छा के विरुद्ध हो।

विवाह से पूर्व शिमला से सराया अमृता को पिता ने पत्र लिखा नौ मास तक माँ ने गर्भ में रखा, फिर तब से लेकर अब तक तेरा पालन पोषण कर रहे हैं, अपने आर्ट या विवाह के कारण, मान लो, कुछ वर्ष पहले तुम आत्मनिर्भर होती। पैरिस तक, जो खर्च हुआ, किया, परन्तु इसके बदले में तुझसे अकल की कोई बात न सुन सकूं, अफ़सोस है। तुम्हें पता है कि विकटर अच्छा व्यक्ति है, वफ़ादार पति होगा, तुम्हें खुशी मिलेगी, तो भी है तो वह गाँव का मामूली सा डॉक्टर, कम आमदन वाला। मैं कितने वर्ष तक जीवित रहूंगा? मेरे बाद कोई तेरी सहायता नहीं करेगा। तेरी माँ का कहना है कि उसे यहाँ भारत में दफ़न या अग्नि भेंट नहीं करना। वह हंगरी के क्रबिस्तान में दफ़न होना चाहती है जहाँ वर्ष में एक बार रिश्तेदार गुलदस्ता तो रख जाया करेंगे। यदि मेरी मृत्यु पहले हो गई तो माँ की देखभाल भी तुझे करनी होगी। अनेक निराशाजनक विचार मन में आ जा रहे हैं।

अमृता को बच्चे नहीं चाहिएं, वह केवल पेंटिंग करेगी, विकटर को उसके पुरुष मित्रों से मिलने पर कोई आपत्ति नहीं होगी, वह भारत में रहेंगे, विकटर ने उसकी सभी शर्ते मान लीं। बचपन की यादों ने विकटर को बांध रखा था। उसकी पृष्ठभूमि आयरलैंड की थी जहाँ के लोगों का स्वभाव पंजाबियों के स्वभाव जैसा होता है। अब तंगी हो गई तो क्या हुआ, था तो मैजिस्ट्रेट का बेटा। माँ ने कपड़ों की सिलाई करके विकटर को मैडीकल की पढ़ाई करवाई। साहसी, तीक्ष्ण बुद्धि, व्यंग्य करने में निपुण परन्तु अमृता के आगे गुलाम। विकटर की माँ इस विवाह से खुश थी, दो कमरों वाला घर था, एक में माँ दूसरे में दम्पत्ति। परन्तु जब पता चला कि विकटर और अमृता भारत जायेंगे, उदास हुई। सारे जीवन की पूंजी से माँ वंचित हो जायेगी।

16 जुलाई, 1938 बिना बैंड बाजे के विवाह सम्पन्न हुआ। कोर्ट में जाकर विवाह रजिस्टर करवा आए, आकर कोई पार्टी नहीं दी। विवाह के पश्चात् अमृता शांत हो गई, उसे बिल्कुल अनुभव न हुआ कि वह किसी जंजीर में बंध गई है। विकटर के घर को छोड़कर कहीं नहीं जाती थी। विकटर जैसा नेक व्यक्ति उसे अच्छे कर्मों के कारण मिल गया। अजीब बात ये थी कि हंगरी में साड़ी पहनती। युद्ध के समय विकटर को सेना में भर्ती होना पड़ा, अमृता उदास हो गई तो शीघ्र ही उसको अपने पास बुला लिया। मरीज़ देखता, अमृता पेंटिंग करती। व ह साहसपूर्वक संकट का सामना करने के लिए उत्सुक थी परन्तु भारत से आते समाचार दुःखदायी थे। ये बात सुनकर वह बहुत उदास हुई कि बदनामी के भय ने माता-पिता ने उसके सभी पत्रों को जला दिया। उनमें अन्य प्रसिद्ध लोगों के साथ-साथ जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखा गया छह पृष्ठों का वह पत्र भी था जो उन्होंने दिल्ली में अमृता की प्रदर्शनी को देखने के बाद लिखा था, उसने कलाकार के अनुभव और पेंटिंग की ताकत को स्वीकार किया था। इसके धन्यवाद के रूप में अमृता ने लिखा था मेरी तस्वीरों को देखते रहो, सोचो मत, मतलब मत निकालो, फिर आपको कुछ मिलेगा, न दर्शन, न इतिहास, न चिन्तन, केवल आर्ट।

उसने माता-पिता को पत्र लिखा मेरे पत्र अग्नि को भेंट कर दिए, इस समाचार ने मुझे सदमा पहुँचाया है बता नहीं सकती। अधिकांश पत्रों को तो मैंने स्वयं ही जला दिया था। ये वो पत्र थे जिन्हें मैंने अपनी इच्छा से संभाला था, आर्ट आलोचकों के पत्र, महान् शख्सीयतों के पत्र। जो पत्र संभाल कर रखे थे, वे मुझे खुशी देते थे, मेरे काम के विषय में जानकारी और राहनुमाई करने योग्य विचार थे। क्या पता मेरी लाऊजी, मैलकम मुगरिज, जवाहर लाल नेहरू, इडिथ लैंग और खंडालवाला के पत्रों को आपने रख लिया हो। ये पत्र मैं आपके पास इसलिए नहीं छोड़ गई थी कि इनके कारण हंगरी में मेरी बदनामी हो जाएगी बल्कि सामान अधिक होने के कारण छोड़ कर गई थी।

खंडालवाला को लिखा हंगरी में भारतीय नारी के समान अपने पति के साथ रहती हूँ, जहाँ जहाँ डयूटी पर जाता है, रंग साथ लेकर मैं भी चली जाती हूँ।

द पटैटो पीलर पेटिंग बनाई, आलू छील रही लड़की का प्रभावी चेहरा देखने योग्य है, काम की शान दिखाई दे रही है। चेहरा और हाथ बलवान शख्सीयत की तो सृजना करते ही हैं, वान गाग की ***पटैटो ईटरज़*** की भी याद दिलाते हैं।

लम्बे युद्ध का खतरा जानकर विकटर आज्ञा लेकर अमृता सहित कोलम्बो के रास्ते भारत आ गया। अमृता ने कार्ल को लिखा खुशकिस्मती समझो कि

हिटलर भारत में नहीं है जिस कारण यहाँ का आर्ट सुरक्षित रहेगा। यहाँ होता तो थर्ड क्लास पश्चिमी आर्टिस्ट कहकर मुझे जेल भेज देता। मॉडर्न आर्ट और साहित्य का कट्टर दुश्मन है। पैरिस अगर जर्मन अधीन हो गया तो क्या होगा? आर्ट खत्म? मैं नौजवान कलाकारों को जानती हूँ, अभी संसार उन्हें नहीं जानता, उनकी मृत्यु फ्रैंच आर्ट के लिए कभी न पूरी होने वाली कमी होगी।

कुछ दिन कोलम्बो में रहे और मन्दिर और गुफाएँ देखीं, फिर मदुराय के वे सभी मन्दिर विकटर को दिखाये जिन्हें वह पहले देख चुकी थी। शिमला पहुँचे। माँ को उनका वापस आना सहन नहीं हुआ, एक प्रकार से ये हस्तक्षेप ही था, अमृता की ग़ैरहाजरी में विकटर का अपमान करती। इस स्थिति का जब अमृता के कज़न कृपाल सिंघ को पता चला तो वह दोनों को सराया शूगर मिल्ल के अस्पताल में ले गया। उसने अमृता को कहा कि हर महीने एक पेटिंग बनाकर दे दिया करो, ढाई सौ मिलेंगे। डॉक्टर को नौकरी दे दी। यहाँ से 13 अप्रैल, 1940 को विकटर ने अमृता की माँ को पत्र लिखा, ये पत्र पाठकों के लिए रुचिकर है। एक पत्र दो परिवारों के स्वभाव की भिन्नता को प्रकट करता है।

- प्रिय माँ, मेरी किसी बात के गलत अर्थ निकाल कर कहीं परिवार की शांति भंग न हो जाए, इसलिए डरता हूँ। पहले भी कभी आपको पत्र लिखने की इच्छा हुई, परन्तु आपसे जो लफ़ज प्राप्त होते, उस कारण इरादा बदल लेता। उमराउ अंकल को लिखता रहा हूँ, अब आपको भी लिख दूँ तो ठीक रहेगा।

- मुझे लिखने की कला नहीं आती, लेखन कला का मुझे ज्ञान नहीं, इस कारण अधिक सावधान रहना होगा, बातचीत के समय भी मेरी बातों का गलत अर्थ निकाला जाता है। माँ को अकेला छोड़कर जब मैंने दुःखी मन से भारत आने का निर्णय लिया, तभी मुझे पता था कि मेरे सामने बिल्कुल नया वातावरण होगा, पूर्ण अजनबी संसार में मुझे बदलना होगा। मुझे नौकरी शायद न मिले, तो भी परिस्थितियों से समझौता करना होगा, मुझे कुछ लोगों पर आश्रित होना पड़ेगा। बुदापैस्ट में इरविन बैकटे ने मुझे कहा था कि शिमला में तुम कुछ महीनों से अधिक नहीं रह सकोगे। परन्तु मुझे अपने स्वभाव का पता है। मैं स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेता हूँ। मैं प्रत्येक सम्भव प्रयास किया कि आप मुझे पसंद करें। प्रेम प्राप्ति के लिए मुझे खुशामद करनी नहीं आती। आप स्वयं को मसोलीनी, नैपोलियन और हिटलर जैसे दिमाग वाली स्त्री कहते हो। कमज़ोर लोग आपको स्तुति करते तो आपको अच्छे लगते, मैं ऐसा करने से इंकारी हो गया जिस कारण आपकी नाराज़गी को सहन करना पड़ा और मेरा संतुलन बिगड़ गया। मेरे द्वारा कहे एक एक शब्द का गलत अर्थ

निकाला जाता और मुझमें आपको केवल बुराईयाँ ही दिखाई देतीं। मैं समझ गया आपका स्वभाव ही ऐसा है जिसे बदला नहीं जा सकता।

- मैंने आपको बहुत रोका मेरे लिए अंग्रेज़ी के टयूटर का प्रबन्ध न करो क्योंकि मैं आप पर कोई वित्तीय बोझ नहीं डालना चाहता था परन्तु आपने मुझ पर दोष लगाया कि नालायक होने के कारण मैं पढ़ना नहीं चाहता। मुझ पर झूठ बोलने का दोष लगाया गया। इन दिनों अमृता इतनी थकी हुई और तनावग्रस्त थी कि मुझे सीखाने की क्षमता उसमें नहीं थी। स्वयं मैंने इसलिए पढ़ाई नहीं की क्योंकि मुझे भय था कि यदि मैं गलत भाषा सीख गया तो उसे भूलना कठिन होगा। यदि आपके पास सहानुभूति पूर्ण शब्द होते तो मेरे लिए अच्छा होता। परन्तु आप तो कड़वे शब्दों का प्रयोग करके मुझे लहु-लुहान करते रहे। मैं अकेला रह गया, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं गुम हो चुका हूँ, अपने आस-पास दृश्य और अदृश्य शत्रुओं के बीच घिरे मुझे पता न चलता कि मैं अपनी रक्षा कैसे करूँ? सच मानना ये दिन मेरे जीवन के सबसे सकंटमय दिन थे और मुझे संभलने में बहुत समय लगा। मैं खामोश हो गया, जितना खामोश रहता आप उतना ही दुर्व्यवहार करते। मुझे केवल अपनी पत्नी अमरी पर विश्वास था, इन बुरी परिस्थितियों में मैं कुछ भी करने योग्य नहीं था। अपने देश में होता तो अच्छा भला काम करता, खाता-पीता यहाँ आकर मैं आप लोगों पर निर्भर हो गया। मैं जो भी बना अपने कठिन परिश्रम से, आपके कारण नहीं, जैसा कि आप हर समय कहते रहते हो कि सब आपके कारण हुआ है। हमारा रेस्तरां तो चला नहीं, कमी सहकर भी हम मेहनत कर अपना गुज़ारा करते रहे। माँ ने जो पत्र मुझे लिखा, उसे मैंने आपको दिखाया, आपने उसका भी गलत अर्थ निकाला। मैंने बुदापैस्ट में इतना सख्त काम किया कि आराम करना भूल गया, स्वास्थ्य खराब होता देखकर माँ कहती थी थोड़ा बहुत खेल भी लिया करो, घूम आया करो, मैं कहीं नहीं जाता था। पत्र में माँ ने इस कारण लिखा था विकटर व्यायाम किया करो। आपने इसका ये मतलब निकाला कि माँ को पता है मैं कामचोर हूँ। तुम्हें काम करने की क्या आवश्यकता है? अस्पताल में कौन दौड़-भाग करे? मैं खामोश अच्छे दिनों की प्रतीक्षा करता रहा। हम सराया में चले आए, लगा दूर रहने से वातावरण ठीक हो जाएगा। यहाँ भी कोई फ़र्क नहीं पड़ा। इंतहा तो तब हुई जब आपने मुझे हरामी और मेरे पिता को सुस्त सूअर कहा। मुझे पता है आपकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं तो भी पत्रों में ये कुछ लिखने का क्या अर्थ? मेरे पिता के लिए बार-बार इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया गया। मैं अपने पिता को उनकी मृत्यु के पश्चात् भी प्रेम करता हूँ, वे मुझे देवता प्रतीत होते हैं। माँ उन्हें याद करके वर्षों रोती रही। जब आप हम पर किए किए

गए उपकारों का ज़िक्र करते रहते, अमरी और मैं दुःखी होते। मैं विस्तार में नहीं जाऊँगा क्योंकि आँसू मेरी पलकों तक पहुँच गए हैं। कोई माँ आपके जैसी भी होती है? डॉक्टर होने के कारण मुझे मरीज़ो के स्वभाव की जानकारी है, इस कारण वे बातें भी समझ जाता हूँ जिन्हें अन्य लोग समझ नहीं पाते।

- आपने अमरी को जन्मदिन का जो बधाई कार्ड भेजा उसे देखकर लगा अब अच्छे दिन आने वाले हैं। परन्तु कुछ दिनों पश्चात् वही सब कुछ, बिना किसी कारण मेरी निन्दा, बार-बार अपमान। मेरा न सही, अपनी बेटी का तो ध्यान रखना चाहिए जो बिल्कुल मासूम है। बच्चे और माता-पिता ही एक दूसरे को न समझे तो कितना दुःख होता है। एक दूसरे को समझना बहुत सरल है। अंकल उमराउ धैर्यशील है। उनकी ईमानदारी के कारण ही मैं उन्हें प्रेम करता हूँ। मैं उनके साथ प्रत्येक समस्या पर विचार-विमर्श करने के लिए तैयार हूँ। अपनी आदते, स्वभाव बदलने के लिए भी तैयार हूँ। मेरा स्वभाव ऐसा है कि मधुर शब्दों से मुझसे जो चाहे करवा लो, ले लो। छड़ी से मुझे हांका नहीं जा सकता। मैं अब अबोध बालक नहीं हूँ। इन सबके बावजदू भी मुझे कोई गुस्सा नहीं क्योंकि मुझे परिस्थितियों का पता है। अमरी से सलाह की कि इन परिस्थितियों से कैसे निकला जाए, इस परिणाम पर पहुँचे कि सब कुछ ठीक हो सकता है, बस आप हमें दुश्मन न समझें। हम आपका बहुत सम्मान करते हैं। गुस्सा त्यागना है या नहीं ये आप पर निर्भर करता है, मैं गुस्से नहीं, उदास अवश्य हूँ। यकीन करो, भूतकाल को ज़ालिम के समान याद नहीं करेंगे बल्कि कहेंगे ये हमारी गलतियों का समय था। आपके हाथ चूमता हुआ आशा करता हूँ कि सब ठीक हो जाएगा, जीवन और भविष्य सुखदायक होंगे।

इस पत्र का भी कोई असर नहीं हुआ। माँ निरन्तर गाली गलोच भरे, नफ़रत भरे पत्र लिखती रही। अमृता ने पिता को लिखा मन करता, माँ के पत्रों की नकल आपको भेज दूँ। वह हमें अपराधी, गंदे, असाधारण व्यभिचारी और पक्के बदमाश कहती है। ये भी लिखा है कि विकटर को मैडीसन की समझ नहीं है। प्रमाण के तौर पर प्रकाश के ब्लड टैस्ट का गलत नतीज़ा बताती है। लैब की गलती का दोषी विकटर को बना दिया। कहती है ये विकटर की साजिश है। वह भूल गई कि सिविल सर्जन और डॉक्टरों के प्रयास में असफल रहने के बाद ही विकटर ने प्रकाश की जान बचाई थी और एक साजिश को नाकाम कर दिया था। मम्मी ने जब आत्महत्या करने का प्रयास किया था तब भी विकटर की योग्यता के कारण ही उनकी जान बची थी।

विकटर ने इकबाल सिंघ को बताया था कि सराया में वह क्लेश से बचने के लिए थोड़े समय के लिए आए हैं, स्थायी रूप से रहने के लिए नहीं। अस्पताल के स्टाफ को उसने ईलाज की नवीन तकनीकों से अवगत करवाया। यहाँ मजीठिया निवास में अमृता ने जनवरी 1940 में ***द ऐनशिऐंट स्टोरी टैलर*** पेटिंग बनाई। कृपाल की बेटी जोजी को मॉडल लेकर ***पींघ*** पेंटिंग बनाई। यशोदरा डालमिया लिखती है 70 वर्ष की आयु में जोजी अब भी फुर्तीली है, अमृता को याद करते हुए कहने लगी हम तो बच्चे थे, वह जीवन की सम्पूर्णता का अनुभव कर रही थी। हम उससे बातें करतीं, छेड़-छाड़ करतीं, बहुत ही प्यारी, दयालु और मैत्रीपूर्ण स्वभाव वाली। मुझे लगभग एक घंटा सामने बिठाकर स्कैच बनाया, एक सप्ताह में उसमें रंग भरे। बहुत तेज़ ब्रश चलता था। मुझे उपहार रूप में देने लगी तो मैंने कहा अपने पास ही रखो। कहा ठीक है, जब मन करे ले जाना।

अक्तूबर 1940 में जवाहर लाल नेहरू यू.पी. का दौरा करते हुए गोरखपुर आए, इस समय वे ब्रिटिश राज्य के विरूद्ध लोगों को जागरूक कर रहे थे, साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों की सहायता न करने हेतु उन्हें प्रेरित कर रहे थे। छह अक्तूबर को गोरखपुर में भाषण दिया। यहाँ गोरखपुर के थाने में उनके विरूद्ध बगावत का केस दर्ज हुआ। अमृता, नेहरू से मिली। नेहरू ने कहा स्टेशन तक मुझे छोड़कर आओ। वहाँ वे गिरफ्तार हुए। 11 अक्तूबर, माँ को लिखा कुछ दिन पहले नेहरू से मुलाकात हुई, हमेशा की तरह सुन्दर। उन्हीं पुराने दिनों को याद किया, पिता जी को याद किया।

एक तरफ संघर्षशील सियासतदारों के मध्य जूझ रही कलाकार, तीसरी तरफ विकटर। इस आखरी मुलाकात की फोटो प्राप्त है।

मजीठिया परिवार अकसर शिकार पर जाता। एक बार अमृता और विकटर भी गए। विकटर ने चीते का शिकार किया, अमृता ने देखा, फोटो खींची। क्षण भर में चीते को मरते सभी ने देखा।

इंदिरा को पत्र मैं और विकटर एक दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं। जब दोनों अकेले होते हैं, चुप बैठे रहते हैं, वह जम्हाईयाँ लेता है, मैं लगातार डिपरैशन में उतरती रहती हूँ, जैसे एक दूसरे पर बोझ बने हों, फिर हम में से एक कह देता है शंतरज खेलें? शंतरज सीख रही हूँ, ब्रिज जैसी है। बेशक इस बारे में हम दोनों में से कोई नहीं बोलता, परन्तु हम नीचे उदासी की तरफ सरकते जाते हैं। दो भावुक इंसान ज़्यादा समय तक साथ रहे तो ऐसी बाधा आ जाती है, एक प्रकार की नैतिक शून्यता, एक पर्वत जिस पर चढ़ नहीं सकते।

पिता को लिखा पत्थर तराशने का काम भी किया, सभी कह रहे थे अच्छा है, परन्तु मुझे विशेष नहीं लगा। तीन साधुओं की पेंटिंग बनाई है। अपराधी दिखते हैं। ऐसे व्यक्तियों के साथ चाचा जी कैसे सम्बन्ध बना लेते हैं, पता नहीं। ये सही व्यक्ति नहीं, ईष्यालु हैं, मूर्ख हैं, सौदेबाज़ हैं। आप यहाँ होते इनकी खाल उधेड़ देते।

जनवरी 1941 में कार्ल खंडालवाला इनसे मिलने सराया आया, अमृता पेंटिंग कर रही थी। देखते ही कहा जब ये कैनवस के सामने होती है तब बाकी संसार नहीं होता। अमृता को लेकर कुशीनगर चला गया जहाँ बुद्ध का देहांत हुआ था। वहाँ तीन दिन रहे। कार्ल ने उसकी कला के गुण बताये, हौसला दिया जिससे कि वह पुनः उत्साहित हो गई, ब्रश चला, परन्तु कुछ दिनों पश्चात् फिर उदासी के वातावरण में घिर गई। 14 मार्च 1941 इंदिरा को लिखा खाली अहसास, असन्तुष्ट, रुष्ट, तुम्हारी तरह रो भी नहीं सकती। प्रताड़ित शक्तियाँ मेरा संतुलन बिगाड़ रही हैं। कम ही हैं जिन्हें मेरे काम की जानकारी है। कुछ अच्छा नहीं लगता। अंततः मैंने निर्णय कर ही लिया कि शमशान घाट का चित्र नहीं बनाना।

शमशान घाट का दृश्य चित्रित तो नहीं कर सकी, किन्तु स्कैच बना दिया। कफ़न में लेटी हुई लड़की, खुशी से पार शांति का अनुभव। रबड़ से मिटा मिटाकर नहीं एक ही बार में पक्की रेखाएँ खींच दी थीं।

कार्ल को लिखा बसोहली मिनिएचरों को देखा। राधा कृष्ण अद्भुत चित्रित हैं। मैं इन चित्रों को देखती रही तो गोगैं सामने आता रहा, उसकी पेटिंग ***ओताही (1897)*** देखोऔरत, तंग नीला दुमेल, नीचे चमकता पीला रंग, विस्मयजनक समानता। उसकी ***पासतेराला तहितीनैस (1897)*** देखो। विभिन्न सभ्यताओं, विभिन्न कालों का महान् आर्ट एक दूसरे के कितना नज़दीक है। कौन मानेगा कि बसोहली आर्ट और गोगैं आर्ट की शैली समान है।

पैरिस में ***यंग गर्लज़*** 1932 में बनाई, अत्यधिक श्लाघा हुई। इस कारण 1933 में ग्रैंड सैलून आफ़ पैरिस में ऐसोसिएट चुनी गई। वर्ष 1935 में, ***थ्री गर्लज़*** शिमला में बनाई। दोनों में प्रत्यक्ष अन्तर स्पष्ट है, पहली में पश्चिम तो दूसरी में पूर्व चित्रित है। पहाड़ी स्त्री-पुरुषों के चित्रों में भारतीय प्रभाव तो है ही परन्तु पाल गोगैं ने 1888 में जो ***द सर्मन/सरमन आफ़टर ए विज़िन*** बनाई थी, उसका प्रभाव भी दृष्टिगत है।

जर्मन चित्रकार जिसने पाकिस्तान की नागरिकता लेकर इसमत रहीम (1904-63) नाम रखा, अमृता को शिमला में मिली जहाँ उसका पति जे.ए.रहीम अफ़सर था। दोनों म्यूनख में साथ पढ़ते थे। अमृता ने उसे मैलकम का पोट्रेट दिया।

ये दम्पत्ति कराची में रहने लगे जहाँ इसमत ने आर्टस कौंसल की स्थापना की। उसकी पेंटिंग ***दो औरतें*** (1960) देखो। दोनों को चारपाई पर बैठे देखकर आपको अमृता की शैली स्पष्ट दिखाई देगी। पैरिस में अमृता ने ***यंग गर्लज़*** पेटिंग द्वारा जो प्रसिद्धि प्राप्त की थी, उसके बारे इसमत लिखती है ***यंग गर्लज़*** भीतर बैठी लड़कियों का दृश्य है, कमरे में आराम से बैठी हैं, केवल दो लड़कियाँ, एक गोरी दूसरी सांवले रंग की। परन्तु दृश्य आपको आकृष्ट करता है। ऐसी शानदान तस्वीर 19 वर्षीय लड़की ने बना दी। ताकत, मर्दानगी की झलक है इसमे।

पश्चिम में कलाकार स्त्रियाँ जत्थे बनाकर, यूनियन बनाकर काम करतीं, मुक्ति हेतु संघर्ष करतीं। प्रत्येक देश में कोई न कोई स्त्री कौंसल होती। भारत ऐसी कोई स्त्री संस्था नहीं थी, न ही अमृता को इसकी आवश्यकता हुई। वह इतनी साहसी थी कि उसे संस्था की आवश्यकता नहीं थी, यदि कमज़ोर होती तो स्वयं संस्था बना सकती थी। महात्मा गाँधी का स्वतन्त्रता आन्दोलन, सत्याग्रह, शांतमय था, इस कारण इधर तो औरतें रुचि ले रही थीं, सरोजिनी नायडू के समान निर्देशन दे रही थीं, परन्तु आर्ट का क्षेत्र केवल पुरुषों के लिए खाली था। सख्त विरोधों में अमृता निरन्तर क्रियाशील रही।

1941 के प्रारम्भ में लाहौर गए जहाँ रहने का विचार था, संक्षेप सर्वेक्षण के बाद वापस आ गए। 26 वर्षीय अमृता ने जब लाहौर में प्रदर्शनी लगाई तो उसे पता चला कि उसके बचपन का कला उस्ताद पैटमैन लाहौर में है। उसे आमंत्रित किया। जवान अमृता की सुन्दरता देखी, आत्मविश्वास और तस्वीरें देखकर पैटमैन ने माता-पिता को सलाह दीपहले लंदन स्लेड स्कूल में ड्राईंग सीखने के लिए फिर पैरिस के बिओ आर्टस स्कूल में रंगों की ट्रेनिंग के लिए भेजो। उसकी सलाह पर अमल नहीं हो सका।

फिर जून में गए, सर्वप्रथम इकबाल सिंघ से मिले जो आल इंडिया रेडियो में काम करता था। शिमला में वह अमृता को विवाह से पूर्व जानता था, दोनों में मित्रता थी। उसने लिखा 1934 में जब पैरिस वापस आई, एक दिन शिमला के प्रसिद्ध रेस्तरां देविको में आई, हॉल में खामोशी छा गई, प्रत्येक की दृष्टि उसी पर, गहरी हरे रंग की साड़ी, लाल बलाऊज़, तिब्बती आभूषण। कुछ दिन पश्चात् इकबाल को घर बुलाकर अपना स्टूडियो दिखाया, देखते ही इकबाल ने अत्यधिक प्रशंसा की, कहा गोगैं जैसे अनुभव हैं। सभी वाक्य उसे प्रसन्न करने के लिए कहे, वह खुश हो गई। दीवान चमनलाल से भी लाहौर में मिले, उसने बताया कि बड़ी संख्या में भर्ती होकर डॉक्टर यहाँ से फौज के साथ चले गए, अब प्रैक्टिस के लिए उचित समय

है। अमृता को आर्ट की दृष्टि से लाहौर सही लगा। विकटर वापस सराया आ गया और वह वहाँ चमनलाल के पास रही। यहीं सोवियत चित्रकार सवेतोसलाव रोरिख से मिली जो अपने पिता प्रसिद्ध आर्टिस्ट निकोलस के साथ आया हुआ था, पिता ने कुल्लू और हिमालय के रमणीय चित्र बनाये थे। बाद में 1945 में सवेतोसलाव ने टैगोर की पौत्री, प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री देविका रानी से विवाह करवाया। देविका रानी ***अछूत कन्या*** फिल्म के कारण 1936 में प्रसिद्ध हो चुकी थी।

लाहौर से शिमला आई, देखा इंदिरा और उसके पति ने उसके स्टूडियों पर कब्जा कर लिया है। दूसरे कमरे में चली गई, परन्तु पेंटिंग कहाँ करे? अमृता, इंदिरा से स्नेह करती थी परन्तु इंदिरा उससे ईर्ष्या करती थी क्योंकि वह अमृता जितनी सुन्दर और सभी की प्रिय नहीं थी। जब विकटर के साथ इंडिया आई, अमृता के पास पैसे नहीं थे जबकि इंदिरा अमीर थी, उसे इस बात का गर्व भी था। एक बाद इंदिरा ने डिनर दिया जिसमें तीन विदेशी मेहमान आए। दीवारों पर पेंटिंग देखकर चित्रकार के बारे में पूछा। अमृता से बातें करने लगे, इंदिरा को अनदेखा कर दिया और अमृता की कला से अत्यन्त प्रभावित हुए। उनके जाने के बार इंदिरा ने तूफान खड़ा कर दिया कि ये प्रत्येक स्थान पर कैसे चौधरानी बन जाती है। अमृता ने कहायदि ये बात है तो आज के बाद इस छत के नीचे नहीं रहूँगी। इंदू ने कहाठीक, दफा हो जाओ। दस मील का पैदल सफ़र पहाड़ी चढ़कर तय किया, सुबह तीन बजे हैलन के दरवाज़े पर दस्तक दी। बाकी दिन यहीं रही। पत्र लिखकर विकटर को संक्षेप में इंदू के बारे में बताया। लिखाऐसे चांदी के मोटे कंगण यू.पी. की स्त्रियाँ पहनती हैं, तेजी और मेरे पास हैं, उनके जैसा एक सैट हैलन के लिए ले आना। ये मेरा बहुत ख्याल रखती है। तुमने लिखा तुम्हें मेरा आर्ट बहुत पंसद है। मुझे खुशी हुई। मुझे लगता था तू इस काम से अनजान है। अनजान होने से तो अच्छा है कोई मेरे काम से नफ़रत करे, रद्द कर दे। जब उदास होती हूँ तुम्हें याद करती हूँ। गोगैं की कौन सी जीवनी पढ़ रहे हो आजकल? अंग्रेजी में तो कोई है नहीं। ***डीयर थीओ*** अवश्य पढ़ना, वान गाग द्वारा अपने भाई लिखे पत्र अद्‌भुत हैं।

26 वर्षीय खुशवंत सिंघ भी हैलन और चमनलाल दोनों का मित्र था। लंदन से वकालत कर लाहौर प्रैक्टिस शुरू कर दी। उसके पिता की कोठी चमनलाल के घर के समीप थी जहाँ वह गर्मियों में आया करता। अमृता ने विकटर को 21 जुलाई, 1941 को पत्र लिखा खुशवंत नामक युवक से मिली, जो पत्नी सहित माता-पिता के पास आया हुआ था। मुझे लंच पर बुलाया। बताया कि सिलज़र का अपना लाहौर में जो क्लिनिक और घर है उसे बेचना चाहता है। हैलन ने गुस्से से कहा ये बात

बंद करो। सिलज़र पहले ही अपना घर बेच चुका है। अब दूसरी बार बेचने की बात यहीं खत्म। कच्चे सेब बहुत खा लिए, इस कारण पेट में दर्द हो रहा है। रसीद के स्पैलिंग reciet नहीं receipt होते हैं।

10 जुलाई, 1941 को खुशवंत ने लाहौर से अमृता को पत्र लिखा प्यारी मिसिज़ ऐगन, डॉक्टर सिलज़र का क्लिनिक बिक रहा है परन्तु उसने कहा है अक्तूबर तक रुकना होगा क्योंकि अभी अमेरिका ने उसे वीज़ा नहीं दिया। तुम देखोगी तो तुम्हें पसंद आएगा, फिर डॉक्टर से बात कर लेना।- खुशवंत।

अमृता के किसी पत्र में इसके बाद खुशवंत का जिक्र नहीं हुआ। खुशवंत सिंघ उसका ज़िक्र ***टूथ लव एण्ड ए लिटल मैलाईस*** में करता है अभी वह लाहौर में नहीं पहुँची थी कि उसकी शौहरत पहुँच गई। पति के साथ लाहौर में रहना चाहती थी। सुन्दर और खुले विचारों वाली थी। नेहरू उस पर मोहित हो गया। उसके इश्क की कहानियाँ लोग मज़े से सुनाते। पता नहीं सत्य या झूठ परन्तु उसकी कामुक वृत्ति के किस्से चलते रहते हैं। मैं उससे मिलना चाहता था शीघ्र ही अवसर मिल गया।

एक दोपहर रोटी खाने के लिए लाहौर घर में आया तो देखा मेज़ पर बीअर की खाली बोतल और पर्स रखा था, कमरा फ्रैंच इत्र से सुगन्धित था, मैंने अपने रसोईये से पूछा, उसने कहा मैं नहीं जानता, एक मेमसाहिब साड़ी पहनकर आई है। आपके बारे में पूछामैंने कहा दोपहर को भोजन करने आएँगे। इधर उधर देखकर स्वयं ही फ्रिज खोलकर ये बीअर निकाल ली। अब बाथरूम में है। मैं बिना देखे समझ गया, अमृता है, वही थी। बताया सड़क के दूसरी तरफ उसने मकान किराये पर लिया है, मुझसे मिस्त्रियों, पलम्बरों, दर्जियों के बारे में पूछने लगी। मुझे जितना पता था बता दिया। मैं उसके साथ आँखें नहीं मिला सका, उसकी आँखों की चमक में कुछ ऐसी बेशर्मी झलक रही थी कि मेरे जैसा कमज़ोर व्यक्ति नज़रें झुका ले। माथे के मध्य में मांग, बालों का कस कर चोटी बनाई हुई। मोटे होंठ। मैंने कहामैंने आपके बारे में सुना है आप एक बढ़िया चित्रकार हो, फिर अपनी पत्नी द्वारा बनाई पेंटिंगों की तरफ इशारा करके कहाये मेरी पत्नी ने बनाई हैं, अभी सीख रही है।

- पता चल रहा है शिक्षार्थी है, उसने कहा। उसमें थोड़ी सी भी विनम्रता नहीं थी, जो मन में आता कह देती, किसी को अच्छा लगे, बुरा, परवाह नहीं।

दूसरी बार शिमला में मिले। खुशवंत अपनी बेटी और पत्नी को कसौली से ले आया। उस समय अमृता चमनलाल आदि के साथ रह रही थी। खुशवंत सिंह ने इन्हें लंच पर बुलाया। वृक्ष के नीचे बीअर और शराब का दौर चला। बच्चा ने अभी कदम उठाना सीखा ही था, सुन्दर सूरत, घुंघराले केश, गालों में गड्ढे, मोटी आँखें,

सभी उसकी प्रशंसा कर रहे थे। अमृता ने कहाकितना बदसूरत लड़का है। सभी को ये बात बुरी लगी, बेपरवाह अमृता बीअर पीती रही। खाना खा कर चली गई। उसे किसी ने बताया कि तेरे आने पर खुशवंत की पत्नी ने तुझे गंदी कुतिया कहा था। बताने वाले से अमृता ने कहा मैं उसे सबक सिखा कर रहूँगी। मैं इसके पति को भगाकर ले जाऊँगी। खुशवंत लिखता है उसने अपनी बात सत्य करके नहीं दिखाई। पत्नी ने ऐलान किया कि वह इस घर में आईंदा कभी नहीं आएगी।

19 अक्तूबर, 1941 को उसका शिमला में इंटरव्यू रिकार्ड हुआ, जो आल इण्डिया लाहौर से प्रसारित हुआ। ***इंडियन आफ टुडे*** में उसने कहा इंडियन आर्ट कहना सही नहीं, इंडियन पेटिंग कहना चाहिए क्योंकि मूर्तिकला भारत से लुप्त हो गई है, मूर्तिकला को कभी पूर्ण सभ्यता समर्पित हो गई थी। कहीं कहीं जहाँ थोड़ी बहुत मूर्तिकला बची है, वह भी पश्चिमी कलाकारों की नकल है और पश्चिमी कलाकार वास्तव में भारत की प्राचीन सृजना में से सीखते समय कोई न कोई प्रयोग आदि करते रहते हैं जो बिल्कुल गलत और दिशाहीन है।

जानवरों के चित्र बनाने लगी, ऊँट, घोड़े, हाथी, भैंसे, गायें, कुत्ते, कौवे इत्यादि चित्रित करते समय वह अधिक स्थिर, अधिक शक्तिशाली प्रतीत होती है। उसके द्वारा चित्रित दो व्यक्तियों एवं तीन ऊँटों वाला चित्र शानदार है। ऊँटों के चेहरे उनके भावों को अभिव्यक्त कर रहे हैं। हाथियों का चित्रण में दिखाई दे रहा है शैली अजंता की नहीं, मुगलों की है।

अमृता और विकटर को स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि माता-पिता उनसे खफा हैं जिस कारण उन्हें सराया के काले पानी का दण्ड भोगना पड़ रहा है। शिमला और मजीठा का क्षेत्र उनके लिए वर्जित हो गया। आखिर लाहौर में माल रोड के समीप पॉश ऐरिए में मकान किराये पर ले लिया। पहले मुगलों ने, फिर महाराजा रणजीत सिंघ ने और फिर अंग्रेजों ने इस शहर की सुन्दरता में वृद्धि की। इसी शहर में शाहज़ादा सलीम (जहांगीर) और अनारकली का प्रेम हुआ था, यहीं जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ की कब्र है। अंग्रेजों ने यहाँ अजायब घर, हाईकोर्ट, पंजाब विश्वविद्यालय और मेओ स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना की। दोनों ने निर्णय किया कि अपनी इच्छानुसार हवेली की सजावट करेंगे। निचले भाग में विकटर का अस्पताल, ऊपरी भाग में अमृता की वर्कशाप और आर्ट गैलरी होंगे। स्वप्न साकार हुआ। स्वयं फर्श को रगड़ कर साफ किया, दरवाज़े, खिड़कियों पर स्वयं रंग किया। आवश्यकतानुसार मेज़ कुर्सियाँ किराये पर ले लीं। दीवारों पर अपनी पेटिंगें लगा दीं। क्लिनिक में विकटर ने वेटिंग रूम, चैकअप रूम, आप्रेशन थिएटर बनाये। एक छोटी फोर्ड कार खरीदी। लाहौर

कलाकारों, साहित्यकारों का दुर्ग था। इन के घर महफिलें लगने लगीं। अमृता की प्रसिद्धि शिखर पर थी।

अस्पताल में रोगी आने लगे और दूर समीप से कलाकार एवं कला निरीक्षक आकर विचार-विमर्श करने लगे। साहित्य एवं दर्शन की चर्चा हेतु महफिलें लगतीं। रेडियो पर अमृता के विचार प्रसारित होते। महानगर लाहौर की वह केन्द्रिय शख़्सीयत बन गई थी जिसके ईदगिर्द परिक्रमा करने से कुछ प्राप्त किया जा सकता था। मेहमानों का स्वागत चाय, कॉफी से किया जाता। विकटर बताता है लोगों के मध
य खड़ी वह हँसती रहती। ये सही है कि उसका चयन निजी किस्म का होता था। कमबुद्धि वाला व्यक्ति उसके पास अधिक समय तक नहीं बैठ सकता था, मैं इस विचार-विमर्श को ध्यानपूर्वक देखता, सुनता। उससे मिलने वाला व्यक्ति शिक्षित एवं रोचक होना ज़रूरी था। दिसम्बर में उसने एक विशाल प्रदर्शनी की योजना बनाई और उसकी तैयारी करने लगी। हवेली की खिड़की में से शहर को देखकर उसे कैनवस पर उतारने लगी।

तत्कालीन विख्यात लेखक फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, अहमद शाह बुखारी, गुरबख्श सिंघ, करतार सिंघ दुग्गल, अमृता प्रीतम, मंगत राय, उस समय लाहौर में रहते थे। आर्टिस्टों में अब्दुल रहमान चुगताई, बी.सी. सानयाल, बेवां पैटमैन, मेरी कृष्णा, रूप कृष्ण, कृष्ण खन्ना, सतीश गुजराल सभी वहाँ थे। बंगाल स्कूल का मूर्तिकार सानयाल लाहौर में लाला लाजपत राय की मूर्ति बनाने आया था जिसका उद्घाटन कांग्रेस के वार्षिक सैशन में होना था। मूर्ति बना दी। कांग्रेस ने पैसे नहीं दिए। स्वयं उसके पास पैसा नहीं था। मेओ स्कूल में नौकरी की, कुछ समय पश्चात् उसने अपना स्कूल ऑफ़ फाईन आर्ट शुरू किया जो सफल रहा। इसका नाम था लाहौर स्कूल ऑफ़ फाईन आर्टस। इस स्कूल में वे तीक्ष्ण बुद्धि कलाकार दाखिल हुए जो अकादमिकता और परम्परागत बंधनों को तोड़कर कुछ नया करने में समर्थ थे। अमरनाथ सहगल, दमयन्ती चावला, हरकृष्ण लाल और प्रेमनाथ मागो इस स्कूल की उपज थे। सानयाल अमृता की कला से पूर्णतः परिचित था, अमृता अकसर उसके स्टूडियो में जाती, उसकी अंग्रेज पत्नी मेरी किशन भी अच्छी कलाकार थी बाद में दोनों इंग्लैंड चले गए और दोनों ने ***फार्म एण्ड सबस्टांस*** नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की। ये पुस्तक ब्रिटिश अकादमी और बंगला स्कूल पुनर्जागरण, दोनों शैलियों के विरुद्ध है।

माँ को पत्र लिखा जो चाहती थी वो मिल गया। पिता जी के लिए आरामदायक अलग कमरा है। पिता के पसंदीदा पकवान रसोईया बना सकेगा, पता

नहीं, परन्तु पिता खाने-पीने में कमियाँ भी नहीं निकालते। शिमला में रखी मेरी सभी पेंटिंगें भेज दो।

दिसम्बर की प्रदर्शनी के लिए कार्ल खंडालवाला और पंजाब लिटरेरी लीग के प्रधान सर अब्दुल कादिर को भूमिका लिखने के लिए कहा। तैयारियाँ शुरू हो गईं। इकबाल सिंघ लगभग प्रतिदिन आता। कुछ दिनों के पश्चात् तीन दिसम्बर को आया तो अजीब सी खामोशी का अनुभव हुआ। विकटर क्लिनिक में नहीं था। सीढ़ियों से ऊपर गया, देखा ज़र्द चेहरा, अमृता बिस्तर पर लेटी हुई थी। बताया सर अब्दुल कादिर के घर गई थी, मैडम कादिर ने पकौड़े दिए जिनकों खाने के बाद पेट में गड़बड हो गई। तब से ठीक नहीं है। विकटर दवा दे रहा है। कुछ समय बातचीत करने के बाद इकबाल चला गया। पाँच तारीख को फिर आ गया, विकटर सीढियाँ उतर रहा था, उदास। - क्या बात है? अमृता कैसी है? उसने कहा गम्भीर। शायद बच न सके। बेहोश है, जो हो सकता है कर रहा हूँ। इकबाल अपनी गाड़ी में हैलन और उसके पति को ले आया।

हैलन तेजी से अमृता के कमरे में गई। आकर बताया मर रही है, और डॉक्टर लाओ। डॉ. निहाल चन्द सीकरी तथा जर्मन डॉक्टर कैलिश ने आकर अमृता का चैकअप किया और कहा बहुत देर हो चुकी है। मृत्यु तक खून बहता रहेगा। विकटर ने डॉ. रघुबीर सिंघ को बुलाया जो लाहौर का प्रसिद्ध सर्जन था। उसके आने तक अमृता मर चुकी थी। 28 वर्ष की उम्र, 5 दिसम्बर की आधी रात। अगले दिन 6 दिसम्बर शनिवार को माता-पिता शिमला से, इंदिरा और उसका पति कल्याण सुन्दरम दिल्ली से लाहौर पहुँच गये। अचानक क्या हुआ, इसका विस्तार प्राप्त नहीं है। परन्तु मित्र, सखियाँ मिलने गए तो देखा, खून से लथपथ सफेद चादरों में लिपटी हुई थी। गर्भपात? शायद।

गीता ने लिखा उसके अंतिम शब्द रंगों के बारे में थे। खिड़की में से सूर्य की किरणें भीतर आ रहीं थीं, दीवार पर कुछ आकार बनते देखे, पर्दे पर नीले, लाल, हरे रंग उभरे, उनकी तरफ देखते हुए इन रंगों के नाम लेती हुई बेहोश हो गई, संसार को अलविदा कह गई। पिता ने बताया अमृता की इच्छा थी कि मैं लाहौर उसके पास रहूं और देखूं वह कितनी खुश है। मैंने कहा था लाहौर में मेरे जितने भी पुराने मित्र हैं उनसे मिलो। चिट्ठियाँ लिख दी हैं। मैं संस्कृत से अंग्रेजी अनुवाद के काम में मश्गूल था, कहा अभी नहीं कुछ दिनों बाद आऊँगा। 6 तारीख शाम को पहुँचे, 7 को अंतिम संस्कार कर दिया। वह तेज़ अंगुलियाँ और दिमाग जिन्हें सृजना से फुर्सत नहीं मिलती थी, हमारी आँखों के सामने पाँच तत्त्वों में मिल गए। लाहौर में

ही उसने माँ के गर्भ में प्रवेश किया था और ईश्वर ने उसकी मुक्ति का स्थान भी लाहौर ही चुना।

पूर्वी और पश्चिमी सभ्याचार में घिरने के कारण उसकी बेटी की लता मध्य में ही टूट गई। बचपन हंगरी में, जवानी पैरिस में। वह पैरिस जहाँ प्रभाववादी कलाकार निर्वस्त्र लड़कियों का चित्रण कर रहे थे। ये चित्र काल्पनिक नहीं थे। वेश्याएँ, निध् ान लड़कियाँ पेट की भूख शांत करने हेतु स्वयं को मॉडल प्रस्तुत करती, युवक उन्हें कैनवसों पर चित्रित करते। इस शैली का अर्थ स्पष्ट है कामवासना को रूप देना। इस वातावरण में प्रसिद्ध अमृता कैनवस पर सनातन ग्रामीण भारत को चित्रित कर रही है। माता-पिता को न तो उसकी आदतें पंसद हैं न काम, परन्तु विवश हैं। उच्च वंशीय होने के कारण सिक्ख समाज उसे सहन करता रहा, स्वीकृत नहीं हुई। माईकलएंजलो ने दाऊद, यसू, आदिम, ईव और फरिश्ते, निर्वस्त्र चित्रित किए, नग्न तराशे, परन्तु उनमें नग्नता, काम, अश्लीलता दिखाई नहीं देती। नग्न चित्र देखकर पोप घुटनों के बल बैठ माथा टेक देता है। हमारे ये अमृता के समकालीन कलाकार मानसिक रोग का शिकार हुए, पागल, नीम पागल होकर अनेकों ने आत्महत्या की, अनेक सलाखों के पीछे मरे। अमृता की जीवन श्रृंखला का टूटना एक प्रकार से आत्महत्या ही है। जिस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रही थी, चित्रित कर रही थी, उसे पता था इसमें विस्फोट होगा। उसे लगा, अपनी खानदानी पृष्ठभूमि का लाभ लेकर वह भी वही करेगी जो पुरुष करते है, मनमर्ज़ी, प्रत्येक प्रकार की मर्ज़ी।

उसके वाक्य को अकसर दोहराया जाता मैंने कब कहा मैं समझदार हूँ? मैं तो कहती हूँ दूसरे लोग मूर्ख हैं।

कश्मीरी शॉल में शरीर लपेटा। किसी को ध्यान में नही आया, फूल चाहिएं। तुरंत जाकर मित्र हार ले आए। माल रोड के ऊपर से चलकर बादशाही मस्जिद, दुर्ग फिर रावी किनारे शमशान घाट। अरदास के बाद पिता ने चिता को अग्नि दी। आग की लपटें ऊपर उठने लगीं। अब अमृता कभी दिखाई नहीं देगी। काफिला वापस आ गया।

शोक सभा हुई जिसमें चुगताई, सानयाल, रूप किशन और मेरी शामिल हुए। सानयाल ने बताया विकटर उसके बचे हुए रंग, ब्रश, पेंट के बक्से, कैनवसें दे गया। उसकी निशानियाँ। आनन्द भवन से नेहरू का पत्र आया उससे सम्बन्धित प्रकाशित सामाग्री भेज रहा हूँ। उसकी एक फोटो अपने पास रख ली है। उस जीनियस ने तो अभी शिखर पर पहुँचना था। उसने कहा था कुछ दिन मैं और विकटर आपके पास इलाहाबाद में रहेंगे। सब बीते समय की बातें रह गईं।

सरोजिनी नायडू का पत्र आया अपनी सुन्दरता, जवानी, कला और विलक्षण बुद्धि से उसने जिस संसार को सजाया, उसे शीघ्र ही छोड़ गई। अमीर शख़्सीयत... अमीर रूह ... मुझे पता है मुझसे प्रेम करती थी। अल्पायु में विशाल विरासत छोड़ गई। हौसला, ताकत, मौलिकता... इतने कम समय में इतना अधिक।

उसने शमशान घाट की पेटिंग क्यों बनाई? विकटर बताता वह अकसर कहती रहती थी, मैंने काम करना है, मेरे पास समय कम है, काम मैंने अधिक करना है। हर पल उतावलापन।

विवादों में घिरी अमृता के विवाद मृत्यु के साथ समाप्त नहीं हुए। माँ, मेरी ऐंतवुनैत को पागलपन के दौरे पड़ने लगे। उसने पुलिस को, खुफिया संस्थाओं को, मन्त्रियों को पत्र लिखकर कहाविकटर मेरी बेटी का कातिल है। ये कोल्ड बलड्ड मर्डर है। उमराउ सिंघ शांत रहा। 20 दिसम्बर 1941 को दिल्ली इंदिरा से घर से अनेक पत्र उसने अहम शख़्सीयतों को लिखे। चमनलाल को लिखा आपने मेरी बेटी और दामाद के लिए जो किया, अभी कर रहे हो, शुक्रगुज़ार हूँ। मैं, मेरी पत्नी और विकटर अभी तक इस सदमे से बाहर नहीं निकल पाए। मेरी पत्नी की हालत अच्छी नहीं है। कहती रहती है कोई अमृता की बात न करे मेरे साथ। स्वयं सारा दिन उसकी बातें करने से नहीं रूकती। जो प्रदर्शनी आयोजित करनी है, उसमें निर्वस्त्र पेंटिंगें न रखी जाएँ। अन्य भी, जो सही नहीं हैं, उन्हें अलग कर लिया जाए। सर सिकन्दर हयात ख़ान उद्‌घाटन करने आयेंगे, उन्हें कोई परेशानी न हो। तत्पश्चात् सभी तस्वीरें दिल्ली भेज दी जाएँ, यहाँ चालर्स फेबरी प्रदर्शनी का प्रबन्ध कर रहा है। फिर शिमला के अपने घर में हम सभी वस्तुएँ रखकर अमृता आर्ट गैलरी की स्थापना करेंगे। अमृता की अस्थियाँ शीशे के फूलदान में रखेंगे।

8 जनवरी, 1942 को पुनः चमनलाल को लिखा मेरी पत्नी अनेक पागलों के जैसे पत्र लिखकर विकटर को अमृता का कातिल कहा है। सदमे के कारण उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। पागलपन के दौरे उसे पहले से ही पड़ते हैं। पिछले मास हालत अधिक खराब हो गई। विकटर दोषी नहीं, उस पर संदेह अनुचित है। जहाँ आवश्यकता हो, मेरा ये पत्र दिखा देना।

अमृता की मृत्यु का क्या कारण था? सर अब्दुल कादिर लाहौर हाईकोर्ट का न्यायाधीश, उमराउ सिंघ का मित्र और अमृता का प्रशंसक था। उसके घर जो पकौड़े खाए थे क्या उनके कारण इन्फैक्शन हुई और अधिक रक्त बहने से मृत्यु हुई? इकबाल सिंघ के अनुसार यही सत्य है। अमृता झूठ नहीं बोलती थी। ये फूड पाईज़निंग का परिणाम है। संदेह कर्त्ता कहते हैं, मात्र हाज़मे की खराबी का विकटर

के पास उपचार नहीं था? इकबाल कहता है हाँ, उसे स्वयं पर विश्वास था, ऐसे अनेक उपचार कर चुका था, अमृता स्वस्थ क्यों नहीं होगी? अनेक बार मरीज़ ठीक नहीं होता, इसमें डॉक्टर का क्या दोष? आंतड़ियों की इन्फैक्शन के कारण डी-हाईड्रेशन हो गई।

खुशवंत लिखता हैउसकी माँ ने विकटर के विरुद्ध जिस जिस को पत्र लिखे, उनमें मैं भी था। मैं इसे कत्ल नहीं मानता, लापरवाही कही जा सकती है। डॉ. रघुबीर सिंघ ने बताया जब आधी रात को मैं गया, उसके बचने की उम्मीद थी ही नहीं, वह गर्भवती थी और विकटर को गर्भपात के लिए कहा था। आप्रेशन फेल हो गया। खून बंद नहीं हुआ, विकटर ने मुझसे कहा मेरा खून इसे चढ़ा दो। मैंने इंकार कर दिया क्योंकि मुझे दोनों के ब्लड ग्रुप का पता नहीं था। हम दोनों जब तर्क-वितर्क कर रहे थे उसने दम तोड़ दिया।

इकबाल सिंघ कहता है, गर्भपात के बारे में किसी अन्य को न बताती हैलन को बता देती। हैलन का भी यही कहना है। परन्तु विकटर के दूसरे विवाह से जन्मी उसकी बड़ी बेटी ईवा सूद का कहना है कि वह गर्भवती हुई, विकटर को बिना बताए किसी नीम हकीम से केस खराब करवा लिया। विकटर का ईलाज अभी चल रहा था कि एक बड़ी, भारी पेंटिंग उठा ली जिससे रक्त बहना शुरू हो गया। बी.के. नेहरू की पत्नी फोरी का कहना है कि उन दिनों में गर्भपात गैर कानूनी था। गर्भपात किया विकटर ने परन्तु सही नहीं हुआ। किसी को भी सज़ा और बदनामी के भय से नहीं बताया, मैडिकल कौंसल ने सर्टीफिकेट रद्द/खारिज कर देना था।

5 मार्च, 1944 को अमृता की माँ ने विकटर को हंगेरियन भाषा में पत्र लिखा मेरे प्रिय विकटर, बहुत समय से लिखने के बारे में सोच रही हूँ। मेरे कारण तुम्हें कितनी तकलीफें मिली, अफ़सोस है। परन्तु मैं बीमार हूँ। मैं बुरी हूँ। 19 वर्ष की आयु में जब मैंने आत्महत्या का प्रयास किया तो मैं बच गई। मुझे देखकर हैरान रह जायेंगा, भीतर की सारी बुराई चेहरे पर आ गई है। दूसरों को दुःखी किया, मरने तक करती रहूँगी। आंगन में खड़ा 70 वर्ष पुराना वृक्ष कटवा दिया क्योंकि बंदरों को देखकर चिढ़ आती थी। अब आंगन वीरान लगता है। इंदिरा ने मुझसे कहा तूने विकटर से नफरत की, परिणामतः अमृता तुझसे नफरत करती रही। दान इसलिए करती थी ताकि लोग मुझे दुष्ट न समझे। मैं प्यारी माँ नहीं हूँ, अब तो पागल हो चुकी हूँ। पहाड़ से छलांग लगाने का मन किया था।... तुम कुछ करो। ... कुछ भेज दो।

यहाँ ***कुछ*** का अर्थ विष है। विकटर ने 11 मार्च, 1944 को उत्तर दिया प्यारी माँ, आपके उदास पत्र ने मुझे बेचैन कर दिया। पढ़ते ही उत्तर देना चाहता था परन्तु अंतिम डाक निकल चुकी है, एक दिन की देर हो गई है। मैं डॉक्टर हूँ, सबसे पहले ये जानना होता है बीमारी क्या है और बीमारी के कारण क्या हैं। मरीज़ को कारणों का पता नहीं होता। मरीज़ को जब पता चल जाता है, तब वह ठीक होने लगता है। बच्चे अंधेरे कमरे में जाने से घबराते हैं। दीया जला दो तो सब कल्पित खतरे दूर हो जाते हैं। अनेक बार मन किया आपका ईलाज करूँ, लेकिन जब आपको मुझ पर विश्वास ही नहीं तो आपके लिए मैं डॉक्टर भी नहीं हूँ। आपके डर कल्पित हैं। आपको कितना अच्छा पति मिला, नाती मिल गया, स्वास्थ्य अच्छा था, रहने के लिए महल मिले। जिसके लिए संसार तरसता है, वह सब कुछ मिला। आप लोगों से सहानुभूति, प्रेम मांगोगे नहीं मिलेगा। आप हमदर्दी और प्रेम दूसरों को दो, आपके पास वापिस आ जाएँगे, अधिक मात्रा में। आपने मेरी सहायता मांगी है। आपसे अधि ाक कष्ट ग्रस्त रोगियों को मैंने ठीक किया है। एक बार हार्ट स्पैशलिस्ट को दिखालें। दूर होने के कारण मैं अधिक कुछ नहीं कर सकता।

- मैंने इतने कष्ट सहे कि आदत हो गई, जीवन से कोई अधिक उम्मीद नहीं है। उम्मीदों में रहना मैंने कब का छोड़ दिया है, जो है, उससे सन्तुष्ट हूँ। मन पर किसी बात का भार मत रखना, मैं जो कर सका, करता रहूंगा। यदि मेरे बारे में आपके विचार वास्तव में बदल गए हैं, मैं खुश हूँ, काले भयंकर बादल सिर से हट गए। आपको भी आराम मिलेगा। शीघ्र ही मिलेंगे।

उमराउ सिंघ अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था तो 31 जुलाई 1948 को मैरी ऐंतवुनैत ने बंदूक की गोली से आत्महत्या कर ली। उमराउ सिंघ दिल्ली इंदिरा के पास चला गया जहाँ 1954 में उसका देहान्त हो गया। मृत्यु से पूर्व उसकी स्मरण शक्ति जाती रही थी। जहाँ मन करता, चला जाता, घंटो तक बेटी दामाद ढूंढते, परेशान होते।

विकटर सोचता रहा, क्या करे। लाहौर छोड़ेगा क्योंकि अमृता से मुक्त होना चाहता था। सरकार की तरफ से वारंट आ गए। हंगरी, जर्मन का मित्र था, इसलिए अंग्रेजों का शत्रु, विकटर हंगेरियन होने के कारण शत्रु। सियासी कैदियों के कैंप में पहुँचो। वह सराया चला गया। कृपाल का रसूख बहुत था, उसके कारण बच गया। उसने निर्णय किया हंगरी नहीं जाएगा, बेशक माँ जीवित थी। उसने बहुत कठिन मेहनत की जिस कारण उसकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैल गई। स्त्रियों के लिए पृथक् अस्पताल की सृजना की जहाँ प्रसव की सभी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। जहाँ अस्पताल

बनना था वहाँ पुराना पीपल का वृक्ष था, लोगों के लिए पूजनीय, उन्होंने कहा ये देवता है, काटना नहीं। रुक गया। मज़दूरों में अफ़वाह फैला दी इसमें भूतों का वास है। सभी बीमारियों की जड़ यही वृक्ष है। समाचार इतनी तेज़ी से फैला कि सैकड़ों की संख्या में लोग स्वयं वृक्ष काटने के लिए आ गए।

गोरखपुर नहीं, सारा यू.पी, नेपाल तक उससे ईलाज करवाने आता था। विश्वास था कि प्रत्येक रोग का ईलाज है उसके पास। वह कम से कम फीस लेता, कम से कम दवा देता परन्तु लोगों को संतोष न होता तो कम्पाऊडर टॉनिक की बोतल हाथ में पकड़ा देता।

उसकी बेटी ईवा बताती है एक बार चौरी चौरा से स्वीडिश मिशनरी उपचार हेतु आए। कुछ स्थानीय लोग भी साथ थे। उनमें से एक ने यसू की साखी लोगों को सुनानी शुरू कर दी कि कैसे मसीहा ने लाशों में से एक लाश के सिर पर हाथ रखा और वो जीवित हो गया। श्रोतों में से एक ग्रामीण महिला खड़ी हो गई, गंभीरता से कहा यसू मसीह को जानती हूँ। वह सरदार नगर में रहता है।

जहाँ मजीठिये रहते थे, उस बस्ती का नाम सरदार नगर था।

शाम को शूगर मिल के अफ़सर, इंजीनियर इक्ट्ठे हो जाते, छोटा का क्लब बना लिया, थकान दूर करने के लिए विस्की, बीअर, ताश, शंतरज आदि खेलते, विकटर भी शामिल होता। बहुत ही खुशमिज़ाज व्यक्ति।

अमृता की मृत्यु के 13 वर्ष पश्चात् 1954 में उसे नीना हैदरी मिली। बहुत समय पहले छोटी थी तब देखी थी, छह वर्ष की थी, अंकल कहती थी, अब 21 वर्षीय जवान थी। गुलाम सफ़दर ख़ान हैदरी, यू.पी के डेरा इस्माईल ख़ान से था, सरी से वकालत की, लखनऊ में प्रैक्टिस करता था। सरी शहर की लड़की मरजरी रिक्की से विवाह हो गया। इनकी इकलौती संतान थी नीना। नीना के माता-पिता की आपस में अनबन हो गई, पिता पाकिस्तान चला गया, माँ नीना सहित यहीं रह गई। जब नीना से मेल मिलाप बढ़ने लगा, लोगों को लगा विकटर के उसकी माँ के साथ प्रेम सम्बन्ध हैं।

नीना बताती है वह बहुत अच्छा था, मुझसे दुगुनी आयु का। मैंने उसके साथ विवाह की बात की। विकटर ने कहा देखो, अब मई 1954 है, एक वर्ष के लिए रुक जाओ। यदि तुम्हारा यही निर्णय हुआ तो विचार करेंगे। इतना शानदार व्यक्ति। वह मेरी भावनाओं के साथ खेल सकता था। मुझे अनेकों ने डराया भी जैसे उसने पहली पत्नी से पीछा छुड़ाया है, तुमसे भी छुड़ा लेगा। परन्तु मेरे माता-पिता उसे जानते थे, मैं भी उसे जान गई थी। विवाह से पूर्व उसने मुझसे कहा अमृता

की जगह लेने का प्रयास न करना। हमेशा मेरा ध्यान रखता, सोचता बच्चे न हो परन्तु ईवा अपने आप आ टपकी। उसके लिए एक साथी चाहिए था खेलने के लिए, इसलिए जूलियट का जन्म हुआ। घर में इतनी खुशी, हँसते हँसते कुर्सियों से गिर जाते। बात नहीं होती थी, परन्तु अमृता थी तो घर में ही। उसके कारण ही विकटर भारत आया, मेरा उससे विवाह हुआ।

हंगरी से माँ सराया आ गई और आठ वर्ष तक रही। फिर वापस चली गई। 70 वर्षीय विकटर की बहन मिलने आई। अमृता का मामा इरविन बैकटे अकसर आता, सभी उसे पसंद करते थे, वह बहुत बातें करता। शोधार्थी आते, डाकूमैंटरियाँ बनाने वाले आते, अमृता के बारे में प्रश्न करते। जितनी उम्मीद लेकर आते, विकटर उन्हें उससे अधिक सन्तुष्ट करके भेजता।

इंदिरा की मृत्यु 1974 में कसौली में हुई, कला आलोचक पुत्र वाईवां सुन्दरम, अमृता का भानजा जीवित है, उसकी पत्नी गीता, कला आलोचक और कला इतिहासकार है। इंदिरा की बेटी नवीना है। उनसे प्राप्त हुई सामग्री बहुमूल्य है।

जून 1997 में 86 वर्ष की आयु में विकटर का देहांत हुआ। गिरने से चोट लगी, बिस्तर पर लिटा दिया, जब आखरी सांस ली, तब सारा परिवार समीप बैठा था। हज़ारों की संख्या में अमीर-गरीब, हिन्दु, सिक्ख, मुसलमान दफ़न करने गए। ईश्वर से इंकारी हो गया था। मजीठिया परिवार ने सहज पाठ का भोग पाया, कीर्तन उपरान्त अरदास, सिक्ख परम्पराओं के अनुसार सभी रस्में निभाईं। जन्म से ईसाई, पत्नी मुसलमान, अंतिम रस्में गुरमति अनुसार। महान् पवित्र रूहें ऐसी ही होती हैं। कहता था नास्तिक हूँ, सभी धर्मों का प्रेम मिला।

अमृता पर लिखी गई उत्तम पुस्तकें इकबाल सिंघ की ***अमृता शेरगिल*** (अंग्रेज़ी), विकास पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली ; वाईवां सुन्दरम की तीन पुस्तकें, ***रीटेक ऑफ़ अमृता*** (अं.), तूलिका बुक्स नई दिल्ली ; ***अमृता शेरगिल, लाईफ एण्ड वर्क*** (अं.), विकास पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली ; ***अमृता शेरगिल : ए सैल्फ पोट्रेट इन लैटज़ राईटिंगज़,*** तूलिका बुक्स; कार्ल खंडालवाला की ***अमृता शेरगिल*** (अं.) न्यू बुक्स कम्पनी लि. मुम्बई; मुलकराज आनन्द की ***अमृता शेरगिल*** (अं.), एन. जी.एम. ऐ, दिल्ली; बलूदन ढींगरा की ***शेरगिल*** (अं.) ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, गीता डॉक्टर की ***अमृता शेरगिल : ए प्रिंटिड लाईफ़*** (अं.), रूपा नई दिल्ली, यशोधरा दालमीआं, ***अमृता शेरगिल : ए लाईफ़*** (अं.), पैंगुईन, नई दिल्ली हैं।